



ਕੀ ਯਏ, ਜੀ

ਕੇ ਰਫ਼ਾਨ

ਕੀ ਗਏ !



# भूमिका

जैसे जल विहीन नदियाँ, बिन सुगन्ध पुष्प और पत्तों के बिना वृक्ष अशोभनीय लगते हैं वैसे ही परमात्म प्यार के बिना मानव जीवन पूर्णतया रूग्ण, नीरस एवं बेजान सा लगता है। आज सारा संसार निरछल प्रेम के कुछ पलों को प्राप्त करने के लिये जीवनभर प्रयासरत रहता है परन्तु खेद है कि उसकी इस तत्परता और कुर्बानी के बावजूद उसे जो कुछ भी मिलता है वह उसकी स्वयं की बर्बादी के सिवाय और किसी काम नहीं आता।

आज निःस्वार्थ और निष्कपट प्रेम, सम्पूर्ण विश्व से जैसे प्रायः लोप हो गया है। आज हम जिस पर भी विश्वास करते हैं, कल वही हमारा सारा जीवन उदासी, निराशा और अकेलेपन के गहरे गर्त में धकेलकर आगे बढ़ जाता है और हम वहीं के वहीं अकेले रह जाते हैं।

लेकिन क्या आप जानते हैं ऐसा होने का कारण क्या है? क्यों हम छलकपट से अछूते नहीं रह पाते? वास्तव में अगर गहराई से विचार करें तो अपने इस हाल के जिम्मेवार हम स्वयं ही हैं! हमारे ही संस्कार हमें अविश्वसनीय बना रहे हैं। हम स्वयं भी तो जीवन में अनेकों को अनेक प्रकार के वायदे कर लेते हैं, मगर जब उन्हें निभाने का समय आता है तो हम स्वयं ही किनारा कर जाते हैं। स्वयं परमपिता परमात्मा के प्यार में मग्न होकर हमने अलौकिक जीवन में अनेकों वायदे किये हैं। अनेकों चिट्ठियाँ, अनेकों प्रतिज्ञायें समय प्रति समय करते रहे मगर निभाने के मामले में बहुत पीछे रह गये। एक तरफ हजारों की भीड़ में अपने दोनों हाथों को उठाकर परमात्मा बाप की वाह-वाह बटोरते रहे, वहीं दूसरी तरफ कुछ भी न करके स्वयं ही को धोखा देते रहे।

बस यही कारण है कि हम अकेले हो जाते हैं। हम आवाज पर आवाज लगाते रहते हैं और कोई नहीं सुनता। और तो और हम भगवान को भी उलहना दे बैठते हैं कि अब तो भगवान भी हमारी नहीं सुनता। मगर विचार करें, क्या हमने कभी भगवान की सुनी है??? यदि हाँ! तो याद कीजिये कि कब-कब और क्या-क्या वायदे हमने भगवान के सम्मुख किये हैं, और उन्हें कहाँ तक निभाया है!!!

प्रस्तुत पुस्तक “वायदे जो वरदान बन गये” में परमात्मा के सम्मुख किये गये उन्हीं पिछले 92 वर्षों (2009-2092) के अनमोल वायदों का संग्रह किया गया है, जिसमें हम सभी ने कभी ना कभी, कोई ना कोई वायदा स्वयं के वा परमात्मा के समक्ष अवश्य ही किया है। प्रस्तुत पुस्तक आपको अपने इन वायदों को निभाने में बहुत सहायक सिद्ध होगी और आप कल्प-कल्पान्तर के लिये अविनाशी परमात्म प्यार व दुलार के अधिकारी बन जायेंगे। ऐसा हमारा सम्पूर्ण विश्वास है।

..... ओम शान्ति



## वायदों प्रति बापदादा के गुह्य इशारे

बापदादा फखुर से कहते हैं कि संगम पर भी हर बच्चा राजा बच्चा है। कोई बाप ऐसे फलक से नहीं कह सकता कि मेरा एक-एक बच्चा राजा है। लेकिन बापदादा कहते हैं कि हर एक बच्चा स्वराज्य अधिकारी राजा है। प्रजायोगी में तो हाथ नहीं उठाया ना, तो राजा हो ना! लेकिन ऐसा ढीला ढाला राजा नहीं बनना जो आर्डर करो और आवे नहीं। कमजोर राजा नहीं बनना। पीछे वाले कौन हो? जो समझते हैं राजयोगी हैं वह हाथ उठाओ। ऊपर भी बैठे हैं, (गैलरी में, आज हॉल में १८ हजार भाई-बहनें बैठे हैं) बापदादा देख रहे हैं, हाथ उठाओ ऊपर वाले। तो अभी यह लास्ट टर्न में शुरू हो जायेगा। तो तीन मास बापदादा देते हैं, ठीक है देवें। होमवर्क देंगे। क्योंकि **यह बीच-बीच का होमवर्क भी लास्ट पेपर में जमा होगा।** (३१-१२-२००५)

बापदादा ने सबका फाइल देखा, तो फाइल में क्या देखा? मैजारिटी का फाइल प्रतिज्ञा करने के पेपर से फाइल भरा हुआ है। **प्रतिज्ञा करने के टाइम बहुत दिल से करते हैं**, सोचते भी हैं लेकिन अभी तक देखा कि फाइल बड़ा होता जाता है लेकिन फाइल नहीं हुआ है। दृढ़ प्रतिज्ञा के लिये कहा हुआ है – जान चली जाये लेकिन प्रतिज्ञा न जाये। तो बापदादा ने आज सबके फाइल देखे। (18-01-2007)

हाथ बहुत अच्छा उठाते हो, बापदादा खुश हो जाता। कमाल है हाथ उठाने की। खुश करना तो आता है बच्चों को। तो अभी क्या करेंगे? हाथ तो बहुत अच्छा उठाया, बापदादा खुश हो गये लेकिन **जब भी कोई बात आवे ना तो यह दिन, यह तारीख, यह टाइम याद करना तो हमने क्या हाथ उठाया था। मदद मिल जायेगी।** (18-01-2007)

हाथ उठवाते हैं तो सभी क्या कहते हैं? लक्ष्मी नारायण बनना है। बापदादा को खुशी होती है, वायदा बहुत अच्छे अच्छे करते हैं लेकिन **वायदे का फायदा नहीं उठाते हैं। वायदा और फायदा का बैलेन्स नहीं जानते।** वायदों का फाइल बापदादा के पास बहुत बहुत बहुत बड़ा है, सभी का फाइल है। ऐसे ही फायदे का भी फाइल हो, बैलेन्स हो, तो कितना अच्छा लगेगा। (१५-१०-२००७)

**दादियों से:** (दादियों की सेवा साथी बहनें ब्राह्मणियों से बापदादा मिल रहे हैं): आप सब भी राजयुक्त हो ना! आप जो निमित्त हो तो आप भी ऐसा अपना रूप बनाओ, स्थिति बनाओ, जो सब समझें कि दादी के तरफ से इन्हों से भी कुछ मिला। सिर्फ प्रोग्राम मिला नहीं, लेकिन इन्हों से भी कुछ मिला, आप दृष्टि से तो दे सकते, चेहरे से भी दे सकते हैं। चेहरे और चलन से सेवा में नम्बरवन। हो सकता है? सभी को बापदादा विशेष प्यार करता है। (यह तीनों हाथ नहीं उठाती हैं) **बाबा जब कहता है तो हाथ उठाना चाहिए, इससे याद रहता है।** (३०-११-२००८)

सिर्फ देनी नहीं है, लेनी भी है। हाथ उठाओ जो दोनों करेंगे। जो दोनों करेंगे? अच्छा। बहुत अच्छा। अच्छा। यह आपका चित्र इसमें आ रहा है। (टी.वी.में) तो **जो कुछ थोड़ा फेल होगा ना उसको यह चित्र भेज देंगे।** फिर से हाथ उठाओ। यहाँ निकल रहा है। अच्छा (२२-०२-२००९)

## “दुआ देना, दुआ लेना”

आप अपना कर्तव्य याद रखो कि मेरा कर्तव्य है - किसी भी प्रकार की आग बुझाने का, दुआ देने का। शुभ भावना की भावना का सहयोग देने का। बस एक अक्षर याद रखो, माताओं को सहज एक शब्द याद रखना है - “दुआ देना, दुआ लेना”। मातायें यह कर सकती हो? **(सभी मातायें हाथ उठा रही हैं)** कर सकती हो या करना ही है? पाण्डव कर सकते हैं? पाण्डव कहते हैं - करना ही है। गाया हुआ है पाण्डव अर्थात् सदा विजयी और शक्तियां सदा विश्व कल्याण-कारी नाम से प्रसिद्ध हैं। (२५-११-२००१)

## आप समस्याओं का दरवाजा “क्यों”, इसको समाप्त करो

पुरुषार्थ में कमजोर पुरुषार्थ का, एक शब्द का दरवाजा है, वह है “क्यों”। क्वेश्चन मार्क, (?) क्यों, यह क्यों शब्द अभी क्या को सामने नहीं लाता। तो बापदादा अभी देश विदेश के सभी बच्चों को यह स्मृति दिला रहे हैं कि आप समस्याओं का दरवाजा “क्यों”, इसको समाप्त करो। कर सकते हैं? टीचर्स कर सकती हैं? पाण्डव कर सकते हैं? **सभी हाथ उठा रहे हैं या कोई कोई?** फारेनर्स तो एवररेडी हैं ना! हाँ या ना? **अगर हाँ तो सीधा हाथ उठाओ।** कोई ऐसे-ऐसे कर रहे हैं। अभी कोई भी सेवाकेन्द्र पर समस्या का नाम-निशान न हो। ऐसे हो सकता है? हर एक समझे मुझे करना है। टीचर्स समझें मुझे करना है, स्टूडेंट समझें मुझे करना है, प्रवृत्ति वाले समझें मुझे करना है, मधुबन वाले समझें हमें करना है। कर सकते हैं ना? समस्या शब्द ही समाप्त हो जाये, कारण खत्म होके निवारण आ जाए, यह हो सकता है! (२५-११-२००१)

## कुछ भी हो, सहन करना पड़े, माया का सामना करने पड़े, एक दो के सम्बन्ध-सम्पर्क में सहन भी करना पड़े, मुझे समस्या नहीं बनना है

पहले-पहले स्थापना के समय में सभी आने वाले बच्चों ने क्या प्रॉमिस किया था और करके दिखाया! असम्भव को सम्भव करके दिखाया। दिखाया ना? तो अभी कितने साल हो गये? स्थापना को कितने वर्ष हो गये? (६५) तो इतने वर्षों में असम्भव से सम्भव नहीं हो सकता है? हो सकता है? मुख्य टीचर्स **हाथ उठाओ।** पंजाब नहीं उठा रहा है, शक्य है क्या? थोड़ा सोच रहे हैं, सोचो नहीं। करना ही है। औरों का नहीं सोचो, हर एक अपना सोचे, अपना तो सोच सकते हो ना? दूसरे को छोड़ो, अपना सोचकर अपने लिए तो हिम्मत रख सकते हो ना? कि नहीं? फारेनर्स रख सकते हैं? **(हाथ उठाया)** मुबारक हो। अच्छा, अभी जो समझते हैं, वह **दिल से हाथ उठाना**, दिखावे से नहीं। ऐसे नहीं सब उठा रहे हैं तो मैं भी उठा लूँ। अगर दिल से दृढ़ संकल्प करेंगे कि कारण को समाप्त कर निवारण स्वरूप बनना ही है, कुछ भी हो, सहन करना पड़े, माया का सामना करने पड़े, एक दो के सम्बन्ध-सम्पर्क में सहन भी करना पड़े, मुझे समस्या नहीं बनना है। हो सकता है? अगर दृढ़ निश्चय है तो वह **पीछे से लेकर आगे तक हाथ उठाओ। (बापदादा ने सभी से हाथ उठवाया और सारा दृश्य टी.वी. पर देखा)** अच्छा है ना एक्सरसाइज़ हो गई! (२५-११-२००१)

## १०० परसेन्ट प्यार का रिटर्न देने के लिए तैयार हो

बापदादा से सभी का प्यार १०० परसेन्ट है ना! प्यार तो परसेन्ट में नहीं है ना। १०० परसेन्ट है? तो १०० परसेन्ट प्यार का रिटर्न देने के लिए तैयार हो? १०० परसेन्ट प्यार है ना। जिसका थोड़ा सा कम हो, वह हाथ उठा लो। पीछे बच जायेंगे। **अगर कम हो तो हाथ उठा लो।** १०० परसेन्ट प्यार नहीं है तो वो हाथ उठाओ। प्यार की बात कर रहे हैं। **(एक-दो ने हाथ उठाया)** अच्छा प्यार नहीं है, कोई हर्जा नहीं, हो जायेगा। जायेंगे कहाँ, प्यार तो करना ही पड़ेगा। (२५-११-२००१)

## अब हम स्वयं के प्रति वा औरों के प्रति समस्या नहीं बनेंगे

अब हम स्वयं के प्रति वा औरों के प्रति समस्या नहीं बनेंगे। यह दृढ़ संकल्प प्यार के रिटर्न में कर सकते हो? जो समझते हैं - कुछ भी हो जाए, अगर कुछ हो भी गया तो सेकण्ड में स्वयं को परिवर्तन कर देंगे, वह दिल में संकल्प दृढ़ करें, जो कर सकता है दृढ़ संकल्प। बापदादा मदद देंगे लेकिन मदद लेने की विधि है दृढ़ संकल्प की स्मृति। बापदादा के सामने संकल्प लिया है, यह स्मृति की विधि आपको सहयोग देगी। तो कर सकते हो? **कांध हिलाओ।** देखो, संकल्प से क्या नहीं हो सकता है, घबराओ नहीं, बापदादा की एकस्ट्रा मदद जरूर मिलेगी। (२५-११-२००१)

## सहन करने का फल मिलता है

(बहुत ही मातायें टेन्ट में रही हुई हैं) टेन्ट में रहने वालों को टेन्ट तो मिला ना और नीचे कुछ बिछौना तो मिला ना। भक्ति में तो मिट्टी में सोते हैं, आपको मिट्टी तो नहीं मिली ना। कम्बल तो मिला ना, वह तो ठण्ड में सोते हैं। आपको बहुत-बहुत मौज हैं बस बाप की गोदी में सो जाओ। टेन्ट नहीं देखो, बाप की गोदी देखो। बापदादा पहले-पहले टेन्ट में ही चक्कर लगाता है क्योंकि देखो टेन्ट वालों ने सहन तो किया ना। तो सहन करने का फल मिलता है। अच्छा है **टेन्ट में सोने वाले हाथ उठाओ**। अच्छा है, बापदादा टेन्ट वालों को अपने वतन में बुलाके मसाज़ करेंगे। (२५-११-२००१)

## आप आत्मार्ये मन्सा सेवा कर सकती हो

मन्सा सेवा से आप करने वालों को भी बहुत फायदा है। क्यों? जिस आत्मा को मन्सा सेवा अर्थात् संकल्प द्वारा शक्ति देंगे, सकाश देंगे वह आत्मा आपको दुआ देगी। और आपके खाते में स्व का पुरुषार्थ तो है ही लेकिन दुआओं का खाता भी जमा हो जायेगा। तो आपका जमा खाता डबल रीति से बढ़ता जायेगा। इसलिए चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं, क्योंकि इस बारी नये बहुत आये हैं ना! नये जो पहले बारी आये हैं, वह **हाथ उठाओ**। पहले बारी आये हुए बच्चों से भी बापदादा पूछते हैं कि आप आत्मार्ये मन्सा सेवा कर सकती हो? (बापदादा ने पाण्डवों से, माताओं से सबसे अलग-अलग पूछा आप मन्सा सेवा कर सकते हो?) **यह तो बहुत अच्छा हाथ उठाया** (१५-१२-२००१)

## यथार्थ रूप में कितने घण्टे मन्सा सेवा की

अभी बापदादा सभी बच्चों को जिम्मेवारी देते हैं कि रोज़ सारे दिन में कितने घण्टे मन्सा सेवा यथार्थ रीति से की, उसका हर एक अपने पास चार्ट रखना। ऐसे नहीं कहना हॉ कर ली। यथार्थ रूप में कितने घण्टे मन्सा सेवा की, वह हर एक चार्ट रखना। फिर बापदादा अचानक चार्ट मंगायेगे। डेट नहीं बतायेगे। अचानक मंगायेगे, देखेंगे कि जिम्मेवारी का ताज पहना या हिलता रहा है? जिम्मेवारी का ताज पहनना है ना! टीचर्स ने तो जिम्मेवारी का ताज पहना हुआ है ना! अभी उसमें यह एड करना। ठीक है ना! **डबल फारेनर्स हाथ उठाओ**। यह जिम्मेवारी का ताज अच्छा लगता है, तो ऐसे हाथ उठाओ। **टीचर्स भी हाथ उठाओ** आपको देखकर सबको प्रेरणा मिलेगी। तो चार्ट रखेंगे? अच्छा, बापदादा अचानक एक दिन पूछेगा, अपना-अपना चार्ट लिखकर भेजो। (१५-१२-२००१)

## दृढ़ संकल्प लो - मुझे दुआयें देनी हैं और लेनी हैं, बस

संकल्प द्वारा, बोल द्वारा, वाणी द्वारा, कर्म द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा दुआयें दो और दुआयें लो। एक ही बात करो बस दुआयें देनी हैं। चाहे कोई बददुआ दे तो भी आप दुआ दो क्योंकि आप दुआओं के सागर के बच्चे हो। कोई नाराज हो आप नाराज नहीं हो। आप राज़ी रहो। ऐसे हो सकता है? १०० जने आपको नाराज करें और आप राज़ी रहो, **हो सकता है?** हो सकता है? दूसरी लाइन वाले बताओ **हो सकता है?** अभी और भी नाराज करेंगे, देखना! पेपर तो आयेगा ना। माया भी सुन रही है ना! बस यह व्रत लो, दृढ़ संकल्प लो - **“मुझे दुआयें देनी हैं और लेनी हैं, बस”**। हो सकता है? माया भले नाराज़ करे ना! आप तो राज़ी करने वाले हो ना? तो एक ही काम करो बस। नाराज़ न होना है, न करना है। करे तो वह करे, हम नहीं होंगे। हम न करें न होंगे। हर एक अपनी जिम्मेवारी ले। (१५-१२-२००१)

## बापदादा हर एक बच्चे के बचत का एकाउन्ट चेक करेगा

इस सीज़न के लास्ट टर्न में कितने मास हैं, (तीन मास)। तो तीन मास के बाद बापदादा हर एक बच्चे के बचत का एकाउन्ट चेक करेगा। ठीक है? जो समझते हैं तीन मास में चेक कराने के लिए तैयार हो जायेंगे, वह **एक हाथ उठाओ**। तैयार हो जायेंगे? कितने परसेन्ट में तैयार होंगे? उमंग अच्छा है। **कोई नहीं उठा रहे हैं**, सोच रहे हैं क्या? तीन मास में एकाउन्ट चेक होगा। आप अपना एकाउन्ट चेक करना, फिर बापदादा चेक करेगा। बापदादा को तो देरी नहीं लगती। (३१-१२-२००१)

## सर्व खजाने सफल करना है, उसके साथ बीज भी डालना है

सबको अपने-अपने तरफ से सफलता वर्ष में सब सफल करना ही है। सर्व खजाने सफल करना है। उसके साथ बीज भी डालना है, डालते रहते हैं, डालते रहेंगे। ठीक है ना! डालते रहेंगे ना! **हाथ उठाओ** कि समझते हैं पूरा हो गया? जब तक सेवा है तो सेवा में बीज

डालते जाओ और फिर फल भी आप सबको खाना है। जब प्रत्यक्षता का फल निकलेगा ना तो आप सब खायेंगे, सिर्फ दिल्ली वाले नहीं सब खायेंगे। (३१-१२-२००१)

## क्या यह बाप की छुट्टी है

बाप पूछते हैं कि वह खराब है, रांग है, होना नहीं चाहिए लेकिन खराब को अपने वृत्ति में रखो, क्या यह बाप की छुट्टी है? जो समझते हैं यह बाप की छुट्टी नहीं है, वह एक हाथ उठाना। टी.वी. में दिखाओ। (दादी को) आप देख रही हो ना! अच्छा। **याद रखना हाथ उठाया था।** डबल फारेनर्स ने हाथ उठाया! (२४-०२-२००२)

## हर बात में दृढ़ता को अण्डरलाइन करना

तो इस वर्ष में मुबारक के साथ निरन्तर हर बात में दृढ़ता को अण्डरलाइन करना। आज बर्थ डे है इसलिए बापदादा आज नहीं सुनाते हैं लेकिन सभी के चार्ट से बापदादा ने एक बात नोट की, लेकिन लास्ट बारी में सुनायेंगे। आज तो मनाना है, सुनाना नहीं है। १५ दिन के बाद सुनायेंगे। (बापदादा सुनाये तो १५ दिन में सब ठीक हो जायेंगे) अच्छा पहले कहो १५ दिन में करेक्शन हो जायेगी फिर तो सुनाना ठीक है। अगर १५ दिन में परिवर्तन हो जाए तो बापदादा तो पता नहीं क्या कर देंगे! तो सुनायें क्या? तो १५ दिन में परिवर्तन हो जायेगा? संकल्प करेंगे? अच्छा, पाण्डव करेंगे सुनायें? सुनना तो सहज है, करेंगे? करना पड़ेगा। **(बाप-दादा ने पीछे वालों से, माताओं से, टीचर्स से, डबल फारेनर्स सबसे पूछा, सभी ने हाथ हिलाया)** हाथ तो सब बहुत अच्छा उठा लेते हैं। (११-०३-२००२)

## सेकेण्ड में बिन्दी लगा सकते हैं

डबल फारेनर्स को एक सेकेण्ड में कोई भी व्यर्थ बात, कोई भी निगेटिव बात, कोई भी बीती बात, उसको मन से बिन्दी लगाना आता है? डबल फारेनर्स जो समझते हैं कि कैसी भी बीती हुई बात, अच्छी बात तो भूलनी है ही नहीं, भूलनी तो व्यर्थ बातें ही होती हैं। तो कोई भी बात जिसको भूलने चाहते हैं, उसको सेकेण्ड में बिन्दी लगा सकते हैं? जो फारेनर्स लगा सकते हैं, वह सीधा, लम्बा हाथ उठाओ। मुबारक हो। अच्छा, जो समझते हैं कि एक सेकेण्ड में नहीं एक घण्टा तो लगेगा ही? सेकेण्ड तो बहुत थोड़ा है ना! एक घण्टे के बाद बिन्दी लग सकती है, वह हाथ उठाओ। जो घण्टे में बिन्दी लगा सकते हैं, वह हाथ उठाओ। देखा, फारेनर्स तो बहुत अच्छे हैं। भारतवासी भी जो समझते हैं एक घण्टे में नहीं आधे दिन में बिन्दी लग सकती है, वह हाथ उठाओ। **(कोई ने हाथ नहीं उठाया)** हैं तो सही, बापदादा को पता है। बापदादा तो देखता रहता है, हाथ नहीं उठाते, लेकिन लगता है। लेकिन समझो आधा दिन लगे, एक घण्टा लगे और आपको एडवांस पार्टी का निमन्त्रण आ जाए तो? तो क्या रिजल्ट होगी? अन्त मते सो गति क्या होगी? समझदार तो हो ना? (२८-०३-२००२)

## बापदादा हर बच्चे को व्यर्थ से मुक्त देखने चाहते हैं

इस वर्ष में बापदादा हर बच्चे को व्यर्थ से मुक्त देखने चाहते हैं। मुक्त वर्ष मनाओ। जो भी कमी हो, उस कमी को मुक्ति दो, क्योंकि जब तक मुक्ति नहीं दी है ना, तो मुक्तिधाम में बाप के साथ नहीं चल सकेंगे। तो मुक्ति देंगे? मुक्ति वर्ष मनायेंगे? **जो मनायेगा वह ऐसे हाथ करें।** मनायेंगे? एक दो को देख लिया ना, मनायेंगे ना! अच्छा है। अगर मुक्ति वर्ष मनाया तो बापदादा जौहरातों से जड़ी हुई थालियों में बहुत-बहुत मुबारक, ग्रीटिंग्स, बधाईयां देंगे। (२८-०३-२००२)



## नौकरी करते हुए डबल नौकरी, सेवा करो

बापदादा यह नहीं कहते कि नौकरी नहीं करो, लेकिन नौकरी करते हुए डबल नौकरी, सेवा करो। फारेन की यह विशेषता है, बापदादा ने फारेन में यह विशेषता देखी है जॉब भी करते, सेन्टर भी सम्भालते, इसलिए बापदादा ऐसे बच्चों को डबल मुबारक देते हैं। सरकमस्टांश हैं तो बापदादा मना नहीं करते, लेकिन बैलेन्स। तो ऐसी कुमारियां हो? सेन्टर खोलें, सेन्टर सम्भालेंगी? इतनी कुमारियां मिलेंगी! सेन्टर खोले? हाथ उठाओ जो हाँ करती हैं, आर्डर करें सेन्टर खोलो, जायेंगी सेन्टर पर? थोड़े हाथ उठा रहे हैं। (१५-१२-२००२)

## कई बच्चे सहज योग को मुश्किल योग बना देते हैं

कई बच्चे सहज योग को मुश्किल योग बना देते हैं, है नहीं लेकिन बना देते हैं। वास्तव में है बहुत सहज, मुश्किल लगता है? जिसको मुश्किल लगता है वह हाथ उठाओ। सदा नहीं, कभी कभी मुश्किल है? या सहज है? जो मुश्किल योगी हैं वह हाथ उठाओ। मुश्किल वाले हाथ उठाओ। मातायें मुश्किल योगी हो या सहज होगी? कोई मुश्किल योगी है? हाथ नहीं उठायेंगे, सारी सभा में कैसे उठायेंगे! (३१-१२-२००२)

## सहज भी हो और श्रेष्ठ भी हो

इस नये वर्ष में पुरुषार्थ भी श्रेष्ठ हो लेकिन श्रेष्ठ के साथ पहले सहज हो। सहज भी हो और श्रेष्ठ भी हो यह हो सकता है? दोनों साथ हो सकता है? डबल फारेनर्स बोलो, हो सकता है? तो बापदादा देखेंगे। बापदादा तो चेक करते रहते हैं ना! तो मुश्किल योगी कौन-कौन बनता है! सहज योगी का यह मतलब नहीं है कि अलबेलेपन का पुरुषार्थ हो। श्रेष्ठ भी हो और सहज भी हो। तो पाण्डव सहज योगी हैं? सहजयोगी जो हैं वह हाथ उठाओ। (३१-१२-२००२)

## गोल्डन हार्ट बन गई

बापदादा ने समाचार सुना है। सभी यूथ कौन बन गये? (सभी यूथ हाथ हिला रहे हैं) सब तिलकधारी बनकर आये हैं, जिन्होंने विशेष रिफ्रेशमेंट की है वह तिलकधारी खड़े रहो। (तिलक लगाकर बैठे हैं) अच्छी निशानी लगाई है। आत्मा चमक गई है ना? जो समझते हैं कि हमारी इस ट्रेनिंग से गोल्डन हार्ट बन गई, वह हाथ उठाओ। गोल्डन हार्ट बन गई। यह तो सबसे आगे चले गये। (३१-१२-२००२)

## ऐसी कमाल जो धमाल खत्म हो जाए

शिव रात्रि के प्रोग्राम धूमधाम से बना रहे हैं। सबको उमंग है ना! जिसको उमंग है बस इस शिवरात्रि में कमाल करेंगे, वह हाथ उठाओ। ऐसी कमाल जो धमाल खत्म हो जाए। जय-जयकार हो जाये वाह! वाह समर्थ आत्मायें वाह! (१८-०१-२००३)

## सन्देश तो बहुतों को देना लेकिन एक आत्मा तो अपना वर्सा लेने के लायक बनाओ। सभी एक एक को तैयार करे तो ९ लाख तो पूरे हो जायेंगे

अच्छा - जितने भी यहाँ बैठे हैं, चारों ओर तो जाना ही है लेकिन जितने भी बैठे हैं, कितनी संख्या है? (१२-१३ हज़ार बैठे हैं) अच्छा, जो भी बैठे हैं, मधुबन वाले कहेंगे हम कहाँ सन्देश देंगे? आजकल तो मधुबन के आसपास भी गांव बहुत हैं। चाहे ऊपर, चाहे नीचे बहुत लोग हैं। कम से कम एक आत्मा को तो अपना बनाओ, सन्देश तो बहुतों को देना लेकिन एक आत्मा तो अपना वर्सा लेने के लायक बनाओ। सभी एक एक को तैयार करे तो ९ लाख तो पूरे हो जायेंगे। मजूर है, करेंगे कि सिर्फ बोलेंगे। सिर्फ हाथ नहीं उठाना लेकिन दिल से करना है। करना है? (नारायण से पूछते हैं) करना है? तो जो बापदादा ने कहा है ९ लाख की लिस्ट होनी चाहिए, वह तो हो ही जायेगी ना। तो अगली सीजन में बापदादा यह खुशखबरी सुनने चाहते हैं कि ६ लाख नहीं, ९ लाख तो हो गये हैं, उससे ज्यादा ही हो गये हैं। ठीक है, शक्तियां, टीचर्स ठीक है! टीचर्स को तो कंगन तैयार करना चाहिए। पंजाब और राजस्थान की टीचर्स हाथ उठाओ। टीचर्स तो बहुत ही बना सकती है, लेकिन औरों को भी बनाने की प्रेरणा देना। अच्छा है टीचर्स कितनी हैं? एक एक भी ९ को तैयार करें तो ९ लाख तो हो जायेंगे। क्या समझते हो अगले सीजन तक यह खुशखबरी मिलेगी? हाँ निर्वैर बोलो, मिलेगी? होगा? यह तो कोई बड़ी बात नहीं है। ६

लाख हैं, ३ लाख चाहिए बस। हो जायेगा, सब सिर्फ हिम्मत रखो करना ही है। क्या बोलेंगे? **कहो करना ही है**। संकल्प शक्ति बहुत बड़ी शक्ति है। आप ब्राह्मण आत्माओं का संकल्प क्या नहीं कर सकता है। हर एक को अपने श्रेष्ठ संकल्प का महत्त्व स्मृति में रखना है।

(१६-०१-२००३)

## आप ब्राह्मणों के ऊपर परमात्म छत्रछाया है

जितनी दुनिया में हलचल होगी उतनी ही आप ब्राह्मणों की स्टेज अचल होगी। ऐसे है? उबल विदेशी हलचल है या अचल है? अचल है? हलचल में तो नहीं हैं ना! जो अचल हैं वह हाथ उठाओ। अचल हैं? कल कुछ हो जाये तो? तो भी अचल हैं ना! क्या होगा, कुछ नहीं होगा। आप ब्राह्मणों के ऊपर परमात्म छत्रछाया है।

(१३-०२-२००३)

## प्रतिज्ञा के फाइल बाप के पास बहुत-बहुत बड़े हो गये हैं

कई बच्चे बड़ी चतुराई की बातें करते हैं, सुनायें क्या कहते हैं? सुनायें? अगर सुनायें तो आज छोड़ना पड़ेगा। तैयार हैं? तैयार हैं छोड़ेंगे? या सिर्फ फाइल में कागज जमा करेंगे? जैसे हर साल करते हो ना, प्रतिज्ञा के फाइल बाप के पास बहुत-बहुत बड़े हो गये हैं, तो अभी भी ऐसे तो नहीं कि एक प्रतिज्ञा का कागज फाइल में एड कर देंगे, ऐसे तो नहीं! फाइल करेंगे या फाइल में डालेंगे? क्या करेंगे? बोलो, टीचर्स क्या करेंगे? **फाइल? हाथ उठाओ**। ऐसे ही वायदा नहीं करना। **बापदादा फिर थोड़ा सा रूप धारण करेगा**। ठीक है। उबल फारेनर्स - करेंगे फाइल? **जो फाइल करेंगे वह हाथ उठाओ**। टी.वी. में निकालो। **छोटा, त्रेतायुगी हाथ बड़ा उठाओ**। अच्छा, ठीक है।

(२६-०२-२००३)

## आज प्रतिज्ञा करो और फाइल में कागज जमा करना पड़े, ऐसी प्रतिज्ञा नहीं करायेगा

बापदादा वतन में मुस्करा रहे थे - यह बच्चे शिवरात्रि पर यहाँ-वहाँ भाषण करते हैं ना, अभी बहुत भाषण कर रहे हैं ना। उसमें कहते हैं, बापदादा को बच्चों की प्वाइंट याद आई। तो उसमें कहते हैं कि शिवरात्रि पर बकरे की बलि चढ़ाते हैं - वह बकरा में-में बहुत करता है ना, तो ऐसे शिवरात्रि पर यह “मैं” “मैं” की बलि चढ़ा दो। तो बाप सुन-सुनकर मुस्करा रहे थे। तो इस “मैं” की आप भी बलि चढ़ा दो। सरेण्डर कर सकते हो? **कर सकते हैं?** पाण्डव कर सकते हो? उबल फारेनर्स **कर सकते हो?** फुल सरेण्डर या सरेण्डर? फुल सरेण्डर। **आज बापदादा झण्डे पर ऐसे ही प्रतिज्ञा नहीं करायेगा**। आज प्रतिज्ञा करो और फाइल में कागज जमा करना पड़े, ऐसी प्रतिज्ञा नहीं करायेगा। क्या सोचते हो, दादियां आज भी ऐसी प्रतिज्ञा कराये? फाइल करेंगे या फाइल में जमा करेंगे? बोलो, (फाइल कराओ) हिम्मत है? हिम्मत है? सुनने में मगन हो गये हैं, हाथ नहीं उठा रहे हैं। कल तो कुछ नहीं हो जायेगा! नहीं ना! कल माया चक्कर लगाने आयेगी।

(२६-०२-२००३)

## प्युरिटी की रॉयल्टी

ब्राह्मण आत्मार्थे सभी जो भी बैठे हो तो प्युरिटी की रॉयल्टी है ना! हाँ, कांध हिलाओ। **पीछे वाले हाथ उठा रहे हैं।** आप पीछे नहीं हो, सामने हो। देखो नज़र पीछे जाती है, आगे तो ऐसे देखना पड़ता है पीछे आटोमेटिक जाती है। (१७-१०-२००३)

## पक्का है ना, समान बनना ही है

बच्चे भी कहते हैं समान बनना ही है। पक्का है ना, समान बनना ही है! कुमारियां समान बनना है या ड्रामा में कुछ भी बन गये ठीक है? नहीं। समान बनना है, सभी कुमारियों को बनना ही है। मरना पड़े, क्या भी करना पड़े! सोच के हाथ उठाओ। हाँ जो समझते हैं, मरना पड़े, झुकना पड़े, सहन करना पड़े, सुनना पड़े, वह **हाथ उठाओ। कुमारियां सोच के हाथ उठाना।** इन्हों का फोटो निकालो। कुमारियां बहुत हैं। मरना पड़ेगा? झुकना पड़ेगा? **पाण्डव उठाओ।** सुना, समान बनना है। समान नहीं बनेंगे तो मजा नहीं आयेगा। परमधाम में भी समीप नहीं रहेंगे। पूज्य में भी फर्क पड़ जायेगा, सतयुग के राज्य भाग्य में भी फर्क पड़ जायेगा। ब्रह्मा बाप से आपका प्यार है ना, डबल विदेशियों का सबसे ज्यादा प्यार है। जिसका ब्रह्मा बाबा से जिगरी, दिल का प्यार है वह **हाथ उठाओ।** (१७-१०-२००३)

## सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना

**इस सीजन का स्वमान है - सन्तुष्टमणि। सदा सन्तुष्ट-मणि।** भाई भी मणि हैं, मणा नहीं होता है, मणि होता है। एक एक आत्मा हर समय सन्तुष्टमणि है। और स्वयं सन्तुष्ट होंगे तो दूसरे को भी सन्तुष्ट करेंगे। सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना। ठीक है, पसन्द है? कुमारियों को पसन्द है? जिसको पसन्द है और करेगा, सिर्फ सुनने में पसन्द नहीं, करने में पसन्द है - वह सभी **हाथ उठाओ।** हाथ देख करके तो बापदादा की दिल खुश हो गई। बहुत अच्छा, मुबारक हो, मुबारक हो। (१७-१०-२००३)

## अमरनाथ बाबा की तरफ से अमर भव का वरदान है

(१० साल वाले भी बैठे हैं) यह भी बहुत कमाल है, १० साल अमर रहे हैं। तो अमरनाथ बाबा की तरफ से अमर भव का वरदान है। **हाथ उठाओ** १० साल वाले। आंटी अंकल को तो बहुत साल हो गये। तो १० साल वालों को बापदादा ९ रत्नों की माला पहना रहे हैं। ९ रत्न निर्विघ्न बनाने के होते हैं। ८ शक्तियां और बाप, सदा स्मृति में रहे। अच्छा है। फॉरेन में रहते अभी १० साल पास किया तो अमर हो गये ना! कि समझते हो पता नहीं आगे क्या हो? **अच्छा १० साल वालों ने जो हाथ उठाया,** उन्हों को अपने फ्युचर का भी निश्चय है कि समझते हैं पता नहीं चल सकेंगे या नहीं चल सकेंगे? जो समझते हैं अन्त तक साथ रहना ही है, अमर रहना है, कुछ भी हो जाए, हिमालय जितना पहाड़ भी गिर जाए, गिरेगा, पक्के हैं? बहुत अच्छा। **अच्छा इन्डिया वालों ने उठाया।** इन्डिया वाले समझते हैं हम हैं ही पक्के? यह १० साल वाले नहीं लेकिन सभी को अपना निश्चय चाहिए **कुछ भी हो जाए, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, साथ राज्य में आयेंगे।** पक्का है ना! साथ रहेंगे ना! बाप को अकेला छोड़के नहीं चले जाना। (१७-१०-२००३)

## पवित्र जन्म की मर्यादा बहुत आवश्यक है

कुमार अपने हमजिन्स को जगाओ। अच्छा है। कुमार यह कमाल दिखावें कि स्वप्न मात्र पवित्रता में परिपक्व हैं। बापदादा विश्व में चैलेन्ज करके बताये कि ब्रह्माकुमार यूथ कुमार, डबल कुमार हैं ना। ब्रह्माकुमार भी हो और शरीर में भी कुमार हो। तो पवित्रता की परिभाषा प्रैक्टिकल में हो। तो आर्डर करें, आपको चेक करें पवित्रता के लिए। **करें आर्डर? इसमें हाथ नहीं उठा रहे हैं।** मशीनें होती हैं चेक करने की। स्वप्न तक भी अपवित्रता हिम्मत नहीं रखे। कुमारियों को भी ऐसे बनना है, कुमारी अर्थात् पूज्य पवित्र कुमारी। कुमार और कुमारियां यह बापदादा को प्रॉमिस करें कि हम सभी इतने पवित्र हैं जो स्वप्न में भी संकल्प नहीं आ सकता, तब कुमार और कुमारियों की पवित्रता सेरीमनी मनायेंगे। अभी थोड़ा-थोड़ा है, बापदादा को पता है। अपवित्रता की अविद्या हो क्योंकि नया जन्म लिया ना। अपवित्रता आपके पास्ट जन्म की बात है। मरजीवा जन्म, जन्म ही ब्रह्मा मुख से पवित्र जन्म है। तो **पवित्र जन्म की मर्यादा बहुत आवश्यक है।** कुमार कुमारियों को यह झण्डा लहराना चाहिए। (१५-११-२००३)

## अभी उम्मीदों के तारे से सफलता के तारे प्रत्यक्ष हो जाओ

कोई हीरो पार्ट करके दिखाओ। सेन्टर खोला, गीता पाठशाला खोली - यह तो कॉमन हो गया। नई बात करके दिखाओ। पाण्डव करेंगे ना नई बात। नई बात करेंगे ना! हाँ, अच्छे अच्छे पुराने-पुराने सर्विसएबुल हैं। करो कमाल। जो सारे ज़ोन तालियां बजावें। बापदादा की कर्नाटक में उम्मीदें बहुत हैं। लेकिन अभी उम्मीदों के ही तारे हैं, अभी उम्मीदों के तारे से सफलता के तारे प्रत्यक्ष हो जाओ। होना है, ठीक है? टीचर्स भी बहुत हैं। **सिर्फ टीचर्स हाथ उठाओ**। देखो, कितनी टीचर्स हैं। पाण्डव भी हैं। ज़ोन के हेड भी हैं ना, वह भी **हाथ उठाओ**। देखो कितने हैण्डस हैं। बहुत अच्छे-अच्छे हैण्डस हैं सिर्फ अभी पर्दे के अन्दर हैं, स्टेज पर नहीं आये हैं। अच्छा - मुबारक हो।

(१५-११-२००३)

## यह संगमयुग का मर्तबा है

माताओं को क्या नशा रहता है? बहुत नशा रहता है! मातायें नशे में कहती हैं कि बाबा आया ही है हमारे लिए। ऐसे है ना! क्योंकि आधाकल्प में माताओं को मर्तबा नहीं मिला है, अभी संगम पर राजनीति में भी माताओं को अधिकार मिला है। हर डिपार्टमेंट में आप शक्तियों को बाप ने आगे रखा ना, तो संसार में भी हर वर्ग में अब माताओं को अधिकार मिलता है। कोई भी ऐसा वर्ग नहीं है जिसमें मातायें नहीं हो। यह संगमयुग का मर्तबा है। तो माताओं को रहता है - हमारा बाबा। रहता है - मेरा बाबा? नशा है? **मातायें हाथ हिला रही हैं**। अच्छा है। भगवान को अपना बना लिया तो जादूगरिनी तो मातायें हुई ना! बापदादा देखता है मातायें चाहे पाण्डव, बापदादा के सर्व सम्बन्धों से, प्यार तो सर्व संबंधों से है लेकिन किसको कौन सा विशेष संबंध प्यारा है, वह भी देखते हैं। कई बच्चों को खुदा को दोस्त बनाना बहुत अच्छा लगता है। इसीलिए खुदा दोस्त की कहानी भी है। बापदादा यही कहते, जिस समय जिस संबंध की आवश्यकता हो तो भगवान को उस संबंध में अपना बना सकते हो। सर्व संबंध निभा सकते हो। बच्चों ने कहा बाबा मेरा, और बाप ने क्या कहा, मैं तेरा। (३०-११-२००३)

## मधुबन की महिमा का महत्व जानना अर्थात् स्वयं को महान बनाना

मधुबन में बुद्धि में सिर्फ एक ही काम है, सेवाधारी गुप आता है वह अलग बात है लेकिन जो रिफ्रेश होने के लिए आते हैं तो मधुबन में क्या काम है? कोई जिम्मेवारी है क्या? खाओ, पिओ, मौज करो, पढ़ाई करो। तो मधुबन, मधुबन ही है। विदेश में भी सुन रहे हैं। लेकिन वह सुनना और मधुबन में आना, इसमें रात-दिन का फर्क है। बापदादा साधनों द्वारा सुनने, देखने वालों को भी यादप्यार तो देते हैं, कोई बच्चे तो रात जागकर भी सुनते हैं। ना से अच्छा जरूर है लेकिन अच्छे ते अच्छा मधुबन प्यारा है। मधुबन में आना अच्छा लगा है, या वहाँ बैठकर मुरली सुन लो! क्या अच्छा लगता है? वहाँ भी तो मुरली सुनेंगे ना। यहाँ भी तो पीछे-पीछे टी.वी. में देखते हैं। तो जो समझते हैं मधुबन में आना ही अच्छा है, वह **हाथ उठाओ**। (सभी ने उठाया) अच्छा। फिर भी देखो भक्ति में भी गायन क्या है? मधुबन में मुरली बाजे। यह नहीं है लण्डन में मुरली बाजे। कहाँ भी हो, मधुबन की महिमा का महत्व जानना अर्थात् स्वयं को महान बनाना। (३०-११-२००३)

## सन्तुष्ट होके जाना अर्थात् दुआयें मिलना

पंजाब की यह कमाल है कि पंजाब के वायुमण्डल को शान्त कर दिया। अभी लड़ाई झगड़ा होता है क्या? नहीं होता है ना। कॉमन की बात दूसरी है। विशेष आतंकवाद तो नहीं है ना! और सेवा भी बढ़ाते रहते हैं। सेवा की वृद्धि का शौक अच्छा है। पाण्डव भी निर्विघ्न हैं ना? निर्विघ्न, जो समझते हैं माया का काम है आना और हमारा काम है विजय पाना, वह **हाथ उठाओ**। मातायें टीचर्स, माया तो सबके पास आती है। टीचर्स के पास भी आती है क्योंकि टीचर्स को आगे बढ़ना है ना, तो माया तो आयेगी ना! अच्छा है। यह सेवा का चांस एक्स्ट्रा आपके पुण्य का खाता बढ़ाती है और दुआयें कितनी मिलती हैं? सन्तुष्ट होके जाना अर्थात् दुआयें मिलना। तो पंजाब ने दुआओं का खाता जमा किया। अच्छा है लेकिन पंजाब से कोई माइक और वारिस नहीं मिला है। जबसे बापदादा ने कहा है तो कोई भी ज़ोन ने अभी माइक और वारिस नहीं लाया है। स्टेज पर तो लाये। पंजाब तो होशियार है। वारिस निकालने में, माइक तैयार करने में तो होशियार हैं। देखो, पंजाब का कॉमन नारा है - वहाँ कहते हैं ना जो बोले सो निहाल, तो पंजाब लावे तो पंजाब निहाल। लाना है, लाना है। देख रहे हैं बापदादा, कौन सा ज़ोन पहले लाता है। उसका महत्व है ना? अभी किसी ने लाया नहीं है। बना रहे हैं, विदेश वाले भी कोशिश तो बहुत कर रहे हैं, लायेंगे। डबल विदेशी, वारिस लाना है ना? कहाँ हैं, **डबल विदेशी हाथ उठाओ**। अभी देखेंगे डबल विदेशी नम्बर पहला लेते हैं, या भारत नम्बर पहला लेते हैं? कोई भी लेवे।

(३०-११-२००३)

## नम्बरवार में हो या नम्बरवन हो

अभी बापदादा यही चाहते कि **हर बच्चा जब कोठों में भी कोई है तो सब बच्चे नम्बरवार नहीं, नम्बरवन होने हैं।** तो अपने से पूछो नम्बरवार में हो या नम्बरवन हो? क्या हो? टीचर्स नम्बरवन या नम्बरवार? पाण्डव नम्बरवन हो या नम्बरवार हो? क्या हो? जो समझते हैं हम नम्बरवन हैं और सदा रहेंगे, ऐसे नहीं आज नम्बरवन और कल नम्बर-वार में आ जाओ, जो इतने निश्चयबुद्धि हैं कि हम सदा जैसे बाप ब्रह्मा नम्बरवन, ऐसे फॉलो ब्रह्मा बाप नम्बरवन हैं और रहेंगे वह **हाथ उठाओ।** हैं? ऐसे ही नहीं हाथ उठा लेना, सोच समझ के उठाना। लम्बा उठाओ, **आधा उठाते हैं तो आधा हैं।** हाथ तो बहुतों ने उठाया है, देखा, दादी ने देखा। अभी इन्हीं से (नम्बरवन वालों से) हिसाब लेना। जनक (दादी जानकी) हिसाब लेना। **डबल फारेनर्स ने हाथ उठाया।** उठाओ, नम्बरवन? बापदादा की तो हाथ उठा के दिल खुश कर दी। मुबारक हो। अच्छा - **हाथ उठाया** इसका मतलब है कि आपको अपने में हिम्मत है और हिम्मत है तो बापदादा भी मददगार है ही।

(१५-१२-२००३)

## खुद दूढ़ेंगे, खुद पूछेंगे आपको बनाने वाला कौन

यह अभी आवाज नहीं निकला है, चाहे इन्डस्ट्री में, चाहे कहाँ भी काम करते हो, एक-एक आत्मा कहे कि **यह साधारण कर्म करते भी दर्शनीय मूर्त हैं।** ऐसे हो सकता है, हो सकता है? आगे वाले बोलो, हो सकता है? अभी रिजल्ट में कम सुनाई देता है। साधारणता ज्यादा दिखाई देती है। हाँ कभी जब कोई विशेष कार्य करते हो, विशेष अटेंशन रखते हो तब तो ठीक दिखाई देता है लेकिन आपको बाप से प्यार है, बाप से प्यार है? कितनी परसेन्ट? **टीचर्स हाथ उठाओ।** यह तो बहुत टीचर्स आ गई हैं। हो सकता है? कि कभी साधारण कभी विशेष? शब्द भी जो निकलता है ना, कोई भी कार्य करते भाषा भी अलौकिक चाहिए। साधारण भाषा नहीं। अभी बापदादा की सभी बच्चों में यह श्रेष्ठ आशा है - फिर बाप की प्रत्यक्षता होगी। आपका कर्म, चलन, चेहरा स्वतः ही सिद्ध करेगा, भाषण से नहीं सिद्ध होगा। भाषण तो एक तीर लगाना है। लेकिन प्रत्यक्षता होगी, इनको बनाने वाला कौन! खुद दूढ़ेंगे, खुद पूछेंगे आपको बनाने वाला कौन? रचना, रचना को प्रत्यक्ष करती है।

(१५-१२-२००३)

## परिवर्तन में कमाण्डर बनना

साधारण बोल अभी आपके भाग्य के आगे अच्छा नहीं लगता। कारण है 'मैं'। यह मैं, मैं-पन, मैंने जो सोचा, मैंने जो कहा, मैं जो करता हूँ... वही ठीक है। इस मैं पन के कारण अभिमान भी आता है, क्रोध भी आता है। दोनों अपना काम कर लेते हैं। **बाप का प्रसाद है, मैं कहाँ से आया!** प्रसाद को कोई मैं पन में ला सकता है क्या? अगर बुद्धि भी है, कोई हुनर भी है, कोई विशेषता भी है। बापदादा विशेषता को, बुद्धि को आफरीन देता है लेकिन 'मैं' नहीं लाओ। यह मैं पन को समाप्त करो। यह सूक्ष्म मैं पन है। अलौकिक जीवन में यह मैं पन दर्शनीय मूर्त नहीं बनने देता। **तो दादियां क्या समझती हो?** परिवर्तन हो सकता है? **तीनों पाण्डव (निर्वैर भाई, रमेश भाई, बृजमोहन भाई) बताओ।** विशेष हो ना तीन। तीनों बताओ हो सकता है? हो सकता है? हो सकता है? अच्छा - अभी इसके कमाण्डर बनना और बात में कमाण्डर नहीं बनना। परिवर्तन में कमाण्डर बनना। मधुबन वाले बनेंगे? बनेंगे? **मधुबन वाले हाथ उठाओ।** अच्छा - बनेंगे? **बॉम्बे वाले हाथ उठाओ,** योगिनी भी बैठी है। (योगिनी बहन पार्ला) बॉम्बे वाले बनेंगे? अगर बनेंगे तो हाथ हिलाओ। अच्छा **दिल्ली वाले हाथ उठाओ।** तो दिल्ली वाले करेंगे? टीचर्स बताओ। देखना। **हर मास बापदादा रिपोर्ट लेंगे।** हिम्मत है ना? मुबारक हो। अच्छा, **इन्दौर वाले हाथ उठाओ। इन्दौर की टीचर्स हाथ उठाओ।** तो टीचर्स करेंगी? इन्दौर करेगा? हाथ हिलाओ। सारे हाथ नहीं हिले। करेंगे, करायेंगे? दादियां देखना। देख रहे हैं टी.वी. में। **गुजरात हाथ उठाओ।** गुजरात करेगा? हाथ हिलाना तो सहज है। अभी मन को हिलाना है। क्यों, आपको तरस नहीं आता, इतना दुःख देख करके? अभी परिवर्तन हो तो अच्छा है ना? **तो अभी प्रत्यक्षता का प्लैन है - प्रैक्टिकल जीवन।** बाकी प्रोग्राम करते हो, यह तो बिजी रहने के लिए बहुत अच्छा है लेकिन प्रत्यक्षता होगी आपके चलन और चेहरे से। **और भी कोई ज़ोन रह गया? यू.पी. वाले हाथ उठाओ।** यू.पी. थोड़े हैं। अच्छा यू.पी. करेंगे? **महाराष्ट्र वाले हाथ उठाओ।** लम्बा उठाओ। अच्छा। महाराष्ट्र करेगा? मुबारक हो। **राजस्थान उठाओ।** टीचर्स हाथ हिलाओ। **कर्नाटक उठाओ।** अच्छा - कर्नाटक करेगा? **आन्ध्र प्रदेश हाथ उठाओ।** चलो यह चिटचैट की। **डबल विदेशी हाथ उठाओ।** जयन्ती कहाँ है? करेंगे डबल विदेशी? अभी देखो सभा के बीच में कहा है। सभी ने हिम्मत बहुत अच्छी दिखाई, इसके लिए पदमगुणा मुबारक हो। **बाहर में भी सुन रहे हैं, अपने देशों में भी सुन रहे हैं, वह भी हाथ उठा रहे हैं।** वैसे भी देखो जो श्रेष्ठ आत्मार्थ होती हैं उन्हीं के हर वचन को सत वचन कहा जाता है। कहते हैं ना सत वचन महाराज। तो आप तो महा महाराज हो। आप सबका हर वचन जो भी सुने वह दिल में अनुभव करे सत वचन है।

(१५-१२-२००३)

## मुझे हे अर्जुन बनना है

आज के बापदादा के बोल का एक शब्द नहीं भूलना, वह कौन सा? **परिवर्तन**। मुझे बदलना है। दूसरे को बदलकर नहीं बदलना है, मुझे बदल के औरों को बदलाना है। दूसरा बदले तो मैं बदलूँ, नहीं। मुझे निमित्त बनना है। **मुझे हे अर्जुन बनना है** तब ब्रह्मा बाप समान नम्बरवन लेंगे। **(पीछे वाले हाथ उठाओ)** पीछे वालों को बापदादा पहला नम्बर यादप्यार दे रहे हैं। अच्छा। (१५-१२-२००३)

## सभी ने बापदादा से वायदा किया है कि हम समान बनेंगे

तो इस वर्ष क्या विशेष अटेन्शन देना है? अपने-अपने जमा का खाता चेक करो। चेकर भी बनो, मेकर भी बनो क्योंकि समय की समीपता के नज़ारे देख रहे हो। और सभी ने बापदादा से वायदा किया है कि हम समान बनेंगे। वायदा किया है ना? जिन्होंने वायदा किया है, वह **हाथ उठाओ**। किया है पक्का? कि परसेन्टेज़ में? (३१-१२-२००३)

## आत्मा का पाठ पक्का किया है

यूथ ग्रुप ने लक्ष्य रखा है कि हम सोल कान्सेसनेस, आत्म-अभिमानी ज्यादा में ज्यादा रहेंगे। आत्मा का पाठ पक्का किया है। किया है पक्का? **हाथ हिलाओ**। मधुबन तक रहेगा या वहाँ भी रहेगा? बच्ची ने सुनाया तो बापदादा ने पहले-पहले छोटे बच्चों की बोर्डिंग में भी आत्मा का पाठ पक्का कराया था, इन्होंने भी लक्ष्य रखा है कि बाडीकान्सेस नहीं होंगे, सोलकान्सेसनेस में रहेंगे। पक्का है ना? तो कैसे पता पड़ेगा कि पक्का है या कच्चा है? टीचर्स रिपोर्ट लिखेंगे? हर मास की चारों ओर की रिपोर्ट अपने पास मंगाओ और फिर वह रिपोर्ट मधुबन में भेजो। दादी दीदी के नाम से नहीं भेजना, उन्हीं को काम बहुत होता है। आफिस में भेजना। और जब भी कोई समाचार का लेटर भेजते हो तो उसमें ऊपर से लिखो - इस डिपार्टमेंट के लिए यह समाचार है। यूथ रिजल्ट। तो पता पड़ेगा कि कहाँ तक प्रैक्टिकल में लाया है। (३१-१२-२००३)

## कोई भी बात हो समा देना

जितनी टीचर्स हैं, जितने सेवा में नम्बरवन हो, वन हो गया ना। इतना ही निर्विघ्न में भी नम्बरवन। इस वर्ष सेवा का गोल्डन चांस मिला है, आपकी सेवा में नया वर्ष शुरू हो जायेगा। तो यह नवीनता करके गुजरात दिखाना। पूरा साल सारा गुजरात निर्विघ्न, नम्बरवन। हो सकता है? तो बापदादा सभी ज़ोन को आपका एक्जैम्पुल देंगे। बड़ा भी है और निर्विघ्न भी है। दोनों में नम्बरवन। ठीक है? **सभी टीचर्स ने हाथ उठाया?** फिर से उठाओ। सिर्फ हाथ नहीं उठाना, मन को उड़ाना। हाथ मन सहित है ना! ठीक है? फिर तो मुबारक है। इनएडवांस मुबारक और दुआयें हैं। दादियों की भी दुआयें हैं। **देखो जनक बच्ची भी दुआयें दे रही है, बेड पर बैठकर भी दुआयें दे रही है।** कमाल दिखाना। कोई भी बात हो समा देना। अन्दर मन में बापदादा को दे करके समा देना। एक - सहनशक्ति, दूसरी - समाने की शक्ति, अगर यह दोनों विशेष शक्तियां आपमें हैं तो पास विद आनर हो जायेंगी। इसको इमर्ज रखना। (३१-१२-२००३)

## आपके दर्पण में बापदादा दिखाई दे। तो ऐसा विचित्र दर्पण बापदादा को गिफ्ट में दो

अच्छा। अभी सभी क्या करेंगे? बापदादा को नये वर्ष की कोई गिफ्ट देंगे या नहीं? नये वर्ष में क्या करते हो? एक दो को गिफ्ट देते हो ना। एक कार्ड देते हैं, एक गिफ्ट देते हैं। तो बापदादा को कार्ड नहीं चाहिए, रिकार्ड चाहिए। सब बच्चों का रिकार्ड नम्बरवन हो, यह रिकार्ड चाहिए। निर्विघ्न हो, अभी यह कोई-कोई विघ्न की बातें सुनते हैं ना, तो बापदादा को एक हंसी का खेल याद आता है। मालूम है कौन सा हंसी का खेल है? वह खेल है - बूढ़े-बूढ़े गुड़ियों का खेल कर रहे हैं। हैं बूढ़े लेकिन खेल करते हैं गुड़ियों का, तो हंसी का खेल है ना। तो अभी जो छोटी-छोटी बातें सुनते हैं, देखते हैं ना तो ऐसे ही लगता है, वानप्रस्थ अवस्था वाले और बातें कितनी छोटी हैं! तो यह रिकार्ड बाप को अच्छा नहीं लगता। इसके बजाए, कार्ड के बजाए रिकार्ड दो - निर्विघ्न, छोटी बातें समाप्त। बड़े को छोटा बनाना सीखो और छोटी को खत्म करना सीखो। बापदादा एक-एक बच्चे का चेहरा, बापदादा का मुखड़ा देखने का दर्पण बनाने चाहते हैं। आपके दर्पण में बापदादा दिखाई दे। तो ऐसा विचित्र दर्पण बापदादा को गिफ्ट में दो। दुनिया में तो ऐसा कोई दर्पण है ही नहीं जिसमें परमात्मा दिखाई दे। तो आप इस नये वर्ष की ऐसी गिफ्ट दो जो विचित्र दर्पण बन जाओ। जो भी देखे, जो भी सुने तो उसको बापदादा ही दिखाई दे, सुनाई दे। बाप का आवाज सुनाई दे। तो सौगात देंगे? देंगे? जो देने का दृढ़ संकल्प करते हैं, वह **हाथ उठाओ**। **दृढ़ संकल्प का हाथ उठाओ**। **डबल फारेनर्स भी उठा रहे हैं। सिन्धी ग्रुप भी उठा रहा है। सोच के उठा रहे हैं।** सिन्धी ग्रुप सोच के उठा रहे हो? सिन्धी ग्रुप उठो। तो बापदादा को गिफ्ट देंगे? अगर देंगे तो बड़ा हाथ उठाओ। अच्छा। सभी ने उठाया है। देखना, रिपोर्ट मिल जायेगी। रिपोर्ट मिलेगी ना! आपही रिपोर्ट

लिखना। हर मास में दो अक्षर लिखना - प्रॉमिस ओ.के.। जो प्रॉमिस किया है वह ओ.के. है। कार्ड में ही लिखना, ज्यादा लिफाफा नहीं भेजना, खर्चा नहीं करना, कार्ड में ही भेजना। ठीक है ना। **कांध तो हिलाओ।** (३१-१२-२००३)

## स्वराज्य अधिकारी हो

बापदादा कहते हैं - बापदादा ने हर एक बच्चे को एक विचित्र दर्पण दिया है, वह दर्पण कौन सा है? वर्तमान समय आप स्वराज्य अधिकारी हो ना! हो? स्वराज्य अधिकारी हो? हो तो हाथ उठाओ। स्व-राज्य, अधिकारी हो? अच्छा। कोई-कोई नहीं उठा रहे हैं। थोड़ा-थोड़ा हैं क्या? अच्छा। सभी स्वराज्य अधिकारी हो, मुबारक हो। तो **स्वराज्य अधिकार का चार्ट आपके लिए भविष्य पद की शक्ति दिखाने का दर्पण है।** (१६-०१-२००४)

## सारे विश्व की आत्माओं को आज आपके सकाश की आवश्यकता है

सारे विश्व की आत्माओं के निमित्त हैं, यह स्मृति रहती है? सारे विश्व की आत्माओं को आज आपके सकाश की आवश्यकता है। ऐसे बेहद के विश्व की पूर्वज आत्मा अपने को अनुभव करते हो? विश्व की सेवा याद आती है वा अपने सेन्टर्स की सेवा याद आती है? आज आत्मार्थ आप पूर्वज देव आत्माओं को पुकार रही हैं। हर एक अपने-अपने भिन्न-भिन्न देवियां वा देवताओं को पुकार रहे हैं - आओ, क्षमा करो, कृपा करो। तो भक्तों का आवाज सुनने आता है? आता है सुनने या नहीं? कोई भी धर्म की आत्मार्थें हैं, जब उनसे मिलते हो तो अपने को सर्व आत्माओं के पूर्वज समझकर मिलते हो? ऐसे अनुभव होता है कि यह भी हम पूर्वज की ही टाल-टालियां हैं! इन्हों को भी सकाश देने वाले आप पूर्वज हो। अपने कल्प वृक्ष का चित्र सामने लाओ, अपने को देखो आपका स्थान कहाँ है! जड़ में भी आप हो, तना भी आप हो। साथ में परमधाम में भी देखो आप पूर्वज आत्माओं का स्थान बाप के साथ समीप का है। जानते हो ना! इसी नशे से कोई भी आत्मा से मिलते हो तो हर धर्म की आत्मा आपको यह हमारे हैं, अपने हैं, उस दृष्टि से देखते हैं। अगर उस पूर्वज के नशे से, स्मृति से, वृत्ति से, दृष्टि से मिलते हो, तो उन्हों को भी अपनेपन का आभास होता है क्योंकि आप सर्व के पूर्वज हो, सबके हो। ऐसी स्मृति से सेवा करने से हर आत्मा अनुभव करेगी कि यह हमारे ही पूर्वज वा ईष्ट फिर से हमें मिल गये। फिर पूज्य भी देखो कितनी बड़ी पूजा है, कोई भी धर्मात्मा, महात्मा की ऐसी आप देवी-देवताओं के समान विधि-पूर्वक पूजा नहीं होती। पूज्य बनते हैं लेकिन तुम्हारे जैसी विधि-पूर्वक पूजा नहीं होती। गायन भी देखो कितना विधि-पूर्वक कीर्तन करते हैं, आरती करते हैं। ऐसे पूज्य आप पूर्वज ही बनते हो। तो अपने को ऐसे समझते हो? ऐसा नशा है? है नशा? जो समझते हैं हम पूर्वज आत्मार्थें हैं, यह नशा रहता है, यह स्मृति रहती है वह **हाथ उठाओ।** रहती है? अच्छा। रहती है वह तो हाथ उठाया? बहुत अच्छा। अभी दूसरा क्वेश्चन कौन सा होता है? सदा रहता है? (०२-०२-२००४)

## अपोजीशन ही पोजीशन तक पहुंचाती है

हर समय चेक करो - मुझे देव आत्मा, ब्राह्मण आत्मा का श्रेष्ठ कर्तव्य, श्रेष्ठ सेवा क्या है? **“दुआयें देना और दुआयें लेना।”** आपके जड़ चित्र क्या सेवा करते हैं? कैसी भी आत्मा हो लेकिन दुआयें लेने जाते, दुआयें लेकर आते। और कोई भी अगर पुरुषार्थ में मेहनत समझते हैं तो सबसे सहज पुरुषार्थ है, सारा दिन दृष्टि, वृत्ति, बोल, भावना सबसे दुआयें दो, दुआयें लो। आपका टाइल है, वरदान ही है महा-दानी, सेवा करते, कार्य में सम्बन्ध-सम्पर्क में आते सिर्फ यही कार्य करो - दुआयें दो और दुआयें लो। यह मुश्किल है क्या? कि सहज है? जो समझते हैं सहज है, वह **हाथ उठाओ।** कोई आपका आपोजीशन करे तो? तो भी दुआ देंगे? देंगे? इतनी दुआओं का स्टॉक है आपके पास? आपोजीशन तो होगी क्योंकि अपोजीशन ही पोजीशन तक पहुंचाती है। देखो, सबसे ज्यादा आपोजीशन ब्रह्मा बाप की हुई। हुई ना? और पोजीशन किसने नम्बरवन पाई? ब्रह्मा ने पाई ना! कुछ भी हो लेकिन मुझे ब्रह्मा बाप समान दुआयें देनी हैं। क्या ब्रह्मा बाप के आगे व्यर्थ बोलने, व्यर्थ करने वाले नहीं थे? लेकिन ब्रह्मा बाप ने दुआयें दी, दुआयें ली, समाने की शक्ति रखी। बच्चा है, बदल जायेगा। ऐसे ही आप भी यही वृत्ति दृष्टि रखो - यह कल्प पहले वाले हमारे ही परिवार के, ब्राह्मण परिवार के हैं। मुझे बदल इसको भी बदलना है। यह बदले तो मैं बदलूँ, नहीं। मुझे बदलके बदलना है, मेरी जिम्मेवारी है। तब दुआ निकलेगी और दुआ मिलेगी। (०२-०२-२००४)

## संकल्प में भी दुआओं के बदले और कुछ न हो

पहले भी बापदादा ने कहा था - एक पर-उपकारी बनो और यह तीन पर काट दो। पर दर्शन, पर चिंतन, परमत् अर्थात् कुसंग, पर का फालतू संग। पर-उपकारी बनो तब ही दुआयें मिलेंगी और दुआयें देंगे। कोई कुछ भी दे लेकिन आप दुआयें दो। इतनी हिम्मत है? है हिम्मत? तो बापदादा चारों ओर के सर्व सेन्टर्स वाले बच्चों को कहते हैं - अगर आप सब बच्चों ने हिम्मत रखी, कोई कुछ भी दे लेकिन हमें

दुआयें देनी हैं, तो बापदादा इस वर्ष एकस्ट्रा आपको हिम्मत के, उमंग के कारण मदद देंगे। एकस्ट्रा मदद देंगे। लेकिन दुआयें देंगे तो। मिक्स नहीं करना। बापदादा के पास तो सारा रिकार्ड आता है ना! संकल्प में भी दुआओं के बदले और कुछ न हो। हिम्मत है? है तो **हाथ उठाओ**। करना पड़ेगा। सिर्फ हाथ नहीं उठाना। करना पड़ेगा। करेंगे? मधुबन वाले, टीचर्स करेंगे? अच्छा, एकस्ट्रा मार्क्स जमा करेंगे? मुबारक हो।  
(०२-०२-२००४)

## एडवांस स्टेज और एडवांस पार्टी का पार्ट, जब दोनों मिलें तब तो समाप्ति होगी

बापदादा के पास एडवांस पार्टी बार-बार आती है। वह कहती है कि हमें तो एडवांस पार्टी का पार्ट दिया, वह बजा रहे हैं लेकिन हमारे साथी एडवांस स्टेज क्यों नहीं बनाते? अभी उत्तर क्या दें? क्या उत्तर दें? एडवांस स्टेज और एडवांस पार्टी का पार्ट, जब दोनों मिलें तब तो समाप्ति होगी। तो वह पूछते हैं तो क्या जवाब दें? कितने साल में बनेंगी? सब मना लिया, सिल्वर जुबली, गोल्डन जुबली, डायमण्ड जुबली सब मना लिया। **अभी एडवांस स्टेज सेरीमनी मनाओ**। उसकी डेट फिक्स करो। पाण्डव बताओ, डेट होगी उसकी? पहली लाइन वाले बोलो। डेट फिक्स होगी कि अचानक होगा? क्या होगा? अचानक होगा कि हो जायेगा? बोलो, कुछ बोलो। सोच रहे हैं क्या? निर्वर से पूछ रहे हैं? सेरीमनी होगी या अचानक होगा? आप दादी से पूछ रहे हो? यह दादी को देख रहा है कि दादी कुछ बोले। आप बताओ, रमेश को कहते हैं बताओ? (आखिर तो यह होना ही है) आखिर भी कब? (आप डेट बताओ, उस डेट तक कर लेंगे) अच्छा - बापदादा ने एक साल की एकस्ट्रा डेट दी है। हिम्मत से एकस्ट्रा मदद मिलेगी। यह तो कर सकते हैं ना, यह करके दिखाओ फिर बाप डेट फिक्स करेगा। (आपका डायरेक्शन चाहिए तो इस २००४ को ऐसा मना लेंगे) मतलब यह है कि अभी इतनी तैयारी नहीं है। तो एडवांस पार्टी को अभी एक वर्ष तो रहना पड़ेगा ना। अच्छा।  
(०२-०२-२००४)

## जो निर्भय होकर, निरसंकोच बाप को प्रत्यक्ष करे, दृढ़ता से बोले, अर्थोरिटी से बोले

ऐसा ग्रुप तैयार करो जो निर्भय होकर, निरसंकोच बाप को प्रत्यक्ष करे, दृढ़ता से बोले, अर्थोरिटी से बोले। आजकल के जमाने में स्थूल अर्थोरिटी भी काम में आती है। लौकिक अर्थोरिटी और परमात्म अर्थोरिटी दोनों अर्थोरिटी वाले आवाज फैला सकते हैं। तो ऐसा ग्रुप तैयार करो। चाहे हर वर्ग अपने-अपने वर्ग से तैयार करे, चाहे कोई भी करे लेकिन अभी अर्थोरिटी से बोलने वाले निकालो। जिनके आवाज का, अनुभव का, अर्थोरिटी का प्रभाव पड़े। समझा क्या करना है? चाहे छोटा ग्रुप लाओ लेकिन सभी के सामने तो आये। जो भी वर्ग वाले बैठे हो, वो सभी वर्ग वाले बोलें कि हमारे वर्ग में ऐसे कोई तैयार हैं? कोई ऐसा निकला है, वह हाथ उठाओ। जिस वर्ग में ऐसा कोई निकला है, तैयार है वह **हाथ उठाओ**। है कोई? कोई नहीं। अभी तैयार कर रहे हैं।  
(०२-०२-२००४)

## मुहब्बत में परिवर्तन होते या मेहनत से परिवर्तन होते

तो चेक करना - किसी भी व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ चलन के परिवर्तन करने में खुशी से परिवर्तन करते वा मजबूरी से? मुहब्बत में परिवर्तन होते या मेहनत से परिवर्तन होते? जब आप सभी बच्चों ने जन्म लेते ही अपने जीवन का आक्युपेशन यही बनाया है - विश्व परिवर्तन करने वाले, विश्व परिवर्तक। यह आप सबका, ब्राह्मण जन्म का आक्युपेशन है ना! **है पक्का तो हाथ हिलाओ**। झण्डे हिला रहे हैं, बहुत अच्छा। (सभी के हाथों में शिवबाबा की झण्डियां हैं जो सभी हिला रहे हैं) आज झण्डों का दिन है ना, बहुत अच्छा। लेकिन ऐसे ही झण्डा नहीं हिलाना। ऐसे झण्डा हिलाना तो बहुत सहज है, मन को हिलाना है। मन को परिवर्तन करना है। हिम्मत वाले हो ना। हिम्मत है? बहुत हिम्मत है, अच्छा।  
(१७-०२-२००४)

## बिन्दू बनो, बिन्दू को याद करो और बिन्दू लगाओ, बस

बिन्दी की कमाल है ना। पैसे में भी बिन्दी की कमाल है और श्रेष्ठ आत्मा बनने में भी बिन्दी की कमाल है। और करनकरावनहार भी बिन्दू है। तो सर्व तरफ किसका महत्व हुआ! बिन्दू का ना। बस बिन्दू याद रखो और विस्तार में नहीं जाओ, बिन्दू तो याद कर सकते। बिन्दू बनो, बिन्दू को याद करो और बिन्दू लगाओ, बस। यह है पुरुषार्थ। मेहनत है? या सहज है? जो समझते हैं सहज है वह **हाथ उठाओ**। सहज है तो बिन्दू लगाना पड़ेगा। जब कोई समस्या आती है तब बिन्दू लगाते हो या क्वेश्चन मार्क? क्वेश्चन मार्क नहीं लगाना, बिन्दू लगाना।  
(१७-०२-२००४)



## कल राज्य किया था और कल राज्य करना है - ऐसे स्पष्ट स्मृति है

जो भविष्य राज्य का गायन है - जानते हो ना! एक धर्म, एक राज्य, लॉ एण्ड ऑर्डर, सुख-शान्ति, सम्पत्ति से भरपूर राज्य, याद आता है - कितने बार यह स्वराज्य और विश्व राज्य किया है? याद है कितने बार किया है? क्लीयर याद आता है? कि याद करने से याद आता है? कल राज्य किया था और कल राज्य करना है - ऐसे स्पष्ट स्मृति है? यह स्पष्ट स्मृति उस आत्मा को होगी जो अभी सदा स्वराज्य अधिकारी होगा। तो स्वराज्य अधिकारी हो? सदा हो या कभी-कभी? क्या कहेंगे? सदा स्वराज्य अधिकारी हो? डबल फारेनर्स का टर्न है ना। तो स्वराज्य अधिकारी सदा हो? पाण्डव सदा हैं? सदा शब्द पूछ रहे हैं? क्यों? जब इस एक जन्म में, छोटा सा तो जन्म है, तो इस छोटे से जन्म में अगर सदा स्वराज्य अधिकारी नहीं हैं तो २१ जन्म का सदा स्वराज्य कैसे प्राप्त होगा! २१ जन्म का राज्य अधिकारी बनना है कि कभी-कभी बनना है? क्या मंजूर है? सदा बनना है? सदा? **कांध तो हिलाओ।** (०५-०३-२००४)

## बापदादा तो हर बच्चे का निश्चय देख बलिहार जाते हैं

बापदादा तो हर एक बच्चे को सम्पूर्ण अधिकारी बनाते हैं। बने हैं ना? पक्का? कि बनेंगे या नहीं बनेंगे क्वेश्चन है? कभी-कभी क्वेश्चन उठता है - पता नहीं बनेंगे, नहीं बनेंगे? बनना ही है। पक्का? जिसको बनना ही है वह **हाथ उठाओ।** बनना ही है? अच्छा, यह सब किस माला के मणके बनेंगे? १०८ के? यहाँ तो कितने आये हुए हैं? सभी १०८ में आने हैं? तो यह तो १८०० हैं। तो १०८ की माला को बढ़ायेंगे? अच्छा। १६ हजार तो अच्छा नहीं लगता। १६ हजार में जायेंगे क्या? नहीं जायेंगे ना! यह निश्चय और निश्चित है, ऐसा अनुभव हो। हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेगा। है नशा? आप नहीं बनेंगे तो और कोई नहीं बनेगा ना। आप ही बनने वाले हो ना! बोलो, आप ही हो ना! पाण्डव आप ही बनने वाले हो? अच्छा। अपना दर्पण में साक्षात्कार किया है? बापदादा तो हर बच्चे का निश्चय देख बलिहार जाते हैं। वाह! वाह! हर एक बच्चा वाह! वाह वाह वाले हो ना! वाह! वाह! कि व्हाई। व्हाई तो नहीं? कभी-कभी व्हाई हो जाता? या तो है व्हाई और हाय और तीसरा क्राय। तो आप तो वाह! वाह! वाले हो ना! (०५-०३-२००४)

## बाप को सबसे बढ़िया चीज़ लगती है - सच्चाई

बापदादा को डबल फारेनर्स के ऊपर विशेष फखुर है। क्यों? भारतवासियों ने तो बाप को भारत में बुला लिया। लेकिन डबल फारेनर्स के ऊपर फखुर इसलिए है कि डबल फारेनर्स ने बापदादा को अपने सच्चाई के प्यार के बंधन में बांधा है। मैजारिटी सच्चाई वाले हैं। कोई-कोई छिपाते भी हैं लेकिन मैजारिटी अपनी कमजोरी सच्चाई से बाप के आगे रखते हैं। तो बाप को सबसे बढ़िया चीज़ लगती है - सच्चाई। इसलिए भक्ति में भी कहते हैं गाड इज टुथ। सबसे प्यारी चीज़ सच्चाई है क्योंकि जिसमें सच्चाई होती है उसमें सफाई रहती है। क्लीन और क्लीयर रहता है। इसलिए बापदादा को डबल फारेनर्स के सच्चाई की प्रेम की रस्सी खींचती है। थोड़ा बहुत मिक्स तो होता है, कोई-कोई। लेकिन डबल फारेनर्स अपनी यह सच्चाई की विशेषता कभी नहीं छोड़ना। सत्यता की शक्ति एक लिफ्ट का काम करती है। सबको सच्चाई अच्छी लगती है ना! पाण्डव अच्छी लगती है? ऐसे तो मधुबन वालों को भी अच्छी लगती है। **सभी चारों ओर के मधुबन वाले हाथ उठाओ।** दादी कहती है ना भुजायें हैं। तो **मधुबन, शान्तिवन सब हाथ उठाओ।** बड़ा हाथ उठाओ। मधुबन वालों को सच्चाई अच्छी लगती है? **जिसमें सच्चाई होगी ना, उसको बाप को याद करना बहुत सहज होगा।** क्यों? बाप भी सत्य है ना! तो सत्य बाप की याद जो सत्य है उसको जल्दी आती है। मेहनत नहीं करनी पड़ती है। अगर अभी भी याद में मेहनत लगती है तो समझो कोई न कोई सूक्ष्म संकल्प मात्र, स्वप्न मात्र कोई सच्चाई कम है। जहाँ सच्चाई है वहाँ संकल्प किया बाबा, हज़ूर हाज़िर है। इसलिए बापदादा को सच्चाई बहुत प्रिय है। (०५-०३-२००४)

## आज सिर्फ यह हाथ नहीं उठाना, मन का हाथ उठाना

अभी तो होली मनाने आये हो ना! होली मनाये आये हो, अच्छा। होली के अर्थ को वर्णन किया है ना! तो बापदादा आज विशेष डबल फारेनर्स को कहते हैं, मधुबन वाले साथ में हैं, यह बहुत अच्छा है। मधुबन वालों को भी साथ में कह रहे हैं। जो भी आये हैं, चाहे बॉम्बे से आये हैं, चाहे दिल्ली से आये हो, लेकिन इस समय तो मधुबन निवासी हो। डबल फारेनर्स भी इस समय कहाँ के हो? मधुबन निवासी हो ना! मधुबन निवासी बनना अच्छा है ना! तो सभी बच्चों को चाहे यहाँ सामने बैठे हैं, चाहे अपने अपने चारों तरफ के स्थानों पर बैठे हैं, बापदादा एक परिवर्तन चाहते हैं - अगर हिम्मत हो तो बापदादा बतावे। हिम्मत है? हिम्मत है? हिम्मत है? करना पड़ेगा। ऐसे नहीं हाथ उठा लिया तो हो गया, ऐसा नहीं। हाथ उठाना तो बहुत अच्छा है लेकिन मन का हाथ उठाना। **आज सिर्फ यह हाथ नहीं उठाना, मन का हाथ उठाना।** (०५-०३-२००४)

## क्या आज संस्कार का भी संस्कार कर सकते हैं

बापदादा चाहते हैं - कि जो भी कोई ऐसा संस्कार रहा हुआ है, जिसके कारण संसार परिवर्तन नहीं हो रहा है, तो आज उस कमजोर संस्कार को जलाना अर्थात् संस्कार कर देना। जलाने को भी संस्कार कहते हैं ना। जब मनुष्य मरता है तो कहते हैं संस्कार करना है अर्थात् सदा के लिए खत्म करना है। तो क्या आज संस्कार का भी संस्कार कर सकते हैं? आप कहेंगे कि हम तो नहीं चाहते कि संस्कार आवें, लेकिन आ जाता है, क्या करें? ऐसे सोचते हो? अच्छा। आ जाता है, गलती से। अगर किसको दी हुई चीज़, गलती से आपके पास आ जाए तो क्या करते हो? सम्भाल के अलमारी में रख देते हो? रख देंगे? तो अगर आ भी जाये तो दिल में नहीं रखना क्योंकि दिल में बाप बैठा है ना! तो बाप के साथ अगर वह संस्कार भी रखेंगे, तो अच्छा लगेगा? नहीं लगेगा ना! इसलिए अगर गलती से आ भी जाये, तो दिल से कहना बाबा, बाबा, बाबा, बस। खत्म। बिन्दी लग जायेगी। बाबा क्या है? बिन्दी। तो बिन्दी लग जायेगी। दिल से कहेंगे तो। बाकी ऐसे ही मतलब से याद करेंगे - बाबा ले लो ना, ले लो ना, रखते हैं अपने पास और कहते हैं ले लो ना, ले लो ना। तो कैसे लेंगे? आपकी चीज़ कैसे लेंगे? पहले आप अपनी चीज़ नहीं समझो तब लेंगे। ऐसे थोड़ेही दूसरे की चीज़ ले लेंगे। तो क्या करेंगे? होली मनायेंगे? हो ली, हो ली। अच्छा, जो समझते हैं कि दृढ़ संकल्प कर रहे हैं, वह हाथ उठाओ। आप घड़ी-घड़ी निकाल देंगे ना, तो निकल जायेगी। अन्दर रख नहीं दो, क्या करें, कैसे करें, निकलता नहीं है। यह नहीं, निकालना ही है। तो दृढ़ संकल्प करेंगे? जो करेगा वह मन से हाथ उठाना, बाहर से नहीं उठाना। मन से। (कोई-कोई नहीं उठा रहे हैं) यह नहीं उठा रहे हैं। (सभी ने उठाया) बहुत अच्छा, मुबारक हो, मुबारक हो।

(०५-०३-२००४)

## ठेकेदार हो, जिम्मेवार हो

तो चेक करो - अपनी जिम्मेवारी कहाँ तक निभाई है? आप सबने बापदादा के साथ विश्व परिवर्तन का कार्य करने का ठेका उठाया है। ठेकेदार हो, जिम्मेवार हो। अगर बाप चाहे तो सब कुछ कर सकता है लेकिन बाप का बच्चों से प्यार है, अकेला नहीं करने चाहते, आप सर्व बच्चों को अवतरित होते ही साथ में अवतरित किया है। शिवरात्रि मनाई थी ना! तो किसकी मनाई? सिर्फ बाप-दादा की? आप सबकी भी तो मनाई ना! बाप के आदि से अन्त तक के साथी हो। यह नशा है - आदि से अन्त तक साथी हैं? भगवान के साथी हो। तो बापदादा अभी इस वर्ष की सीजन के अन्त के पार्ट बजाने में यही सब बच्चों से चाहते हैं, बतायें क्या चाहते हैं? करना पड़ेगा। सिर्फ सुनना नहीं पड़ेगा, करना ही होगा। ठीक है टीचर्स? टीचर्स हाथ उठाओ। टीचर्स पंखें भी हिला रही हैं, गर्मी लगती है। अच्छा, सभी टीचर्स करेंगी और करायेंगी? करायेंगी, करेंगी? अच्छा। हवा भी लग रही है, हाथ भी हिला रहे हैं। सीन अच्छी लगती है। बहुत अच्छा। तो बापदादा इस सीजन के समाप्ति समारोह में एक नये प्रकार की दीपमाला मनाने चाहते हैं। समझा! नये प्रकार की दीपमाला मनाने चाहते हैं। तो आप सभी दीपमाला मनाने के लिए तैयार हैं? जो तैयार हैं वह हाथ उठाओ। ऐसे ही हाँ नहीं करना। बापदादा को खुश करने के लिए हाथ नहीं उठाना, दिल से उठाना। अच्छा। बापदादा अपने दिल की आशाओं को सम्पन्न करने के दीप जगो हुए देखने चाहते हैं। तो बापदादा के आशाओं के दीपकों की दीपमाला मनाने चाहते हैं। समझा, कौन सी दीपावली? स्पष्ट हुआ?

(२०-०३-२००४)

## श्रेष्ठाचार का झण्डा पहले हर ब्राह्मण आत्मा के मन में लहराये, तब विश्व में लहरेगा

हर एक आत्मा जितना अपने सूक्ष्म बंधनों को जानते हैं, उतना और नहीं जान सकता है। बापदादा तो जानते हैं क्योंकि बापदादा के पास तो टी.वी. है, मन की टी.वी., बॉडी की नहीं, मन की टी.वी. है। तो क्या अभी जो फिर से सीजन होगी, सीजन तो होगी ना या छुट्टी करें? एक वर्ष छुट्टी करें? नहीं? एक साल तो छुट्टी होनी चाहिए? नहीं होनी चाहिए? पाण्डव एक साल छुट्टी करें? (दादी जी कह रही हैं, मास में १५ दिन की छुट्टी) अच्छा। बहुत अच्छा, सभी कहते हैं, जो कहते हैं छुट्टी नहीं करनी है वह हाथ उठाओ। नहीं करनी है? अच्छा। ऊपर की गैलरी वाले हाथ नहीं हिला रहे हैं। (सारी सभा ने हाथ हिलाया) बहुत अच्छा। बाप तो सदा बच्चों को हाँ जी, हाँ जी करते हैं, ठीक है। अभी बाप को बच्चे कब हाँ जी करेंगे! बाप से तो हाँ जी करा ली, तो बाप कहते हैं, बाप भी अभी एक शर्त डालते हैं, शर्त मंजूर होगी? सभी हाँ जी तो करो। पक्का? थोड़ा भी आनाकानी नहीं करेंगे? अभी सबकी शक्लें टी.वी. में निकालो। अच्छा है। बाप को भी खुशी होती है कि सभी बच्चे हाँ जी, हाँ जी करने वाले हैं। तो बापदादा यही चाहते हैं कि कोई कारण नहीं बताये, यह कारण है, यह कारण है, इसलिए यह बंधन है! समस्या नहीं, समाधान स्वरूप बनना है और साथियों को भी बनाना है क्योंकि समय की हालत को देख रहे हो। भ्रष्टाचार का बोल कितना बढ़ रहा है। भ्रष्टाचार, अत्याचार अति में जा रहा है। तो श्रेष्ठाचार का झण्डा पहले हर ब्राह्मण आत्मा के मन में लहराये, तब विश्व में लहरेगा।

(२०-०३-२००४)

## कोई ऐसा माइक तैयार किया है जो आप माइट बनो और वह माइक बनें

बापदादा ने सुना, जो भी भिन्न-भिन्न वर्ग वाले आये हैं वह एक एक हाथ उठाओ। **स्पोर्ट, एडमिनिस्ट्रेटर, यूथ, आई. टी. ग्रुप, सभी वर्ग वालों से बापदादा ने हाथ उठवाये।** जो भी वर्ग वाले आये हैं, मीटिंग तो की लेकिन बापदादा को हर वर्ग ने अपना सेवा में नम्बरवन आई.पी. सामने नहीं दिखाया है। कौन से वर्ग का कोई माइक तैयार हुआ है, बताओ। हर एक वर्ग का कोई ऐसा माइक तैयार किया है जो आप माइट बनो और वह माइक बनें? किस वर्ग वाले ने किया है? **हाथ उठाओ।** कौन किया है? अभी जो वर्गों का प्रोग्राम होगा, उसमें हर एक वर्ग अपने छोटे माइक ग्रुप को मधुबन में सामने लावे। यह तो कर सकते हैं ना! बापदादा भी देखे तो सही, कौन से बच्चे तैयार हुए हैं। बाप-दादा के आगे नहीं लाना, पहले दादियों के आगे लाओ। फिर वह पास करेंगे फिर बापदादा के सामने लाना। अच्छा है।

(२०-०३-२००४)

## बाप के प्यार के कारण प्यार में मैजारिटी पास हैं

बापदादा ने यह देखा है कि चाहे दूर रहते हैं लेकिन बाप के प्यार के कारण प्यार में मैजारिटी पास हैं। भारत को तो भाग्य है ही लेकिन दूर रहते प्यार में सब पास हैं। अगर बापदादा पूछेगा तो प्यार में परसेन्टेज है क्या? बाप से प्यार की सबजेक्ट में परसेन्टेज है? जो समझते हैं प्यार में १०० परसेन्ट हैं वह हाथ उठाओ। (सभी ने हाथ उठाया) अच्छा - १०० परसेन्ट? भारतवासी नहीं उठा रहे हैं? देखो, भारत को तो सबसे बड़ा भाग्य मिला है कि बाप भारत में ही आये हैं। इसमें बाप को अमेरिका पसन्द नहीं आई, लेकिन भारत पसन्द आया है।

(१५-१०-२००४)

## बापदादा ने सभी बच्चों को एक जैसी सर्व शक्तियां दी हैं

बापदादा ने सभी बच्चों को एक जैसी सर्व शक्तियां दी हैं, मास्टर सर्वशक्तिवान बनाया है। किसको सर्व शक्तिवान, किसको शक्तिवान नहीं बनाया है। आप सब भी अपना स्वमान मास्टर सर्वशक्तिवान कहते हो। तो बापदादा चारों ओर के बच्चों से पूछते हैं, कि हर एक अपने में सर्व शक्तियों का अनुभव करते हैं? सदा सर्व शक्तियों पर अधिकार है? सर्व शक्तियाँ बापदादा का वर्सा है, तो अपने वर्से पर अधिकार है? है अधिकार? टीचर्स बोलो, अधिकार है? सोच के बोलना। पाण्डव अधिकार है? सदा है या कभी-कभी है? जिस समय जिस शक्ति की आवश्यकता है तो आप शक्ति सेना के आर्डर से वह शक्ति हाज़िर हो जाती है? समय पर जी हज़ूर हाज़िर करती है? सोचो, देखो, अधिकारी आर्डर करे और शक्ति जी हज़ूर हाज़िर कहे, जिस भी शक्ति का आह्वान करो, जैसा समय, जैसी परिस्थिति वैसे शक्ति कार्य में लगा सको। ऐसे अधिकारी आत्मार्थे बने हो? क्योंकि बाप ने वर्सा दिया और वर्से को आपने अपना बनाया, अपना बनाया है ना! तो अपने पर अधिकार होता है। जिस समय जिस विधि से आवश्यकता हो, उस समय कार्य में लग जाए। मानो समाने के शक्ति की आपको आवश्यकता है और आर्डर करते हो समाने की शक्ति को, तो आपका आर्डर मान जी हाज़िर हो जाती है? हो जाती है तो कांध हिलाओ, हाथ हिलाओ। कभी-कभी होती है या सदा होती है? समाने की शक्ति हाज़िर होती है लेकिन १० बारी समा लिया और ११ वें बारी थोड़ा नीचे ऊपर होता है? सदा और सहज हाज़िर हो जाए, समय बीतने के बाद नहीं आवे, करने तो यह चाहते थे लेकिन हो गया, यह ऐसा नहीं हो। इसको कहा जाता है सर्व शक्तियों के अधिकारी।

(०२-११-२००४)

## कुमारियां बापदादा के राइट हैण्डस बन सकती हैं

बहुत कुमारियां आई हैं, जितनी भी कुमारियां आई हैं, उनमें से हैण्डस कितने निकलेंगे? कुमारियां बापदादा के राइट हैण्डस बन सकती हैं। गोल्डन चांस है। तो कितनी संख्या है! मालूम है, कितनी कुमारियां हैं। (५-६ सौ) इन्हों का नाम नोट करना और यह रिजल्ट देखना कि इतनी सारी कुमारियों में से राइट हैण्ड कितनी बनीं! हाथ उठाओ, सेन्टर पर रहने वाली नहीं उठाओ। जो राइट हैण्ड बनेंगी वह हाथ उठाओ। इन्हों का वीडियो निकालो। क्योंकि आप लोगों को मालूम है कि सेन्टर खोलने के निमन्त्रण बहुत हैं लेकिन हैण्डस कम हैं। तो आपकी तो मांगनी है। इसलिए कुमारियों को जल्दी से जल्दी सेवा के राइट हैण्ड बनना चाहिए। जो छोटी-छोटी हैं उनकी बात छोड़ो लेकिन जो सेवा कर सकती हैं उन्हों को समय के प्रमाण जल्दी तैयार हो जाना चाहिए। दहेज आपका तैयार है, सेन्टर दहेज है, वर तो है ही और दहेज भी तैयार है। तो तैयारी करो। करेंगी ना! हाँ, बड़ी-बड़ी तो निकल सकती हैं। जो समझती हैं जल्दी से जल्दी निकल सकती हैं, वह हाथ उठाओ। देखो, कितनी कुमारियां हाथ उठा रही हैं। वीडियो निकल रहा है। अच्छा - मुबारक हो, इनएडवांस मुबारक हो।

(०२-११-२००४)

## पढ़ाई एक जन्म की, वह भी छोटा सा जन्म और पद की प्राप्ति अनेक जन्म

पढ़ाई एक जन्म की, वह भी छोटा सा जन्म और पद की प्राप्ति अनेक जन्म, और राज्य भी अखण्ड, अटल, निर्विघ्न राज्य। अभी भी स्वराज्य अधिकारी बेफिकर बादशाह हो, हैं? बेफिकर बादशाह बने हो? जो बेफिकर हैं वह हाथ उठाओ। बेफिकर, थोड़ा भी फिकर नहीं है? देखना, जब कोई पपेट शो सामने आता है फिर फिकर होता है? माया का पपेट शो सामने आता है या नहीं? फिर थोड़ा-थोड़ा फिकर होता है? नहीं होता? थोड़ा चिंता, चिंतन चलता है या नहीं चलता है? वैसे श्रेष्ठ भाग्य अभी से बेफिकर बादशाह बनाता है। यह थोड़ी बहुत जो बातें आती हैं वह और ही आगे के लिए अनुभवी, परिपक्व बनाने वाली हैं।

(३०-११-२००४)

## अपने को तैयार करने के लिए लक्ष्य जरूर रखना पड़ेगा

बापदादा के पास दो गुप बार-बार आते हैं, किसलिए आते हैं? दोनों गुप बापदादा को कहते हैं – हम तैयार हैं। एक यह समय, प्रकृति और माया। माया समझ गई है अब हमारा राज्य जाने वाला है। और दूसरा गुप है – एडवांस पार्टी। दोनों गुप डेट पूछ रहे हैं। फॉरेन में तो एक साल पहले डेट फिक्स करते हो ना? और यहाँ ६ मास पहले? भारत में फास्ट जाते हैं, १५ दिन में भी कोई प्रोग्राम की डेट हो जाती है। तो समाप्ति, सम्पन्नता, बाप के समान बनने की डेट कौन सी है? वह बापदादा से पूछते हैं। यह डेट अभी आप ब्राह्मणों को फिक्स करनी है। हो सकती है? डेट फिक्स हो सकती है? पाण्डव बोलो, तीनों ही बोलो। (बापदादा निर्वैर भाई, रमेश भाई, बृजमोहन भाई से पूछ रहे हैं) डेट फिक्स हो सकती है? बोलो - हो सकती है? कि अचानक होनी है? ड्रामा में फिक्स है लेकिन उसको प्रैक्टिकल में लाना है या नहीं? वह क्या? बताओ। होनी है? अचानक होगा? डेट फिक्स नहीं होगी? होगी? पहली लाइन वाले बताओ होगी? जो कहते हैं ड्रामा को प्रैक्टिकल में लाने के लिए मन में डेट का संकल्प करना पड़ेगा, वह हाथ उठाओ। करना पड़ेगा? यह नहीं उठा रहे हैं? अचानक होगी? डेट फिक्स कर सकते हैं? पीछे वालों ने समझ लिया? अचानक होना है यह राइट है लेकिन अपने को तैयार करने के लिए लक्ष्य जरूर रखना पड़ेगा। बिना लक्ष्य के सम्पन्न बनने में अलबेलापन आ जाता है। आप देखो जब डेट फिक्स करते हो तभी सफलता मिलती है। कोई भी प्रोग्राम की डेट फिक्स करते हो ना? बनना ही है, यह संकल्प तो करना पड़ेगा ना! या नहीं, ड्रामा में आपेही हो जायेगा? क्या समझते हो? पहली लाइन वाले बताओ। प्रेम (देहरादून) सुनाओ। करना पड़ेगा, करना पड़ेगा? जयन्ती बोलो, करना पड़ेगा। वह कब होगी? अन्त में होगी जब समय आ जायेगा! समय सम्पन्न बनायेगा या आप समय को समीप लायेंगे?

(३०-११-२००४)

## अब साक्षात्कार मूर्त बनो। साक्षात् ब्रह्मा बाप बनो

अभी बापदादा विशेष निमित्त बच्चों को यह होमवर्क दे रहा है कि अभी ब्रह्मा बाप समान अव्यक्त रूप दिखाई दे। चलन और चेहरे से कम से कम १०८ माला के दाने तो दिखाई दें। बापदादा नाम नहीं चाहते हैं, नाम नहीं बताते हैं – १०८ कौन हैं लेकिन उनकी चलन और चेहरा स्वतः ही प्रत्यक्ष हो। यह होमवर्क बापदादा निमित्त बच्चों को विशेष दे रहा है। हो सकता है? अच्छा कितना समय चाहिए? ऐसे नहीं समझना कि जो पीछे आये हैं, टाइम की बात नहीं है, कोई समझे हमको तो थोड़ा वर्ष ही हुआ है। कोई भी लास्ट सो फास्ट और फास्ट सो फर्स्ट जा सकता है, यह भी बापदादा की चैलेन्ज है, कर सकते हो। कोई भी कर सकते हो। लास्ट वाला भी हो सकता है। सिर्फ लक्ष्य पक्का रखो - करना ही है, होना ही है। डबल फॉरेनर्स हाथ उठाओ। तो डबल फॉरेनर्स क्या करेंगे? डबल चांस लेंगे ना। बापदादा नाम नहीं एनाउन्स करेगा लेकिन उनका चेहरा बतायेगा – यह हैं। हिम्मत है? पहली लाइन को बापदादा देख रहा है। है, हिम्मत है? अगर हिम्मत है तो हाथ उठाओ। हिम्मत है तो? पीछे वाले भी उठा सकते हैं। जो ओटे सो अर्जुन। अच्छा – बापदादा रिजल्ट देखने के लिए, क्या-क्या पुरुषार्थ कर रहे हैं, कौन-कौन कर रहा है वह रिजल्ट देखने के लिए ६ मास दे रहे हैं। ६ मास रिजल्ट देखेंगे फिर फाइनल करेंगे। ठीक है? क्योंकि देखा जाता है कि अभी समय की रफ्तार तेज जा रही है, रचना को तेज नहीं जाना चाहिए, रचना को तेज होना चाहिए। अभी थोड़ा फास्ट करो, उड़ो अभी। चल रहे हैं नहीं, उड़ रहे हैं। जवाब में बहुत अच्छे जवाब देते हैं कि हम ही तो हैं ना! और कौन होगा! बापदादा खुश होते हैं। लेकिन अब लोग (आत्मायें) जो हैं ना, वह कुछ देखने चाहते हैं। बापदादा को याद है जब आदि में आप बच्चे सेवा में निकले थे तो बच्चों से भी साक्षात्कार होते थे, अभी सेवा और स्वरूप दोनों तरफ अटेन्शन चाहिए। तो क्या सुना! अब साक्षात्कार मूर्त बनो। साक्षात् ब्रह्मा बाप बनो। अच्छा।

(३०-११-२००४)

## चलन और चेहरे पर कोई न कोई गुण या शक्ति का बीड़ा उठाये

टीचर्स हाथ उठाओ। अच्छा चांस हैं। सेवा की सेवा और सेवा के पहले मेवा। संगठन का और बाप से मिलन का मजा लेना। तो सेवा और मेवा दोनों मिल गया। अच्छा है। अभी कोई नया प्लैन बनाया? जो भी चाहे महिलाओं का है, चाहे किसी भी वर्ग के गुप्स बने हुए हैं। तो हर एक गुप कुछ विशेष प्रैक्टिकल चलन और चेहरे पर कोई न कोई गुण या शक्ति का बीड़ा उठाये तो हम यह गुप, महिला गुप इस गुण या शक्ति का प्रैक्टिकल प्रत्यक्ष रूप में लायेंगे। ऐसे हर एक वर्ग वाले कोई न कोई अपने विशेष फिक्स करे और उसकी आपस में जैसे सर्विस की रिजल्ट नोट करते हो ना, ऐसे आपस में चाहे लिखापढ़ी हो, चाहे संगठन हो, यह भी चेक करते रहें। तो पहले आप लोग करके दिखाना। महिला विंग करके दिखाओ। ठीक है ना। हर एक विंग को कुछ न कुछ अपना प्लैन बनाना है और समय फिक्स करे कि इतने समय में इतनी परसेन्टेज प्रैक्टिकल में लानी है। फिर जो बापदादा चाहते हैं ना, चलन और चित्र पर आवे, वह आ जायेगा। तो यह प्लैन बना करके बापदादा को देना। हर एक विंग क्या

करेगा? सेवा का प्लैन जैसे नोट करते हो ना, वैसे यह करके देना। ठीक है ना! करके देना। अच्छा है छोटा-छोटा संगठन कमाल कर सकता है। ठीक है। क्या समझती हो टीचर्स? कर सकते हैं? कर सकते हैं? तो प्लैन बनाना। अच्छा। मुबारक हो सेवा की। (३०-११-२००४)

## बेफिक्र बनने की विधि बहुत सहज है-बोझ मेरे को दे दो, आप लाइट हो जाओ, डबल लाइट

बापदादा ऐसे बेफिक्र बादशाह बच्चों को देख खुश होते हैं। वाह मेरे बेफिक्र बादशाह वाह! वाह! वाह! हो ना! हाथ उठाओ जो बेफिक्र हैं। बेफिक्र? फिक्र नहीं आता? कभी तो आता है? नहीं? अच्छा है। बेफिक्र बनने की विधि बहुत सहज है, मुश्किल नहीं है। सिर्फ एक शब्द की मात्रा का थोड़ा सा अन्तर है। वह शब्द है - मेरे को तेरे में परिवर्तन करो। मेरा नहीं तेरा, तो हिन्दी भाषा में मेरा भी लिखो और तेरा भी लिखो तो क्या फर्क होता है, मे और ते का? लेकिन फर्क इतना हो जाता है। तो आप सब मेरे-मेरे वाले हो या तेरे-तेरे वाले हो? मेरे को तेरे में परिवर्तन कर लिया? नहीं किया हो तो कर लो। मेरा-मेरा अर्थात् दास बनने वाला, उदास बनने वाला। माया के दास बन जाते हैं ना तो उदास तो होंगे ना! उदासी अर्थात् माया के दासी बनने वाले। तो आप मायाजीत हो, माया के दास नहीं। तो उदासी आती है? कभी-कभी टेस्ट कर लेते हो, क्योंकि ६३ जन्म उदास रहने का अभ्यास है ना! तो कभी-कभी वह इमर्ज हो जाती है। इसलिए बापदादा ने क्या कहा? हर एक बच्चा बेफिक्र बादशाह है। अगर अभी भी कहाँ कोने में कोई फिक्र रख दिया हो तो दे दो। अपने पास बोझ क्यों रखते हो? बोझ रखने की आदत पड़ गई है? जब बाप कहते हैं बोझ मेरे को दे दो, आप लाइट हो जाओ, डबल लाइट। डबल लाइट अच्छा या बोझ अच्छा? तो अच्छी तरह से चेक करना। अमृतवेले जब उठो तो चेक करना कि विशेष वर्तमान समय सबकान्सेस में भी कोई बोझ तो नहीं है? सबकान्सेस तो क्या स्वप्न मात्र भी बोझ का अनुभव नहीं हो। पसन्द तो डबल लाइट है ना! तो विशेष यह होम वर्क दे रहे हैं, अमृतवेले चेक करना। चेक करना तो आता है ना, लेकिन चेक के साथ, सिर्फ चेक नहीं करना चेंज भी करना। मेरे को तेरे में चेंज कर देना। मेरा, तेरा। तो चेक करो और चेंज करो क्योंकि बापदादा बार-बार सुना रहे हैं - समय और स्वयं दोनों को देखो। समय की रफ्तार भी देखो और स्वयं की रफ्तार भी देखो। फिर यह नहीं कहना कि हमको तो पता ही नहीं था, समय इतना तेज चला गया। कई बच्चे समझते हैं कि अभी थोड़ा ढीला पुरुषार्थ अगर है भी तो अन्त में तेज कर लेंगे। लेकिन बहुतकाल का अभ्यास अन्त में सहयोगी बनेगा। बादशाह बनके तो देखो। बने हैं लेकिन कोई बने हैं, कोई नहीं बने हैं। चल रहे हैं, कर रहे हैं, सम्पन्न हो जायेंगे...। अब चलना नहीं है, करना नहीं है, उड़ना है। अभी उड़ने की रफ्तार चाहिए। पंख तो मिल गये हैं ना! उमंग-उत्साह और हिम्मत के पंख सबको मिले हैं और बाप का वरदान भी है, याद है वरदान? हिम्मत का एक कदम आपका और हजार कदम मदद बाप की, क्योंकि बाप का बच्चों से दिल का प्यार है। तो प्यार वाले बच्चों की बाप मेहनत नहीं देख सकते। मुहब्बत में रहो तो मेहनत समाप्त हो जायेगी। मेहनत अच्छी लगती है क्या? थक तो गये हो। ६३ जन्म भटकते, भटकते मेहनत करते थक गये थे और बाप ने अपनी मुहब्बत से भटकने के बजाए तीन तख्त के मालिक बना दिया। तीन तख्त जानते हो? जानते क्या हो लेकिन तख्त निवासी हो। अकालतख्त निवासी भी हो, बापदादा के दिलतख्त नशीन भी हो और भविष्य विश्व राज्य के तख्त नशीन भी हो। तो बापदादा सभी बच्चों को तख्त नशीन देख रहे हैं। ऐसा परमात्म दिलतख्त सारे कल्प में अनुभव नहीं कर सकेंगे। क्या समझते हैं पाण्डव? बादशाह हैं? हाथ उठा रहे हैं। तख्त नहीं छोड़ना। देह भान में आये अर्थात् मिट्टी में आ गये। यह देह मिट्टी है। तख्त नशीन बने तो बादशाह बने। (१५-१२-२००४)

## अगर ज़रा भी डिफेक्ट रहा तो परफेक्ट नहीं बन सकते

सबसे सहज है पुरुषार्थ में “दुआयें दो और दुआयें लो।” सुख दो और सुख लो, न दुःख दो न दुःख लो। ऐसे नहीं कि दुःख दिया नहीं लेकिन ले लो तो भी दुःखी तो होंगे ना! तो दुआयें दो, सुख दो और सुख लो। दुआयें देना आता है? आता है? लेना भी आता है? जिसको दुआयें लेना और देना आता है वह हाथ उठाओ। अच्छा - सभी को आता है? अच्छा - डबल फॉरेनर्स को भी आता है? मुबारक है, देने आता है लेने आता है तो मुबारक है। सभी को मुबारक है, अगर लेने भी आता और देने भी आता फिर और चाहिए क्या। दुआयें लेते जाओ दुआयें देते जाओ, सम्पन्न हो जायेंगे। कोई बद-दुआ देवे तो क्या करेंगे? लेंगे? बद-दुआ आपको देता है तो आप क्या करेंगे? लेंगे? अगर बद-दुआ मानो ले लिया तो आपके अन्दर स्वच्छता रही? बद-दुआ तो खराब चीज़ है ना! आपने ले ली, अपने अन्दर स्वीकार कर ली तो आपका अन्दर स्वच्छ तो नहीं रहा ना! अगर ज़रा भी डिफेक्ट रहा तो परफेक्ट नहीं बन सकते। अगर खराब चीज़ कोई देवे तो क्या आप ले लेंगे? कोई बहुत सुन्दर फल हो लेकिन आपको खराब हुआ दे देवे, फल तो बढ़िया है फिर ले लेंगे? नहीं लेंगे ना कि कहेंगे अच्छा तो है, चलो दिया है तो ले लें। कभी भी कोई बद-दुआ दे तो आप मन में अन्दर धारण नहीं करो। समझ में आता है यह बद-दुआ है लेकिन बद-दुआ अन्दर धारण नहीं करो, नहीं तो डिफेक्ट हो जायेगा। तो अभी यह वर्ष, अभी थोड़े दिन पड़े हैं पुराने वर्ष में लेकिन अपने दिल में दृढ़ संकल्प करो, अभी भी किसकी बद-दुआ मन में हो तो निकाल दो और कल से दुआ देंगे, दुआ लेंगे। मंजूर है? पसन्द है? पसन्द है या करना ही है? पसन्द तो है लेकिन जो समझते हैं करना ही है, कुछ भी हो जाये, लेकिन करना ही है, वह हाथ उठाओ। करना ही है। (१५-१२-२००४)

## एक बद-दुआ के प्रभाव को १० गुणा दुआयें देके हल्का कर देना

जो स्नेही सहयोगी आज आये हैं वह हाथ उठाओ। तो जो स्नेही सहयोगी आये हैं, बापदादा उन्हीं को मुबारक दे रहे हैं क्योंकि सहयोगी तो हो, स्नेही भी हो लेकिन आज एक और कदम उठाके बाप के घर में वा अपने घर में आये हो, तो अपने घर में आने की मुबारक है। अच्छा जो स्नेही सहयोगी आये हैं वह भी समझते हैं कि दुआयें देंगे और लेंगे? समझते हो? हिम्मत रखते हो? जो स्नेही सहयोगी हिम्मत रखते हैं, मदद मिलेगी, लम्बा हाथ उठाओ। अच्छा। फिर तो आप भी सम्पन्न हो जायेंगे, मुबारक हो। अच्छा जो गाडली स्टूडेंट रेग्युलर हैं, चाहे ब्राह्मण जीवन में बापदादा से मिलने पहली बार आये हैं लेकिन अपने को ब्राह्मण समझते हैं, रेग्युलर स्टूडेंट समझते हैं वह अगर समझते हैं कि करना ही है, वह हाथ उठाओ। दुआ देंगे, दुआ लेंगे? करेंगे? टीचर्स उठा रही हैं? यह कैबिन वाले नहीं उठा रहे हैं। यह समझते हैं हम तो देते ही हैं। अभी करना ही है। कुछ भी हो जाए, हिम्मत रखो। दृढ़ संकल्प रखो। अगर मानो कभी बद-दुआ का प्रभाव पड़ भी जावे ना तो १० गुणा दुआयें ज्यादा दे करके उसको खत्म कर देना। एक बद-दुआ के प्रभाव को १० गुणा दुआयें देके हल्का कर देना फिर हिम्मत आ जायेगी।

(१५-१२-२००४)

## एक मास दृढ़ संकल्प की रिजल्ट देखेंगे

अच्छा - बापदादा की आशा अण्डरलाइन की? जिसने की वह हाथ उठाओ, कर ली। अच्छा। बापदादा ने ६ मास का होम वर्क भी दिया है, याद है? टीचर्स को याद है? लेकिन यह दृढ़ संकल्प की रिजल्ट एक मास की देखेंगे क्योंकि नया वर्ष तो जल्दी शुरू होने वाला है। ६ मास का होम वर्क अपना है, यह एक मास दृढ़ संकल्प की रिजल्ट देखेंगे। ठीक है ना? टीचर्स एक मास ठीक है? पाण्डव ठीक है? अच्छा।

(१५-१२-२००४)

## बाप कहते हैं वाह! वाह! कहो, व्हाई-व्हाई नहीं

डबल फारेनर्स व्हाई-व्हाई कहते हैं? कभी-कभी कह देते हो? जो डबल फारेनर्स कभी भी व्हाई नहीं कहते वह हाथ उठाओ। बहुत थोड़े हैं। अच्छा - भारतवासी जो वाह! वाह! के बजाए क्यों-क्या कहते हैं वह हाथ उठाओ। क्यों-क्या कहते हो? किसने छुट्टी दी है आपको? संस्कारों ने? पुराने संस्कारों ने आपको व्हाई की छुट्टी दे दी है और बाप कहते हैं वाह! वाह! कहो। व्हाई-व्हाई नहीं। तो अभी नये वर्ष में क्या करेंगे? वाह! वाह! करेंगे? या कभी-कभी व्हाई कहने की छुट्टी दे दें? व्हाई अच्छा नहीं है। जैसे वाई हो जाती है ना, तो खराब हो जाता है ना। तो व्हाई वाई है, यह नहीं करो। वाह! वाह! कितना अच्छा लगता है। हाँ बोलो, वाह! वाह! वाह! अच्छा - तो दूरदेश में सुन रहे हैं, देख रहे हैं - भारत में भी विदेश में भी, उन बच्चों से भी पूछते हैं वाह! वाह! करते हो या व्हाई, व्हाई करते हो? अभी विदाई का दिन है ना! आज वर्ष के विदाई का लास्ट डे है। तो सभी संकल्प करो - व्हाई नहीं कहेंगे। सोचेंगे भी नहीं। क्वेश्चन मार्क नहीं, आश्चर्य की मात्रा नहीं, बिन्दी। क्वेश्चन मार्क लिखो, कितना टेढ़ा है और बिन्दी कितनी सहज है। बस नयनों में बाप बिन्दू को समा दो। जैसे नयनों में देखने की बिन्दी समाई हुई है ना! ऐसे ही सदा नयनों में बिन्दू बाप को समा लो।

(३१-१२-२००४)

## बेहद की वैराग्य वृत्ति है गेट खोलने की चाबी

जब बिल्कुल बेहद के वैरागी बन जायेंगे, वृत्ति में भी वैरागी, दृष्टि में भी बेहद के वैरागी, सम्बन्ध-सम्पर्क में, सेवा में सबमें बेहद के वैरागी... तभी मुक्तिधाम का दरवाजा खुलेगा। अभी तो जो आत्मायें आ रही हैं फिर जन्म लेंगी, फिर दुःखी होंगी। अब मुक्तिधाम का गेट खोलने के निमित्त तो आप हो ना? ब्रह्मा बाप के साथी हो ना! तो बेहद की वैराग्य वृत्ति है गेट खोलने की चाबी। अभी चाबी नहीं लगी है, चाबी तैयार ही नहीं की है। ब्रह्मा बाप भी इन्तजार कर रहा है, एडवांस पार्टी भी इन्तजार कर रही है, प्रकृति भी इन्तजार कर रही है, तंग हो गई है बहुत। माया भी अपने दिन गिनती कर रही है। अभी बोलो, हे मास्टर सर्वशक्तिवान, बोलो क्या करना है? इस वर्ष में कोई नवीनता तो करेंगे ना! नया वर्ष कहते हैं तो नवीनता तो करेंगे ना! अभी बेहद के वैराग्य की, मुक्तिधाम जाने की चाबी तैयार करो। आप सभी को भी तो पहले मुक्तिधाम में जाना है ना। ब्रह्मा बाप से वायदा किया है - साथ चलेंगे, साथ आयेंगे, साथ में राज्य करेंगे, साथ में भक्ति करेंगे...। तो अभी तैयारी करो, इस वर्ष में करेंगे कि दूसरा वर्ष चाहिए? जो समझते हैं इस वर्ष में अटेन्शन प्लीज, बार-बार करेंगे वह हाथ उठाओ। करेंगे? फिर तो एडवांस पार्टी आपको बहुत मुबारक देगी। वह भी थक गये हैं। अच्छा - टीचर्स क्या कहती हैं? पहली लाइन क्या कहती है? पहले तो पहली लाइन के पाण्डव और पहली लाइन की शक्तियां जो करेंगे वह हाथ उठाओ। आधा हाथ नहीं, आधा उठायेंगे तो कहेंगे आधा करेंगे। लम्बा हाथ उठाओ। अच्छा। मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा - डबल विदेशी हाथ उठाओ। एक दो में देखो किसने नहीं उठाया है। अच्छा, यह सिन्धी ग्रुप भी हाथ उठा रहा है, कमाल है। आप भी

करेंगे? सिन्धी ग्रुप करेंगे? तब तो डबल मुबारक हो। बहुत अच्छा। एक दो को साथ देकर, शुभ भावना का इशारा देते, हाथ में हाथ मिलाते करना ही है। अच्छा। (सभा में कोई ने आवाज की) सब बैठ जाओ, नर्थिंग न्यु। (३१-१२-२००४)

## सभी बच्चे अमृतवेला करते हो

डबल विदेशी तो शान्तिवन वा मधुवन का विशेष श्रृंगार हैं। बापदादा देखते हैं एक-एक बच्चा विशेष डबल हीरो है। रत्न भी है और हीरो पार्ट बजाने वाले भी हैं। तो हर एक विदेशी डबल हीरो है। देखो कितने देशों में और वहाँ से ही तैयार होके वहाँ ही सेवा कर रहे हैं। कितने देशों से आये हुए हैं? (४५ देशों से) अच्छा, ४५ देश वाले हाथ उठाओ। जो भिन्न-भिन्न देश से आये हैं, उनमें से एक-एक हाथ उठाओ। छोटा बच्चा भी हाथ हिला रहा है। मुबारक हो। अच्छा। ४५ देश वालों को पदमापदम मुबारक हो। (छोटे बच्चों की रिट्रीट चल रही है) सभी देखो यह बच्चों का ग्रुप कितना अच्छा है। कितने देश के बच्चे हैं? (१५ देश के २८ बच्चे हैं) गीत सुनाओ। (बच्चों ने गीत गाया मैं बाबा का, बाबा मेरा) अच्छा - सभी बच्चे अमृतवेला करते हो? जो बच्चे अमृतवेला करते हैं वह हाथ उठाओ। अच्छा जो कभी-कभी करते हैं वह हाथ उठाओ। कभी-कभी वाले ज्यादा हैं। अच्छा - लड़ाई झगड़ा करते हो? जो लड़ाई नहीं करता है वह हाथ उठाओ। तो अभी यहाँ से जाने के बाद लड़ाई नहीं करना क्योंकि ब्रह्माकुमार हो ना। तो ब्रह्माकुमार, बाबा मेरा, मैं बाबा का कहा तो लड़ाई नहीं करना है, नहीं तो बाबा मेरा नहीं होगा। अभी लड़ाई करेंगे? (नहीं) अभी परिवर्तन करेंगे। अभी टीचर्स सब रिपोर्ट देना तो लड़ाई झगड़ा किया है या नहीं किया? बाकी मुबारक हो। अच्छा है, फिर भी पुरुषार्थ अच्छा किया है इसलिए पदमगुणा मुबारक हो। (३१-१२-२००४)

## स्व और सेवा का बैलेन्स, सन्तुष्टता प्रसन्नता का बैलेन्स

सभी को वर्ष का होम वर्क तो याद है ना, जो बापदादा ने कहा कि इस वर्ष में क्या विदाई देनी है और बधाई मनानी है, वह याद है ना? अभी बापदादा भी देखेंगे एक मास की रिजल्ट में सिर्फ यहाँ यह लिखें कि इतनी परसेन्टेज सेवा की, ४० परसेन्ट, ८० परसेन्ट, २० परसेन्ट १० परसेन्ट.... सिर्फ परसेन्टेज लिखें लम्बा चौड़ा पत्र नहीं लिखें, फिर बापदादा फर्स्ट नम्बर वालों को इनाम देंगे। लेकिन बैलेन्स स्व और सेवा का बैलेन्स, सन्तुष्टता प्रसन्नता का बैलेन्स। ठीक है। सब रिजल्ट लिखेंगे, सिर्फ परसेन्टेज लिखना मीठी दादी, योगयुक्त दादी...., लम्बा नहीं लिखना, बस परसेन्टेज लिखना क्योंकि पढ़ने का टाइम नहीं होता है। फिर सारे ब्राह्मण परिवार में जो एक मास की रिजल्ट भेजेंगे और नम्बरवन आयेगे उसको बापदादा इनाम देंगे। ठीक है? पसन्द है? समझ में आया? माताओं को समझ में आया? टीचर्स को समझ में आया? पीछे वालों को समझ में आया? हाथ उठाओ पीछे वाले। अच्छा। (३१-१२-२००४)

## जो चाहो शुभ संकल्प करो, सब कर सकते हो

तमिलनाडु क्या करेगा? सेवा का विस्तार तो अच्छा किया है। रोजी बच्ची को याद तो करते हैं ना! फाउण्डेशन अच्छा डाला है। अभी उसको आप सभी निमित्त बन और बढ़ा रहे हैं। बढ़ा रहे हो ना! क्या नहीं कर सकते हो। जो चाहो शुभ संकल्प करो, सब कर सकते हो। हिम्मत आपकी और मदद बाप की। हिम्मत वाले तो हैं। हिम्मत अच्छी है, मदद भी बाप की है और हिम्मत करेंगे तो और मदद मिलती रहेगी। बाकी रोजी बच्ची के बाद अच्छा सम्भाल लिया और आगे भी आपस में मिलकर रोजी बच्ची को रिटर्न देंगे। अच्छा फाउण्डेशन डाला है। सब खुश हैं? जो सदा खुश हैं, वह हाथ उठाओ। खुश नहीं, सदा खुश? अच्छा है। खुश रहना और खुशी बांटना। अच्छा। आसाम है, उड़ीसा है, बिहार भी है, बंगलादेश भी है, तो इतने सब इकट्ठे हो। (१८-०१-२००५)

## बाप को पहचान अपना बनाना, यह आप कोटों में कोई बच्चों का भाग्य है

आज ग्रेट ग्रेट ग्रेण्ड फ़ादर अपने चारों ओर के कोटों में कोई और कोई में भी कोई बच्चों के भाग्य को देख हर्षित हो रहे हैं। इतना विशेष भाग्य और किसी को भी मिल नहीं सकता। हर एक बच्चे की विशेषता को देख हर्षित होते हैं। जिन बच्चों ने बापदादा से दिल से सम्बन्ध जोड़ा उन हर एक बच्चों में कोई न कोई विशेषता जरूर है। सबसे पहली विशेषता साधारण रूप में आये हुए बाप को पहचान "मेरा बाबा" मान लिया। यह पहचान सबसे बड़ी विशेषता है। दिल से माना मेरा बाबा, बाप ने माना मेरा बच्चा। जो बड़े-बड़े फिलासाफर, साइंसदान, धर्मात्मा नहीं पहचान सके, वह साधारण बच्चों ने पहचान अपना अधिकार ले लिया। कोई भी आकर इस सभा के बच्चों को देखे तो समझ नहीं सकेंगे कि इन भोली भोली माताओं ने, इन साधारण बच्चों ने इतने बड़े बाप को पहचान लिया! तो यह विशेषता - पहचानना, बाप को पहचान अपना बनाना, यह आप कोटों में



कोई बच्चों का भाग्य है। सभी बच्चों ने जो भी सम्मुख बैठे हैं वा दूर बैठे सम्मुख अनुभव कर रहे हैं, तो सभी बच्चों ने दिल से पहचान लिया है! पहचान लिया है कि पहचान रहे हैं? जिसने पहचान लिया है वह हाथ उठाओ। (सभी ने हाथ उठाया) पहचान लिया? अच्छा। तो बापदादा पहचानने के विशेषता की हर एक बच्चे को मुबारक दे रहे हैं। वाह भाग्यवान बच्चे वाह! पहचानने का तीसरा नेत्र प्राप्त कर लिया। बच्चों के दिल का गीत बापदादा सुनते रहते हैं, कौन सा गीत? पाना था वो पा लिया। बाप भी कहते ओ लाडले बच्चे, जो बाप से लेना था वो ले लिया। हर एक बच्चा अनेक रूहानी खजानों के बालक सो मालिक बन गये। (०३-०२-२००५)

## अपने आपको टर्न करना, यह रिटर्न है

बापदादा यही चाहते कि एक बच्चे में भी किसी भी एक सबजेक्ट की कमी नहीं रह जाए। ब्रह्मा बाप से तो प्यार है ना! प्यार का रिटर्न तो देने ना! तो प्यार का रिटर्न है - अपनी कमी को चेक करो और रिटर्न दो, टर्न करो। अपने आपको टर्न करना, यह रिटर्न है। तो रिटर्न देने की हिम्मत है? हाथ तो उठा लेते हो, बहुत खुश कर लेते हो। हाथ देखकर तो बापदादा खुश हो जाते हैं, अभी दिल में पक्का-पक्का एक परसेन्ट भी कच्चा नहीं, पक्का व्रत लो - रिटर्न देना ही है। अपने आपको टर्न करना है। अभी शिवरात्रि आ रही है ना! तो सभी बच्चों को बाप की जयन्ती सो अपनी जयन्ती मनाने का उमंग बहुत प्यार से आता है। अच्छे-अच्छे प्रोग्राम बना रहे हैं। सेवा के प्लैन तो बहुत अच्छे बनाते हो, बापदादा खुश होता है। लेकिन...., लेकिन कहना अच्छा नहीं लगता है। जगत अम्बा माँ लेकिन शब्द को कहती थी, सिन्धी भाषा में, ले - किन, किन कहते हैं किचड़े को। तो लेकिन कहना माना कुछ न कुछ किचड़ा लेना। तो लेकिन कहना अच्छा नहीं लगता है। कहना पड़ता है। जैसे और सेवा के प्लैन बनाये भी हैं और बनायेंगे भी लेकिन इस व्रत लेने का भी प्रोग्राम बनाना। रिटर्न देना ही है क्योंकि जब बापदादा या कोई पूछते हैं कैसे हैं? तो मैजारिटी का यही उत्तर आता है, हैं तो बहुत अच्छे लेकिन जितना बापदादा कहते हैं उतना नहीं। अभी यह उत्तर होना चाहिए जो बापदादा चाहते हैं वही हैं। नोट करो बापदादा क्या चाहता है, वह लिस्ट निकालो और चेक करो बापदादा यह चाहता है, वह है या नहीं है? दुनिया वाले आप पूर्वजों द्वारा मुक्ति चाहते हैं, चिल्ला रहे हैं, मुक्ति दो, मुक्ति दो। जब तक मैजारिटी बच्चे अपने पुराने संस्कार, जिसको आप नेचर कहते हो, नेचरल नहीं नेचर, उसमें कुछ भी थोड़ा रहा हुआ है, मुक्त नहीं हुए हैं तो सर्व आत्माओं को मुक्ति नहीं मिल सकती। तो बापदादा कहते हैं - हे मुक्तिदाता के बच्चे मास्टर मुक्तिदाता अभी अपने को मुक्त करो तो सर्व आत्माओं के लिए मुक्ति का द्वार खुल जाए। सुनाया था ना - गेट की चाबी क्या है? बेहद का वैराग्य। कार्य सब करो लेकिन जैसे भाषणों में कहते हो प्रवृत्ति वालों को कमल पुष्प समान बनो, ऐसे सब कुछ करते, कर्त्तापन से मुक्त, न्यारे, न साधनों के वश, न पोजीशन के। कुछ न कुछ मिल जाए यह पोजीशन नहीं आपोजीशन है माया की। न्यारे और बाप के प्यारे। मुश्किल है क्या, न्यारे और प्यारे बनना? जिसको मुश्किल लगता है वह हाथ उठाओ। (किसी ने हाथ नहीं उठाया) किसको भी मुश्किल नहीं लगता है फिर तो शिवरात्रि तक सब सम्पन्न हो जायेंगे। जब मुश्किल नहीं है तो बनना ही है। ब्रह्मा बाप समान बनना ही है। संकल्प में भी, बोल में भी, सेवा में भी, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी, सबमें ब्रह्मा बाप समान। (०३-०२-२००५)

## जरा भी समानता में अन्तर नहीं हो

अच्छा जो समझते हैं, ब्रह्मा बाप और दादा, ग्रेट ग्रेट ग्रेण्ड फ़ादर, उससे मेरा बहुत-बहुत १०० परसेन्ट से भी ज्यादा प्यार है, वह हाथ उठाओ। खुश नहीं करना, सिर्फ अभी-अभी खुश नहीं करना। सभी ने उठाया है। टी.वी. में निकाल रहे हो ना। शिवरात्रि पर यह टी.वी. देखेंगे और हिसाब लेंगे। ठीक है! जरा भी समानता में अन्तर नहीं हो। प्यार के पीछे कुर्बान करना, क्या बड़ी बात है। दुनिया वाले तो अशुद्ध प्यार के पीछे जीवन भी देने के लिए तैयार हो जाते हैं। बापदादा तो सिर्फ कहते हैं, किचड़ा दे दो बस। अच्छी चीज नहीं दो, किचड़ा दे दो। कमजोरी, कमी क्या है? किचड़ा है ना! किचड़ा कुर्बान करना क्या बड़ी बात है! परिस्थिति समाप्त हो जाए, स्व-स्थिति श्रेष्ठ हो जाए। (०३-०२-२००५)

## जीवनमुक्त का विशेष अनुभव अब का है

सोचो, कोई पूछे क्या-क्या मिला है? तो क्या कहेंगे? जो पाना था वह पा लिया। अप्राप्त नहीं कोई वस्तु परमात्म खजाने में। ऐसे प्राप्ति स्वरूप का अनुभव कर लिया वा कर रहे हैं? भविष्य की बात अलग है, इस संगमयुग का ही प्राप्ति स्वरूप का अनुभव है। अगर संगमयुग पर अनुभव नहीं किया तो भविष्य में भी नहीं हो सकता। क्यों? भविष्य प्रालम्ब है लेकिन प्रालम्ब इस पुरुषार्थ के श्रेष्ठ कर्म से बनती है। ऐसे नहीं कि लास्ट में अनुभव स्वरूप बनेंगे। संगमयुग के बहुतकाल का यह अनुभव है। जीवनमुक्त का विशेष अनुभव अब का है। बेफिक्र बादशाह बनने का अनुभव अब है। तो सभी बेफिक्र बादशाह हो कि फिकर है? जो बेफिक्र बादशाह बने हैं वह हाथ उठाओ। बन गये हैं कि बन रहे हैं? बन गये हैं ना! क्या फिकर है? जब दाता के बच्चे बन गये तो फिकर क्या रह गया? मेरा बाबा माना और फिकर की अनेक टोकरियों का बोझ उतर गया।

बोझ है क्या? है? प्रकृति का खेल भी देखते हो, माया का खेल भी देखते हो लेकिन बेफिक्र बादशाह होकर, साक्षी होकर खेल देखते हो। दुनिया वाले तो डरते हैं, पता नहीं क्या होगा! आपको डर है? डरते हो? निश्चय और निश्चित है जो होगा वह अच्छे ते अच्छा होगा। (२०-०२-२००५)

## स्वराज्य अधिकारी राजा बना हूँ

अभी बाप बच्चों से क्या चाहते हैं? पूछते हैं ना – बाप क्या चाहते हैं? तो बापदादा यही मीठे-मीठे बच्चों से चाहते हैं कि एक-एक बच्चा स्वराज्य अधिकारी राजा हो। सभी राजा हो? स्वराज्य है? स्व पर राज्य तो है ना! जो समझते हैं स्वराज्य अधिकारी राजा बना हूँ, वह हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। (२०-०२-२००५)

## चांस है और चांस लेने वालों को बापदादा चांसलर कहते हैं

तो जो भी आये हैं, चाहे पहली बारी आने वाले हैं, जो पहली बारी मिलन मनाने के लिए आये हैं वह हाथ उठाओ। बहुत आये हैं। वेलकम। जैसे अभी पहले बारी आये हो ना, तो पहला नम्बर भी लेना। चांस है, आप सोचेंगे हम तो अभी-अभी पहले बारी आये हैं, हमारे से पहले वाले तो बहुत हैं लेकिन ड्रामा में यह चांस रखा हुआ है कि लास्ट सो फास्ट और फास्ट से फर्स्ट हो सकते हो। चांस है और चांस लेने वालों को बापदादा चांसलर कहते हैं। तो चांसलर बनो। बनना है चांसलर? चांसलर बनना है? जो समझते हैं चांसलर बनेंगे, वह हाथ उठाओ। चांसलर बनेंगे? वाह! मुबारक हो। बापदादा ने देखा यहाँ तो जो भी आये हैं वह सब हाथ उठा रहे हैं, मैजारिटी उठा रहे हैं, मुबारक हो, मुबारक हो। (२०-०२-२००५)

## सेवा करना अर्थात् शक्तिशाली मेवा खाना

भोपाल वाले उठो। सेवा का चांस लेने में कितने पदम, कदम में जमा किये? जमा किया? क्योंकि यहाँ तो सेवा और यज्ञ पिता की याद रहती है। यज्ञ सेवा करते हो तो यज्ञ पिता की याद तो स्वतः आती है। यहाँ क्या किया? दो काम थे ना, बस, और तो कोई काम नहीं था। बाप को याद करना और सेवा करना और कोई ड्युटी थी क्या? यही थी ना! सेवा करना अर्थात् शक्तिशाली मेवा खाना। तो बहुत अच्छी सेवा की, अपने लिए भी दुआयें जमा किया और दूसरों को भी आराम दिया अर्थात् बाप की याद दिलाई। तो अच्छा गोल्डन चांस लिया और यहाँ का जमा किया हुआ वहाँ जाके स्वयं प्रति भी बढ़ाना और दूसरों को भी बांटना। अच्छा है। इसमें टीचर्स हाथ उठाओ। बापदादा सदा टीचर्स को कहते हैं, टीचर्स अर्थात् जिसके फीचर्स से फ्युचर दिखाई दे। ऐसी टीचर्स हो ना! आपको देखकर स्वर्ग के सुख की फीलिंग आये। शान्ति की अनुभूति हो। चलते-फिरते फरिश्ते दिखाई दें। ऐसी टीचर्स हो ना! अच्छा है, चाहे प्रवृत्ति में रहने वाले हैं, चाहे सेवा के निमित्त बने हुए हैं लेकिन सभी बापदादा समान बनने वाले निश्चयबुद्धि विजयी हैं। तो सेवा करना बहुत अच्छा लगा ना। सन्तुष्ट रहे? रहे तो हाथ हिलाओ। बहुत अच्छा, मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। (२०-०२-२००५)

## सदा दुआओं में ही पलते रहो, उड़ते रहो

तो सभी ने अपना बर्थ डे मना लिया। चाहे दो साल का हो, चाहे एक साल का हो, चाहे एक सप्ताह का हो, लेकिन यज्ञ की स्थापना का बर्थ डे है। तो सभी ब्राह्मण यज्ञ निवासी तो हैं ही। इसलिए सभी बच्चों को बहुत-बहुत दिल का याद प्यार भी है, दुआयें भी हैं, सदा दुआओं में ही पलते रहो, उड़ते रहो। दुआयें देना और लेना सहज है ना! सहज है? जो समझते हैं सहज है, वह हाथ उठाओ। झण्डियां हिलाओ। तो दुआयें छोड़ते तो नहीं? सबसे सहज पुरुषार्थ ही है - दुआयें देना, दुआयें लेना। इसमें योग भी आ जाता, ज्ञान भी आ जाता, धारणा भी आ जाती, सेवा भी आ जाती। चारों ही सबजेक्ट आ जाती हैं दुआयें देने और लेने में। तो डबल फारेनर्स दुआयें देना और लेना सहज है ना! सहज है? २० साल वाले जो आये हैं वह हाथ उठाओ। आपको तो २० साल हुए हैं लेकिन बापदादा आप सबको पदम गुणा मुबारक दे रहे हैं। कितने देशों के आये हैं? (६९ देशों के) मुबारक हो। ६९ वाँ बर्थ डे मनाने के लिए ६९ देशों से आये हैं। कितना अच्छा है। आने में तकलीफ तो नहीं हुई ना। सहज आ गये ना! जहाँ मुहब्बत है वहाँ कुछ मेहनत नहीं। तो आज का विशेष वरदान क्या याद रखेंगे? सहज पुरुषार्थी। सहज कार्य जल्दी-जल्दी किया ही जाता है। मेहनत का काम मुश्किल होता है ना तो टाइम लगता है। तो सभी कौन हो? सहज पुरुषार्थी। बोलो, याद रखना। अपने देश में जाके मेहनत में नहीं लग जाना। अगर कोई मेहनत का काम आवे भी तो दिल से कहना, बाबा, मेरा बाबा, तो मेहनत खत्म हो जायेगी। अच्छा। मना लिया ना! बाप ने भी मना लिया, आपने भी मना लिया। अच्छा। (०७-०३-२००५)

## एक-एक कुमारी १०० ब्राह्मणों से उत्तम है

कुमारियों से – एक-एक कुमारी १०० ब्राह्मणों से उत्तम है। तो चेक करना जो गायन है हर एक कुमारी को कम से कम १०० ब्राह्मण जरूर बनाने पड़ेंगे। बनायेंगे? बनाना है। हाँ तो हाथ हिलाओ। कितने समय में बनायेंगे? समय नजदीक है ना, तो आप बताओ कितना समय चाहिए? रिजल्ट भेजनी पड़ेगी। (एक साल में) एक साल! आपको एक साल कलियुगी दुनिया में रहना है! चलो, आपके मुख में गुलाबजामुन। तो ६ मास में ५० बनाना, एक साल में १००, तो ६ मास में ५०, ६ मास के बाद रिपोर्ट भेजना, पसन्द है? क्या नहीं कर सकते हो, जो चाहो वह कर सकते हो। अच्छा है कुमारियों का ग्रुप अच्छा है। बापदादा कुमारियों को देख विशेष खुश होता है क्योंकि कुमारियां सेवा में सहयोगी नम्बरवन बन सकती हैं। अच्छा। बहुत अच्छा किया है। (०७-०३-२००५)

## दृढ़ता सफलता की चाबी है

प्रतिज्ञा और दृढ़ता, दृढ़ता से प्रतिज्ञा करो – सुख देना है और सुख लेना है। दुआ देनी है, लेनी है। है प्रतिज्ञा? हिम्मत है? जिसमें हिम्मत है आज से दृढ़ता का संकल्प लेते हैं – दुआ लेंगे, दुआ देंगे, वह हाथ उठाओ। पक्का? पक्का? कच्चा नहीं होना। कच्चे बनेंगे ना – तो कच्चे फल को चिड़िया बहुत खाती है। दृढ़ता सफलता की चाबी है। सभी के पास चाबी है? है चाबी? चाबी कायम है, माया चोरी तो नहीं कर लेती? उसको भी चाबी से प्यार है। सदैव संकल्प करते हुए यह संकल्प इमर्ज करो, मर्ज नहीं, इमर्ज। इमर्ज करो मुझे करना ही है। बनना ही है। होना ही है। हुआ ही पड़ा है। इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि, विजयन्ती। *द्रामा विजय का बना ही पड़ा है। सिर्फ रिपीट करना है।* बना बनाया ड्रामा है। बना हुआ है, रिपीट कर बनाना है। मुश्किल है? कभी-कभी मुश्किल हो जाता है! मुश्किल क्यों होता है? अपने आप ही सहज को मुश्किल कर देते हो। छोटी सी गलती कर लेते हो – पता है कौन सी गलती करते हो? बापदादा को उस समय बच्चों पर बहुत रहम क्या कहें, प्यार आता है। क्या प्यार आता है? एक तरफ तो कहते हो कि बाप हमारे साथ कम्बाइन्ड है। साथ नहीं कम्बाइन्ड है। तो कम्बाइन्ड है? डबल फारेनर्स कम्बाइन्ड है? पीछे वाले कम्बाइन्ड है? गैलरी वाले कम्बाइन्ड है? अच्छा – आज तो बापदादा को समाचार मिला कि मधुबन निवासी पाण्डव भवन, ज्ञान सरोवर और यहाँ वाले भी अलग हाल में सुन रहे हैं। तो उन्होंने से भी बापदादा पूछ रहे हैं कि बापदादा कम्बाइन्ड हैं? हाथ उठा रहे हैं। (२५-०३-२००५)

## मास्टर सूर्य बन अनुभूति की किरणें फैलाओ

अभी दुःख बहुत-बहुत बढ़ रहा है, बढ़ता रहेगा। इसलिए मास्टर सूर्य बन अनुभूति की किरणें फैलाओ। जैसे सूर्य एक ही समय में कितनी प्राप्तियां कराता है, एक प्राप्ति नहीं कराता। सिर्फ रोशनी नहीं देता, पावर भी देता है। अनेक प्राप्तियां कराता है। ऐसे आप सभी इन ६ मास में ज्ञान सूर्य बन सुख की, खुशी की, शान्ति की, सहयोग की किरणें फैलाओ। अनुभूति कराओ। आपकी सूरत को देखते ही दुःख की लहर में कम से कम मुस्कान आ जाये। आपकी दृष्टि से हिम्मत आ जाये। तो यह अटेन्शन देना है। विधाता बनना है, तपस्वी बनना है। ऐसी तपस्या करो जो तपस्या की ज्वाला कोई न कोई अनुभूति कराये। सिर्फ वाणी नहीं सुनें, अनुभूति कराओ। अनुभूति अमर होती है। सिर्फ वाणी थोड़ा समय अच्छी लगती है, सदा याद नहीं रहती। इसलिए अनुभव की अर्थो रिटी बन अनुभव कराओ। जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आ रहे हैं उन्होंने को हिम्मत, उमंग-उत्साह अपने सहयोग से, बापदादा के कनेक्शन से दिलाओ। ज्यादा मेहनत नहीं कराओ। न खुद मेहनत करो न औरों को कराओ। निमित्त हैं ना! तो वायब्रेशन ऐसे उमंग-उत्साह का बनाओ जो गम्भीर भी उमंग-उत्साह में आ जाये। खुशी में मन नाचने लगे। सुना क्या करना है? देखेंगे रिजल्ट। किस स्थान ने कितनी आत्माओं को दृढ़ बनाया, खुद दृढ़ बने, कितनी आत्माओं को दृढ़ बनाया? साधारण पोतामेल नहीं देखेंगे, भूल नहीं की, झूठ नहीं बोला, कोई विकर्म नहीं किया, लेकिन कितनी आत्माओं को उमंग-उत्साह में लाया, अनुभूति कराई, दृढ़ता की चाबी दी? ठीक है ना, करना ही है ना। बापदादा भी क्यों कहे कि करेंगे! नहीं, करना ही है। आप नहीं करेंगे तो कौन करेगा? पीछे आने वाले? आप ही कल्प-कल्प बाप से अधिकारी बने थे, बने हैं और हर कल्प बनेंगे। ऐसा दृढ़ता पूर्वक बच्चों का संगठन बापदादा को देखना ही है। ठीक है ना! हाथ उठाओ, बनना ही है, मन का हाथ उठाओ। दृढ़ निश्चय का हाथ उठाओ। यह तो सब पास हो गये हैं। पास हैं ना? अच्छा। (२५-०३-२००५)

## जनक बच्ची को बहुत बिजी कर दिया है

बापदादा ने सुना है कि डबल विदेशी ईमेल बड़े लम्बे-लम्बे करते हैं। जनक बच्ची को बहुत बिजी कर दिया है। रात को जागना पड़ता है। तो यह भी शार्टकट करते जाओ, लम्बा नहीं। ठीक है ना! शार्ट तो हो सकता है। तो ठीक है? शार्ट करेंगे? भले समाचार भेजो लेकिन शार्ट, ३-४ लाइन, ज्यादा में ज्यादा ५ लाइन में। हो सकता है ना! जो शार्टकट करेंगे वह हाथ उठाओ। जो करते ही नहीं हैं वह हाथ नहीं उठाते हैं, होशियार हैं। अच्छा है। अच्छा। (२५-०३-२००५)

## ७५ परसेन्ट होगा तो वन वन वन में नहीं आयेंगे

बापदादा ने आप सबके होम वर्क की रिजल्ट देखी। होमवर्क की रिजल्ट लिखी है ना सभी ने! तो रिजल्ट में क्या देखा? बापदादा की शुभ आशा है कि कम से कम वर्तमान समय सभी बातों में, सात बातें लिखी है ना। कम से कम वर्तमान समय प्रमाण मैजारिटी की ७५ परसेन्ट जरूर होनी चाहिए। सातों ही बातों में। कोई किसमें कम है, कोई किसमें कम है लेकिन बापदादा की यही शुभ आशा है कि अब समय को देखते हुए जो महारथी समझते हैं अपने को, उन्हीं की स्टेज तो ९५ परसेन्ट होनी चाहिए। होनी चाहिए ना! पाण्डव होनी चाहिए? चलो थोड़ा दूसरा नम्बर है तो भी ७५ परसेन्ट होनी चाहिए। क्या समझती हैं दादियां? ९५ परसेन्ट हैं? आगे लाइन वाले सभी क्या समझते हैं? ९५ परसेन्ट हैं? और आपकी कितनी होनी चाहिए? ७५ परसेन्ट? आप भी ७५ समझते हो? अच्छा कल विनाश हो जाए तो? ७५ परसेन्ट में जायेंगे? ७५ परसेन्ट होगा तो वन वन वन में नहीं आयेंगे। फिर क्या करेंगे? चलो, बापदादा आज के दिन, आज विशेष है ना, तो आज के दिन को बीती सो बीती करते हैं, ठीक है? अच्छा जो कल से ७५ कह रहे हैं ना, तो चलो ९५ नहीं, ८५ तक तो आयेंगे? आयेंगे। परसों अगर विनाश करें, तो ८५ तक होंगे? पीछे वाले होंगे? **हाथ उठाओ**। अच्छा ८५ परसेन्ट होगा? (किसी ने कहा ९८ परसेन्ट है) मुबारक है, मुख में गुलाबजामुन खा लो क्योंकि देख तो रहे हो, जानते भी हो, कि हो जाना ही है। हो जायेंगे नहीं, होना ही है। (२९-१०-२००५)

## अब ऐसी मीटिंग करो, कि कब तक सम्पन्न बनेंगे

कदम उठाने के पहले चेक करो, करने के बाद चेक किया, वह कदम तो गया। वह कदम फिर आपके हाथ में नहीं आयेगा। अज्ञानकाल में भी कहते हैं, सोच समझकर काम करो। काम करके सोचो नहीं। पहले सोचो फिर करो। तो अपने स्वमान की सीट पर रहो। जितना पोजीशन में रहते तो आपोजीशन नहीं हो सकती। माया की आपोजीशन तब होती है जब पोजीशन में नहीं रहते हो। तो अभी बापदादा का क्वेश्चन है, सबका लक्ष्य तो है सम्पूर्ण बनने का, सम्पन्न बनने का। लक्ष्य है या थोड़ा थोड़ा बनने का है? लक्ष्य है? सबको है तो **हाथ उठाओ**। सम्पूर्ण बनना है, अच्छा। **कब तक?** आप लोगों से क्वेश्चन करते हो ना, स्टूडेंट से भी टीचर्स क्वेश्चन करती हैं ना - आपका क्या लक्ष्य है? तो आज बापदादा विशेष टीचर्स से पूछते हैं। ३० वर्ष वाले बैठे हैं ना। तो ३० वर्ष वालों को कल ही आपस में बैठकर प्रोग्राम बनाना चाहिए। मीटिंग तो बहुत करते हो। बापदादा देखते हैं मीटिंग, सीटिंग, मीटिंग सीटिंग। लेकिन अब ऐसी मीटिंग करो, कि कब तक सम्पन्न बनेंगे? और सब फंक्शन मनाते हो, डेट फिक्स करते हो, फलाना प्रोग्राम फलानी डेट, इसकी डेट नहीं है? जितने साल चाहिए उतने बताओ। (२९-१०-२००५)

## हर एक समझता है - यह मेरा भाई बहन है, कि कोई-कोई समझता है?

आज बापदादा सर्व बच्चों के दिल का स्नेह चैक कर रहे थे। चाहे बाप से, चाहे सर्व से। तो आप सभी अपने को क्या समझते हैं? स्नेही हैं? हैं स्नेही? जो समझते हैं दिल के स्नेही हैं, वह **हाथ उठाओ**। सर्व के स्नेही? सर्व के स्नेही? अच्छा - बाप के तो दिल के स्नेही हैं, सर्व के स्नेही हैं? सर्व के? हर एक समझता है - यह मेरा भाई बहन है? हर एक समझता है यह मेरा है? समझता है? कि कोई-कोई समझता है? जैसे बाप के स्नेह में सभी हाथ उठाते हैं, हाँ बाप के स्नेही हैं ऐसे आप हर एक के लिये हाथ उठायेंगे, कि हाँ यह सर्व के स्नेही हैं? यह सर्टिफिकेट मिलेगा?

(15-11-2005)

## सभी निर्माही हो गये हो

सभी ने वायदा तो किया है ना! कि साथ रहेंगे, साथ चलेंगे? किया है, वायदा किया है? साथ चलेंगे या पीछे-पीछे आयेंगे? जो साथ चलने के लिये तैयार हैं वह **हाथ उठाओ**। तैयार हैं, सोचकर उठाओ, तैयार हैं अर्थात् बाप समान हैं। कौन साथ चलेगा? समान साथ चलेगा ना! तो चलेंगे? एवररेडी? पहली लाइन एवररेडी? एवररेडी? कल चलने के लिये आर्डर करें, चलेंगे? अच्छा प्रवृत्ति वाले चलेंगे? बच्चे याद नहीं आयेंगे? मातायें चलेंगी? मातायें तैयार हैं? याद नहीं आयेगी? टीचर्स को सेन्टर याद आयेगा, जिज्ञासु याद आयेंगे? नहीं याद आयेगा? अच्छा। सभी निर्माही हो गये हो? फिर तो बहुत अच्छी बात है। फिर तो मेहनत नहीं करनी पड़ेगी ना। (15-11-2005)

## कोई कम्पलेन नहीं। कोई मेरा—मेरा नहीं। कोई मेरा नहीं। मैं भी नहीं, मेरा भी नहीं, खत्म

आज बापदादा सभी को चाहे सम्मुख बैठे हैं, चाहे दूर बैठे भी बाप के दिल में बैठे हैं, सभी को आज का दिन मेहनत मुक्त बनाने चाहते हैं। बनेंगे? ताली तो बजा दी, बनेंगे? कल से कोई दादियों के पास नहीं आयेगा। मेहनत नहीं करायेंगे? मौज से मिलेंगे। जोन हेड के पास नहीं जायेंगे, कम्पलेन नहीं करेंगे, कम्पलीट। ठीक है? अभी हाथ उठाओ। देखो सोच के हाथ उठाना, ऐसे नहीं उठा लेना। पहली लाइन नहीं उठा रही है। आप लोगों ने उठाया। कोई कम्पलेन नहीं। कोई मेरा—मेरा नहीं। कोई मेरा नहीं। मैं भी नहीं, मेरा भी नहीं, खत्म। (15-11-2005)

## एक बाप में संसार है

अभी सर्व आत्माओं को आपके द्वारा शक्ति का वरदान चाहिए। आत्माओं की आप मास्टर सर्वशक्तवान आत्माओं के प्रति यही शुभ इच्छा है कि बिना मेहनत के वरदान द्वारा, दृष्टि द्वारा, वायब्रेशन द्वारा हमें मुक्त करो। अभी मेहनत करके सब थक गये हैं। आप सब तो मेहनत से मुक्त हो गये हो ना! कि अभी भी मेहनत करनी पड़ती है? सुनाया था — मेहनत से मुक्त होने का सहज साधन है दिल से बाप के अति स्नेही बन जाना। आप ब्राह्मण आत्माओं का जन्म का वायदा है, याद है वायदा? जब बाप ने अपना बनाया, ब्राह्मण जीवन दी तो ब्राह्मण जीवन का आप सबका वायदा क्या है? एक बाप दूसरा ना कोई। याद है वायदा? याद है? कांध हिलाओ। अच्छा हाथ हिला रहे हैं। याद है पक्का या कभी—कभी भूल जाता है? देखो 63 जन्म तो भूलने वाले बने, अब यह एक जन्म स्मृति स्वरूप बने हो। तो बाप बच्चों से पूछ रहे हैं बचपन का वायदा याद है? कितना सहज करके किया है — एक बाप में संसार है। एक बाप से सर्व सम्बन्ध हैं। एक बाप से सर्व प्राप्ति हैं। एक ही पढ़ाने वाला भी है और पालना करने वाला भी है। सबमें एक है। चाहे परिवार भी है, ईश्वरीय परिवार लेकिन परिवार भी एक बाप का है। अलग—अलग बाप का परिवार नहीं है। एक ही परिवार है। परिवार में भी एक दो में आत्मिक स्नेह है, स्नेह नहीं आत्मिक स्नेह। बापदादा याद दिला रहे हैं, जन्म के वायदे। और क्या वायदा किया? सभी ने बड़े उमंग—उत्साह से बाप के आगे दिल से कहा, सब कुछ आपका है। तन—मन—धन सब आपका है। तो दी हुई चीज बाप की अमानत के रूप में बाप ने कार्य में लगाने के लिये दिया है, आपने बाप को दे दी है, दे दी है ना? या वापस थोड़ा—थोड़ा ले लेते हो? वापस लेते हो तो अमानत में ख्यानत हो जाती है। (30-11-2005)

## अनादि भी हैं, आदि भी हैं और अन्त में भी श्रेष्ठ संस्कार हैं

याद करो आप आत्मा के अनादि संस्कार और आदि संस्कार क्या थे और अभी अन्त के ब्राह्मण जीवन के संस्कार क्या हैं? अनादि भी हैं, आदि भी हैं और अन्त में भी श्रेष्ठ संस्कार हैं। यह पुराने संस्कार मध्य के हैं, न अनादि हैं, न आदि हैं, न अन्त के हैं। लेकिन लक्ष्य क्या है सभी का? किसी भी बच्चे से पूछो तो एक ही उत्तर देते हैं लक्ष्य है बाप समान बनने का। यही है ना! है तो हाथ उठाओ। यही लक्ष्य है पक्का? या बीच—बीच में बदली हो जाती है? (१५-१२-२००५)

## अभी ढीले पुरुषार्थ का समय गया, चलने का गया, अभी उड़ने का समय है

इस बारी भी नये-नये बच्चे बहुत आये हैं। अच्छा है। बापदादा खुश होते हैं कि जो भी कोने-कोने में छिपे हुए कल्प पहले वाले बच्चे हैं, वह पहुंच रहे हैं। अभी पीछे आने वाले भी ऐसा लक्ष्य रखो समय कम है इसलिए तीव्र पुरुषार्थ द्वारा नम्बर आगे ले सकते हो। अभी भी टूलेट का बोर्ड नहीं लगा है, लेट का लगा है। इसलिए जितना पुरुषार्थ करने चाहो उतना आगे बढ़ सकते हो। तो पहले बारी आने वाले हाथ उठाओ। अच्छा। सभी ने, जिन्होंने भी हाथ उठाया है, तीव्र पुरुषार्थ करना है ना! अभी ढीले पुरुषार्थ का समय गया, चलने का गया, अभी उड़ने का समय है। तो डबल लाइट बनके उड़ो। जो भी बनने चाहो, बन सकते हो। उलहना नहीं देना - बाबा हमको पीछे बुलाया, अभी भी डबल लाइट बनके उड़ सकते हो। इतना उमंग है? जिन्होंने हाथ उठाया, इतना उमंग है? जिसको इतना उमंग है, आगे जाकर ही दिखाना है वह हाथ उठाओ। बापदादा तो इनएडवांस मुबारक दे रहे हैं। अच्छा। (१५-१२-२००५)

## डबल पुरुषार्थ करने वालों की विजय प्रत्यक्ष हो जायेगी

डबल विदेशी तो सदा डबल पुरुषार्थ करते होंगे ना! पुराना संसार और पुराने संस्कार का नाम निशान नहीं रहे, यह है डबल पुरुषार्थ। तो ऐसा डबल पुरुषार्थ चल रहा है? चलता है? कांध तो हिलाओ। जिसका अटेन्शन है इस डबल पुरुषार्थ पर वह हाथ उठाओ। अच्छा—फिर तो प्रत्यक्षता विदेश से होगी। डबल पुरुषार्थ करने वालों की विजय प्रत्यक्ष हो जायेगी। (१५-१२-२००५)

## एक एक सेन्टर कम से कम एक वारिस तो तैयार करे

बापदादा को सभी बच्चे आशाओं के दीपक लग रहे हैं। अच्छा है। संगठन भी अच्छा है। एक-एक की विशेषता है। अच्छा। खुश, खुशी बांटने वाले। (सरला दीदी पूछ रही हैं, दादी ने माला में किसको रखा है) आप क्या समझती हो? हम तो होंगे ही ना, ऐसे समझती हो। थोड़ा बहुत एक दो को सहयोग दे और जो कुछ भी रहा हुआ है, वह खत्म हो जायेगा। सब बाप समान बनने वाले ही हैं। (नवीनता क्या करें) सुनाया ना - एक एक सेन्टर कम से कम एक वारिस तो तैयार करे। तो इस वर्ष वह लेकर आना, २१ वारिस तो लेके आना। यह शुरू करो। पहला नम्बर आओ। **सभी हाँ कर रहे हैं।** वारिस की क्वालिफिकेशन जानते हैं ना। यह सब बाबा के ही बनायेंगे ना, अपना तो बनायेंगी नहीं। अच्छा।

(१५-१२-२००५)

## ओ मेरे बेफिकर बादशाह बच्चे, थोड़ा भी बोझ फरिश्ता बनने नहीं देगा

सभी का यही पुरुषार्थ है ना - ब्राह्मण सो फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता! क्योंकि बाप को सब प्रकार के संकल्प वा जो भी कुछ प्रवृत्ति का, कर्म का बोझ है वह दे दिया है ना! बोझ दिया है या थोड़ा सा रह गया है? क्योंकि थोड़ा भी बोझ फरिश्ता बनने नहीं देगा और जब बाप आये हैं बच्चों का बोझ लेने के लिए तो बोझ देना मुश्किल है क्या! मुश्किल है या सहज है? जो समझते हैं बोझ दे दिया है वह **हाथ उठाओ**। दे दिया है? **देखना सोच के हाथ उठाना**। बोझ दे दिया है? अच्छा। दे दिया है? मुबारक हो। दे दिया है तो बहुत मुबारक हो। और जिन्होंने नहीं दिया है वह किसलिए रखा है? बोझ से प्रीत है क्या? बोझ अच्छा लगता है? देखो बापदादा हर बच्चे को क्या कहते हैं? ओ मेरे बेफिकर बादशाह बच्चे। तो बोझ का फिकर होता है ना! तो बोझ लेने के लिए बाप आये हैं क्योंकि ६३ जन्म से बाप देख रहे हैं बोझ उठाते-उठाते सभी बच्चे बहुत भारी हो गये हैं। इसलिए जब बाप बच्चों को प्यार से कह रहे हैं बोझ दे दो। फिर भी क्यों रख लिया है? अच्छा लगता है बोझ?

(३१-१२-२००५)

## यह बीच-बीच का होमवर्क भी लास्ट पेपर में जमा होगा

तो सुना इस वर्ष स्व के प्रति क्या करना है? शक्तिशाली, बेफिकर बादशाह क्योंकि सभी का लक्ष्य है, किसी से भी पूछो तो क्या कहते हैं? हम विश्व का राज्य प्राप्त करेंगे, राज्य अधिकारी बनेंगे। अपने को राजयोगी कहलाते हैं। प्रजायोगी है क्या? कोई है सारी सभा में जो प्रजायोगी हो? है? जो प्रजा योगी हो राजयोगी नहीं हो। टीचर्स कोई है? आपके सेन्टर पर कोई प्रजायोगी है? कहलाते तो सब राजयोगी हैं। हाथ कोई नहीं उठाता प्रजा योगी में। अच्छा नहीं लगता ना! और बाप को भी फखुर है। बापदादा फखुर से कहते हैं कि संगम पर भी हर बच्चा राजा बच्चा है। कोई बाप ऐसे फलक से नहीं कह सकता कि मेरा एक-एक बच्चा राजा है। लेकिन बापदादा कहते हैं कि हर एक बच्चा स्वराज्य अधिकारी राजा है। प्रजायोगी में तो हाथ नहीं उठाया ना, तो राजा हो ना! लेकिन ऐसा ढीला ढाला राजा नहीं बनना जो आर्डर करो और आवे नहीं। कमजोर राजा नहीं बनना। पीछे वाले कौन हो? **जो समझते हैं राजयोगी हैं वह हाथ उठाओ**। ऊपर भी बैठे हैं, (गैलरी में, आज हॉल में १८ हजार भाई-बहनें बैठे हैं) बापदादा देख रहे हैं, **हाथ उठाओ ऊपर वाले**। तो अभी यह लास्ट टर्न में शुरू हो जायेगा। तो तीन मास बापदादा देते हैं, ठीक है देवें। होमवर्क देंगे। क्योंकि यह बीच-बीच का होमवर्क भी लास्ट पेपर में जमा होगा। तो तीन मास में हर एक अपना चार्ट चेक करना तो मैं मास्टर सर्वशक्तिवान होकर किसी भी कर्मेन्द्रिय को, किसी भी शक्ति को जब आर्डर करें, जो आर्डर करें वह प्रैक्टिकल में आर्डर माना या नहीं माना? कर सकते हो? पहली लाइन वाले कर सकते हो? **हाथ उठाओ**। अच्छा। तीन मास कोई भी पुराना संस्कार वार नहीं करे। अलबेले नहीं बनना, रॉयल अलबेलापन नहीं लाना, हो जायेगा। बापदादा से बहुत मीठी मीठी बातें करते हैं, कहते हैं बाबा आप फिकर नहीं करो, हो जाऊंगा। बापदादा क्या करेगा? सुनकर मुस्करा देता है। लेकिन बापदादा इन तीन मास में अगर ऐसी बात की तो मानेगा नहीं। मंजूर है। **हाथ उठाओ। दिल से हाथ उठाना, सभा के कारण हाथ नहीं उठाना**। करना ही है, चाहे कुछ भी सहन करना पड़े, कुछ छोड़ना पड़े, कोई हर्जा नहीं। करना ही है। पक्का? पक्का? पक्का? टीचर्स करना है? अच्छा, यह ताज वाले बच्चे क्या करेंगे? ताज तो अच्छा पहन लिया है? करना पड़ेगा। अच्छा। **देखना बच्चे हाथ उठा रहे हैं। अगर नहीं करेंगे तो क्या करें? वह भी बता दो। फिर बापदादा की सीजन में एक बार आने नहीं देंगे** क्योंकि बापदादा देख रहे हैं कि समय आपका इन्तजार कर रहा है। आप समय का इन्तजार करने वाले नहीं हो, आप इन्तजाम करने वाले हो, समय आपका इन्तजार कर रहा है। प्रकृति भी, सतोप्रधान प्रकृति आपका आह्वान कर रही है। तो तीन मास में अपनी शक्तिशाली स्टेज में रहे हुए संस्कार को परिवर्तन करना।

(३१-१२-२००५)

## तीन शब्द का वरदान याद है

ब्रह्मा बाप ने देखो साकार में तो ब्रह्मा बाप को फालो करना है ना! ब्रह्मा बाप ने त्याग, तपस्या और सेवा लास्ट घड़ी तक साकार रूप में प्रैक्टिकल दिखाया। अपनी ड्युटी शिव बाप द्वारा महावाक्य उच्चारण की ड्युटी लास्ट दिन तक निभाई। याद है ना? लास्ट मुरली। तीन शब्द का वरदान, याद है? जिसको याद है वह हाथ उठाओ। अच्छा सभी को याद है, मुबारक हो। त्याग भी लास्ट दिन तक किया, अपना पुराना कमरा नहीं छोड़ा। बच्चों ने कितना प्यार से ब्रह्मा बाप को कहा लेकिन बच्चों के लिए बनाया, स्वयं नहीं यूज किया। और सदा अढ़ाई तीन बजे उठकर स्वयं प्रति तपस्या की, संस्कार भस्म किये तब कर्मातीत अव्यक्त बने, फरिश्ता बने। जो सोचा वह करके दिखाया। कहना, सोचना और करना तीनों समान। फालो फादर। लास्ट तक अपने कर्तव्य में पूर्ण रहे, पत्र भी लिखे, कितने पत्र लिखे? सेवा भी नहीं छोड़ी। फॉलो फादर। अखण्ड महादानी, महादानी नहीं, अखण्ड महादानी का प्रैक्टिकल रूप दिखाया, अन्त तक। लास्ट तक बिना आधार के तपस्वी रूप में बैठे। अभी बच्चे तो आधार लेते हैं ना, बैठने का। लेकिन ब्रह्मा बाप ने आदि से अन्त तक तपस्वी रूप रखा। आंखों में चश्मा नहीं डाला। यह सूक्ष्म शक्ति है। निराधार। शरीर पुराना है, दिन प्रतिदिन प्रकृति हवा पानी दूषित हो रहा है इसलिए बापदादा आपको कहते नहीं हैं, क्यों आधार लेते हो, क्यों चश्मा पहनते हो, पहनो भले पहनो, लेकिन शक्तिशाली स्थिति जरूर बनाओ। सारी विश्व का कार्य समाप्त किया है? बापदादा आपसे प्रश्न पूछता है, आप सभी सन्तुष्ट हो कि विश्व कल्याण का कार्य पूरा हो गया है? है, जो समझते हैं कि विश्व कल्याण का कार्य समाप्त हो गया है, वह हाथ उठाओ। एक भी नहीं? तो कैसे कहते हो विनाश होगा? काम तो पूरा किया नहीं।

(३१-१२-२००५)

## निमित्त भाव, निर्माण स्वभाव, निर्मल वाणी, यह तीन नहीं है तो जमा नहीं

सेवा कितनी भी करते हो लेकिन जमा का खाता हुआ या नहीं हुआ, उसकी निशानी या उसकी गोल्डन चाबी है - निमित्त भाव और निर्माण भाव, निर्मल वाणी। तीनों हैं? तीनों में से एक भी कम है, तो सेवा कितनी भी करो जमा का खाता नहीं होता। बहुत थोड़ा, नाम मात्र। तो बापदादा ने यह भी चेक किया तो सेवा तो बहुत करते लेकिन जमा का खाता जितना होना चाहिए उतना नहीं उसका कारण, कारण तो समझते हो ना! एक तो तीन विशेषतायें, निमित्त भाव, मैं पन का भाव मिक्स हो जाता है। मैं-पन आया, जमा नहीं हुआ। **कितनी भी मेहनत करो, रात दिन भागदौड़, दिमाग चलाओ लेकिन निमित्त भाव, निर्माण स्वभाव, निर्मल वाणी, यह तीन नहीं है तो जमा नहीं।** बहुत में बहुत ५ परसेन्ट जमा होता है। तो यह भी चेक करना तो जमा हुआ? **बापदादा बहुत सहज रास्ता बताते हैं,** किसी से भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो, चाहे लौकिक, चाहे अलौकिक पहले अपने शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति को चेक करो और किससे भी मिलते हो, तो सदा आत्मा को देख करके बात करो, आत्मा से बात करते हैं, कोई अलौकिक परिवार से बात करते हो, **खुशी होनी चाहिए यह कल्प पहले वाली, हर कल्प भाग्य बनाने वाली कोटों में कोई आत्मा है।** उस भाव से देखो। चाहे प्यादा हो, लेकिन है तो कोटों में कोई। मेरा बाबा तो कहता है। चाहे क्रोधी भी हो, स्वभाव अच्छा नहीं हो, लेकिन आप अपना स्वभाव श्रेष्ठ रखो। आप श्रेष्ठ आत्मा के रूप में देखो, श्रेष्ठ आत्मा के स्वरूप में देखो। तभी कार्य अच्छा होगा, जमा होगा। तो होमवर्क बहुत मिला है इस वर्ष का। सभी पूछते हैं ना क्या करें, क्या करें, क्या करें। बहुत होम वर्क मिला है। फिर बापदादा नम्बरवन सब होम वर्क में पास उसको सौगात देंगे। चाहे हजार भी हों तो भी देंगे, तैयार करायेंगे सौगात। करेंगी ना? लेकिन सर्टीफिकेट लेंगे, ऐसे नहीं आप कहेंगे बाबा मान जायेगा, नहीं। साथियों से सर्टीफिकेट भी लेंगे। पहले मन का सर्टीफिकेट फिर ब्राह्मण परिवार के साथियों का सर्टीफिकेट और तीसरा है बाप का सर्टीफिकेट। तो लेंगे ना सर्टीफिकेट। हिम्मत है ना! जो समझते हैं हम सर्टीफिकेट लेकर ही छोड़ेंगे, दृढ़ निश्चय है, यह तो यूथ भी उठा रहा है। **यूथ ग्रुप भी उठा रहा है।** अच्छा है। **डबल फारेनर्स भी उठा रहे हैं। यह सामने वाले नहीं उठा रहे हैं। हाथ लम्बा उठाओ,** करके दिखायेंगे। फिर तो बहुत सौगातें तैयार करनी पड़ेंगी। आपकी तैयारी के पीछे सौगात तो कुछ भी नहीं है। पहले तो परमात्म दिलतख्त मिलेगा। लेकिन सौगात देंगे।

(३१-१२-२००५)

## अभी बहुत समय से ऐसे विशेष सभा के बीच में नहीं आये हैं

बापदादा को याद है पहले शुरू शुरू में जब इन्डिया में बड़े प्रोग्राम होते थे तो विदेश का कोई न कोई अथॉरिटी वाला आता था और वह भाषण करता था अखबारों में आता था। अभी बहुत समय से ऐसे विशेष सभा के बीच में नहीं आये हैं। अलग आये हैं। रिट्रीट होता है प्रोग्राम भी चलता है लेकिन जैसे पहले विशेष आत्मार्थ संगठन में बोलती थी, ऐसा अच्छा होता है। अभी ७० साल का प्रोग्राम बनायेंगे ना, उसमें कोशिश करो। क्योंकि अखबार वाले इन्ट्रेस्ट से लेते हैं। बाकी वृद्धि अच्छी हो रही है, प्रोग्राम्स भी अच्छे कर रहे हो उसकी मुबारक है। पहले संख्या वहाँ भी प्रोग्राम में कम आती थी, अभी संख्या अच्छी आती है। और अच्छे-अच्छे वारिस क्वालिटी भी निकल रही है। लेकिन तीन मास में विदेश वाले नम्बरवन लेंगे? फर्स्ट नम्बर लेंगे? जो लेंगे वह हाथ उठाओ। तीन सर्टीफिकेट लेने पड़ेंगे। हिम्मत रखो।

(३१-१२-२००५)

## एक-एक ने एक को तैयार किया है, अपने से भी आगे

अच्छा यह सामने वाला ग्रुप (सिन्धी ग्रुप) क्या करेगा? लाइन में तो अच्छे खड़े हो, वृद्धि भी अच्छी कर रहे हो इसकी तो मुबारक है, अच्छा, बापदादा पूछते हैं कुछ समय पहले इसी ग्रुप ने कहा था, कि हम एक-एक एक ऐसा तैयार करके लायेंगे, याद है? एक-एक ने एक को तैयार किया है, अपने से भी आगे? जिसने किया है वह हाथ उठाओ और यहाँ तक लाया है वह हाथ उठाओ। अच्छा। निभाया है, मुबारक हो, उसकी बहुत बहुत मुबारक हो लेकिन अभी और भी लाना पड़ेगा। वृद्धि तो चाहिए ना। (३१-१२-२००५)

## फरिश्ता स्वरूप के धारणा के समीप आ रहे हैं

अच्छा यूथ वाले भी आवाज फैलाने के लिए प्रोग्राम अच्छे बना रहे हैं। और स्व पुरुषार्थ के लिए भी अच्छे प्रोग्राम बना रहे हैं। बापदादा ने समाचार सुना है, खुशखबरी भी सुनी कि परिवर्तन किया है और आगे भी परिवर्तन कायम रखेंगे। फरिश्ता स्वरूप के धारणा के समीप आ रहे हैं। तो जो अपने में परिवर्तन किया, वह वहाँ जाके भी रहेगा या थोड़ा-थोड़ा कम हो जायेगा? रहेगा। जो समझते हैं सदा रहेगा, वह हाथ उठाओ। (३१-१२-२००५)

## हर एक बच्चे को बाप ने विचित्र दर्पण दिया है

बापदादा कहते हैं हर एक बच्चे को बाप ने विचित्र दर्पण दिया है, उस दर्पण में अपने भविष्य का चित्र देख सकते हो कि मैं कौन! जानते हो, वह दर्पण आपके पास है? जानते हो कौन सा दर्पण? पहली लाइन वाले तो जानते होंगे ना! जानते हैं? वह दर्पण है वर्तमान समय की स्वराज्य स्थिति का दर्पण। वर्तमान समय जितना स्वराज्य अधिकारी हैं उस अनुसार विश्व के राज्य अधिकारी बनेंगे। अब अपने आपको दर्पण में देखो स्वराज्य अधिकारी सदा हैं? वा कभी अधीन, कभी अधिकारी? अगर कभी अधीन, कभी अधिकारी बनते हैं, कभी आँख धोखा देती, कभी मन धोखा देता, कभी मुख धोखा देता, कभी कान भी धोखा दे देता है। व्यर्थ बातें सुनने का शौक हो जाता है। अगर कोई भी कर्मेन्द्रिय धोखा देती है, परवश बना देती है, इससे सिद्ध है कि बाप द्वारा जो सर्व शक्तियाँ वरदान में मिली हैं, वा वर्से में मिली हैं वह कन्ट्रोलिंग पॉवर, रूलिंग पॉवर नहीं है। तो सोचो जो स्व के ऊपर रूल नहीं कर पाते वह विश्व के ऊपर रूल कैसे करेगा? अपने वर्तमान स्थिति के स्वराज्य अधिकारी के दर्पण में चैक करो। दर्पण तो सभी को मिला है ना? दर्पण मिला है तो हाथ उठाओ। दर्पण में कोई दाग तो नहीं हो गया है? स्पष्ट है दर्पण? (18-01-2006)

## अब सफलता की सेरीमनी की डेट फिक्स करो

अभी आप सभी की मीटिंग होने वाली है ना, डेट फिक्स होती है ना मीटिंग की। तो इस बारी सिर्फ सर्विस के प्लैन की मीटिंग बापदादा नहीं देखने चाहते, सर्विस के प्लैन बनाओ लेकिन मीटिंग में सफलता की सेरीमनी का प्लैन बनाओ। बहुत सेरीमनी कर ली अब सफलता की सेरीमनी की डेट फिक्स करो। चलो सोचते हैं कि सभी कैसे होंगे! बापदादा कहते हैं कम से कम 108 रत्न तो सफलतामूर्त की सेरीमनी मनायें। एग्जैम्पुल बनें। यह हो सकता है? बोलो। पहली लाइन वाले बोलो, हो सकता है? जवाब देने की हिम्मत नहीं रखते। सोचते हैं पता नहीं करेंगे, नहीं करेंगे? हिम्मत से सब कुछ हो सकता है। दादी बतावे। 108 सफलतामूर्त बन सकते हैं? (हाँ जरूर बन सकते हैं, सफलता की सेरीमनी हो सकती है)। देखो, दादी में हिम्मत है। आप सबकी तरफ से हिम्मत रख रही है। तो सहयोगी बनना। तो यह जो मीटिंग होगी ना, उसमें बापदादा रिपोर्ट लेंगे। पाण्डव बताओ ना, क्यों चुप हैं? चुप क्यों हैं? यह हिम्मत क्यों नहीं रखते? करके दिखायेंगे? ऐसे? अच्छा है, हिम्मत तो रख सकते हैं? जो समझते हैं हम तो हिम्मत रख करके दिखायेंगे, वह हाथ उठाओ। करेंगे? कोई संस्कार नहीं रहेगा? कोई कमजोरी नहीं रहेगी? अच्छा, मधुबन वाले भी हाथ उठा रहे हैं। वाह! मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा, 108 तो फिर सहज हो जायेगा। इतनों ने हाथ उठाया तो 108 क्या बड़ी बात है। डबल फारेनर्स क्या करेंगे? हाँ, दादी जानकी सुन रही है, उसको उमंग आ रहा है मैं बोलूँ। फारेन की माला भी देखेंगे, ठीक है? हाथ उठाओ, ठीक है? (18-01-2006)

## बापदादा एक विचित्र दीवाली मनाने चाहते हैं

आज समर्थ दिवस है ना तो समर्थी है। बापदादा एक विचित्र दीवाली मनाने चाहते हैं। आपने तो दीवाली कई बार मनाई है लेकिन बापदादा विचित्र दीवाली मनाने चाहता है, सुनायें? सुनायें? सुनायें? अच्छा। वर्तमान समय को तो देख ही रहे हो, दिन प्रतिदिन चारों ओर मनुष्य आत्माओं में निराशा बहुत बढ़ रही है। तो चाहे मन्सा सेवा करो, चाहे वाचा करो, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क की करो, लेकिन बापदादा निराश मनुष्यों के अन्दर आशा का दीप जगाने चाहते हैं। चारों ओर मनुष्य आत्माओं के मन में आशा के दीपक जग जायें। यह दीवाली आशा के दीपकों की बापदादा चाहते हैं।



हो सकता है? वायुमण्डल में कम से कम यह आशा का दीपक जग जाए तो अब विश्व परिवर्तन हुआ कि हुआ। गोल्डन सवेरा आया कि आया। यह निराशा खत्म हो जाए – कुछ होना नहीं है, कुछ होना नहीं है। आशा के दीप जग जायें। कर सकते हैं ना, यह तो सहज है ना या मुश्किल है? सहज है? जो करेगा वह हाथ उठाओ। करेगा? इतने सभी दीपक जगायेंगे तो दीपमाला तो हो जायेगी ना!

(18-01-2006)

## हर सेन्टर निर्विघ्न स्वराज्य अधिकारी बन सकता है

अभी कर्नाटक में कुछ कमाल करके दिखाओ। हर सेन्टर निर्विघ्न स्वराज्य अधिकारी बन सकता है? हो सकता है? तीन मास दिये हैं, तो निर्विघ्न, सिर्फ तीन मास के लिए नहीं, सदाकाल के लिए विघ्न समाप्त। अगर संस्कार संकल्प में इमर्ज भी कब हो, वहा ही खत्म कर दो। कर्म में, बोल में नहीं आवे। तो ऐसी रिजल्ट दिखायेंगे – कर्नाटक नम्बरवन निर्विघ्न। करेंगे? करना पड़ेगा। एक दो के सहयोगी बनकर मदद देकर भी बनाना पड़ेगा क्योंकि दो चार भी अगर निर्विघ्न नहीं बनें तो सर्टिफिकेट कैसे मिलेगा। कर्नाटक निर्विघ्न का सर्टिफिकेट तो नहीं मिलेगा ना। इसलिये सहयोगी बन, एक दो को हिम्मत दिलाके करना पड़ेगा। तैयार हैं? टीचर्स तैयार हैं? करना पड़ेगा? देखो, टी.वी. में आ रहा है। सब कर्नाटक की टीचर्स हाथ उठा रही हैं। अच्छा देखेंगे। पहली मुबारक तो दे रहे हैं और आगे देखेंगे। ठीक है ना! पीछे आगे वाले करना पड़ेगा। अपने संस्कार को इमर्ज नहीं करने देना। संकल्प में ही परिवर्तन कर देना। अच्छा है।

(18-01-2006)

## समर्थ बाप, समर्थ हम, व्यर्थ खत्म

आज बापदादा सब संकल्प की विधि को एक शुभ संकल्प बनाने चाहते हैं क्योंकि मन के संकल्प में बहुत समय से जो कमजोरी चलती है वह बहुत कारण से मन बुद्धि को भी सहयोगी बना देता है और मन बुद्धि में जो भी संकल्प चलता रहता है कमजोरी का, वह संस्कार बन जाता है। क्योंकि बहुत समय चलता है ना तो वह संस्कार का रूप हो जाता है। लेकिन मेरा संस्कार अभी कभी नहीं कहना, अगर मेरा संस्कार कहेंगे ना तो बापदादा और ब्राह्मण समझेंगे कि इसको रावण की जायदाद से प्यार है। तो डबल विदेशियों ने तो विदाई दे दी है ना! दे दी? व्यर्थ स्टॉप। समर्थ बाप, समर्थ हम, व्यर्थ खत्म। ठीक है ना - फारेनर्स की एक विशेषता है जो बाप को अच्छी लगती है, वह क्या है? अन्दर नहीं रखते हैं, सब बोल देते हैं, छिपाते नहीं है, मैजारिटी। मैजारिटी ऐसे हैं। और जो संकल्प किया दृढ़, उसको प्रैक्टिकल में लाने की भी आदत है इसीलिए डबल फॉरेनर्स शुरू करो दृढ़ संकल्प, वेस्ट खत्म, बेस्ट। ठीक है? करेंगे डबल फॉरेनर्स? करेंगे? आप में संस्कार रूप में भी है, जो संकल्प किया वह करके दिखाते हो। तो सारे फॉरेन में वेस्ट का नाम निशान न हो, न वेस्ट टाइम, न वेस्ट बोल, न वेस्ट संकल्प, न वेस्ट कर्म, न वेस्ट सम्बन्ध-सम्पर्क। ठीक है? पसन्द है? अच्छा। तो कब रिजल्ट यह आयेगी? एकजैम्पुल बनेंगे ना! तो कब तक रिजल्ट आयेगी? कब तक यह रिजल्ट आयेगी? तीन मास में या साल में? क्या सोचती हैं? टीचर्स क्या सोचती हैं? (दादी जानकी कह रही हैं अभी शिवरात्रि आ रही है, अभी-अभी करेंगे, बाबा ने कहा, हो गया) अच्छा है देखो दृढ़ संकल्प रखेंगे, करना ही है, कुछ भी हो जाए, करना ही है। (सभी कह रहे हैं शिव जयन्ती तक हो जायेगा) मुबारक हो लाख, लाख मुबारक हो। बहुत अच्छा आप सभी के मुख में गुलाबजामुन। अच्छा। जो भी उमंग-उत्साह से आगे बढ़ने चाहे वह बढ़ सकता है। ऐसे नहीं डबल फारेनर्स ने हाथ उठाया और आप सभी क्या करेंगे? इन्डिया वाले क्या करेंगे? नम्बरवन तो लेना चाहते हैं ना! सभी के दिल में यह उमंग आना चाहिए कि हमने कहा नहीं है लेकिन करके दिखायेंगे। तो इन्डिया वाले ऐसे करेंगे? हिम्मत दिखायेंगे? हिम्मत दिखायेंगे? पहली लाइन हाथ नहीं उठा रही है। हाँ मधुबन वाले भी करेंगे? मधुबन वाले बड़ा हाथ उठाओ।

(03-02-2006)

## बाप का बनने में मेहनत क्या की

बापदादा को भक्तों के ऊपर स्नेह भी है, रहम भी आता है, कितना कुछ प्रयत्न करते हैं, दूँढते रहते। आपने दूँढा? या बाप ने आपको दूँढा? किसने दूँढा? आपने दूँढा? आप तो फेरे ही पहनते रहे। लेकिन बाप ने देखो, बच्चों को किसी भी कोनों में खो गये, आज भी देखो भारत के अनेक राज्यों से तो आये हो लेकिन विदेश भी कम नहीं है, १०० देशों से आ गये हैं। और मेहनत क्या की? बाप का बनने में मेहनत क्या की? मेहनत की? की है मेहनत? हाथ उठाओ जिसने मेहनत की, बाप को दूँढने में भक्ति में किया लेकिन जब बाप ने दूँढ लिया, फिर मेहनत की? की मेहनत? सेकण्ड में सौदा कर दिया। एक शब्द में सौदा हो गया। वह एक शब्द क्या? “मेरा”। बच्चों ने कहा “मेरा बाबा”, बाप ने कहा “मेरे बच्चे”। हो गये। सस्ता सौदा है या मुश्किल? सस्ता है ना! जो समझते हैं थोड़ा-थोड़ा मुश्किल है वह हाथ उठाओ। जो मुश्किल समझते हैं वह हाथ उठाओ। कभी-कभी तो मुश्किल लगता है ना! या नहीं? है सहज लेकिन अपनी कमजोरियाँ मुश्किल अनुभव कराती हैं।

(24-02-2006)

## पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत की नहीं, लेकिन.....

आप सबने भी व्रत तो लिया है, वह थोड़े दिनों का व्रत रखते हैं और आप सबने ऐसा व्रत रखा है जो एक अभी का व्रत २१ जन्म कायम रहता है। वह हर वर्ष मनाते हैं, व्रत रखते हैं, आप कल्प में एक बार व्रत लेते हो जो २१ जन्म न मन से व्रत रखना पड़ता, न तन से व्रत रखना पड़ता है। व्रत तो आप भी लेते हो, कौन सा व्रत लिया है? पवित्र वृत्ति, दृष्टि, कृति, पवित्र जीवन का व्रत लिया है। जीवन ही पवित्र बन गई। पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत की नहीं, लेकिन जीवन में आहार, व्यवहार, संसार, संस्कार सब पवित्र। ऐसा व्रत लिया है ना? लिया है? **कांध हिलाओ**। लिया है? पक्का लिया है? पक्का या थोड़ा-थोड़ा कच्चा? अच्छा, एक महाभूत काम, उसका व्रत लिया है या और चार का भी लिया है? **ब्रह्मचारी तो बने लेकिन चार जो पीछे हैं, उसका भी व्रत लिया है?** क्रोध का व्रत लिया है कि वह छूट है? क्रोध करने की छुट्टी मिली है? दूसरा नम्बर है ना तो कोई हर्जा नहीं, ऐसे तो नहीं? जैसे महा भूत को, महाभूत समझकर मन-वाणी-कर्म में व्रत पक्का लिया है, ऐसे ही क्रोध का भी व्रत लिया है? जो समझते हैं हमने क्रोध का भी बाल बच्चे पीछे भी हैं, लोभ मोह अहंकार लेकिन बापदादा आज क्रोध का पूछ रहे हैं, जिसने क्रोध विकार का पूर्ण व्रत लिया है, मन्सा में भी क्रोध नहीं, दिल में भी क्रोध की फीलिंग नहीं, ऐसा है? आज शिव जयन्ती है ना! तो भक्त व्रत रखेंगे तो बापदादा भी व्रत तो पूछेंगे ना! जो समझते हैं कि स्वप्न में भी क्रोध का अंश आ नहीं सकता, वह **हाथ उठाओ**। आ नहीं सकता। है? आता नहीं है? आता नहीं है? नहीं आता है? अच्छा, इन्हों का फोटो निकालो, **जिन्होंने हाथ उठाया उनका फोटो निकालो**। अच्छा है क्यों? क्योंकि आपके हाथ से बापदादा नहीं मानेगा, आपके साथियों से भी सर्तीफिकेट लेंगे। फिर प्राइज़ देंगे। अच्छी बात है क्योंकि बापदादा ने देखा कि क्रोध का अंश भी ईर्ष्या, जैलसी यह भी क्रोध के बाल बच्चे हैं। लेकिन अच्छा है हिम्मत जिन्होंने रखी है, उनको बापदादा अभी तो मुबारक दे रहे हैं लेकिन बाद में सर्तीफिकेट के बाद में फिर प्राइज़ देंगे क्योंकि बापदादा ने जो होम वर्क दिया, उसकी रिजल्ट भी बापदादा देख रहे हैं।

(२५-०२-२००६)

## वेस्ट थॉट्स का केक काटा? काटना तो पड़ेगा ना! क्योंकि साथ चलना है

आज बर्थ डे मना रहे हो, तो बर्थ डे पर क्या किया जाता है? एक तो केक काटते हैं, तो अभी दो मास तो हो गये, अभी एक मास रहा है, इस दो मास में आपने व्यर्थ संकल्प का केक काटा? वह केक तो बहुत सहज काट लेते हो ना, आज भी काटेंगे। लेकिन वेस्ट थॉट्स का केक काटा? काटना तो पड़ेगा ना! क्योंकि साथ चलना है, यह तो पक्का वायदा है ना! कि साथ हैं, साथ चलेंगे। साथ चलना है तो समान तो बनना पड़ेगा ना! अगर थोड़ा बहुत रह भी गया हो, दो मास तो पूरे हो गये, तो आज के दिन बर्थ डे मनाने कहाँ-कहाँ से आये हो। प्लेन में भी आये हो, ट्रेन में भी आये हो, कारों में भी आये हो, बापदादा को खुशी है कि भाग-भाग करके आये हो। लेकिन बर्थ डे पर पहले गिफ्ट भी देते हैं, तो जो एक मास रहा हुआ है, होली भी आने वाली है। होली में भी कुछ जलाया ही जाता है। तो क्या जो थोड़ा बहुत वेस्ट थॉट्स बीज है, अगर बीज रहा हुआ होगा तो कभी तना भी निकल आयेगा, कभी शाखा भी निकल आयेगी। तो क्या आज के उत्सव के दिन मन के उमंग उत्साह से, मन का उमंग-उत्साह, मुख का नहीं मन का, मन के उमंग उत्साह से जो थोड़ा बहुत रह गया हो, चाहे मन्सा में, चाहे वाणी में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में, क्या आज बाप के बर्थ डे पर बाप को यह गिफ्ट दे सकते हो? दे सकते हो मन के उमंग-उत्साह से? फायदा तो आपका है, बाप को तो देखना है। जो उमंग उत्साह से, हिम्मत रखते हैं, करके ही दिखायेंगे, बेस्ट बन के दिखायेंगे, वह **हाथ उठाओ**। छोड़ना पड़ेगा, सोच लो। बोल में भी नहीं। सम्बन्ध-सम्पर्क में भी नहीं। है हिम्मत? हिम्मत है? मधुबन वालों में भी है, फारेन वालों में भी हैं, भारतवासियों में भी है क्योंकि बापदादा का प्यार है ना तो बापदादा समझते हैं सब इक्के चलें, कोई रह नहीं जाये। **जब वायदा किया है, साथ चलेंगे, तो समान तो बनना ही पड़ेगा**। प्यार है ना! मुश्किल से तो नहीं हाथ उठाया?

(२५-०२-२००६)

## अगर साथ चलना है तो गिफ्ट देनी ही पड़ेगी

बापदादा इस संगठन का, ब्राह्मण परिवार का बाप समान मुखड़ा देखने चाहते हैं। सिर्फ दृढ़ संकल्प की हिम्मत करो, बड़ी बात नहीं है लेकिन सहनशक्ति चाहिए, समाने की शक्ति चाहिए। यह दो शक्तियां, जिसमें सहनशक्ति है, समाने की शक्ति है, वह क्रोधमुक्त सहज हो सकता है। तो आप ब्राह्मण बच्चों को तो बापदादा ने सर्व शक्तियां वरदान में दी हैं, टाइटल ही है मास्टर सर्वशक्तित्वान। बस एक स्लोगन याद रखना, अगर एक मास में समान बनना ही है तो एक स्लोगन याद रखना, वायदे का है - **न दुःख देना है, न दुःख लेना है**। कई यह चेक करते हैं कि आज के दिन किसको दुःख दिया नहीं है, लेकिन लेते बहुत सहज हैं। क्योंकि लेने में दूसरा देता है ना, तो अपने को छोड़ा देते हैं, मैंने थोड़ेही कुछ किया, दूसरे ने दिया, लेकिन लिया क्यों? लेने वाले आप हो या देने वाले? देने वाले ने गलती की, वह बाप और झामा जाने उसका हिसाब-किताब, लेकिन आपने लिया क्यों? बापदादा ने रिजल्ट में देखा है कि देने में सोचते हैं फिर भी लेकिन ले बहुत जल्दी लेते हैं। इसलिए समान बन नहीं सकेंगे। लेना नहीं है कितना भी कोई दे, नहीं तो फीलिंग की बीमारी बढ़ जाती है। इसलिए अगर छोटी छोटी बातों में फीलिंग बढ़ती है तो वेस्ट थॉट्स खत्म नहीं हो सकते और बाप के साथ कैसे चलेंगे! बाप का प्यार है, बाप आपको छोड़

नहीं सकता, साथ लेके ही जाना है। मंजूर है? पसन्द है ना? पसन्द है तो **हाथ उठाओ**। पीछे पीछे तो नहीं आना है ना! अगर साथ चलना है तो गिफ्ट देनी ही पड़ेगी। एक मास सब अभ्यास करो, न दुःख लेना है न दुःख देना है। यह नहीं कहना मैंने दिया नहीं, उसने ले लिया, कुछ तो होता है। परदर्शन नहीं करना, स्व-दर्शन। *हे अर्जुन मुझे बनना है।* (२५-०२-२००६)

## चाहे थोड़े थे, लेकिन महामण्डलेश्वर थे

अभी यू.पी. क्या कमाल करेगी? यू.पी. में साधू सन्त महात्मायें बहुत हैं, एक तरफ यात्रू हैं, एक तरफ महात्मायें हैं, एक महात्माओं का झुण्ड, ग्रुप जैसे कुछ समय पहले हरिद्वार का ग्रुप आया था, चाहे थोड़े थे, लेकिन महामण्डलेश्वर थे ऐसे पूरी यू.पी. बनारस ऐसा ग्रुप बनाओ जो वह ग्रुप मधुबन तक पहुंच जाये। (सबसे पहले बनारस से ही ग्रुप पहुंचा था) थोड़े आये ना, अभी ग्रुप बनाके लाओ। सारे यू.पी. के इक्के करके अच्छा ग्रुप बनाकरके लाओ जो उन्हीं का स्नेह मिलन चले। यह तो हो सकता है ना! तो कब तक लायेंगे? क्योंकि समय पर तो कोई भरोसा नहीं। अभी तो एक ही समय पर तीन प्रकार की सेवा करनी है। मन्सा भी, वाणी भी और सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा अर्थात् चेहरे द्वारा भी। ऐसी फास्ट सेवा करेंगे तब विश्व आपके गुण गायेगा। तो सुना यू.पी. वालों को क्या करना है? पाण्डव सुन रहे हैं? **हाथ उठाओ** पाण्डव बहुत हैं। तो करो कोई कमाल। कमाल करके दिखाना। (२५-०२-२००६)

## हर मेम्बर नम्बरवन होना चाहिए

अभी एक लास्ट टर्न रहा हुआ है, बापदादा ने होम वर्क तो दे ही दिया था। बापदादा तो रोज रिजल्ट देखते हैं, आप समझेंगे बापदादा हिसाब लेगा लास्ट टर्न में, लेकिन बापदादा रोज देखते हैं, अभी भी और १५ दिन हैं, इस १५ दिन में हर वर्ग वाले जो आये हैं वह भी, जो नहीं भी आये हैं उन वर्ग के निमित्त बने हुए बच्चों को बापदादा यही इशारा देते हैं कि हर वर्ग अपने स्व-उन्नति का कोई भी प्लैन बनाओ, कोई विशेष शक्ति स्वरूप बनने का वा विशेष कोई गुण मूर्त बनने का वा विश्व कल्याण प्रति कोई न कोई लाइट-माइट देने का हर एक वर्ग आपस में निश्चित करो और फिर चेक करो कि जो भी वर्ग के मेम्बर हैं, मेम्बर बने बहुत अच्छा किया है लेकिन हर मेम्बर नम्बरवन होना चाहिए। सिर्फ नाम नोट हो गया फलाने वर्ग के मेम्बर हैं नहीं, फलाने वर्ग के स्व उन्नति के मेम्बर हैं। यह हो सकता है जो वर्ग के निमित्त हैं वह उठो। हाँ जो भी वर्ग हैं जो निमित्त हैं, निमित्त वाले उठो। फॉरेन वाले भी उठो। फॉरेन में जो निमित्त हैं वह उठो। फॉरेन वाले जो ४-५ निमित्त हैं वह उठो। बापदादा को तो सभी बहुत शक्तिशाली मूर्तें लगती हैं। बहुत अच्छी मूर्तें हैं। तो आप सभी समझते हो १५ दिन में कुछ करके दिखायेंगे। हो सकता है? **बोलो, हो सकता है? (पूरा पुरुषार्थ करेंगे)** और बोलो, क्या हो सकता है? (प्रशासक वर्ग ने प्लैन बनाया है कि कोई भी गुस्सा नहीं करेंगे) उनकी इन्क्वायरी भी करते हो? आप बहनें (टीचर्स से) हिम्मत रखते हैं - १५ दिन में इन्क्वायरी करके रिजल्ट बता सकते हैं। **फॉरेन वाले तो हाँ कर रहे हैं।** आप क्या समझती हो, हो सकता है? भारत वाले बताओ हो सकता है। बापदादा को तो आप सभी की सूरतें देख लगता है कि रिजल्ट अच्छी है। लेकिन अगर १५ दिन भी अटेन्शन रखने का पुरुषार्थ करेंगे तो यह अभ्यास आगे भी काम में आयेगा। अभी ऐसे मीटिंग करना जो जिसको लक्ष्य लेना हो किसी भी गुण का, किसी भी शक्ति रूप का, इसमें बापदादा नम्बर देंगे। (१४-०३-२००६)

## बापदादा जब मैं-मैं का गीत सुनता है ना तो स्विच बन्द कर देता है। वाह! वाह! के गीत होते हैं तो आवाज बड़ा कर देते हैं

तो स्व-उन्नति के प्लैन बनायेंगे, इसमें स्वयं के चेकर बनकर चेक करना, यह रॉयल में तो नहीं आ रही है क्योंकि आज होली मनाने आये हो। तो बापदादा यही संकल्प देते हैं तो आज देह-अभिमान और अपमान की जो मैं आती है, दिलशिकस्त की मैं आती है, इसको जलाके ही जाना, साथ नहीं ले जाना। कुछ तो जलायेंगे ना। आग जलायेंगे क्या! ज्वालामुखी योग अग्नि जलाओ। जलाने आती है? हाँ ज्वालामुखी योग, आता है? कि साधारण योग आता है? ज्वालामुखी बनो। लाइट माइट हाउस। तो यह पसन्द है? अटेन्शन प्लीज़, मैं को जलाओ। **बापदादा जब मैं-मैं का गीत सुनता है ना तो स्विच बन्द कर देता है। वाह! वाह! के गीत होते हैं तो आवाज बड़ा कर देते हैं।** क्योंकि मैं-मैं में खिंचावट बहुत होती है। हर बात में खिंचावट करेंगे, यह नहीं, यह नहीं, ऐसा नहीं, वैसा नहीं। तो खिंचावट होने के कारण तनाव पैदा हो जाता है। बापदादा को लगाव, तनाव और स्वभाव, उल्टा स्वभाव। वास्तव में स्वभाव शब्द बहुत अच्छा है। स्वभाव, स्व का भाव। लेकिन उसको उल्टा कर दिया है। न बात की खिंचावट में करो, न अपने तरफ कोई को खिंचाओ। वह भी बहुत परेशानी करता है। कोई कितना भी आपको कहे, लेकिन अपने तरफ नहीं खींचो। न बात को खींचो, न अपने तरफ खींचो, खिंचावट खत्म। बाबा, बाबा और बाबा। पसन्द है ना! तीन बातें या एक मैं को छोड़कर जाना यहाँ, साथ नहीं लेके जाना, ट्रेन में बोझ हो जायेगा। आपका गीत है ना - मैं बाबा

की, बाबा मेरा। है ना। तो एक मैं रखो, दो मैं खत्म। तो होली मना ली, जला दिया। संकल्प में। अभी तो संकल्प करेंगे। संकल्प किया? **हाथ उठाओ**। किया या थोड़ा-थोड़ा रहेगा। थोड़ा-थोड़ा छुट्टी दें। हाँ थोड़े की छुट्टी दें? जो समझते हैं थोड़े थोड़े की छुट्टी होनी चाहिए वह **हाथ उठाओ**। थोड़ा तो रहेगा ना, नहीं रहेगा? आप तो बहुत बहादुर हो। मुबारक हो। खुशी में नाचो, गाओ। तनाव में नहीं। खींचातान में नहीं।

(१४-०३-२००६)

## मधुबन अर्थात् बापदादा के कर्म के किरणों का वायुमण्डल

बापदादा को एक बात की खुशी है कि जिस ज़ोन का टर्न होता है, वह जी भरके आ जाते हैं। अच्छा है। चांस मिलता है और चांस लेना यह बहुत अच्छी बात है। एकस्ट्रा सेवा और याद का वायुमण्डल, मदद मिलती है। अपने जीवन की कहानी में यह दिन विशेष प्राप्ति के सदा याद रखना। मधुबन में जितने भी दिन रहे, कोई विघ्न आया? जिसको कोई विघ्न आया हो वह **हाथ उठाओ**। मातायें भी। अगर नहीं आया तो जमा खाता कितना किया? विघ्न नहीं आया इसकी मुबारक हो लेकिन आपको जमा का चांस मिला। गोल्डन चांस। कितना जमा किया, वह चेक किया? एकस्ट्रा कमाई जमा हुई? जिसकी हुई वह **हाथ उठाओ**। जमा हुई? अब यह दिन गोल्डन दिन जमा के दिन सदा अपने जीवन में विशेष यादगार रखना। कभी भी कोई विघ्न आये भी तो यह दिन याद करना। बिना ट्रेन के टिकट के (बुद्धि द्वारा) मधुबन में पहुंच जाना। क्योंकि यहाँ बापदादा के कर्म का वायुमण्डल है। कैच करना आपका काम है। लेकिन मधुबन अर्थात् बापदादा के कर्म के किरणों का वायुमण्डल है। इतने बड़े-बड़े महारथी है, जो एडवांस पार्टी में भी गये हैं, उन्हीं के भी कर्म की रेखायें मधुबन में वायुमण्डल के रूप में हैं। इसलिए गोल्डन चांसलर बने हो। चांसलर नहीं, गोल्डन चांसलर बने हो।

(१४-०३-२००६)

## तीसरा नेत्र क्लीन और क्लीयर है

जैसे लाइट हाउस माइट हाउस सेकण्ड में ऑन करो और अपनी लाइट फैलाते हैं, ऐसे आप सेकण्ड में लाइट हाउस बन चारों ओर लाइट फैला सकते हो? यह स्थूल आँख एक स्थान पर बैठे दूर तक देख सकती है ना! फैला सकती है ना अपनी दृष्टि! ऐसे आप तीसरे नेत्र द्वारा एक स्थान पर बैठे चारों ओर वरदाता, विधाता बन नजर से निहाल कर सकते हो? चैक कर रहे हो अपने को सब बातों में? इतना तीसरा नेत्र क्लीन और क्लीयर है? अगर थोड़ी भी कमजोरी है, सभी बातों में तो कारण पहले ही सुनाया है। यह हद का लगाव "मैं और मेरा", जैसे "मैं" के लिये स्पष्ट किया था – होमवर्क भी दिया था। दो "मैं" को समाप्त कर एक "मैं" रखनी है। सभी ने यह होमवर्क किया? जो सफल हुए, इस होमवर्क में, वह **हाथ उठाओ**। सफल हुए, बापदादा ने सबको देखा है। हिम्मत रखो ऐसी, डरो नहीं। अच्छा है मुबारक मिलेगी। बहुत थोड़े हैं। **किया है तो हाथ उठाओ**। यह टी.वी. में हाथ दिखाओ। पीछे भी दिखाओ। बहुत थोड़े ने हाथ उठाया है। अभी क्या करें? सभी को अपने ऊपर हंसी भी आ रही है। अच्छा, दूसरा होमवर्क था, क्रोध को छोड़ना है, यह तो सहज है ना! तो क्रोध को किसने छोड़ा, क्रोध नहीं किया इतने दिनों में? (इसमें बहुतों ने हाथ उठाया) इसमें थोड़े ज्यादा हैं। जिन्होंने क्रोध नहीं किया, आपके आस-पास रहने वालों से भी पूछेंगे। बहुत हैं। क्रोध नहीं किया है? संकल्प में, मन में क्रोध आया? चलो, फिर भी मुबारक हो, अगर मन में आया मुख से नहीं किया तो भी मुबारक है। बहुत अच्छा।

(२६-०३-२००६)

## बातें दिखाई न दें, बाबा दिखाई दे

बातें दिखाई न दें, बाबा दिखाई दे। बाबा ने क्या कहा, बातें क्या करती हैं, बातें क्या कहती हैं, नहीं। बाबा ने क्या कहा। बाबा को फॉलो करना है। फॉलो बातें करना है, या फॉलो फादर करना है? और बापदादा अभी यह देखने चाहते हैं, अगर वतन में स्विच ऑन करें तो सब बच्चे चाहे देश में, चाहे विदेश में, चाहे गाँवों में, चाहे बड़े शहरों में, सब बच्चे सम्पन्न रूप में राजा बच्चे दिखाई दें। अभी बाप की हर एक बच्चे में यही श्रेष्ठ आशा है। तो आप सभी बाप के आशा के दीपक बनेंगे? बनेंगे? **हाथ उठाओ**। ऐसे नहीं हाथ उठाओ। फाइल में पत्र डाल दें हाँ का, नहीं फाइल न। सभी पूरी करेंगे। अच्छा मुबारक हो। **जिसने नहीं उठाया वह उठाओ**। कोई है? अच्छा इन्हीं को टाइम चाहिये? एक साल चाहिये? तीव्र पुरुषार्थ करो। करना ही है, होना ही है। मैजारेटी ने तो उठाया है। बापदादा को यह खुशी है और दिल की दुआयें दे रहे हैं, अब प्रैक्टिकल करके दिखाना। फिर बापदादा आयेगा। अभी टीचर बनेगा। ऐसे नहीं आयेगा। अभी तो बीच में समय है। जब पहला टर्न बापदादा आये, पहला टर्न फॉरेन वालों को मिलता है, तो पहले फॉरेन वालों को तैयार होना पड़ेगा। रेडी! फॉरेन वाले तैयार हो जायेंगे? अगर फॉरेन तैयार नहीं होगा तो पहला टर्न इण्डिया को देंगे। पहले मधुबन वालों को तैयार होना पड़ेगा क्योंकि बापदादा को मधुबन में ही आना है ना और तो कहाँ भी जाते नहीं। बापदादा को फॉरेन वालों पर फेथ है, ऐसे नहीं इण्डिया वालों पर नहीं है। लेकिन फॉरेन का पहला टर्न होता है तो फॉरेन वाले बनकर ही दिखायेंगे। ठीक है ना! आप बोलो, फॉरेन के लिये (दादी जानकी से) साकार में तो निमित्त

आपको बनना पड़ेगा। अभी तो टाइम है, 5-6 मास हैं। नहीं तो फिर ऐसा करेंगे, राय बताओ कि जो सच्ची दिल से लिखते हैं, बापदादा तो देखता है ना, बापदादा के पास भी दिखाई देता है, कि थोड़ा मिक्स है। तो जो लिखेंगे एवररेडी, उन्हीं से बापदादा मिलेंगे, औरों से नहीं। चाहे मधुबन में हो चाहे कहाँ भी हो। ठीक है? मधुबन वाले ठीक है? डबल फॉरेनर्स तो एवररेडी होंगे ना! बापदादा सबका सम्पन्न स्वरूप देखेगा। एवररेडी होंगे? ठीक है? **मैजारिटी ने तो हाथ उठाया है।** मुबारक हो। सभी को मुबारक एडवांस में दे रहे हैं। फिर सभी एक दो को मुबारक देंगे, वाह! सम्पूर्ण वाह!, वाह! सम्पन्न वाह!

(२८-०३-२००६)

## **जितना मन्सा सेवा में बिजी रहेंगे उतना समस्याओं से मुक्त हो जायेंगे**

जिन्हों को मन्सा सेवा का अभ्यास है, चाहे थोड़ा है चाहे बहुत है लेकिन अभ्यास है, कर सकते हैं, वह **हाथ उठाओ।** इसमें तो सब पास हैं। इतनी आत्मायें अगर मन्सा सेवा से वायुमण्डल फैला सकते हो तो क्या बड़ी बात है! जितना मन्सा सेवा में बिजी रहेंगे उतना समस्याओं से मुक्त हो जायेंगे क्योंकि आपका मन, बुद्धि बिजी रहेगी।

(२८-०३-२००६)

## **प्यार में 100 परसेन्ट है**

प्यार तो सभी का बापदादा से 100 परसेन्ट है, या कम है? जो समझते हैं प्यार में 100 परसेन्ट है, वह **हाथ उठाओ।** 100 परसेन्ट प्यार है? तो प्यार में तो थोड़ा बहुत है वह कुर्बान करना सहज है। मुबारक हो।

(२८-०३-२००६)

## अलग-अलग देश, अलग-अलग रसम-रिवाज लेकिन.....

९० देशों से अलग-अलग देश, अलग-अलग रसम-रिवाज लेकिन ५ ही खण्डों के एक चन्दन के वृक्ष बन गये हैं। एक वृक्ष में आ गये हैं। एक ही ब्राह्मण कल्चर हो गया, अभी है क्या इंगलिश है, कल्चर हमारा इंगलिश है, नहीं ना। ब्राह्मण है ना? जो समझते हैं अभी तो हमारा ब्राह्मण कल्चर है वह हाथ उठाओ। (३१-१०-२००६)

## जल्दी में जल्दी टूलेट का बोर्ड लगाना है

जल्दी में जल्दी टूलेट का बोर्ड लगाना है, इसलिए पहले ही कर लो। नये जो आये हैं पहली बारी, वह हाथ उठाओ। अच्छा। मुबारक हो। (३१-१०-२००६)

## सभी जिम्मेवार हैं

ऐसे नहीं समझो कि जो महारथी कहलाये जाते हैं, उनके पीछे विश्व का आधार है, अगर नये-नये भी हैं, क्योंकि आज नये भी बहुत आये होंगे। नये हैं, जिसने दिल से माना “मेरा बाबा”। मान लिया है? जो नये नये आये हैं वह मानते हैं? जानते हैं नहीं, मानते हैं “मेरा बाबा” वह हाथ उठाओ। लम्बा उठाओ। नये नये हाथ उठा रहे हैं। पुराने तो पक्के ही हैं ना, जिसने दिल से माना मेरा बाबा और बाप ने भी माना मेरा बच्चा, वह सभी जिम्मेवार हैं। (१६-११-२००६)

## भले पधारे

अभी इस चलती हुई सीजन में, सीजन भले इन्डिया वालों की है लेकिन डबल विदेशी भी कम नहीं हैं, बापदादा ने देखा है, कोई भी टर्न ऐसा नहीं होता जिसमें डबल विदेशी नहीं हो। यह उन्हीं की कमाल है। अभी हाथ उठाओ डबल विदेशी। देखो कितने हैं! स्पेशल सीजन बीत गई, फिर भी देखो कितने हैं! मुबारक है। भले पधारे, बहुत-बहुत मुबारक है। (१६-११-२००६)

## अगर कुछ रह जायेगा तो धर्मराज की सजा के लिए रूकना पड़ेगा

बाप की हर बच्चे के साथ प्रीत की रीत यही है कि साथ चलें, पीछे-पीछे नहीं। अगर कुछ रह जायेगा तो धर्मराज की सजा के लिए रूकना पड़ेगा। हाथ में हाथ नहीं होगा, पीछे-पीछे आयेंगे। मजा किसमें है? साथ में है ना! तो पक्का वायदा है ना? पक्का वायदा है साथ चलना है या पीछे-पीछे आना है? देखो हाथ तो बहुत अच्छा उठाते हैं। हाथ देख करके बापदादा खुश तो होते हैं लेकिन श्रीमत का हाथ उठाना। शिवबाबा को तो हाथ होगा नहीं, ब्रह्मा बाबा, आत्मा को भी हाथ नहीं होगा, आपको भी यह स्थूल हाथ नहीं होगा, श्रीमत का हाथ पकड़कर साथ चलना। चलेंगे ना! कांध तो हिलाओ। अच्छा हाथ हिला रहे हैं। बापदादा यही चाहते हैं एक भी बच्चा पीछे नहीं रहे, सब साथ-साथ चलें। एवररेडी रहना पड़ेगा। अच्छा। (१६-११-२००६)

## वारिस निकालने हैं

अभी टर्न निमित्त राजस्थान है। तो अगली सीजन बीती, अभी दूसरी सीजन शुरू हुई है, ६ मास बीच में पड़ता है तो उसमें राजस्थान ने कितने वारिस तैयार किये हैं? नाम ही है राजस्थान, बाप भी राजस्थान में आया है, तो बोलो कितने वारिस तैयार किये हैं? क्योंकि बापदादा ने कहा था कि वारिस निकालने हैं, तो पहला टर्न आपका आया है, निकले हैं, हाथ उठाओ। दो निकला हो एक निकला हो या निकलने की उर्मीद हो तो हाथ उठाओ। कितने एक या ५, कितने? (जयपुर से ३-४ निकले हैं, पुरुषार्थ जारी है, जोधपुर से २ निकले हैं) ५ तो हो गये ना। और कितने हैं! देखेंगे ५ कौन से निकले हैं, तैयार किया उसकी मुबारक है। अभी कभी बुलायेंगे उन वारिसों को। (१६-११-२००६)

## कुमारियां तैयार होके सेन्टर सम्भालेगी ना

अच्छा है, कुमारियां तैयार होके सेन्टर सम्भालेगी ना, कि नौकरी करेंगी? जो सेन्टर सम्भालने के लिए तैयार हो रही हैं, वह हाथ उठाओ। यह बहुत हैं। तो इन्हों की ट्रेनिंग कब पूरी होगी! (अभी पढ़ाई चल रही हैं) कब तक पढ़ेंगी? जिसका ग्रेजुएशन पूरा हुआ है वह हाथ उठाओ। (१६-११-२००६)

## तीन रूप के पास हैं

तीन रूप के पास हैं - एक है पास रहना, दूसरा है जो बीता सो पास हुआ और तीसरा है पास विद ऑनर होना। अगर तीनों पास हैं, तो आप सबको राज्य अधिकारी बनने की फुल पास है। तो फुल पास ले ली है वा लेनी है? जिन्होंने फुल पास ले ली है वह हाथ उठाओ। लेनी नहीं है, ले ली है? पहली लाइन वाले नहीं उठाते, लेनी है आपको? सोचते हैं अभी सम्पूर्ण नहीं बने हैं, इसीलिए। लेकिन निश्चयबुद्धि विजयी हैं ही, या होना है? (३०-११-२००६)

## परमात्म स्टूडेन्ट हैं, परमात्म पढ़ाई पढ़ रहे हैं

परमात्म स्टूडेन्ट हैं, परमात्म पढ़ाई पढ़ रहे हैं, तो पास विद ऑनर बनना ही है ना! पास मार्क्स लिया तो क्या हुआ। पास विद ऑनर। क्या लक्ष्य रखा है? जो समझते हैं पास विद ऑनर बनना है वह हाथ उठाओ, पास विद ऑनर, ऑनर शब्द अण्डरलाइन करना। अच्छा। (१५-१२-२००६)

## बापदादा एक बात में सभी बच्चों पर बहुत खुश भी है

बापदादा एक बात में सभी बच्चों पर बहुत खुश भी है। किस बात में? प्यार सबका बाप से जिगरी है, इसकी मुबारक है। लेकिन बोलूँ क्या करो! इस सीजन की समाप्ति तक, अभी तो टाइम पड़ा है, इस सीजन के समाप्त तक तीव्र गति का कुछ न कुछ जलवा दिखाओ। पसन्द है? पसन्द है? जो समझते हैं लक्ष्य और लक्षण दोनों ही स्मृति में रखेंगे वह हाथ उठाओ। लक्ष्य और लक्षण दोनों सामने रखेंगे वह हाथ उठाओ। डबल फारेनर्स भी रखेंगे, टीचर्स भी रखेंगे और यूथ भी रखेगा, और पहली लाइन वाले भी रखेंगे। तो पदम, पदम, पदमगुणा इनएडवांस मुबारक हो। (१५-१२-२००६)

## तीव्र पुरुषार्थ में नम्बरवन

अभी देखेंगे तीव्र गति के पुरुषार्थ में नम्बरवन कौन सा ज़ोन जाता है। मधुबन जायेगा, मधुबन वाले बैठे हैं ना। मधुबन वाले उठो। अच्छा। मधुबन वाले तो बहुत हैं। तो क्या करेगा मधुबन। तीव्र पुरुषार्थ में नम्बरवन। है! हिम्मत है? हिम्मत है? हिम्मत वाले हाथ उठाओ। अभी मधुबन की कोई भी, ऐसी कोई भी बात बापदादा के पास नहीं आयेगी, यह हुआ, यह हुआ नहीं आयेगा। अच्छा हुआ, अच्छा हुआ, अच्छा हुआ... ठीक है। पक्का? पक्का? देखो। हाथ उठाया है या मन का हाथ उठाया है? मन का हाथ उठाया है ना? थोड़ों ने अभी हाथ उठाया। मन का हाथ उठा रहे हो ना। (१५-१२-२००६)

## हर सबजेक्ट में पहला नम्बर आना

जो पहली बारी आये हैं वह हाथ उठाओ। खड़े हो जाओ। अच्छा - बहुत आये हैं। पहले बारी वाले बहुत हैं। बापदादा पहले बारी आने वालों को यही कहते हैं कि जैसे पहले बारी आये हो वैसे हर सबजेक्ट में पहला नम्बर आना। (१५-१२-२००६)

## विदाई देने चाहते हैं लेकिन

बापदादा आज चारों ओर के बच्चों से पुराने संस्कार स्वभाव से विदाई दिलाने चाहते हैं। दे सकते हो? हिम्मत है कि सोचते हो कि विदाई देने चाहते हैं लेकिन फिर माया आ जाती है। क्या आज के दिन दृढ़ संकल्प की शक्ति से पुराने संस्कार को विदाई दे नये युग के संस्कार को, जीवन को बधाई देने की हिम्मत है? है हिम्मत? जो समझते हैं हो सकता है, हो सकता है वा होना ही है, हैं हिम्मत वाले? जो समझते हैं हिम्मत है वह हाथ उठाओ? हिम्मत है? अच्छा जिन्होंने नहीं उठाया है वह सोच रहे हैं। डबल फॉरेनर्स ने उठाया हाथ, जिसमें हिम्मत है वह हाथ उठाओ, सभी नहीं। (३१-१२-२००६)

## बाप को प्रत्यक्ष करने के पहले स्व को प्रत्यक्ष करो

सब इतनी सेवा के उमंग में भिन्न-भिन्न प्रोग्राम बनाते रहते हैं, सफल भी होते रहते हैं बापदादा को खुशी भी होती है कि मेहनत जो करते हैं उसकी सफलता मिलती है। व्यर्थ नहीं जाती है लेकिन किसलिये सेवा करते? तो क्या जवाब देते हैं? बाप को प्रत्यक्ष करने के लिये। तो बाप आज बच्चों से प्रश्न पूछते हैं, कि बाप को प्रत्यक्ष तो करना ही है, करेंगे ही। लेकिन बाप को प्रत्यक्ष करने के पहले स्व को प्रत्यक्ष करो। बोलो, शिव शक्तियाँ यह वर्ष स्व को प्रत्यक्ष शिव शक्ति के रूप में करेंगे। करेंगे? **जनक बोलो, करेंगे।** (करना ही है) **साथी, पहली लाइन, दूसरी लाइन टीचर्स। टीचर्स हाथ उठाओ** जो इस वर्ष में करके दिखायेंगे। करेंगे नहीं, करके दिखाना ही है। अच्छा – सभी टीचर्स ने उठाया या कोई ने नहीं उठाया। अच्छा – मधुबन वाले। करना ही है, करना पड़ेगा। मधुबन वाले क्योंकि मधुबन तो नजदीक है ना। *तारीख नोट कर देना, 31 तारीख है। टाइम भी नोट करना (9 बजकर 20 मिनट)*। और पाण्डव सेना, पाण्डवों को क्या दिखाना है! विजयी पाण्डव। (31-12-2006)

## आपके पास गिफ्ट का स्टॉक है

दुखियों को दुख से छुड़ाओ, मुक्तिधाम में शान्ति दिलाओ—यह गिफ्ट दो। ब्राह्मण परिवार में हर आत्मा को दिल के स्नेह और सहयोग की गिफ्ट दो। आपके पास गिफ्ट का स्टॉक है? स्नेह है? सहयोग है? मुक्ति दिलाने की शक्ति है? जिसके पास स्टॉक बहुत है, वह **हाथ उठाओ**। है स्टॉक? स्टॉक कम है? पहली लाइन वालों के पास स्टॉक कम है क्या? यह बृजमोहन हाथ नहीं उठा रहा है। स्टॉक तो है ना, स्टॉक है? **सभी ने उठाया?** स्टॉक है? तो स्टॉक रखके क्या कर रहे हो? जमा करके रखा है! टीचर्स स्टॉक है ना? तो दो ना, फ्राकदिल बनो। मधुबन वाले क्या करेंगे? है स्टॉक, मधुबन में है? मधुबन में तो चारों ओर स्टॉक भरा हुआ है। *तो अभी दाता बनो, जमा नहीं करो सिर्फ। दाता बनो, देते जाओ। ठीक है।* (31-12-2006)

## स्नेह सब बातें सहज कर देता है

आज के स्मृति सो समर्थी दिवस पर परमात्म पालना का नशा और खुशी सहज याद रही ना! क्योंकि आज का वायुमण्डल सहज याद का था। तो आज के दिन सहजयोगी रहे कि आज के दिन भी युद्ध करनी पड़ी याद के लिये? क्योंकि आज का दिन स्नेह का दिन कहेंगे ना, तो स्नेह मेहनत को मिटा देता है। स्नेह सब बातें सहज कर देता है। तो सभी आज के दिन विशेष सहजयोगी रहे या मुश्किल आई? जिसको आज के दिन मुश्किल आई हो वह **हाथ उठाओ**। किसको भी नहीं आई? सब सहजयोगी रहे। अच्छा जो सहजयोगी रहे वह **हाथ उठाओ**। (18-01-2007)

## प्रतिज्ञा करने के टाइम बहुत दिल से करते हैं

बापदादा ने सबका फाइल देखा, तो फाइल में क्या देखा? मैजारिटी का फाइल प्रतिज्ञा करने के पेपर से फाइल भरा हुआ है। प्रतिज्ञा करने के टाइम बहुत दिल से करते हैं, सोचते भी हैं लेकिन अभी तक देखा कि फाइल बड़ा होता जाता है लेकिन फाइल नहीं हुआ है। दृढ़ प्रतिज्ञा के लिये कहा हुआ है – जान चली जाये लेकिन प्रतिज्ञा न जाये। तो बापदादा ने आज सबके फाइल देखे। बहुत प्रतिज्ञायें अच्छी-अच्छी की हैं। मन से भी की हैं और लिख करके भी की हैं। तो इस वर्ष क्या करेंगे? फाइल को बढ़ायेंगे या प्रतिज्ञा को फाइल करेंगे? क्या करेंगे? पहली लाइन वाले बताओ, पाण्डव सुनाओ, टीचर्स सुनाओ। इस वर्ष जो बापदादा के पास फाइल बड़ा होता जाता है, उसको फाइल करेंगे या इस वर्ष भी फाइल में कागज एड करेंगे? क्या करेंगे? बोलो पाण्डव? फाइल करेंगे? जो समझते हैं – झुकना पड़े, बदलना पड़े, सहन करना भी पड़े, सुनना भी पड़े, लेकिन बदलना ही है, वह **हाथ उठाओ**। देखो टी.वी. में सबका फोटो निकालो। सभी का फोटो निकालना। दो, तीन, चार टी.वी. हैं, सब तरफ के फोटो निकालो। यह रिकार्ड रखना, बाप को यह फोटो निकाल के देना। (18-01-2007)

## जब भी कोई बात आवे ना तो यह दिन, यह तारीख, यह टाइम याद करना तो हमने क्या हाथ उठाया था। मदद मिल जायेगी

बापदादा खेल बहुत देखते हैं। टालने की भाषा बहुत अच्छी है, यह कारण था ना, बाबा मेरी गलती नहीं है, ऐसा किया ना। उसने तो किया लेकिन आपने समाधान किया ? कारण को कारण ही बनने दिया या कारण को निवारण में बदली किया? तो सभी पूछते हैं ना कि बाबा आपकी क्या आशा है। तो बापदादा आशा सुना रहे हैं। बापदादा की एक ही आशा है निवारण दिखाई देवे, कारण खत्म हो जाये। समस्या समाप्त हो जाये, समाधान होता रहे। हो सकता है? हो सकता है? पहली लाइन—हो सकता है? कांध तो हिलाओ। पीछे वालों हो सकता है? हो सकता है? अच्छा। तो



कल अगर टी.वी. खेलेंगे, टी.वी. में देखेंगे जरूर ना। तो कल टी.वी. देखेंगे तो चाहे फॉरेन चाहे इण्डिया, चाहे छोटे गाँव चाहे बहुत बड़ी स्टेट, कहाँ भी कारण दिखाई नहीं देगा? पक्का? इसमें हाँ नहीं कर रहे हैं? होगा? **हाथ उठाओ**। हाथ बहुत अच्छा उठाते हो, बापदादा खुश हो जाता। कमाल है हाथ उठाने की। खुश करना तो आता है बच्चों को। तो अभी क्या करेंगे? हाथ तो बहुत अच्छा उठाया, बापदादा खुश हो गये लेकिन जब भी कोई बात आवे ना तो यह दिन, यह तारीख, यह टाइम याद करना तो हमने क्या हाथ उठाया था। मदद मिल जायेगी। (18-01-2007)

## साथ चलने वाले हैं या रुक रुक कर चलने वाले हैं

आज के दिन एडवान्स पार्टी भी बापदादा के पास इमर्ज होती है। तो एडवान्स पार्टी भी आपको याद कर रही है कि कब बाप के साथ मुक्तिधाम का दरवाजा खोलेंगे! आज सारी एडवान्स पार्टी बापदादा को यही कह रही थी कि हमको तारीख बताओ। तो क्या जवाब दें? बताओ क्या जवाब दें? जवाब देने में कौन होशियार है? बापदादा तो यही उत्तर देते हैं कि जल्द से जल्द हो ही जायेगा। लेकिन इसमें आप बच्चों का बाप को सहयोग चाहिये। सभी साथ चलेंगे ना! साथ चलने वाले हैं या रुक रुक कर चलने वाले हैं? साथ में चलने वाले हैं ना! पसन्द है ना साथ में चलना? तो समान तो बनना पड़ेगा ना। अगर साथ में चलना है तो समान तो बनना ही पड़ेगा ना! कहावत क्या है? हाथ में हाथ हो, साथ में साथ हो। तो हाथ में हाथ अर्थात् समान। तो बोलो दादियाँ बोलो, तैयारी हो जायेगी? दादियाँ बोलो। **दादियाँ हाथ उठाओ। दादायें हाथ उठाओ**। आपको कहा जाता है ना बड़े दादा। तो बताओ दादियाँ, दादायें क्या तारीख है कोई? (अभी नहीं तो कभी नहीं) अभी नहीं तो कभी नहीं का अर्थ क्या हुआ? अभी तैयार हैं ना! जवाब तो अच्छा दिया। दादियाँ, पूरा होना ही है। हर एक अपने को जिम्मेवार समझे। छोटे बड़े, इसमें छोटे नहीं होना है। **7 दिन का बच्चा भी जिम्मेवार है**। क्यों साथ चलना है ना। अकेला बाप जाना चाहे तो चला जाये लेकिन बाप जा नहीं सकता। साथ चलना है। वायदा है बाप का भी और आप बच्चों का भी। वायदा तो निभाना है ना। (18-01-2007)

## अगर खुशी बांटते हैं तो बांटने से पहले अपने पास बढ़ती है

बापदादा ने होमवर्क दिया तो खुश रहना है और खुशी बांटनी है क्योंकि खुशी ऐसी चीज़ है जो जितनी बांटेंगे उतनी बढ़ेगी। अनुभव करके देखा है! किया है ना अनुभव? अगर खुशी बांटते हैं तो बांटने से पहले अपने पास बढ़ती है। खुश करने वाले से पहले स्वयं खुश होते हैं। तो सभी ने होमवर्क किया है? किया है? जिसने किया है वह **हाथ उठाओ**। जिसने किया है - खुश रहना है, कारण नहीं निवारण करना है, समाधान स्वरूप बनना है। **हाथ उठाओ**। (02-02-2007)

## संगमयुग में प्रत्यक्ष फल मिलता है

अच्छा है कर्नाटक वालों ने सेवा का गोल्डन चांस ले लिया है क्योंकि अब संगमयुग में प्रत्यक्ष फल मिलता है। जमा भी होता है लेकिन प्रत्यक्षफल मिलता है जो उसी समय खुशी प्राप्त होती है। तो जितना दिन भी सेवा की है, तो प्रत्यक्षफल अपने में खुशी अनुभव किया? खुशी मिली? **हाथ उठाओ**। माया आई? नहीं आई? जिसको माया नहीं आई वह **हाथ उठाओ**। पाण्डवों को माया आई? थोड़ी - थोड़ी आई है? अच्छा है, यहाँ का वायुमण्डल बहुत सहयोग देता है। (02-02-2007)

## करो कमाल, लो नम्बर

कर्नाटक वाले बड़े ते बड़ी सेवा यही कर सकते हैं जो कर्नाटक के कोई भी छोटे बड़े कोई स्थान नहीं रहें जो आपको उलहना देवें कि हमारा बाप आया और हमें आपने सूचना नहीं दी, सन्देश नहीं दिया। यह उलहना नहीं रह जाये। जैसे अफ्रीका वालों ने अपनी एरिया को सन्देश देने का कार्य सफल किया है। बापदादा को यह कार्य अच्छा लगता है, कोई का भी उलहना नहीं रह जाना चाहिए। आपका काम है सन्देश देना, वह अभी आवे या पीछे आवे लेकिन आपने अपना कार्य सम्पन्न किया तो कर्नाटक वाले दूसरे वर्ष में जब आयेंगे, क्या करके आयेंगे? कोई भी एरिया खाली नहीं रहनी चाहिए। क्योंकि आप तो जानते हो ना - कि बाप का परिचय मिलने से, बाप के सम्बन्ध में आने से आत्मायें कितनी सुखी बन जायेंगी। अभी तो दिन-प्रतिदिन दुःख और अशान्ति बढ़ती जा रही है क्योंकि दिन-प्रतिदिन भ्रष्टाचार, पापाचार बढ़ रहा है। अति में जा रहा है। लेकिन आप जानते हो कि अति के बाद क्या होता है? अन्त आती है। और अन्त किसको लाती है? आदि को। तो अपने भाई फिर भी बाप तो एक ही है ना, चाहे जाने चाहे मानें, नहीं भी मानें लेकिन बाप तो बाप ही है। तो अपने भाईयों को, अपनी बहनों को सन्देश जरूर दे दो। तो क्या करेंगे? रिकार्ड बनायेंगे, टीचर्स? कोई गांव भी नहीं रहना चाहिए। **हाथ उठाओ**, जो करेगा, ऐसे ही नहीं हाथ उठाना। करेंगे? रिजल्ट जाके भेजना, प्लैन बनाना। कमाल तो करना है ना! जितनी कमाल करने में लग जायेंगे, उतनी छोटी

छोटी धमाल खत्म हो जायेगी। तो बहुत अच्छा चांस मिला है, चांस लिया है और चांस का जो काम मिला है वह भी करके आयेगे। पक्का है ना ? **पाण्डव, पक्का ?** थक नहीं जाना। कितना पुण्य जमा होगा! तो अच्छा है, बापदादा को भी खुशी होती है कि बच्चे अपने पुण्य का खाता भिन्न-भिन्न विधि से आगे बढ़ा रहे हैं। बापदादा ने सुनाया ना - तीन खाते जमा करने हैं - एक अपने पुरुषार्थ से जमा हुआ खाता और दूसरा है - दूसरी आत्माओं को सन्तुष्ट करने में पुण्य का खाता। सन्तुष्टता पुण्य का खाता जमा करती है और तीसरा है मन्सा-वाचा-स्नेह सम्बन्ध द्वारा सेवा का खाता। तो तीनों खाते चेक करना। तीनों में कमी नहीं होनी चाहिए। तो नम्बरवन लेंगे ? जमा के खाते में नम्बरवन लेना। कर्नाटक है, कम थोड़े ही है। बापदादा की नज़र में है कर्नाटक। बहुत कुछ कर सकते हैं, इस नज़र में है। **हाँ आगे लाइन में खड़े हुए क्या करेंगे ?** कमाल करेंगे ना! करो कमाल, लो नम्बर। स्व उन्नति और सेवा की उन्नति, दोनों का बैलेन्स रखना। ठीक है बैठ जाओ।

(०२-०२-२००७)

## दिलतख्तनशीन बन जाओ तो समस्या खिलौना बन जायेगी

बापदादा कहते हैं जब कोई भी छोटी मोटी समस्या आये, समस्या नहीं है लेकिन पेपर है आगे बढ़ाने के लिए। तो बापदादा का दिलतख्त तो आपका अधिकार है। दिलतख्तनशीन बन जाओ तो समस्या खिलौना बन जायेगी। समस्या से घबरायेंगे नहीं, खेलेंगे। खिलौना है। सब उड़ती कला वाले हो ना ? उड़ती कला है ? या चलने वाले हो ? उड़ने वाले हो या चलने वाले हैं ? जो उड़ने वाले हैं वह **हाथ उठाओ**। उड़ने वाले। *आधा आधा हाथ उठा रहे हैं*। उड़ने वाले हैं ? अच्छा। कभी कभी उड़ना छोड़ते हैं क्या ? चल रहे हैं नहीं, कई बापदादा को कहते हैं बाबा हम बहुत अच्छे चल रहे हैं। तो बापदादा कहते हैं चल रहे हो या उड़ रहे हो ? अभी चलने का समय नहीं है, उड़ने का समय है। उमंग-उत्साह के, हिम्मत के पंख हर एक को लगे हुए हैं। तो पंखों से उड़ना होता है। तो रोज़ चेक करो, उड़ती कला में उड़ रहे हैं ? अच्छा है।

(०२-०२-२००७)

## सभी ने पवित्रता का व्रत लिया है

सभी ने पवित्रता का व्रत लिया है, पक्का लिया है ? जिन्होंने पक्का लिया है वह **हाथ उठाओ**। पक्का, थोड़ा भी कच्चा नहीं। पक्का ? अच्छा। दूसरा भी प्रश्न है, अच्छा व्रत तो लिया मुबारक हो। लेकिन अपवित्रता के मुख्य पांच साथी हैं, ठीक है ना! **कांध हिलाओ**। अच्छा पांचों का व्रत लिया है ? या दो तीन का लिया है ? क्योंकि जहाँ पवित्रता है वहाँ अगर अंश मात्र भी अपवित्रता है तो क्या सम्पूर्ण पवित्र आत्मा कहा जायेगा ?

(१५-०२-२००७)

पहले बारी जो आये हैं वह हाथ उठाओ। जो मधुबन में पहली बार मिलने आये हैं वह **हाथ उठाओ**। लम्बा हाथ उठाओ। (१५-०२-२००७)

## लक्ष्मी नारायण बनना अर्थात् बहुतकाल का राज्य भाग्य प्राप्त करना

अभी हाथ उठवाते हैं, राम सीता बनेगा कोई ? **जो राम सीता बनने चाहते हैं वह हाथ उठाओ**, राजाई मिलेगी। **कोई हाथ उठा रहे हैं**। राम सीता बनेंगे, लक्ष्मी नारायण नहीं बनेंगे ? उठा रहे हैं ? देखो, आप देखो उठा रहे हैं। फारेनर्स उठा रहे हैं ? डबल फारेनर्स में कोई उठाता है ? (कोई नहीं) जब बहुतकाल का भाग्य प्राप्त करने चाहते हो, लक्ष्मी नारायण बनना अर्थात् बहुतकाल का राज्य भाग्य प्राप्त करना।

(१५-०२-२००७)

आपके दिल में बाप रहता, आप बाप के दिल में रहते। रहते हैं ? **हाथ उठाओ** जो रहता है ? रहते हैं ? अच्छा। बहुत अच्छा। **(सभी ने हाथ उठाया)**

(०३-०३-२००७)

यह कहना राइट है कि मेरे पुराने संस्कार हैं, मेरी नेचर है, राइट है ? राइट है ? जो समझते हैं राइट है वह **हाथ उठाओ**। कोई नहीं उठाता।

(०३-०३-२००७)

आप लोगों के पास तो नाचना और गाना है ही, हर सेकण्ड। आप सदा मन में खुशी से नाचते रहते हो ना! कि नहीं! नाचते हैं, नाचना आता है खुशी में ? नाचना आता है जिसको आता है वह **हाथ उठाओ**।

(०३-०३-२००७)

## हिम्मत है मधुबन में, जो चाहे वह कर सकते हैं

पहले मधुबन निवासी वेस्ट थॉटस का स्टॉप करें, हो सकता है? हो सकता है? यह आगे-आगे बैठे हैं ना! मधुबन निवासी हाथ उठाओ। तो मधुबन निवासी आपस में कोई ऐसा प्लैन बनाओ वेस्ट खत्म। बापदादा यह नहीं कहते हैं कि संकल्प ही बन्द करो। वेस्ट संकल्प फिनिश। फायदा तो है नहीं। परेशानी ही है। हो सकता है? जो समझते हैं मधुबन निवासी, आपस में मीटिंग करके यह करेंगे, वह हाथ उठाओ। करेंगे करना है तो लम्बा हाथ उठाओ। दो-दो हाथ उठाओ। मुबारक हो। बापदादा दिल से दुआयें दे रहे हैं। मुबारक देते हैं। हिम्मत है मधुबन में, जो चाहे वह कर सकते हैं। करा भी सकते हैं। मधुबन की बहनें भी हैं, बहनें हाथ उठाओ। बड़ा हाथ उठाओ। मीटिंग करना। आप मीटिंग कराना दादियां। देखो हाथ सभी उठा रहे हैं। अभी हाथ की लाज रखना। अच्छा। (०३-०३-२००७)

## जो राइट है उसको राइट समझना है लेकिन दिल में बिठाना नहीं है

पहले अपने को चेक करो कि मेरे मन में कोई खिटखिट तो नहीं है? नम्बरवार तो हैं, अच्छे भी हैं तो साथ में खिटखिट वाले भी हैं, लेकिन यह ऐसा है, यह समझना अच्छा है। जो रांग है उसको रांग समझना है, जो राइट है उसको राइट समझना है लेकिन दिल में बिठाना नहीं है। समझना अलग है, नॉलेजफुल बनना अच्छा है, रांग को रांग तो कहेंगे ना! कई बच्चे कहते हैं बाबा आपको पता नहीं यह कैसे हैं! आप देखो ना तो पता पड़ जाए, बाप मानते हैं आपके कहने से पहले ही मानते हैं कि ऐसे हैं, लेकिन ऐसी बातों को अपनी दिल में वृत्ति में रखने से स्वयं भी तो परेशान होते हैं। और खराब चीज़ अगर मन में है, दिल में है तो जहाँ खराब चीज़ है, वेस्ट थॉटस हैं, वह विश्व कल्याणकारी कैसे बनेंगे? आप सभी का आक्यूपेशन क्या है? कोई कहेगा हम लण्डन के कल्याणकारी हैं, दिल्ली के कल्याणकारी हैं, यू.पी. के कल्याणकारी हैं? या जहाँ भी रहते हो, चलो देश नहीं तो सेन्टर के कल्याणकारी हैं, आक्यूपेशन सब यही बताते विश्व कल्याणकारी। तो सब कौन हो? विश्व कल्याणकारी हो? है तो हाथ उठाओ। विश्व कल्याणकारी! विश्व कल्याणकारी! अच्छा। (१७-०३-२००७)

## पास विद आनर होना है या ३३ मार्क्स से पास होना है

कोई भी बात होवे, बातें तो आयेंगी, यह बापदादा नहीं कहेगा बातें आयेंगी नहीं, जितना आगे जायेंगे उतनी सूक्ष्म बातें आयेंगी क्योंकि पास विद आनर होना है ना, क्या सोचा है टीचर्स ने? पास विद आनर होना है या ३३ मार्क्स से पास होना है? पास विद आनर होना है हाथ उठाओ। इन्हों का फोटो निकालो, अच्छी तरह से। अच्छा। (१७-०३-२००७)

## ब्रह्माचारी हो

पवित्रता अर्थात् संकल्प, बोल, कर्म और सम्बन्ध-सम्पर्क में एक ही धारणा सम्पूर्ण पवित्रता की हो। ब्रह्माचारी हो। अपनी चेकिंग करने आती है? जिसको अपनी चेकिंग करनी आती है वह हाथ उठाओ। आती है और करते भी हैं? करते हैं, करते हैं? टीचर्स को आता है? डबल फारेनर्स को आता है? (३१-०३-२००७)

## है याद वायदा कि भूल गया है, याद है अपना वायदा

आप सबने जन्मते ही बापदादा से वायदा किया है, याद है वायदा? है याद वायदा कि भूल गया है? यही वायदा किया कि हम सभी बाप के साथी बन, विश्व कल्याणकारी बन नया सुख शान्तिमय संसार बनाने वाले हैं। याद है? याद है अपना वायदा? है याद? हाथ उठाओ। पीछे वाले भी उठा रहे हैं। यहाँ भी उठा रहे हैं, पक्का वायदा है या थोड़ा गड़बड़ हो जाती है? (३१-०३-२००७)

## प्यार की निशानी है समान बनना

बाप को आपमें निश्चय है तो आप भी अपने में सदा निश्चयबुद्धि, बनना ही है ऐसा निश्चयबुद्धि बन उड़ते चलो। जब बाप से प्यार है, प्यार में १०० परसेन्ट से भी ज्यादा है, ऐसे कहते हो। यह ठीक है? जो भी सभी बैठे हैं वा जो भी अपने-अपने स्थान पर सुन रहे हैं, देख रहे हैं वह सभी प्यार की सबजेक्ट में अपने को १०० परसेन्ट समझते हैं? वह हाथ उठाओ। १०० परसेन्ट? (सभी ने उठाया) अच्छा। पीछे वाले लम्बे हाथ उठाओ, हिलाओ। इसमें तो सभी ने हाथ उठाया। तो प्यार की निशानी है समान बनना। जिससे प्यार होता है उस जैसा बोलना, उस जैसा चलना, उस जैसा सम्बन्ध-सम्पर्क निभाना, यह है प्यार की निशानी। (३१-०३-२००७)

## अमरभव का वरदान याद रखना

जो बापदादा ने होम वर्क दिया था - १५ दिन के लिए। एक बात का होमवर्क दिया, याद रहा? जिसने संकल्प तक भी न दुःख दिया, न दुःख लिया, स्वप्न में भी नहीं, संकल्प में भी नहीं, वह हाथ उठाओ। उठ के खड़े हो। जिन्होंने पास मार्क्स ली, थोड़ी मार्क्स वाले नहीं, पास मार्क्स ली, क्यों! पहली लाइन ने नहीं ली। पहली लाइन वाले क्यों नहीं उठते! अगर किया है तो उठो। अगर दुःख नहीं दिया है तो उठो। स्वप्न में भी, संकल्प में भी नहीं, फिर तो ताली बजाओ इन्हों के लिए। **डबल फारेनर्स ने भी उठाया है।** अच्छा। अच्छा। अमर रहेंगे ना! अमरभव का वरदान याद रखना। अच्छा। (३१-०३-२००७)

## बापदादा ने सभी बच्चों को उमंग-उत्साह और हिम्मत का वरदान एक जैसा दिया है

खुशी होती है, अपने मन में सैटिस्फैक्शन होता है हमने अपनी सेवा का कार्य सन्देश देने का तो पूरा किया। तो अभी बनाना। बना सकते हैं ना! बंगाल वाले हाथ उठाओ। बिहार वाले हाथ उठाओ, नेपाल वाले, उड़ीसा वाले तो बहादुर हैं। और भी हैं ना, आसाम। देखो कितनी एरिया ली है, बहुत बड़ी एरिया ली है, बड़ा राजा बनना है ना। तो दूसरी सीजन में यह सन्देश देने का कार्य का प्लैन बनाके प्रैक्टिकल में शुरू कर लेना। कर सकते हैं ना! कर सकते हैं? क्योंकि बापदादा को भी कोई बच्चे का उल्हना अच्छा नहीं लगता। प्लैन बापदादा ने सुने हैं, प्लैन सभी ने बहुत अच्छा बनाया है लेकिन बापदादा हमेशा कहते हैं कि प्लैन के साथ प्लेन बुद्धि। प्लेन बुद्धि और प्लैन दोनों साथ-साथ हों। तो सफलता बहुत सहज और श्रेष्ठ निकलती है। तो तामिलनाडु भी करेगा ना! करेंगे? देखो, बापदादा ने सभी बच्चों को उमंग-उत्साह और हिम्मत का वरदान एक जैसा दिया है। किसको ज्यादा, किसको कम नहीं दिया है। तो जहाँ उमंग-उत्साह है, वहाँ हिम्मत हैं तो क्या नहीं हो सकता है। असम्भव भी सम्भव हो सकता है। (३१-०३-२००७)

## ५-५ मिनट सारे दिन में अनेक बार ड्रिल करनी है

अभी बापदादा ने जो ड्रिल बताई थी याद है? ५-५ मिनट सारे दिन में अनेक बार ड्रिल करनी है। वह किया है? जिसने वह ड्रिल की है, वह हाथ उठाओ। थोड़ों ने हाथ उठाया है। क्यों? थोड़ा टाइम किया है? बहुत टाइम नहीं किया है तो अभी क्या करेंगे? कम से कम बतायें, कम से कम ८ बारी सारे दिन में कर सकते हो? कर सकते हो? इसमें हाथ उठाओ। करेंगे? करेंगे? अच्छा है। फिर जब सीजन शुरू होगी ना, जब दूसरी सीजन शुरू होगी उसमें बापदादा सभी से रिजल्ट मंगायेंगे। पीछे एक बात बतायेंगे, अभी नहीं बतायेंगे। पीछे बात बतायेंगे। मधुबन वाले तो करेंगे ना? पहला नम्बर। तो इस वर्ष का होमवर्क, इस सीजन का होमवर्क दूसरी सीजन तक कम से कम ८ बारी यह ड्रिल जरूर करनी है। जरूर, देखेंगे नहीं, करनी ही है। चाहे मिस हो जाए तो एक घण्टे में अनेक बार करके पूरा करना। नींद पीछे करना। सोना पीछे। पहले ड्रिल, आठ बारी पूरा करके पीछे सोना। ठीक है ना। (३१-०३-२००७)

## कुछ भी हो जाए मुझे बदलना है

दादी कहती है कल की बातें छोड़ो, आज भी नहीं, अब.. प्रत्यक्षता का झण्डा ऊंचा करने वाले ऊंची स्थिति का अपना सम्पन्न स्वरूप दिखाओ। तो जो भी अभी बैठे हैं, तो दादी कह रही थी, आप सभी से पूछना कि मेरे संकल्प को या बाबा के संकल्प को सब पूर्ण करने के लिए कुछ भी परिवर्तन करना पड़े, सहन करना पड़े, रहम की भावना रखनी पड़े, निर्मल वाणी बनानी पड़े, शुभ भावना, शुभ कामना की नेचुरल नेचर बनानी पड़े, तो दादी ने कहा आप पूछना मेरी इस बात को, मेरे समान बनने के लिए तैयार हैं? तो आप बताओ तैयार हैं? **ऐसे हाथ नहीं उठाना, दिल का हाथ उठाना।** यह बांहीं का हाथ कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन निशानी फिर भी यही हाथ उठाना पड़ता है। कुछ भी हो जाए मुझे बदलना है। बदल के बातें बदली कराना है, यह ऐसा, यह ऐसा, यह करते, यह बोलते नहीं, वह तो होगा लेकिन मुझे क्या करना है? दादी के समान तो बनना है ना, दादी ने इतनों को चलाके दिखाया, कितने वर्ष, एक दो वर्ष नहीं, चाहे बड़े चाहे छोटे, चाहे कर्मणा वाले, चाहे भाषण वाले, चाहे ज़ोन वाले, चाहे दादियां, दादाओं को भी। निर्माही बन गई ना, लास्ट में किसी को याद किया? किया? आप सामने खड़े थे, अगर किसको भी कोई स्मृति हो तो श्वास प्रगट हो जाता है, अनुभव किया - जैसे शान्ति की देवी रही, सम भावना, श्रेष्ठ भावना, प्रत्यक्ष रूप दिखाया। **ऐसे सांस किसका भी नहीं गया है जो सारे आसपास खड़े हैं और देख रहे हैं जा रहे हैं, जा रहे हैं, यह हिस्ट्री में पहला एकजैम्पुल है।** बापदादा तो दिल में रहा लेकिन साकार में सामने सब थे, ऐसी छुट्टी किसने भी नहीं ली है। तो सुना, अभी क्या करना है? सुना। ध्यान से सुना। पीछे वालों ने सुना, अच्छा जो समझते हैं कुछ भी हो जायेगा, कितना भी सहन करना पड़ेगा, परिवर्तन होना ही है, वह **हाथ उठाओ। अच्छा पक्का हाथ है** या थोड़ा ऐसे ऐसे है, अन्दर का? देखेंगे, ट्रायल करेंगे, नहीं। कोशिश करेंगे, गे गे तो नहीं है ना? गे गे है, नहीं? बहुत अच्छा। (०६-०९-२००७)

## लक्ष्य रखो दुआ देना है, दुआ लेनी है

लक्ष्य रखो दुआ देना है, दुआ लेनी है। कोई कुछ भी देवे, बददुआ भी मिलेगी, क्रोध की बातें भी आयेंगी क्योंकि वायदा करेंगे ना, तो माया भी सुन रही हैं, कि यह वायदा करेंगे, वह भी अपना काम तो करेगी ना। मायाजीत बन जायेंगे फिर नहीं करेगी, अभी तो मायाजीत बन रहे हैं ना, तो वह अपना काम करेगी लेकिन मुझे दुआ देनी है और दुआ लेनी है। हो सकता है? हो सकता है? **हाथ उठाओ** जो कहते हैं हो सकता है। अच्छा, शक्तियां हाथ उठाओ। (१५-१०-२००७)

## डबल फारेनर्स नम्बर वन हो जाना

डबल फारेनर्स नम्बर वन हो जाना। डबल है ना, डबल फारेनर्स हैं ना, तो कमाल दिखाना। विदेश के कितने आये हैं? (९० देशों से ३०० सेन्टर्स के आये हैं) तो ९० कमाल करेंगे ना? ९० देश के डबल फारेनर्स हैं, और १० इन्डिया के एड हो जायेंगे तो १०० हो जायेंगे। तो करेंगे? जो भी आये हैं, कुछ भी हो, करके ही दिखाना है। है इतने दृढ़ कि सोचते हैं देखेंगे, कोशिश करेंगे.... कोई है ऐसा, जो समझते हैं कोशिश करेंगे, कोशिश वाले **हाथ उठाओ।** कोई नहीं। तो मुबारक हो, ताली बजाओ। दादियां कहाँ हैं? पक्का है। अच्छा है। क्योंकि डबल फारेनर्स का वैसे नेचर, संस्कार भी गाये हुए हैं कि जो सोचते हैं करना है, वह करके ही छोड़ते हैं, यह डबल फारेनर्स का नेचर गाई हुई है, अभी इस नेचर को इस कार्य में लगाना। ठीक है ना! (१५-१०-२००७)

## कोई भी रावण का संस्कार, स्वभाव वह धर्मराज पुरी कस्टम में फंसा देगी

कोई भी रावण का संस्कार, स्वभाव वह धर्मराज पुरी कस्टम में फंसा देगी। और बाप के साथ चले जायेंगे, और कोई अगर होगा तो कस्टम में रुकना पड़ेगा, अच्छा लगेगा। नहीं लगेगा ना? बाप को भी अच्छा नहीं लगेगा। जब वायदा है साथ का, तो सदा साथ रहना। पीछे वाले वायदा है ना पक्का, **पीछे वाले हाथ उठाओ, पक्का वायदा है!** (१५-१०-२००७)

## बापदादा जानते हैं कि सभी बच्चे बाप के प्यार के पात्र हैं, अधिकारी हैं

बापदादा जानते हैं कि सभी बच्चे बाप के प्यार के पात्र हैं, अधिकारी हैं। बाबा जानते हैं कि प्यार के कारण ही सभी पहुंच गये हैं। चाहे विदेश से आये हैं, चाहे देश से आये हैं, लेकिन सभी परमात्म प्यार की आकर्षण से अपने घर में पहुंचे हैं। बापदादा भी जानते हैं प्यार में

मैजॉरिटी पास हैं। विदेश से प्यार के प्लेन में पहुंच गये हो। बोलो, सभी प्यार की डोर में बंधे हुए यहाँ पहुँच गये हो ना! यह परमात्म प्यार दिल को आराम देने वाला है। अच्छा - जो पहली बार यहाँ पहुँचे हैं वह **हाथ उठाओ**। हाथ हिलाओ। भले पधारे। (३१-१०-२००७)

## नम्बरवन वारिस निकालने में अभी नम्बरवन

नम्बरवन वारिस निकालने में अभी नम्बरवन। पहले के तो हैं ही, है ना हिम्मत। टीचर्स हिम्मत है? **हाथ उठाओ**, हिम्मत है? सभी में हिम्मत है, बहुत हिम्मत है। तो बाप की भी बहुत-बहुत मदद है। अच्छा है। (३१-१०-२००७)

जो समझते हैं कि पवित्रता तो हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है वह **हाथ उठाओ**। जन्म सिद्ध अधिकार है कि मेहनत करनी पड़ती है? (३०-११-२००७)

## नये बच्चों को बापदादा का वरदान है

नये बच्चों को बापदादा का वरदान है कि लास्ट वाला भी फास्ट पुरुषार्थ कर फर्स्ट डिवीजन में आ सकते हैं। फर्स्ट नम्बर नहीं लेकिन फर्स्ट डिवीजन में आ सकते हैं। तो नये बच्चों को इतनी हिम्मत है, **हाथ उठाओ** जो फर्स्ट आयेंगे। देखना टी.वी. में आपका हाथ दिखाई दे रहा है। अच्छा। हिम्मत वाले हैं। मुबारक हो हिम्मत की। और हिम्मत है तो बाप की तो मदद है ही लेकिन सर्व ब्राह्मण परिवार की भी शुभ भावना, शुभ कामना आप सबके साथ है। (३०-११-२००७)

## मालिक भी हो, बालक भी हो

बापदादा ने वतन में दादी के साथ एक रिजल्ट देखी। क्या रिजल्ट देखी? आप सभी जानते हो, मानते हो कि हम मालिक सो बालक हैं। हैं ना! मालिक भी हो, बालक भी हो। सभी हैं? **हाथ उठाओ**। सोच के उठाना, ऐसे नहीं। **हिसाब लेंगे ना!** अच्छा, हाथ नीचे करो। (३०-११-२००७)

## हमारा सुखदाता, शान्तिदाता बाप आ गया

अभी समस्या का नाम, विघ्न का नाम, हलचल का नाम, व्यर्थ संकल्प का नाम, व्यर्थ कर्म का नाम, व्यर्थ सम्बन्ध का नाम, व्यर्थ स्मृति का नाम समाप्त करो और कराओ। ठीक है ना, करेंगे? करेंगे? जो दृढ़ संकल्प का हाथ उठायें, यह हाथ उठाना तो कामन हो गया है इसलिए हाथ नहीं उठवाते हैं, **मन में दृढ़ संकल्प का हाथ उठाओ**। मन में, शरीर का हाथ नहीं, वह बहुत देख लिया है। जब सभी का मिलकर मन से दृढ़ संकल्प का हाथ उठेगा तब ही विश्व के कोने-कोने में सभी का खुशी से हाथ उठेगा - हमारा सुखदाता, शान्तिदाता बाप आ गया। (३०-११-२००७)

## संगमयुग में सेवा का वा हर कर्म का प्रत्यक्षफल मिलता है

बापदादा ने देखा है कि हर ज़ोन जो भी निमित्त बनते हैं वह रूचि से सेवा करते हैं क्योंकि संगमयुग में सेवा का वा हर कर्म का प्रत्यक्षफल मिलता है। अभी अभी दिल से सेवा की और अभी अभी ही दिल की खुशी में नाचते रहते हैं। तो जब भी जितने दिन भी मधुबन में चांस मिला है तो सभी ने हर समय मन की खुशी का डांस का अनुभव किया? और डांस तो कामन है, लेकिन आपके मन की डांस, माइंड डांस, पांव की डांस नहीं, अनुभव किया है ना! मन की खुशी की डांस का अनुभव किया? **हाथ उठाओ** जिन्होंने किया, थकावट तो नहीं हुई ना। (३०-११-२००७)

## कितने वारिस निकले, कितने माइक निकले

दोनों ज़ोन की कितनी टीचर्स आई हैं? (३५० दोनों ज़ोन की टीचर्स आई हैं) अच्छा है, तो मुबारक तो है ही और आगे भी चांस लेते रहना। बाकी दोनों में एक साल में हर एक ज़ोन बताये तो वारिस कितने निकाले? ज़ोन हेड कौन है? **हाथ उठाओ**। तो सारे ज़ोन में कितने वारिस निकले, कितने माइक निकले? लिस्ट निकाली है? चुप हो गये क्यों? अभी वारिस क्वालिटी एक साल में तो निकलनी चाहिए ना! (३०-११-२००७)

## ब्राह्मण परिवार की फास्ट पुरुषार्थ की लाइफ है

अच्छा है फारेन का विशेष गायन है कि वहाँ की लाइफ फास्ट लाइफ होती है तो जो डबल विदेशी ब्राह्मण परिवार के बन गये उनका भी फास्ट पुरुषार्थ है? जब देश की फास्ट लाइफ है तो ब्राह्मण परिवार की फास्ट पुरुषार्थ की लाइफ है? फास्ट है या स्लो है? फास्ट है? हाँ या ना कहो। जिसकी फास्ट है वह हाथ उठाओ। (३०-११-२००७)

## विशेष आत्माओं की पहली निशानी है तीव्र पुरुषार्थी। सोचा और किया

विशेष आत्माओं की पहली निशानी है तीव्र पुरुषार्थी। सोचा और किया। ऐसे नहीं करेंगे, हो जायेगा... होना तो है ही.. नहीं। करना ही है। उड़ना ही है। बाप समान बनना ही है, इसको कहते हैं तीव्र पुरुषार्थी। तो क्या करेंगे? तीव्र पुरुषार्थ है ना! अभी समय तीव्र समीप आ रहा है। समय में तीव्रता आ गई है लेकिन दुःख के अशान्ति के समय को समाप्त करने वाले, उन्हीं को तो समय से भी तीव्र बनना ही है। फिर भी अच्छे हैं, लगन है, पहुंच गये हो, उसकी मुबारक है। अच्छा। तीव्र पुरुषार्थी? ठीक है, जो कहते हैं हाँ, वह हाथ उठाओ। साधारण पुरुषार्थ नहीं, तीव्र पुरुषार्थ? कि बीच बीच में साधारण पुरुषार्थ करेंगे? साधारण नहीं सदा तीव्र पुरुषार्थ। (३०-११-२००७)

## क्या सदा निर्विघ्न बन औरों को भी निर्विघ्न बनाती रहेंगी

ट्रेनिंग में आई हुई टीचर्स से: ट्रेनिंग तो की, बहुत अच्छा किया लेकिन ट्रेनिंग करने के बाद दिल में स्टैम्प कितनी पक्की लगाई? क्या सदा निर्विघ्न बन औरों को भी निर्विघ्न बनाती रहेंगी? यह वायदा किया? निर्विघ्न रहेंगी? कि थोड़ा थोड़ा बीच में विघ्न आयेगा? अच्छा आ भी जाए तो परिवर्तन करने की शक्ति विघ्न को, समस्या को समाधान के रूप में परिवर्तन करने की शक्ति अनुभव करते हो? जो समझते हैं कि परिवर्तन की शक्ति कार्य में लगाके बापदादा को या जिन टीचर्स ने सेवा की, उसको सबूत दिखायेंगे ऐसी हिम्मत रखने वाले हाथ उठाओ। दिल का हाथ उठाया है ना! कुछ भी हो जाए, सी फादर। औरों की विशेषता को देखना लेकिन फॉलो फादर। अच्छा। (३०-११-२००७)

## सदा अपने भाग्य को स्मृति में रखते हर्षित होते हो ना

सदा अपने भाग्य को स्मृति में रखते हर्षित होते हो ना! होते हो? जो समझते हैं कि सदा हर्षित होते हैं, कभी-कभी वाले नहीं, जो सदा हर्षित रहते हैं वह हाथ उठाओ। सदा, सदा....। अण्डरलाइन करना सदा। अभी टी.वी. में आपका फोटो आ रहा है। सदा वालों का फोटो आ रहा है। मुबारक हो। मातायें उठायें, शक्तियां उठायें, डबल फारेनर्स..। क्या शब्द याद रखेंगे? सदा। कभी-कभी वाले तो पीछे आने वाले हैं। (१५-१२-२००७)

## पीछे आये हो लेकिन पीछे नहीं रहना

अभी पहली बार कौन आये हैं? जो पहली बार आये हैं वह हाथ उठाओ। उंचा हाथ उठाओ, हिलाओ। इतने आये हैं। अच्छा है। जो भी पहले बारी आये हैं उनको पदमगुणा मुबारक है, मुबारक है। बापदादा खुश होते हैं, कि कल्प पहले वाले बच्चे फिर से अपने परिवार में पहुंच गये। इसलिए अभी पीछे आने वाले कमाल करके दिखाना। पीछे रहना नहीं, पीछे आये हो लेकिन पीछे नहीं रहना। आगे से आगे रहना। इसके लिए तीव्र पुरुषार्थ करना पड़ेगा। हिम्मत है ना! हिम्मत है? अच्छा है। हिम्मत बच्चे मददे बापदादा और परिवार है। अच्छा है क्योंकि बच्चे घर का श्रृंगार हो। तो जो भी आये हैं वह मधुबन के श्रृंगार हैं। अच्छा। (१५-१२-२००७)

## देखा देखी हाथ नहीं उठाना

अच्छा जो भी सेवा के निमित्त आये हुए हैं इनमें से सभी ने सेवा का जो बल है, फल है, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति का, वह अनुभव किया? किया? अभी भले हाँ के लिए झण्डी हिलाओ, जिसने किया हो। अच्छा अभी तो अतीन्द्रिय सुख का अनुभव किया, यह सदा रहेगा? या थोड़ा समय रहेगा? जो दिल से प्रॉमिस करता है, देखा देखी हाथ नहीं उठाना, जो दिल से समझता है कि मैं इस प्राप्ति को सदा कायम रखूंगा, विघ्न विनाशक बनूंगा, वह झण्डी हिलाओ भले। अच्छा। देखो, आप टी.वी. में आ रहे हो फिर यह टी.वी. का फोटो भेजेंगे। अच्छा। (१५-१२-२००७)

## बापदादा मधुबन वालों को पहले देखता है

बापदादा ने बच्चों की वर्ष की रिजल्ट देखी। क्या देखा? महादानी बने हो, लेकिन अखण्ड महादानी, अखण्ड अण्डरलाइन, अखण्ड महादानी, अखण्ड योगी, अखण्ड निर्विघ्न अभी इसकी आवश्यकता है। क्या अखण्ड हो सकता है? हो सकता है? पहली लाइन वाले अखण्ड हो सकता है? **हाथ उठाओ** अगर हो सकता है तो। जो कर सकता है, कर सकते हो? **मधुबन वाले भी उठा रहे हैं**। बापदादा मधुबन वालों को पहले देखता है। मधुबन से प्यार है। (३१-१२-२००७)

## नो प्रब्लम, कम्पलीट

अभी इस वर्ष क्या बनना है? सबका एक आवाज निकले दिल से, यह बापदादा चाहता है, वह क्या? नो प्रब्लम, कम्पलीट। प्रब्लम नहीं लेकिन कम्पलीट बनना ही है। दृढ़ निश्चयबुद्धि, विजय माला के नजदीक मणका बनना ही है। ठीक है ना! बनना है ना! मधुबन वाले बनना है। नो कम्पलेन? नो कम्पलेन। **हाथ उठाओ हिम्मत रखने वाले**। नो प्रब्लम। वाह! मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। (३१-१२-२००७)

## मेहनत का नामनिशान दिल में नहीं रहे, जीवन में नहीं रहे

अभी बापदादा इस वर्ष में हर बच्चे को स्नेह युक्त, मेहनत मुक्त देखने चाहते हैं। मेहनत का नामनिशान दिल में नहीं रहे, जीवन में नहीं रहे। हो सकता है? हो सकता है? जो समझते हैं करके ही छोड़ना है, हिम्मत वाले हैं वो **हाथ उठाओ**। आज विशेष ऐसे हर बच्चे को बाप का विशेष वरदान है - मेहनत मुक्त होने का। स्वीकार है? है! फिर कुछ हो जाए तो क्या करेंगे! क्या क्यों तो नहीं करेंगे ना? (१६-०१-२००८)

## बापदादा एक खेल बच्चों का देख मुस्कराते हैं

बापदादा एक खेल बच्चों का देख मुस्कराते हैं। कौन सा खेल करते हो, बतायें क्या? बतायें तब जब इस खेल को खत्म करो। करेंगे, करेंगे? आज तो स्नेह की शक्ति है ना! करेंगे? **हाथ उठाओ**। हाथ सिर्फ नहीं, दिल का हाथ उठाना, **करना ही पड़ेगा**। फिर बापदादा थोड़ा...., थोड़ा-थोड़ा करेगा कुछ। बतायें? पाण्डव बोलो, बतायें? यह पहली लाइन बोलो बतायें? बोलो। करना पड़ेगा। बतायें? **अगर हाँ है तो पहली लाईन हाथ उठाओ। यह दो लाइन वाले हाथ उठाओ। मधुबन वाले भी हाथ उठाएँ**। दिल का हाथ है ना। अच्छा। बापदादा को तो खेल देखने में रहम आता है, मज़ा नहीं आता है क्योंकि बापदादा देखते हैं बच्चे अपनी बात दूसरे के ऊपर रखने में बहुत होशियार हैं। क्या खेल करते? बातें बना देते हैं। सोचते हैं कौन देखने वाला है! मैं जानूँ मेरी दिल जाने। बाप तो परमधाम में, सूक्ष्मवतन में बैठा है। अगर किसको कहो कि यह नहीं करना चाहिए, तो खेल क्या करते हैं पता है? हाँ हुआ तो है लेकिन... लेकिन जरूर डालते हैं। लेकिन क्या? ऐसा था ना, ऐसा किया ना, ऐसे होता है ना, तभी हुआ, मैंने नहीं किया, ऐसे हुआ तभी। अभी इसने किया, तभी किया। नहीं तो मैं नहीं करता, तो यह क्या हुआ? अपनी महसूसता, रियलाइजेशन कम है। (१६-०१-२००८)

## कुमार का अर्थ ही है कि.....

गुजरात के कुमार उठो। अच्छा है - कुमार का अर्थ ही है कि शरीर में शक्तिशाली, मन की शक्ति में भी शक्तिशाली और शरीर से भी हल्के, आत्मा में भी हल्के। तो ऐसे कुमार हो? **हाथ हिलाओ**, हैं? कोई बोझ की रिपोर्ट तो नहीं आयेगी। आज से गुजरात के यूथ की कोई रिपोर्ट नहीं आयेगी ना! ऐसा होगा? रिपोर्ट नहीं आयेगी या आयेगी? जो कहते हैं रिपोर्ट नहीं आयेगी वह **हाथ उठाओ**। हाँ फोटो निकालो। (१६-०१-२००८)

## पहले मैं परिवर्तन में आगे कदम उठाऊंगा

अभी सभी जो भी यूथ आये हैं, सभी को पहले मैं परिवर्तन में आगे कदम उठाऊंगा, यह मंजूर है ना। पहले मैं या पहले यह? **पहले मैं वाला हाथ उठाओ**। देखो, आप अच्छी तरह से फोटो निकालो। बापदादा को रिजल्ट देखनी है ना। (१६-०१-२००८)

## निरन्तर सेवाधारी और निरन्तर याद

सदा साथ रहना है और सेवा में विश्व के परिवर्तन के कार्य में सदा साथी होके रहना है। परमात्म कार्य के साथी, इसी में ही मन्सा वाचा कर्मणा अर्थात् चेहरे और चलन में साथी रहो। पसन्द है? साथ रहेंगे, साथी रहेंगे? माया का दरवाजा बन्द? डबल लॉक लगाया,



सिंगल लॉक नहीं लगाना। डबल लॉक। निरन्तर सेवाधारी और निरन्तर याद। यह डबल लॉक लगाना। ठीक है? पाण्डव भी निर्विघ्न। निर्विघ्न, हाथ उठाओ। दिल से हाथ उठा रहे हो? जो दिल से उठा रहे हैं वह ज्यादा हिलाओ। देखना टीचर्स। हाथ उठा रहे हैं। अच्छा है।  
(१६-०१-२००८)

## कुमारी अर्थात् बापदादा के सेवा साथी और निर्विघ्न साथी। अपने को एडजेस्ट करने वाली

कुमारी अर्थात् बापदादा के सेवा साथी और निर्विघ्न साथी। अपने को एडजेस्ट करने वाली। एडजेस्ट करने वाली हो ना कि अगेन्स्ट होने वाली हो। किसी के प्रति भी अगेन्स्ट नहीं हो, एडजेस्ट होने वाली। अच्छा तो ऐसी कुमारियां बनेंगी, हाथ उठाओ। एडजेस्ट होने वाली। सोच के हाथ उठाओ। तो सबसे मिलनसार। सबसे अपने को साथी बनाने वाली। निर्विघ्न। तब तो बहुत हैण्डस बन सकते हैं। अभी हैण्डस की कमी है, बापदादा सभी कुमारियों को कह रहा है। मददगार बनेंगी ना। जो मददगार बनेंगी वह हाथ उठाओ। लेकिन कौन सी मददगार! निर्विघ्न मददगार। अभी उठाओ निर्विघ्न मददगार?  
(१६-०१-२००८)

## अपने को देखने का आइना है

अन्तिम काल संगम पर आप ब्राह्मण आत्माओं का परमात्म पालना का, परमात्म प्यार का, परमात्म पढ़ाई का भाग्य आप कोटों में कोई आत्माओं को ही मिलता है। परमात्मा की डायरेक्ट रचना, पहली रचना आप पवित्र आत्माओं को ही प्राप्त होती है। जिससे आप ब्राह्मण ही विश्व की आत्माओं को भी मुक्ति का वर्सा बाप से दिलाते हो। तो यह सारे चक्कर में अनादिकाल, आदिकाल, मध्यकाल और अन्तिमकाल सारे चक्र में इतनी श्रेष्ठ प्राप्ति का आधार पवित्रता है। सारा चक्कर लगाया अभी अपने को चेक करो, अपने को देखो, देखने का आइना है ना! अपने को देखने का आइना है? जिसको है वह हाथ उठाओ।  
(०२-०२-२००८)

## पहले जन्म की विधि का पता है ना!

पहले जन्म की विधि का पता है ना! विधि का पता है - जो पहला नम्बर चार ही सबजेक्ट में होंगे, एक सबजेक्ट भी कम नहीं। सब सबजेक्ट में पहला नम्बर। वह पहले जन्म में साथी बनेंगे। हैं हिम्मत? कोई भी देखो स्थूल पढ़ाई में भी अगर एक सबजेक्ट में भी फेल होते हैं, कम मार्क्स लेते हैं तो वह नम्बरवन तो नहीं आता ना। तो वन जन्म में आना अर्थात् वन नम्बर में आना। मंजूर है। अभी हाथ उठाओ। सोचके हाथ उठाना। अच्छा है। अमर रहना और अमर बनाना। अच्छा।  
(०२-०२-२००८)

## डबल पुरुषार्थी हैं

डबल विदेशी अर्थात् डबल पुरुषार्थी। बापदादा ने अभी नाम रखा है डबल पुरुषार्थी। हैं? डबल पुरुषार्थी हैं? जो समझते हैं वर्तमान समय डबल पुरुषार्थ का लक्ष्य है और कर भी रहे हैं, वह हाथ उठाओ। डबल पुरुषार्थ। डबल? बहुत अच्छा। डबल पर तो ताली बजाओ।  
(०२-०२-२००८)

## सबको जवाब देने वाले कौन

अभी सारी दुनिया दूँड रही है कि आखिर विश्व परिवर्तक निमित्त कौन बनता है! क्योंकि दिन प्रतिदिन दुःख और अशान्ति बढ़ रही है और बढ़नी ही है। तो भक्त अपने इष्ट को याद कर रहे हैं, कोई अति में जाके परेशानी से जी रहे हैं। धर्म गुरुओं के तरफ नज़र घुमा रहे हैं। और साइंस वाले भी अभी यही सोच रहे हैं कैसे करें, कब तक होगा। तो इन सबको जवाब देने वाले कौन? सबकी दिल में यही पुकार है कि आखिर भी गोल्डन मॉर्निंग कब आनी है। तो आप सभी लाने वाले हो ना! हो? हाथ उठाओ जो समझते हैं, निमित्त हो। निमित्त हो। अच्छा। इतने सारे निमित्त हैं तो कितने समय में होना चाहिए!  
(१६-०२-२००८)

## आपके इस रूहरिहान से और भी एडीशन हो जायेगी

अभी क्या करना है! महाराष्ट्र मिलके ऐसा प्लैन बनाओ, ऐसी मीटिंग करो जिसमें सबके एक ही स्वभाव, एक ही संस्कार, एक ही सेवा का लक्ष्य, शान्ति की शक्ति कैसे फैलायें, उसके प्लैन बनाओ। बनायेंगे ना! बनायेंगे? अच्छा बापदादा को एक मास के बाद रिपोर्ट देंगे कि क्या प्लैन बनाया है! आपके इस रूहरिहान से और भी एडीशन हो जायेगी। भिन्न-भिन्न ज़ोन हैं ना, तो वह भी एडीशन करेंगे उसमें घाट आप बनाओ और हीरे वह जोड़ेंगे। है ना हिम्मत। टीचर्स हिम्मत है! पहली लाइन हिम्मत है? संस्कार मिलन यह रास कौन सा ज़ोन करेगा? कोई ज़ोन शुभ वृत्ति, शुभ दृष्टि और शुभ कृति यह कैसे हो, एक ज़ोन यह उठाये। दूसरा ज़ोन - अगर कोई आत्मा स्वयं संस्कार

परिवर्तन नहीं कर सकती है, चाहती भी है लेकिन कर नहीं पाती तो उन्हीं के प्रति क्या रहमदिल, क्षमा, सहयोग, स्नेह देकर कैसे अपने ब्राह्मण परिवार को शक्तिशाली बनायें इसका प्लैन बनायें। यह हो सकता है? हो सकता है? पहली लाइन बताओ हो सकता है? **हाथ उठाओ** हो सकता है। क्योंकि पहली लाइन में सब महारथी बैठे हैं। अभी बापदादा नाम नहीं सुनाते हैं, हर एक ज़ोन को जो अच्छा लगे वह रूहरिहान कर फिर शिवरात्रि के बाद भी एक मास में रिजल्ट सुनायें। (१८-०२-२००८)

## कुमारियों को अगर कुमारी जीवन में अमर रहती हैं तो बापदादा का गुरुभाई का तख्त मिलता है

सभी लक्की हैं लेकिन कुमारियां डबल लक्की हैं। क्यों! ऐसे तो कुमार भी लक्की हैं लेकिन कुमारियों को अगर कुमारी जीवन में अमर रहती हैं तो बापदादा का गुरुभाई का तख्त मिलता है। दिलतख्त तो है ही। वह तो सभी को है लेकिन गुरु का तख्त है जहाँ बैठ करके मुरली सुनाते हैं। टीचर बनके टीच करते हो। इसीलिए बापदादा कहते हैं कि कुमारियां, कुमारियों के लिए गायन है कि २१ परिवार का उद्धार करने वाली हैं। तो आपने अपना २१ जन्म का तो उद्धार किया लेकिन और जिन्हों के निमित्त बनती हो उन्हीं का भी २१ जन्म का उद्धार किया। तो ऐसी कुमारियां हो ना। ऐसी हो? पक्का। जो थोड़ा थोड़ा कच्चा है वह **हाथ उठाओ**। पक्के हैं। आपने देखा पक्की कुमारियां हैं। पक्की हैं! मोहिनी बहन (न्युयार्क) बतायें पक्की हैं। कुमारियों का ग्रुप पक्का है। इनकी टीचर कौन! (मीरा बहन) पक्का तो ताली बजाओ। बापदादा को भी खुशी है। अच्छा। (१८-०२-२००८)

## अभी समझते हैं कि ब्रह्माकुमार कुमारी बनके परिवार व्यवहार सब चल सकता है

यह तो कुमारियां हुई, आप सब कौन हो? आप कहो यह तो कुमारियां हैं हम ब्रह्माकुमार और ब्रह्मा कुमारियां हैं। आप भी कम नहीं हैं। यह कुमारों का ग्रुप है, मिला हुआ ग्रुप है। अच्छा है। युगलों को कौन सा नशा है? एकस्ट्रा नशा। मालूम है। जबसे प्रवृत्ति वाले इस नॉलेज को धारण करने लगे हैं तो मैजारिटी अभी लोगों में हिम्मत आई है कि हम भी कर सकते हैं। पहले समझते थे कि ब्रह्माकुमारियां बनना अर्थात् सब कुछ छोड़ना लेकिन अभी समझते हैं कि ब्रह्माकुमार कुमारी बनके परिवार व्यवहार सब चल सकता है। और युगलों की एक विशेषता और है, उन्होंने महात्माओं को भी चैलेन्ज की है कि हम साथ रहते, व्यवहार करते, हमारा परमार्थ श्रेष्ठ है। विजयी हैं। तो विजय की हिम्मत दिलाना यह युगलों का काम है। इसीलिए बापदादा युगलों को भी मुबारक देते हैं। ठीक है ना। चैलेन्ज करने वाले हो ना, पक्का। कोई आके सी.आई.डी करे, तो करने दो। कहो करने दो। है ताकत? है? **हाथ उठाओ**। अच्छा। (१८-०२-२००८)

## पवित्रता ब्राह्मण जीवन का आधार है

पवित्रता ब्राह्मण जीवन का आधार है। पूज्य बनने का आधार है। श्रेष्ठ प्राप्ति का आधार है। तो जो भी भाग्यवान आत्मार्थे यहाँ पहुंच गये हैं वह चेक करो कि यह जन्म का उत्सव पवित्र बनने का चारों प्रकार से, सिर्फ ब्रह्मचर्य की पवित्रता नहीं, लेकिन मन-वचन-कर्म-सम्बन्ध सम्पर्क में भी पवित्रता। यह पक्का व्रत लिया है? लिया है? जिन्होंने लिया है पक्का, थोड़ा-थोड़ा कच्चा नहीं, वह **हाथ उठाओ**। पक्का, पक्का? पक्का? कितना पक्का? कोई हिलावे तो, हिलेंगे? हिलेंगे? नहीं हिलेंगे? (०५-०३-२००८)

## बाप की श्रीमत वह आपकी मत

श्रीमत का हाथ में हाथ हो, बाप की श्रीमत वह आपकी मत इसको कहते हैं हाथ में हाथ। तो ठीक है - आज बर्थ डे उत्सव मनाने आये हो ना! बापदादा को भी खुशी है कि मेरे बच्चे, फखुर है बाप को कि मेरे बच्चे सदा उत्साह में रहते उत्सव मनाते रहते हैं। हर रोज़ उत्सव मनाते हो या विशेष दिन पर? संगमयुग ही उत्सव है। युग ही उत्सव का है। और कोई युग संगमयुग जैसा नहीं है। तो सबको उमंग-उत्साह है ना कि हमें समान बनना ही है। है? बनना ही है, या देखेंगे, बनेंगे, करेंगे, गें गें तो नहीं है? जो समझते हैं बनना ही है, वह **हाथ उठाओ**। बनना ही है, त्याग करना पड़ेगा, तपस्या करनी पड़ेगी। (०५-०३-२००८)

## बापदादा बहुत-बहुत दुआओं की वर्षा करेगा

डबल विदेशी क्या समझते हैं? करेंगे? करेंगे? डबल विदेशी करेंगे? बहुत अच्छा। अगर डबल विदेशी एकजैमुल बन जायें तो बापदादा बहुत-बहुत दुआओं की वर्षा करेगा। क्या सोचा डबल विदेशियों ने? एकजैमुल बनेंगे? बनेंगे तो **दो हाथ उठाओ**। कमाल है, बापदादा डबल विदेशियों को अभी से हिम्मत और उमंग उत्साह की दुआयें दे रहे हैं। भारत वाले भी कम नहीं हैं, वह भी अन्दर-अन्दर सोच रहे हैं। वह सोचते हैं करके ही दिखायेंगे। ठीक है ना भारत वाले। देखो। भारत ने क्या नहीं किया? भारत वाले बाप को ऊपर से नीचे ले

आये। कमाल तो की ना भारत वालों ने। उसके आगे यह क्या बड़ी बात है। अच्छा - जो समझते हैं कि बाप से और दादी से भी बहुत बहुत प्यार है वह **हाथ उठाओ**। प्यार है, अच्छा। कितना प्यार है? अभी आपका दिल कौन सा गीत गाता है? इतना प्यार करेगा कौन? जितना बच्चे करते बाप को, बाप करता बच्चों को। इतना प्यार कोई करेगा। तो प्यार के पीछे क्या छोड़ना थोड़ेही है, यह तो पाना है, छोड़ना नहीं है। (०५-०३-२००८)

## साइलेन्स का संकल्प किया और स्वरूप हुआ

अभी बापदादा कौन सी ड्रिल कराने चाहते हैं? एक सेकण्ड में शान्ति की शक्ति स्वरूप बन जाओ। एकाग्र बुद्धि, एकाग्र मन। **सारे दिन में एक सेकण्ड बीच-बीच में निकाल अभ्यास करो**। साइलेन्स का संकल्प किया और स्वरूप हुआ। इसके लिए समय की आवश्यकता नहीं। एक सेकण्ड का अभ्यास करो, साइलेन्स। अच्छा। (०५-०३-२००८)

## सन्तुष्टता दुआओं का खाता बढ़ाती है

आज बापदादा चारों ओर के बच्चों का जमा का खाता देख रहे थे। पहले भी सुनाया है कि विशेष तीन प्रकार के खाते जमा किये हैं और कर सकते हैं। एक है - अपने पुरुषार्थ प्रमाण खजाने जमा करना। यह एक खाता है। दूसरा खाता है - दुआओं का खाता। दुआओं का खाता जमा होने का साधन है सदा सम्बन्ध-सम्पर्क और सेवा में रहते हुए संकल्प, बोल और कर्म में, तीनों में स्वयं भी स्वयं से सन्तुष्ट और दूसरे भी सर्व और सदा सन्तुष्ट हों। सन्तुष्टता दुआओं का खाता बढ़ाती है। और तीसरा खाता है - पुण्य का खाता। पुण्य के खाते का साधन है - जो भी सेवा करते हैं, चाहे मन से, चाहे वाणी से, चाहे कर्म से, चाहे सम्बन्ध में, सम्पर्क में आते सदा निःस्वार्थ और बेहद की वृत्ति, स्वभाव, भाव और भावना से सेवा करना। इससे पुण्य का खाता स्वतः ही जमा हो जाता है। तो चेक करो - चेक करना आता है ना! आता है? **जिसको नहीं आता हो वह हाथ उठाओ**। जिसको नहीं आता है, कोई नहीं है माना सभी को आता है। तो चेक किया है? कि स्व पुरुषार्थ का खाता, दुआओं का खाता, पुण्य का खाता तीनों कितनी परसेन्ट में जमा हुआ है? चेक किया है? जो चेक करता है वह **हाथ उठाओ**। चेक करते हो? पहली लाइन नहीं करती है? चेक नहीं करते? क्या कहते हैं? करते हैं ना! (१८-०३-२००८)

## जमा करने की चाबी क्या है

खजाने तो बापदादा द्वारा मिलते ही रहते हैं। इस खजानों के जमा करने की बहुत सहज विधि है - विधि कहो या चाबी कहो, वह जानते हो ना! जमा करने की चाबी क्या है? जानते हो? तीन बिन्दियां। है ना सभी के पास चाबी? तीन बिन्दियां लगाओ और खजाने जमा होते जायेंगे। माताओं को चाबी लगाने आती हैं ना, चाबी सम्भालने में होशियार होती हैं ना! तो सभी माताओं ने यह तीन बिन्दियों की चाबी सम्भालकर रखी है, लगाई है? बोलो मातायें चाबी है? जिसके पास है वह **हाथ उठाओ**। **मातायें उठाओ**। चाबी चोरी तो नहीं हो जाती है? (१८-०३-२००८)

## एक शब्द अलबेला कर देता है

अभी समय अनुसार कौन सा पुरुषार्थ चाहिए? तीव्र पुरुषार्थ और सब चाहते भी हैं कि तीव्र पुरुषार्थियों के लाइन में आयें लेकिन एक शब्द अलबेला कर देता है। पता है वह? परिवर्तन करने के लिए तैयार हैं? है तैयार? **हाथ उठाओ, तैयार हैं?** देखो, आपका फोटो टी.वी. में आ रहा है। तैयार हैं, अच्छा मुबारक हो। अच्छा - तीव्र पुरुषार्थ से परिवर्तन करना है या कर लेंगे, देख लेंगे... ऐसे तो नहीं? एक शब्द जान तो गये होंगे, क्योंकि सब होशियार हैं, एक शब्द वह है कि **“कारण” शब्द को परिवर्तन कर “निवारण” शब्द को सामने लाओ**। (१८-०३-२००८)

## श्रेष्ठ संकल्प की कलम से अपना चित्र अभी-अभी सामने लाओ

पता है - बापदादा अभी भी एक-एक बच्चे का कौन सा चित्र सामने देख रहा है? पता है कौन सा चित्र देख रहे हैं? अभी आप सभी भी अपना चित्र खींचो। आता है चित्र खींचने आता है ना! श्रेष्ठ संकल्प की कलम से अपना चित्र अभी-अभी सामने लाओ। पहले सभी ड्रिल करो, माइन्ड ड्रिल। कर्मन्द्रियों की ड्रिल नहीं, मन की ड्रिल करो। रेडी, ड्रिल करने के लिए रेडी हैं। **कांध हिलाओ**। देखो सबसे श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ चित्र होता है, ताज, तख्त, तिलकधारी का। तो अपना चित्र सामने लाओ। और सब संकल्प किनारे कर देखो, आप सभी बापदादा के दिलतख्त नशीन हैं। तख्त है ना! ऐसा तख्त तो कहाँ भी नहीं मिलेगा। तो पहले यह चित्र निकालो कि मैं विशेष आत्मा, स्वमानधारी आत्मा, बापदादा की पहली रचना श्रेष्ठ आत्मा, बापदादा के दिलतख्तनशीन हूँ। तख्तनशीन हो गये! साथ में परमात्म रचना इस वृक्ष के जड़

में बैठी हुई पूर्वज और पूज्य आत्मा हूँ, इस स्मृति का तिलकधारी हूँ। स्मृति का तिलक लगाया! साथ में बेफिकर बादशाह, सारा फिकर का बोझ बापदादा को अर्पण कर डबल लाइट की ताजधारी हूँ। तो ताज, तिलक और तख्तधारी, ऐसी बाप अर्थात् परमात्म प्यारी आत्मा हूँ।

(१८-०३-२००८)

## जो सन्तुष्ट रहता है उसकी निशानी सदा प्रसन्नचित दिखाई देता है

जो सन्तुष्ट रहता है उसकी निशानी सदा प्रसन्नचित दिखाई देता है। सदा चेहरा हर्षितमुख स्वतः ही रहता है। सन्तुष्ट आत्मा के सामने कोई भी परिस्थिति स्व स्थिति को हिला नहीं सकती। कितनी भी बड़ी परिस्थिति हो लेकिन सन्तुष्ट आत्मा के लिए कार्टून शो का मनोरंजन दिखाई देता है। इसीलिए वह परिस्थिति में परेशान नहीं होता और परिस्थिति उसके ऊपर वार नहीं कर सकती, हार जाती है। इसलिए अतीन्द्रिय सुखमय मनोरंजन की जीवन अनुभव करता है। मेहनत नहीं करनी पड़ती। मनोरंजन अनुभव होता है। तो हर एक अपने को चेक करे। चेक करना तो आता है ना! आता है? जिसको चेक करना आता है अपने को, दूसरे को नहीं अपने को चेक करना आता है, वह हाथ उठाओ। चेक करना आता है? अच्छा। मुबारक हो।

(०२-०४-२००८)

## पास विद ऑनर का दर्शन करना चाहिए ना

बापदादा की दिल की आश पहले भी सुनाया है। सभी ने हाथ उठाया था, याद है कि हम कारण को समाप्त कर समाधान स्वरूप बनेंगे। याद है होमवर्क? कई बच्चों ने रुहरिहान में या पत्रों द्वारा, ईमेल द्वारा रिजल्ट लिखी भी है। अच्छा है, अटेन्शन गया है लेकिन जो बापदादा को शब्द अच्छा लगता है, सदा। वह है? आप सभी जो भी आये हैं, चाहे सुना है, चाहे पढ़ा है लेकिन एक मास के होम वर्क में, एक मास हुआ है बस, ज्यादा नहीं हुआ है तो एक मास में लक्ष्य तो रखा है। एक दो में वर्णन भी किया है लेकिन जो एक मास में होमवर्क में अच्छी मार्क्स लेने वाले बने हैं वह हाथ उठाओ। जो पास हुए हैं, पास हुए हैं। पास विद ऑनर। पास विद ऑनर, उठो। पास विद ऑनर का दर्शन करना चाहिए ना। मातायें नहीं। बहिनों में, टीचर्स ने हाथ नहीं उठाया। कोई नहीं। मधुबन वाले? यह तो बहुत कम रिजल्ट है। (बहुत थोड़े उठे हैं) अच्छा सेन्टर में भी होंगे। मुबारक हो, ताली तो बजाओ।

(०२-०४-२००८)

## बाप के दिल की आशाओं को पूर्ण करने वाले आशाओं के दीपक बनना ही है

तो इस वर्ष एवररेडी। बाप के दिल की आशाओं को पूर्ण करने वाले आशाओं के दीपक बनना ही है। बाप की आशाओं को तो जानते ही हो। बनना है? कि बन जायेंगे, देख लेंगे... जो समझते हैं बनना ही है, वह हाथ उठाओ। देखो कैमरे में आ रहा है। बापदादा को खुश तो बहुत अच्छा करते हो। बापदादा भी बच्चों के बिना अकेला जा नहीं सकता। देखो ब्रह्मा बाबा भी आप बच्चों के लिए मुक्ति का गेट खोलने के लिए इन्तजार कर रहे हैं। एडवांस पार्टी भी इन्तजार कर रही है। आप इन्तजाम करने वाले हैं। आप इन्तजार करने वाले नहीं, इन्तजाम करने वाले हैं। तो इस वर्ष लक्ष्य रखो लेकिन लक्ष्य और लक्षण को समान रखना। ऐसे नहीं हो लक्ष्य बहुत ऊंचा और लक्षण में कमजोरी, नहीं। लक्ष्य और लक्षण समान हो।

(०२-०४-२००८)

## आप सबका वायुमण्डल अनेक आत्माओं को मदद देगा

हर एक ज़ोन एक दो में प्लैन बनाओ और एक दो को भी प्रेरणा दो। जिस भी ज़ोन में कोई भी नया उमंग उत्साह का प्लैन बने, तो एक दो को भी उमंग उत्साह देकर सभी को निर्विघ्न बनाना है। हाथ उठे, अभी तो पुरुषार्थ के हाथ उठते हैं, प्रत्यक्षता के पहले सभी का हाथ उठे कि हम सदा के लिए निर्विघ्न है, निर्विघ्न रहेंगे। जब सभा में सभी का ऐसा हाथ उठेगा तो कितनी वाह! वाह! हो जायेगी। आपके भक्त भी खुश हो जायेंगे वह भी अपने अपने स्थान पर तालियां बजायेंगे। वाह मेरे ईष्ट देव वाह! तो करना है ना। करना है? मधुबन वाले, मधुबन वालों को पहला नम्बर आना है। आना नहीं है, करना है। क्योंकि मधुबन की तरफ सबकी आकर्षण है। मधुबन कहने से ही मधुबन का बाबा याद आता है। मधुबन की विशेषता यह है। तो बाप समान नम्बरवन बनना है। सिर्फ एक बात मधुबन वालों को बाबा कहे, कहे? हाथ उठाओ। करना पड़ेगा। करेंगे? करेंगे? इसमें हाथ कम उठाये। मधुबन निवासी एक-एक अपने को जिम्मेवारी दे तो मुझे बाप समान बनना ही है। कोई बने नहीं बने, मुझे बनना है। अपनी रेसपान्सिबिल्टी तो उठा सकते हैं ना। दूसरे की छोड़ो, अपनी रेसपान्सिबिल्टी उठाये मुझे बनना है। मुझे करके दिखाना है। तो आप सबका वायुमण्डल अनेक आत्माओं को मदद देगा। यह नहीं देखो यह तो करते नहीं हैं, यह तो बदलते नहीं हैं, मैं बदलूँ। दूसरा आपेही बदलेंगे, मैं अपनी जिम्मेवारी लूँ। करेंगे? पीछे भी बैठे हैं मधुबन वाले। अच्छा कितना समय दें? रिजल्ट ६ मास के बाद पूछें। ६ मास ठीक है। जो समझते हैं मैं बदलूँ, दूसरे को नहीं देखो। दूसरे को बापदादा देखेगा। न दूसरे का वर्णन करो, यह ऐसा है, यह ऐसा है, नहीं। वह बाप देखेगा, मुझे बदलना है। मधुबन की बहनें हैं, हाथ उठाओ मधुबन की बहनें। अच्छा। बहनें भी

करेंगी ना। शक्ति सेना को तो आगे रहना ही है। ६ मास में दूसरे को नहीं देखना, कारण नहीं बताना इसने किया ना। करेंगे जरूर, परेशानी देंगे, क्योंकि माया सुन रही है ना। बातें आयेंगी। आप कहो बातें ही नहीं आवें, यह नहीं होगा, लेकिन मुझे बदलना है। ठीक है। अच्छा। टीचर्स, टीचर्स तो निमित्त हैं। सब टीचर चाहे छोटी चाहे बड़ी। इसमें छोटे नहीं हो ना, सब बड़े हैं। सभी टीचर्स भी हिम्मत रखती हो, हिम्मत है? ६ मास देते हैं। **हाथ उठाओ जो करेंगी**। बातें आयेंगी। यह नहीं कहना मैंने कोशिश की, कोशिश नहीं। बाप के प्यार की कशिश, कोशिश नहीं। ठीक है टीचर्स। **टीचर्स हाथ उठाओ, दो-दो हाथ उठाओ**। सभी देख रहे हो। हाथ उठाया है। मुबारक हो। टीचर्स और मधुबन निवासी नम्बरवन। जो ओटे सो अर्जुन। अर्जुन माना बाप समान। कारण नहीं बताना, कारण तो आयेंगे, पहाड़ जैसे कारण आयेंगे, हिम्मत नहीं हारना। वेलकम। कारणों को कहो वेलकम और सेकण्ड में विदाई दे दो। तीन बिन्दियों की चाबी, सफलता की चाबी तीन बिन्दियां। यह हमेशा साथ में रखना। अच्छा। (०२-०४-२००८)

## बच्चों का लक, जो बचपन से ही कितनी बातों से बच गये

(बच्चे रह गये) बहुत बच्चे हैं। बहुत अच्छा। बच्चों के बिना तो रौनक नहीं होती है। और बच्चों को देखके सभी को बच्चों के प्रति बहुत प्यार पैदा होता है। बापदादा को भी खुशी होती है कि वाह! बच्चों का लक, जो बचपन से ही कितनी बातों से बच गये। बच्चे वह जो माया की बातों से बचे हुए हैं। ऐसे बच्चे हो ना। ऐसे हो? **हाथ उठाओ**। बचे हुए हो। बच्चा अर्थात् बचा हुआ। और बच्चे तो सिकीलधे होते हैं, तो आगे बढ़ते चलो। बच्चे भी कमाल करते हैं। जो बापदादा का स्लोगन है बड़े तो बड़े हैं लेकिन छोटे समान अल्लाह हैं। समान बनेंगे ना! बाप समान बनके विश्व के आगे निमित्त बनेंगे। सभी बच्चे तीव्र पुरुषार्थ करना। पुरुषार्थ नहीं तीव्र पुरुषार्थ। ऐसे अच्छे बच्चे हो ना। अच्छे हो। **हाथ उठाओ जो अच्छे बच्चे हैं**। कुमारियां भी हैं। अच्छा है। (०२-०४-२००८)

## कभी-कभी शब्द ब्राह्मण जीवन के डिक्शनरी में है ही नहीं क्योंकि सन्तुष्टता का अर्थ ही है सर्व प्राप्ति

बापदादा हमेशा हर शक्ति के लिए, खुशी के लिए, डबल लाइट बन उड़ने के लिए यही बच्चों को कहते कि सदा शब्द सदा याद रहे। कभी-कभी शब्द ब्राह्मण जीवन के डिक्शनरी में है ही नहीं क्योंकि सन्तुष्टता का अर्थ ही है सर्व प्राप्ति। जहाँ सर्व प्राप्ति है वहाँ कभी-कभी शब्द है ही नहीं। तो सदा अनुभूति करने वाले हो वा पुरुषार्थ कर रहे हो? हर एक ने अपने आपसे पूछा, चेक किया? क्योंकि आप सभी विशेष बाप के स्नेही, सहयोगी, लाडले, मीठे मीठे स्व-परिवर्तक बच्चे हो। ऐसे हो ना? है ऐसे? जैसे बाप देख रहे हैं ऐसे ही अपने को अनुभव करते हो? हाथ उठाओ, जो सदा, कभी-कभी नहीं, सदा सन्तुष्ट रहते हैं। सदा शब्द याद है ना। थोड़ा धीरे धीरे उठा रहे हैं। अच्छा। बहुत अच्छा। थोड़े थोड़े उठा रहे हैं और सोच-सोच के उठा रहे हैं। (२०-१०-२००८)

## विजयी माला में लाना बाप का काम है लेकिन आपका काम है विजयी बनना

बापदादा हर एक बच्चे को माला का मणका, विजयी माला का मणका देखने चाहते हैं। तो आप सभी भी अपने को समझते हो कि हम माला के मणके बनने ही वाले हैं। कई बच्चे सोचते हैं कि १०८ की माला में तो जो निमित्त बने हुए बच्चे हैं वही आयेंगे लेकिन बापदादा ने पहले भी कहा है यह तो १०८ का गायन भक्ति की माला का है लेकिन अगर आप हर एक विजयी दाना बनें तो बापदादा माला के अन्दर बहुत लड़ी लगा देगा। बाप के दिल की माला में आप हर एक विजयी बच्चों को स्थान है, यह बाप की गैरन्टी है। सिर्फ स्वयं को मन्सा-वाचा-कर्मणा और चलन चेहरे में विजयी बनाओ। है पसन्द है, बनें? बापदादा की गैरन्टी है विजय माला का मणका बनायेंगे। कौन बनें? अच्छा, तो बापदादा माला के अन्दर माला बनाने शुरू कर देंगे। डबल फारेनर्स को पसन्द है ना! विजयी माला में लाना बाप का काम है लेकिन आपका काम है विजयी बनना। सहज है ना! कि मुश्किल है? मुश्किल लगता है? जिसको मुश्किल लगता है वह हाथ उठाओ। लगता है? थोड़े-थोड़े, कोई-कोई हैं। बापदादा कहता है - जब बापदादा कहते हो तो बाबा कहने से क्या बाप का वर्सा नहीं मिलेगा! जब सभी वर्से के अधिकारी हो और कितना सहज बाप ने वर्सा दिया, सेकण्ड की बात है, आपने माना, जाना मेरा बाबा और बाप ने क्या कहा? मेरा बच्चा। तो बच्चा तो स्वतः ही वर्से के अधिकारी है। बाबा कहते हो ना सभी एक ही शब्द बोलते हो मेरा बाबा। है ऐसे? मेरा बाबा है? इसमें हाथ उठाओ। (२०-१०-२००८)

## समय प्रमाण आत्मिक स्थिति द्वारा अशरीरी बन सकते हैं

सारे दिन में एक-दो मिनट निकालके भी चेक करो कि समय प्रमाण आत्मिक स्थिति द्वारा अशरीरी बन सकते हैं? चेक करो और चेंज करो। सिर्फ चेक नहीं करना, चेंज भी करो। तो बार-बार इस अभ्यास को चेक करने से, रिवाइज़ करने से नेचरल स्थिति बन जायेगी। बापदादा से स्नेह है, इसमें तो सभी हाथ उठाते हैं। हैं ना स्नेह! फुल स्नेह है, फुल कि अधूरा? अधूरा तो नहीं है ना। तो स्नेह है तो वायदा क्या है? क्या वायदा किया है? साथ चलेंगे? अशरीरी बन साथ चलेंगे कि पीछे-पीछे आयेंगे? साथ चलेंगे? और थोड़ा टाइम साथ रहेंगे भी वतन में, थोड़ा। और फिर ब्रह्मा बाप के साथ फर्स्ट जन्म में आयेंगे। है यह वायदा? है ना? हाथ नहीं उठाते हैं, ऐसे सिर हिलाओ। हाथ उठाते थक जायेंगे ना। जब साथ चलना ही है, पीछे नहीं रहना है तो बाप भी साथ किसको लेके जायेंगे? बाप, समान को साथ लेके जायेंगे। बाप को भी अकेला जाना पसन्द नहीं है, बच्चों के साथ जाना है। तो साथ चलने के लिए तैयार है ना! कांध हिलाओ। हैं? सभी चलेंगे? अच्छा सभी चलने के लिए तैयार हैं? (२०-१०-२००८)

## हर बच्चे के नयनों में रूहानियत का नशा हो

बापदादा वर्तमान समय आप एक-एक बच्चे को अभी किस रूप में देखने चाहते हैं? क्योंकि समय की रफ्तार अचानक के खेल दिखा रही है इसलिए बापदादा हर बच्चे को बाप समान देखने चाहते हैं। हर बच्चे की सूरत में बाप की मूर्त प्रत्यक्ष हो। हर बच्चे के नयनों में रूहानियत का नशा हो। हर चेहरे पर सर्व प्राप्ति की मुस्कराहट हो, हर चलन में निश्चय का नशा हो। सभी आने वाले निश्चयबुद्धि हैं ना! निश्चयबुद्धि हैं, हाथ उठाओ। अच्छा। मुबारक हो। (१५-११-२००८)

## लेट का बोर्ड तो लग गया है लेकिन टूलेट का नहीं लगा है

आज पहली बारी कौन आये हैं वह खड़े हो जाओ। अच्छा आधा क्लास तो पहले बारी का है, बहुत अच्छा, बैठ जाओ। फिर भी बापदादा खुश होते हैं कि लेट का बोर्ड तो लग गया है लेकिन टूलेट का नहीं लगा है। इसलिए आये पीछे हैं लेकिन तीव्र पुरुषार्थी बन आगे जाना है। अगर इस संगम के समय को एक-एक सेकण्ड सफल करेंगे तो सफलता आपका जन्म सिद्ध अधिकार है लेकिन अटेन्शन प्लीज़। सेकण्ड भी व्यर्थ न जाये। अटेन्शन को भी अण्डरलाइन करके चलना पड़े। ऐसे उमंग है, जो पहले बारी आने वाले हैं वह हिम्मत रखते हैं कि हम आगे जायेंगे? वह हाथ उठाओ। टी.वी. में दिखा लो, हिसाब-किताब पूछेंगे। (१५-११-२००८)

## आपकी सीट बुक कर ले

बापदादा को एक-एक बच्चे से विशेष प्यार है, तो बापदादा यही चाहते कि सब बाप समान बन साथ रहते हैं अभी, साथ चलें, अपने घर में साथ चलें और राज्य करने में फर्स्ट जन्म में साथ आयें। पसन्द है हाथ उठाओ। आपकी सीट बुक कर ले। कर लें कि सोचेंगे? सोचेंगे या बुक कर लें? जो समझते हैं बुक होना ही है वह हाथ उठाओ। बुक होना ही है, वाह! यह तो वी.आई.पी भी हाथ उठा रहे हैं। कमाल है, मुबारक है। (१५-११-२००८)

## टीचर्स से बापदादा क्या चाहते हैं

अच्छा, जो टीचर्स आई हैं वह हाथ उठाओ। टीचर्स से बापदादा क्या चाहते हैं? पता है? टीचर्स से बाप दादा यही चाहते हैं कि आपके फीचर्स से बापदादा वा फ्युचर दिखाई दे। साधारण नहीं दिखाई दे, फ्युचर दिखाई दे या बापदादा दिखाई दे। हो सकता है? हो सकता है? अच्छा, इसमें जो भी आई हो वह एक मास के बाद मधुबन में बापदादा के पास अपने इस विशेषता की रिजल्ट लिखना। तो एक मास की रिजल्ट सभी टीचर्स नयी पुरानी सभी टीचर्स, जो नहीं भी आई हैं वह भी एक मास की रिजल्ट या लिखना, नो प्रब्लम। या कारण लिखना कितना दिन प्रब्लम आई। बस डिटेल नहीं लिखना, यह हुआ यह हुआ, वह नहीं लिखना। ठीक है, करना है, हाथ उठाओ जो करेंगे। अच्छा, बहुत अच्छा। यहाँ भी बैठे हैं। अच्छा - मधुबन वाले, ज्ञान सरोवर पाण्डव भवन, हॉस्पिटल वाले सब हाथ उठाओ। अच्छा। तो सभी रिजल्ट लिखेंगे। सभी लिखना। (१५-११-२००८)

## अभी कुछ ऐसी आत्मायें निकालो जो आपकी सर्विस के हैण्ड बन जायें

सेवा का उमंग बापदादा ने देखा है, है, उमंग है लेकिन अभी कुछ ऐसी आत्मायें निकालो जो आपकी सर्विस के हैण्ड बन जायें। बाकी अच्छा है वृद्धि भी हो रही है, यह जो भी सभी उठे हैं वह इसी ज़ोन के हैं, हाथ उठाओ। (१५-११-२००८)

## तीव्र पुरुषार्थी तो हो लेकिन अभी तीव्र सेवाधारी

अभी तो बापदादा ने डबल फॉरेनर्स नाम बदलके कौन सा नाम रखा है? डबल पुरुषार्थी। तो सभी का डबल अर्थात् तीव्र पुरुषार्थ है ना! जो समझते हैं हमारा तीव्र पुरुषार्थ है वह हाथ उठाओ। हाथ हिलाओ। अच्छा, मैजारिटी हैं, मुबारक हो। तीव्र पुरुषार्थ की मुबारक हो। अभी तीव्र पुरुषार्थी तो हो लेकिन अभी तीव्र सेवाधारी यह भी पार्ट बजाओ। (१५-११-२००८)

## देखना, सोचना, सदा हैं

जो समझते हैं हम मास्टर सर्वशक्तवान हैं, सदा, कभी-कभी नहीं, वह हाथ उठाओ। सदा? देखना, सोचना, सदा हैं? डबल फारेनर्स नहीं हाथ उठा रहे हैं, थोड़े उठा रहे हैं। टीचर्स उठाओ, हैं सदा? ऐसे ही नहीं उठाओ, जो सदा हैं वह सदा वाली उठाओ। बहुत थोड़े हैं। पाण्डव उठाओ, पीछे वाले, बहुत थोड़े हैं। सारी सभा नहीं हाथ उठाती। (३०-११-२००८)

## चार बातें चेक करना

कल अमृतवेले विशेष हर एक अपने को, दूसरे को नहीं सोचना, दूसरे को नहीं देखना, लेकिन अपने को चेक करना - कितनी परसेन्टेज में पवित्रता का व्रत निभा रहे हैं? चार बातें चेक करना - एक वृत्ति, दूसरा - सम्बन्ध-सम्पर्क में शुभ भावना, शुभ कामना, यह तो है ही ऐसा, नहीं। लेकिन उस आत्मा प्रति भी शुभ भावना। जब आप सबने अपने को विश्व परिवर्तक माना है, है सभी? अपने को समझते हैं

कि हम विश्व परिवर्तक हैं? **हाथ उठाओ**। इसमें उठाते हैं। इसमें तो बहुत अच्छे हाथ उठाये हैं, मुबारक हो इसमें भी। लेकिन बापदादा एक आप सभी से प्रश्न पूछते हैं? पूछें? प्रश्न पूछें? जब आप विश्व परिवर्तक हो तो विश्व परिवर्तन में यह प्रकृति, ५ तत्व भी आ जाते हैं, उन्हीं को परिवर्तन कर सकते और अपने को या साथियों को, परिवार को परिवर्तन नहीं कर सकते? (३०-११-२००८)

## बापदादा कभी-कभी बच्चों को अचानक देखते हैं

बापदादा कभी-कभी बच्चों को अचानक देखते हैं, क्या कर रहे हैं? क्योंकि बच्चों से प्यार तो है ना, और बच्चों के साथ जाना है, अकेला नहीं जाना है। साथ चलेंगे ना! चलेंगे! चलेंगे! **साथ चलेंगे? यह आगे वाले नहीं उठा रहे हैं? नहीं चलेंगे? चलना है ना!**

(३०-११-२००८)

## एक सप्ताह फुलस्टाप सेकण्ड में लगाने का बार-बार अभ्यास करो

बापदादा होमवर्क दे रहे हैं कि खास कल अमृतवेले चेक करना और चेंज करना पड़ेगा। एक सप्ताह फुलस्टाप सेकण्ड में लगाने का बार-बार अभ्यास करो और १८ जनवरी में, जनवरी का मास सभी को बाप समान बनने का उमंग आता है, तो १८ जनवरी में सभी को अपनी चिटकी लिख करके बाक्स में डालना है कि १८ तारीख तक क्या रिजल्ट रही? फुलस्टाप लगा वा और मात्रायें लग गई? पसन्द है? पसन्द है? **कांध हिलाओ**।

(३०-११-२००८)

## हर कर्म की श्रीमत चेक करना

आज थोड़ा सा विशेष अटेन्शन खिंचवा रहे हैं। प्यार भी कर रहे हैं, सिर्फ अटेन्शन नहीं खिंचवा रहे हैं, प्यार भी है क्योंकि बाप यही चाहते हैं कि मेरा एक बच्चा भी रह नहीं जाए। हर कर्म की श्रीमत चेक करना, अमृतवेले से लेके रात तक जो भी हर कर्म की श्रीमत मिली है वह चेक करना। मजबूत है ना! साथ चलना है ना! चलना है! **हाथ उठाओ**। चलना है? अच्छा। टीचर्स? अच्छा। **पीछे वाले हाथ उठाओ**। **कुर्सी वाले हाथ उठाओ**, **पाण्डव हाथ उठाओ**। तो समान बनेंगे तब तो हाथ में हाथ देकर चलेंगे ना। करना ही है, बनना ही है, यह दृढ़ संकल्प करो।

(३०-११-२००८)

## ऑटोमेटिक दिल में यह रिकार्ड बजना चाहिए, अब घर चलना है

तो अभी यह वर्ष समाप्त होगा, तो क्या समाप्त करेंगे? वर्ष समाप्त करेंगे कि वर्ष के साथ जो भी जिस संकल्प में भी धारणा में भी कमजोरी है, उसको समाप्त करेंगे? **करेंगे ना! हाथ नहीं उठाते हैं?** तो ऑटोमेटिक दिल में यह रिकार्ड बजना चाहिए, अब घर चलना है। सिर्फ चलना नहीं है लेकिन राज्य में भी आना है।

(३०-११-२००८)

## बाबा जब कहता है तो हाथ उठाना चाहिए, इससे याद रहता है

**दादियों से:** (दादियों की सेवा साथी बहनें ब्राह्मणियों से बापदादा मिल रहे हैं): आप सब भी राजयुक्त हो ना! आप जो निमित्त हो तो आप भी ऐसा अपना रूप बनाओ, स्थिति बनाओ, जो सब समझें कि दादी के तरफ से इन्हीं से भी कुछ मिला। सिर्फ प्रोग्राम मिला नहीं, लेकिन इन्हीं से भी कुछ मिला, आप दृष्टि से तो दे सकते, चेहरे से भी दे सकते हैं। चेहरे और चलन से सेवा में नम्बरवन। हो सकता है? सभी को बापदादा विशेष प्यार करता है। **(यह तीनों हाथ नहीं उठाती हैं) बाबा जब कहता है तो हाथ उठाना चाहिए, इससे याद रहता है।** आज आप चार ही लाडले हो, इनकी भी (मोहिनी बहन मुन्नी बहन की) ब्राह्मणियां कहाँ हैं, उनको भी बुलाओ। देखो आप सबको ड्युटी बहुत अच्छी मिली हुई है, सभी से परिचित हो जाती हो। कोई भी सभी से परिचित नहीं होता है लेकिन आप लोगों की ड्युटी ऐसी है जो सारे ब्राह्मण परिवार से परिचित हो जाती हो। कोई भी नाम लेगा, नीलू, हंसा, प्रवीणा, लीला, रूकमणि... तो कहेंगे हाँ जानते हैं नाम। तो आप लोग एक सैम्पुल हो, तो सैम्पुल देखकर सौदा होता है।

(३०-११-२००८)

## चेक और चेन्ज दोनों साथ-साथ होना चाहिए

अभी पुरुषार्थ का समय तो गया लेकिन तीव्र पुरुषार्थ का समय अभी भी है तो चेक करो लेकिन सिर्फ चेक नहीं करना, चेन्ज करो साथ में। कई चेक करते हैं लेकिन चेन्ज करने की शक्ति नहीं है। चेक और चेन्ज दोनों साथ-साथ होना चाहिए क्योंकि आप सबका स्वमान वा आप सबकी महिमा क्या है? टाइल क्या है? मास्टर सर्वशक्तिवान। है, मास्टर सर्वशक्तिवान है या शक्तिवान है? जो कहते हैं मास्टर



सर्वशक्तिवान हैं, वह हाथ उठाओ। अच्छा। तो मास्टर सर्वशक्तिवान मुबारक हो लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान और चेन्ज नहीं कर सकें तो क्या कहा जायेगा ? (१५-१२-२००८)

## बहुतकाल के पुरुषार्थ से फुल २१ जन्म का वर्सा प्राप्त करना ही है

बहुतकाल के पुरुषार्थ से फुल २१ जन्म का वर्सा प्राप्त करना ही है, यह तीव्र पुरुषार्थ स्मृति में रखो। फर्स्ट नम्बर, फर्स्ट जन्म, अपने राज्य का। क्या सोचा है? फर्स्ट जन्म में आना है ना। मजा किसमें होगा? फर्स्ट जन्म में या कोई में भी? जो समझता है कि अपने राज्य के फर्स्ट जन्म में श्रीकृष्ण के साथ-साथ हमारा भी पार्ट हो, वह हाथ उठाओ। अच्छा पार्ट फर्स्ट में? हाथ देख करके तो खुश हो गये। ताली बजाओ। लेकिन फर्स्ट जन्म में आओ उसकी मुबारक है। लेकिन कहें क्या... नहीं कहें, आना ही है फर्स्ट, फिर दूसरी बात क्यों कहें। अच्छा है, जितने भी आये हैं फर्स्ट जन्म में आना ही है। ताली तो बजा दी, फर्स्ट जन्म और फर्स्ट स्टेज भी। तो फर्स्ट स्टेज बनानी ही है, यह जिसका दृढ़ संकल्प है, फास्ट जाना ही है, चाहे कुछ भी विघ्न हो लेकिन विघ्न, विघ्न नहीं रहे, विघ्न विनाशक के आगे विजय का रूप बदल जाये क्योंकि आप सभी विघ्न विनाशक हो। (१५-१२-२००८)

## शुभ भावना रखी और कोई नहीं बदलता है तो आप अपने को बदलो

अभी एक बात १८ जनवरी तक बापदादा पुरुषार्थ के लिए होमवर्क दे रहा है - करेंगे? करेंगे, हाथ उठाओ। कुछ भी हो जाए, बदलना पड़े, समाना पड़े, किनारा करना पड़े, लेकिन बदलेंगे। हाथ उठाया। पक्का? कि कहेंगे मैंने बहुत कोशिश की, नहीं हुआ, यह जवाब नहीं देना क्योंकि अभी अचानक के खेल बहुत होने हैं। और बापदादा चाहता है एक बच्चा भी पीछे नहीं रह जाए, साथ चले। इसलिए एक तो अगर कोई नहीं बदलता है, शुभ भावना रखी और कोई नहीं बदलता है तो आप अपने को बदलो, उसने यह कहा, उसने यह किया इसीलिए मुझे भी करना पड़ा, यह नहीं। (१५-१२-२००८)

## प्रतिज्ञा नहीं, दृढ़ता का संकल्प के रूप में यह दो बातें धारण करनी हैं

मुझे बदल के दिखाना है। मैं बदलूंगा, और भी बदलेगा, अवश्य बदलेगा। इस निश्चय और शुभ भावना से चलो फिर देखो जल्दी जल्दी अपना राज्य आ जायेगा। तो यह १८ तारीख को दो बातें सदा के लिए धारण कर ली, यह बापदादा नहीं कहता है कि लिखकर सिर्फ भेजो, प्रतिज्ञा करने की फाइल लिखत वाले बापदादा के पास बहुत फाइल पड़े हैं वतन में। प्रतिज्ञा नहीं, दृढ़ता का संकल्प के रूप में यह दो बातें धारण करनी हैं। ठीक है टीचर्स? करनी है ना। अच्छा। मातायें हाथ उठाओ, करेंगी? बडा हाथ उठाओ। पाण्डव हाथ उठाओ। पाण्डव। पाण्डव भी उठा रहे हैं, ठीक है। बापदादा तो रोज़ देखता रहेगा। डबल पुरुषार्थी हैं ना। जो समझते हैं कि हम डबल पुरुषार्थी हैं, वह हाथ उठाओ। डबल पुरुषार्थी! डबल! डबल पुरुषार्थी? मैजारिटी तो उठा रही है, कोई-कोई नहीं उठा रहा है। तो ढीला नहीं करना इसको। अभी डबल पुरुषार्थी का टाइटल मिला है ना। फिर आपको टाइटल मिलेगा, फरिश्ता पुरुषार्थी क्योंकि जैसे आते हो, तो फ्लाय करके आते हो ना! ऐसे ही स्थिति में भी फरिश्ता अर्थात् उड़ती कला वाले। चढ़ती कला, चलती कला नहीं, उड़ती कला। (१५-१२-२००८)

## बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना ही है

आज आप सभी अलग-अलग स्थानों से नया वर्ष मनाने आये हो। लेकिन यह नया वर्ष भी मना रहे हो तो इस नये वर्ष का लक्ष्य क्या रखा है? इस नये वर्ष में क्या विशेष करना है? इस नये वर्ष की विशेषता है कि बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना ही है। कुछ भी पुरुषार्थ करना पड़े लेकिन निश्चित है कि बाप समान बनना ही है। बोलो, सबके मन में यही पक्का संकल्प है ना! है? कांध हिलाओ। (३१-१२-२००८)

## आप अविनाशी बाप समान बनने वाले अविनाशी गिफ्ट दो

गिफ्ट तो आपके पास बहुत है। जितना देने चाहो उतना दे सकते हो। स्थूल गिफ्ट तो अल्पकाल के लिए चलेगी लेकिन आप अविनाशी बाप समान बनने वाले अविनाशी गिफ्ट दो। मन्सा द्वारा शक्तियों की गिफ्ट दो, वाचा द्वारा ज्ञान की गिफ्ट दो और कर्मणा द्वारा गुणों की गिफ्ट दो। है ना सबके पास? है तो कांध हिलाओ। खजाने बहुत हैं ना, कम तो नहीं हैं ना। कोई से भी कार्य में आओ, कार्य में तो आना पड़ेगा ना। उसको खूब इस वर्ष में सौगातें दो। लेकिन अविनाशी सौगात। सुनाया ना कोई को भी खाली जाने नहीं दो, चाहे मन्सा की सौगात दो, चाहे वाणी की, चाहे कर्म की। (३१-१२-२००८)

## पहले ही आपने भावना रख दी कि यह बदलेगा ही नहीं तो उसको आपका वायब्रेशन पहले ही पहुंच गया

खुशनसीब हो, खुश चेहरे वाले हो, कभी रोब का चेहरा नहीं बनाना। सदा खुश, कोई भी आपको, चाहे जितना भी काम में बिजी हो, गलती को ठीक कर रहे हो, समझा रहे हो लेकिन रोब का चेहरा, बोल नहीं हो। इस वर्ष में **यह परिवर्तन करके दिखाओ**। प्राइज़ देंगे। सारे वर्ष में जो सदा मुस्कराता रहेगा, कोई भी बात आये, कई भाई बहिनें कहते हैं, रूहरिहान तो करते हैं ना सभी, तो कहते हैं अगर रोब से नहीं कहेंगे ना तो समझेगा नहीं। बदलेगा ही नहीं। पहले ही आपने भावना रख दी कि यह बदलेगा ही नहीं तो उसको आपका वायब्रेशन पहले ही पहुंच गया। इसलिए इस वर्ष में क्रोध या बाल-बच्चा इसको विदाई देनी है। हो सकता है? रोब भी नहीं। बाप पूछता है जो भी समय प्रति समय क्रोध करते हैं, काम बनाने के लिए, सुधारने के लिए, लेकिन वह सुधरता है? क्रोध करने से कोई सुधरा है? वह लिस्ट बताओ। और ही चिढ़ जाता है, सुधरता नहीं है। अपोजीशन करता है मन में। अगर बड़ा है तो मन में अपोजीशन करता है, बोल तो सकता नहीं और छोटा है तो रोने लग जाता है। तो इस वर्ष क्या-क्या करना है, वह सारा सुना रहे हैं। पसन्द है? करना है? अभी **हाथ उठाओ**। करना है? यह टी.वी.वाले यह फोटो निकालो। **हाथ उठाओ, थोड़ा खड़ा रखो। टी.वी. वाले निकाल रहे हैं।** (३१-१२-२००८)

## मधुबन बीज है, तना है

विशेष यह क्रोध का भूत जो है वह इस वर्ष भगाना है। रोब भी नहीं, कई आंखों से भी क्रोध करते हैं, देखा है? चेहरे से भी क्रोध करते हैं। तो क्या करेंगे? कुछ तो तलाक देंगे ना। देंगे? मधुबन वाले देंगे? मधुबन वाले **हाथ उठाओ**। अच्छा इतने बैठे हैं। अच्छा यहाँ बैठे हैं। तो पहले मधुबन वालों को बापदादा कहते हैं इसमें पहले मैं, पहले मधुबन से विदाई देंगे और मधुबन का प्रभाव सेन्टर पर भी आटोमेटिकली जायेगा। मधुबन बीज है, तना है। लेकिन आप सबकी परमानेंट एट्रेस कौन सी है? मधुबन है ना। तो आप समझ रहे हो सिर्फ मधुबन निवासी करेंगे। **आप सभी मधुबन निवासी हो**। क्योंकि परमानेंट एट्रेस आपकी मधुबन है, यह तो सेवा के लिए भिन्न-भिन्न स्थान पर गये हैं। (३१-१२-२००८)

## समय पर सहयोग दे देते हैं लेकिन वारिस हो

बापदादा की यह आशा है कि ऐसे कोई निमित्त बनें जो भिन्न-भिन्न स्थान से भी ग्रुप बनावें। यह नवीनता कोई भी सेन्टर है या वर्ग है, करके दिखावे। सहयोगी हैं बापदादा जानते हैं, समय पर सहयोग दे देते हैं लेकिन वारिस हो। चाहे गुप्त हो। दिल्ली क्या करेगा? ऐसा कंगन तैयार करेगा? बापदादा माला नहीं कह रहे हैं कंगन बना के लाये। इस वर्ष में कोई कमाल करके दिखाओ ना। चाहे फारेन से निकले, चाहे भारत से निकले, हो सकता है ना! हो सकता है! टीचर्स बोलो हो सकता है? **हाथ उठाओ**। दिल्ली वाले। वाह! बापदादा मुबारक देते हैं। हिम्मत अच्छी रखी, अभी हिम्मत की मुबारक देते हैं और जब प्रैक्टिकल करेंगे ना तो फिर कौन सी मुबारक देंगे? वाह! मुरब्बी बच्चे वाह! **कोई भी करे**, बाम्बे करे, महाराष्ट्र करे, आंध्र करे, कोई भी करे, मधुबन करे, ठीक है ना! अच्छा है, दिल्ली में ब्रह्मा बाप की, ब्रह्मा बाप के साथ शिव बाप तो है ही लेकिन विशेष ब्रह्मा बाप की दिल्ली, बाम्बे, कलकत्ता, कलकत्ता वाले भी कर सकते हैं, शुरू से बापदादा उम्मीदें रखे हुए हैं। अच्छा। अभी कमाल करके दूसरे वर्ष आओ तो तैयारी करके आना। ठीक है? **सभी पाण्डव हाथ उठाओ**। (३१-१२-२००८)

## भट्टी में जो सुना वह करके दिखाने वाले

अच्छा है, कुमारियां भी हिम्मत वाली हैं। भट्टी करने वाले नहीं, भट्टी में जो सुना वह करके दिखाने वाले। ऐसे हो ना। **हाथ उठाओ जो करके दिखायेगा**। करके दिखाने वाले, अच्छा। बहुत अच्छा। (३१-१२-२००८)

## बेफिकर बादशाह बन उड़ते रहेंगे

कोई भी मुश्किल आये बोझ आवे तो बाप को देने आता है, तो बेफिकर बादशाह बन उड़ते रहेंगे। दिल में बोझ नहीं रखो। कई बच्चे कहते हैं एक मास हो गया है, १५ दिन हो गये हैं, चलता ही रहता है, और उस १५ दिन में अगर आपका काल आ जाए तो? उसी समय बोझ बाप को दे दो, देना आता है? देना जरूर सीखो। लेना तो आता है देना भी सीखो। तो क्या करेंगे? देना सीखा है? बापदादा आया ही किसलिए है? बच्चों का बोझ लेने के लिए। कौन है जो इतनी हिम्मत रखता है, वह **हाथ उठाओ**। शरीर का हाथ उठा रहे हो या मन का हाथ उठा रहे हो? **मन का हाथ उठाना**। अच्छा। बापदादा ऐसे बच्चों को पदम पदमगुणा मुबारक दे रहे हैं। अच्छा। (३१-१२-२००८)

## मैं हीरो, सच्चा हीरो, महान हीरो हूँ

४० वर्ष अव्यक्त पालना के पूरे हुए हैं। तो ४० वर्ष में पहले क्या आता - बिन्दू, जीरो। तो जीरो याद दिलाता कि मैं हीरो, सच्चा हीरो, महान हीरो हूँ और हीरो पार्टधारी बन हर कार्य हीरो समान करना है। तो जीरो, हीरो यह सदा याद रहे और बाकी जो चार हैं, उसमें चार बातें नेचुरल जीवन में करनी है, दृढ़ता पूर्वक करनी हैं, **करेंगे? तैयार हैं?** कुछ भी पेपर आवे लेकिन चार बातें अपने जीवन में करनी ही है। पक्का? पक्का? पक्का? **पीछे वाले, पक्के हैं ना!** कच्चे को माया खा जाती है इसीलिए पक्का रहना। एक बात - सदा शुभचिंतक, कोई की कमजोरी देख वा सुन रहमदिल बन शुभ चिंतक बन उनको सहयोग देना ही है। कमजोरी को नहीं देखना है लेकिन सहयोग देना ही है। इसको कहते हैं शुभ चिंतक। पक्का रहेगा ना! सहारे दाता, रहमदिल बन सहयोग दो। उससे किनारा या घृणा नहीं करना, क्षमा करना। *परवश के ऊपर कभी घृणा नहीं की जाती है।* सहारा दिया जाता है। तो शुभ चिंतक और दूसरा है शुभ चिंतन। आजकल बापदादा देखते हैं - मैजारिटी बच्चों में कभी-कभी व्यर्थ संकल्प बहुत चलता है, इसमें अपनी जमा हुई शक्तियां व्यर्थ चली जाती हैं, इसलिए शुभ चिंतन की, स्वमान का कोई न कोई अपना टाइल मन को होमवर्क दे दो, मन का टाइमटेबल बनाओ। (१६-०९-२००९)

## कुछ त्याग करना पड़े तो कर लो

सारे विश्व का, प्रकृति का, आत्माओं का, आत्माओं में ब्राह्मण आत्मायें भी आ जाती हैं, हर एक अपने सेवा स्थान का ऐसा वायुमण्डल दृढ़ता से बनाओ, कुछ त्याग करना पड़े तो कर लो, त्याग करे तो मैं करूँ, नहीं। सिस्टम ठीक हो तो... तो तो नहीं करो। मुझे तो करना ही है। विश्व परिवर्तक स्वमान है ना! सभी विश्व परिवर्तक हो ना! **हाथ उठाओ।** अच्छा विश्व परिवर्तक। (१६-०९-२००९)

## कल क्या होगा!

आज चारों ओर भय फैला हुआ है, सबके दिल में एक ही संकल्प है मैजारिटी दुनिया वालों के, कल क्या होगा! आपको पता है कल क्या होगा! तो परिवर्तन करने में पहले मैं निमित्त बनूंगा, यह संकल्प कौन करता है? **इसमें हाथ उठाओ।** करना पड़ेगा। करना पड़ेगा। बदलना पड़ेगा। रक्षक बनना पड़ेगा। कुछ छोड़ना पड़ेगा और प्यार लेना पड़ेगा। मन का हाथ उठाया या यह हाथ उठाया! किसने मन का हाथ उठाया। क्योंकि मन बदला तो विश्व बदला। (१६-०९-२००९)

## खुशी गई तो जीवन बेकार

अभी यह बात याद रखना कि मैं कौन! कमल। कमल जल में रहते न्यारा रहता, वैसे कोई भी समस्या या कोई भी वायुमण्डल में रहते न्यारा और प्यारा क्योंकि समय तो दुःख का है, भय का है लेकिन आपके लिए सदा मन में खुशी के नगाड़े बजते रहते हैं। सदा खुश रहते हो ना! **हाथ उठाओ।** खुशी को नहीं छोड़ना। खुशी गई तो जीवन बेकार। नीरस जीवन अच्छी नहीं। इसलिए सदा खुश रहना है, रहना है ना और खुशी बांटनी है। (१६-०९-२००९)

## मेडीटेशन द्वारा बाप से मिलाना और मेडिकल द्वारा दुःख दूर करना

मेडिकल और मेडीटेशन दोनों का ग्रुप है, क्योंकि डबल डाक्टर हैं ना मेडीटेशन द्वारा बाप से मिलाना और मेडिकल द्वारा दुःख दूर करना। टैम्पेरी है लेकिन करते तो हैं ना। जैसे बाप दुःख हर्ता है ना तो डाक्टर्स या मेडिकल डिपार्टमेंट भी थोड़े समय के लिए पेशेन्ट का दुःख तो दूर कर देते हैं। लेकिन अभी तो आप सभी उसको मेडीटेशन सिखाके यह भी पुण्य कमाने वाले मेडिकल डिपार्टमेंट हो। सभी डबल सेवा करते हो। **हाथ उठाओ** जो डबल सेवा करते हैं, डबल डाक्टर हैं। सिंगल डाक्टर तो बहुत हैं लेकिन आप डबल सेवाधारी डबल काम करने वाले हो। बापदादा को अच्छा लगा। (१६-०९-२००९)

## जो भी ब्राह्मणों की मर्यादायें हैं, एक एक मर्यादा को पूर्ण रीति से पालन करने वाला हो

बापदादा के पास युवा वर्ग की रिपोर्ट आती रहती है। अभी एडीशन यह करो कि इस वर्ष में जो भी ब्राह्मणों की मर्यादायें हैं, एक एक मर्यादा को पूर्ण रीति से, मन्सा से, वाचा से, कर्मणा से और सम्बन्ध-सम्पर्क से, चारों ही रूप में पालन करने वाला हो - ऐसा ग्रुप तैयार करो, इस वर्ष में कोई भी मर्यादा भंग न हो। ऐसा ग्रुप बनाओ, आपस में बनाओ। जो ओटे सो अर्जुन। पसन्द है? कौन करेगा? आप करेंगे? **हाथ उठाओ।** करेंगे? सभी युवा करेंगे? कितने हैं? (४००) आपस में ग्रुप ग्रुप में पक्का करो फिर गवर्नमेंट को दिखायेंगे कि यह

मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। गवर्मेन्ट भी चाहती है लेकिन कर नहीं पाती है आप करके दिखाओ। एकजैम्बुल बनके दिखाओ। होमवर्क मिल गया ना।  
(१८-०१-२००९)

## सेवा की सबजेक्ट की मार्क्स मिलेंगी लेकिन चार ही में फर्स्ट नम्बर आना चाहिए

सेवा का फल मिलता है, सेवा की मार्क्स, क्योंकि चार सबजेक्ट हैं ना तो सेवा की सबजेक्ट की मार्क्स मिलेंगी लेकिन और तीन सबजेक्ट, अगर एक सबजेक्ट में आपने मार्क्स ले ली और तीन में कम ली तो नम्बर क्या मिलेगा? चार ही में फर्स्ट नम्बर आना चाहिए। यह बापदादा की हर बच्चों के प्रति शुभ आश है। तो बाप की आशाओं के सितारे कौन हैं? हाथ उठाओ। बाप की आशाओं के सितारे हो तो बापदादा की यही सबसे बड़ी आश है कि चार ही सबजेक्ट में नम्बर अच्छा हो। नहीं तो पास विद आनर में नहीं आयेंगे। महारथी उसको कहा जाता है जो चार ही सबजेक्ट में अच्छे नम्बर ले। कहने में भले महारथी महारथी आता है, लेकिन अगर नम्बर नहीं लेते तो बापदादा के उम्मीदों के तारे हैं, आशाओं के तारे नहीं। तो बनना क्या है? उम्मीदों के सितारे? आशाओं के सितारे, सफलता के सितारे। (०५-०२-२००९)

## नशा है कि हम कल्प कल्प के कोटों में कोई बच्चे हैं

विश्व में कितनी कोट आत्मायें हैं लेकिन उनमें से आप बच्चों ने जिसको बाप कहते हैं लक्की और लवली बच्चे हैं उन कोटों में से कोई आप बच्चे हो। नशा है कि हम कल्प कल्प के कोटों में कोई बच्चे हैं। कितने भी बड़े-बड़े मर्तबे वाले आत्मायें वर्तमान समय भी हैं लेकिन बाप को पहचान बाप का बर्थ डे मनाने वाले चारों ओर के पहचानने वाले बच्चे कोटों में कोई हैं। तो यह खुशी है कि हम कोटों में भी कोई हैं। नशा है! हाथ उठाओ। अविनाशी नशा है ना। (२२-०२-२००९)

## नॉलेजफुल बच्चे अभी समय किसमें लगाना है

सारे ड्रामा की नॉलेज है, इसीलिए नॉलेजफुल बच्चे अभी समय किसमें लगाना है, दो खजाने बहुत जमा करने हैं। कौन से दो खजाने? एक संकल्प और दूसरा समय। दोनों खजाने महान हैं और आप सब जानते हो क्योंकि नॉलेजफुल बाप के नॉलेजफुल बच्चे हो। मास्टर नॉलेजफुल हैं ना। फुल? पुल नहीं, कोई कोई नॉलेजपुल हैं, नॉलेजफुल नहीं हैं। आप कौन हो? नॉलेजफुल हो, हाथ उठाओ। नॉलेजफुल कि नॉलेजपुल। सभी नॉलेजफुल हैं? हाथ उठाया, अच्छा। वाह! फुल नॉलेज आ गई है। माया को भगाने की नॉलेज है? पीछे वालों को है? अच्छा। झण्डियां तो हिला रहे हैं। माताओं को है? मातायें नॉलेजफुल हैं? डबल फारेनर्स, डबल फारेनर्स भी झण्डियां हिला रहे हैं। अच्छा, देखो कितना अच्छा दृश्य लगता है। (२२-०२-२००९)

## इस जन्म का मूल्य सारा कल्प चलता है

संगमयुग का जन्म सबसे है छोटा सा लेकिन अमूल्य जन्म है। इस जन्म का मूल्य सारा कल्प चलता है। तो चेक करते हो, हमारा जमा का खाता कितना है? जितना चाहते हो उतना जमा होता है? क्योंकि बापदादा ने पहले ही कह दिया है कि अभी चलने का समय समाप्त हुआ। उड़ने का समय है। पुरुषार्थ का समय पूरा हुआ लेकिन अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है। वह भी थोड़ा है। इसलिए बापदादा डबल विदेशियों को टाइटिल दिया है डबल तीव्र पुरुषार्थी। बोलो, डबल तीव्र पुरुषार्थी हो, हाथ उठाओ। डबल तीव्र पुरुषार्थी, पास। अच्छा। (२२-०२-२००९)

## १० परसेन्ट बाप ग्रेस में देंगे

आप तीव्र पुरुषार्थियों को स्वप्न में वा संकल्प में वा प्रैक्टिकल कर्म में व्यर्थ क्या होता है, उसकी समाप्ति हो। है हिम्मत? १० परसेन्ट बाप ग्रेस में देंगे। है मंजूर। हाथ उठाओ। कितना परसेन्ट पक्का? १०० परसेन्ट, नहीं १०१ परसेन्ट, क्योंकि बापदादा को बच्चों के बिना, बच्चों के साथ के बिना अच्छा नहीं लगता। बाप समझते हैं जब मेरा बाबा कह दिया, बाबा ने कह दिया मेरा बच्चा, तो बाप समान तो बनना पड़े। (२२-०२-२००९)

## एक में १०-१२ समा जाते हैं

मेरा बाबा, तो और मेरा खत्म। जब मेरा बाबा कहा तो अनेक मेरा उसमें खत्म हो गया ना। एक खिलौना लाते हो ना एक में एक, एक में एक होता है। एक में १०-१२ समा जाते हैं, खिलौना बताते हो तो एक मेरा बाबा, मेरा बाबा कहने वाले हो ना। मेरा बाबा है ना! महारथियों का बाबा तो नहीं। मेरा बाबा। जब मेरा बाबा है तो हद का मेरा तेरे में समा लो। मेरे के बजाए तेरा कहो, कितना फर्क है। मेरा और

तेरा कितना फर्क है? मे और ते। एक शब्द का फर्क है। तो पक्का है ना मेरा बाबा। पक्का है, कितना परसेन्ट? १०० परसेन्ट, १०० एक? ऐसे एक अंगुली उठाओ। जो १०१ कहते हैं, वह उठाओ। बापदादा देख रहे हैं। टी.वी. में भी देख रहे हैं। (२२-०२-२००९)

## एक शब्द का फर्क याद रखने से तीन तख्त के निवासी बनेंगे

एक शब्द का फर्क याद रखने से तीन तख्त के निवासी बनेंगे। तो एक व्रत सदा के लिए पवित्रता, मर्यादा पुरुषोत्तम का आपने सदा के लिए धारण किया वह एक दिन के लिए करते हैं, कापी तो की है लेकिन आटे में नमक समान की है। फिर भी की तो है। बुद्धिवान तो हैं ना! और दूसरा व्रत रखते हैं खानपान का। तो आप सबने भी शुद्ध भोजन का व्रत रखा है ना। कापी तो की है ना। आपने भी पूरा किया है, या कभी थक जाते तो कहते अच्छा कुछ खा लो। ऐसे तो नहीं? थक जाओ, या तंग हो, यूथ वाले क्या करते हैं? जो कुमार हैं, वह हाथ उठाओ। कुमार। अच्छा। बहुत अच्छा। **कुमारियां हाथ उठाओ।** फारेनर्स में कुमारियां, लाइट वाली कुमारियां हैं, (सिर पर छोटा बल्ब लगाया है) कुमारों ने पूरा व्रत निभाया है कि कभी थक जाते हैं? **कुमार जो आते ही अभी भी विधि पूर्वक खानपान का व्रत निभाते हैं,** वह हाथ उठाओ। पास हैं, अच्छा मुबारक हैं। आपको पदमगुणा मुबारक हैं। (२२-०२-२००९)

## समय को समीप लाने वाले आप सच्चे सेवाधारी बच्चे हो

जैसे झण्डा लहराते हो तो जब तक पूरा खुले नहीं, तब तक खोलते रहते हो। समाप्ति झण्डे की तब तक होती है जब तक फूल नहीं बरसा है। तो आप भी प्रत्यक्षता क्या चाहते हो? बाप की प्रत्यक्षता हो। तो जितनी जागरण की, व्रत लेने की, प्रतिज्ञा पक्का करेंगे तो प्रत्यक्षता जल्दी से जल्दी होगी। तो प्रत्यक्षता चाहते हो ना! तो समय को समीप लाने वाले कौन? आप सब हो ना! समय को समीप लाने वाले आप सच्चे सेवाधारी बच्चे हो। विश्व परिवर्तक बच्चे हो। तो बर्थ डे की सौगात मंजूर है! देना भी लेना भी, दोनों बताई। सिर्फ देनी नहीं है, लेनी भी है। **हाथ उठाओ जो दोनों करेंगे।** जो दोनों करेंगे? अच्छा। बहुत अच्छा। अच्छा। यह आपका चित्र इसमें आ रहा है। (टी.वी.में) तो जो कुछ थोड़ा फेल होगा ना उसको यह चित्र भेज देंगे। **फिर से हाथ उठाओ।** यहाँ निकल रहा है। अच्छा। अच्छा है, तो मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। (२२-०२-२००९)

## अगर खुशनसीब, खुशनुमा चेहरा देखना हो तो भगवान के सेन्टरों पर देखो

बापदादा चैलेन्ज करे कि अगर खुशनसीब, खुशनुमा चेहरा देखना हो तो भगवान के सेन्टरों पर देखो, करें चैलेन्ज। करें चैलेन्ज? कभी मुरझाना नहीं पड़ेगा। क्यों मुरझायें? कोई कमी हो तो मुरझाओ। क्या कमी है? खुशी की खुराक, मानों आपको कमी है कोई भी, हेल्थ की वेल्थ की, तो खुशी के लिए क्या कहते हैं? खुशी जैसा कोई खजाना नहीं। तो वेल्थ हुआ ना। है वेल्थ आपके पास। खुशी है? **हाथ उठाओ।** खुशी है ना! तो वेल्थ है। और खुशी जैसा कोई भोजन नहीं, खुशी जैसी कोई खुराक ही नहीं है चाहे ३६ प्रकार की भोजन हो लेकिन खुशी नहीं तो सूखा। और खुशी है तो सूखी रोटी ३६ प्रकार का सुख देगी और बाप का वायदा भी है जो सच्ची दिल, साफ दिल, बड़ी दिल। तीन बातें याद रखो सच्ची दिल, साफ दिल, बड़ी दिल यह तीनों बातें अगर याद रहें, तो कोई भी समय दुनिया की हालतें कैसी भी हों लेकिन तीन ही बातें याद हैं तो आप सबको दाल रोटी बाप खिलायेगा। दो चार सब्जी नहीं खिलायेगा। दाल रोटी खिलायेगा। दाल रोटी खाओ प्रभु के गुण गाओ। (२२-०२-२००९)

## जो सेवा के निमित्त हैं, सेन्टर सम्भालते हैं, उन्हीं की विशेषता

बापदादा एक बात में मैजारिटी को देख करके खुश है, कि जो भी आते हैं वह अभी एक कल्चर वाले हो गये हैं। सभी एक ब्राह्मण कल्चर वाले हैं। हैं ना! **हाथ उठाओ।** अभी विदेश की कल्चर वाले नहीं सब ब्राह्मण कल्चर वाले। आये थे, तो भिन्न भिन्न कल्चर वाले आये थे लेकिन कल्चर को भी पार कर लिया, यह बड़ी दीवार थी लेकिन इस बड़ी दीवार को क्रास कर लिया है, अभी लगता ही नहीं है कि यह कोई अलग हैं। अभी उठ के देखे टी.वी. में सब ब्राह्मण कल्चर वाले। अच्छा लगता है ना एक ही कल्चर। जैसे शुरू में बच्चे आये थे तो भिन्न भिन्न वृक्ष की टालियां आई थी अपने अपने घरों से अपने वालों के साथ आये थे। लेकिन बापदादा ने शुरू में ही कहा कि आप भिन्न भिन्न वृक्ष की डालियां आई हो लेकिन यहाँ एक चंदन के वृक्ष में समा जायेंगी। एक चंदन का वृक्ष बनेगा। आदि में आने वाले बच्चे आदि रत्न एक चंदन का वृक्ष बनें तब तो चंदन की खुशबू फैलाई। विदेश तक भी पहुंची ना। तब तो आये। तो विदेशी भी भिन्न भिन्न कल्चर में आये लेकिन अभी एक कल्चर। पसन्द है ना! पसन्द है **हाथ उठाओ।** कभी मुश्किल तो नहीं लगता। हाँ काम काज में रंगीन ड्रेस पहनते हो वह तो

एलाउ है, बापदादा को फारेनर्स की एक बात और भी अच्छी लगती है, कौन सी? जो सेवा के निमित्त हैं, सेन्टर सम्भालते हैं, उन्हीं की विशेषता है। खाना भी अपना तैयार करते, क्लास भी कराते, जिज्ञासु भी सम्भालते और बाहर का जॉब भी करते। (२२-०२-२००९)

## रावण के खजाने को अपना बनाने से धीरे-धीरे जो शुभ संस्कार हैं वह समाप्त होते जाते हैं

बाप कहते हैं कि रावण के खजाने को अपना बनाने से धीरे-धीरे जो शुभ संस्कार हैं वह समाप्त होते जाते हैं। परमात्म संग का रंग ढीला होता जाता है और माया का रंग इमर्ज हो जाता है। तो चलते - चलते अपने को ही चेक करना है, कौन सा रंग चढ़ा हुआ है? लोग भी होली में क्या करते हैं? पहले बुराई को जलाते हैं फिर रंग लगाते हैं, मनाते हैं। तो आपके ऊपर बापदादा ने संग का रंग तो लगाया लेकिन साथ में ज्ञान का रंग, शक्तियों का रंग, गुणों का रंग, वह लगाता रहता है। तो सभी के ऊपर यह रूहानी रंग चढ़ा हुआ है ना! चढ़ा है? हाथ उठाओ। रूहानी रंग चढ़ गया, उतरने वाला तो नहीं है ना! जिसके ऊपर रूहानी रंग चढ़ गया, अविनाशी रंग चढ़ गया, उसके ऊपर और कोई रंग लग नहीं सकता। (०९-०३-२००९)

## बीती सो बीती करना अर्थात् हो ली

होली का अर्थ है, हो ली, बीत चुका सो बीत चुका। तो आप सबने जो पुरानी जीवन, पुरानी बातें, पुराने संस्कार, पुराने व्यर्थ संकल्प को हो ली कर दी ना। बीती सो बीती करना अर्थात् हो ली। तो ऐसे किया है? कि अभी भी कभी गलती से पुराने संस्कार आ जाते हैं? जब हमारा जन्म ही नया है, आप सभी मरजीवा बने हो ना! बने हो? मरजीवा बने हो? हाथ उठाओ। अच्छा। नया जन्म हो गया। (०९-०३-२००९)

## कोई भी पुराने संस्कार को आने नहीं देना है, यह होली मनानी है

आज कौन सी होली मना रहे हो? आज विशेष कोई भी पुराने संस्कार को आने नहीं देना है, यह होली मनानी है। मना सकते हो या कभी-कभी आ जायेंगे? यह रॉयल शब्द कि मैं करने नहीं चाहती थी, चाहता था लेकिन मेरे संस्कार हैं। यह शब्द आज दृढ़ संकल्प की विधि से समाप्त कर लो। ऐसी होली आज सदा के लिए मनाने की हिम्मत रखते हो? कि कभी - कभी मनायेंगे? जो समझते हैं कि आज से पुराने संस्कार की होली, हो ली, बीती सो बीती, जन्म नया है, वह पुराना जन्म खत्म। ऐसी हिम्मत रखने वाले आप बाप के मीठे - मीठे लाडले सिक्कीलधे बच्चे हो ना! तो यह संकल्प दृढ़, संकल्प नहीं यह दृढ़ संकल्प करने की हिम्मत है? हाथ उठाओ। देखो, सभी ने हिम्मत रखी है। चलो थोड़े रह भी गये, लेकिन आप सब तो साथी हो ना। पक्के साथी, दो हाथ उठाओ। यह फोटो निकालो सबका। अच्छा। डबल विदेशी भी उठा रहे हैं। (०९-०३-२००९)

## डायरेक्ट सेवा यह करेंगी और पुण्य आप निमित्त वालों को मिल जायेगा

अभी फारेन की ट्रेनिंग वाली टीचर्स उठो : - अच्छा टीचर्स समझती हो कि ट्रेनिंग मिलना अच्छा है? जो समझते हैं कि यह जरूरी है, अच्छा है वह ऐसे हाथ उठाओ। तो मुबारक है, निमित्त टीचर्स का। क्योंकि मेहनत अच्छी की है और डायरेक्ट सेवा यह करेंगी और पुण्य आप निमित्त वालों को मिल जायेगा। (०९-०३-२००९)

## बाप के स्नेही बनना अर्थात् सहज पुरुषार्थ करना

बाप के स्नेही बनना अर्थात् सहज पुरुषार्थ करना। स्नेह में आप सभी अपने को स्नेही समझते हैं, कभी कभी नहीं, सदा स्नेही। जो अपने को सदा स्नेह के सागर में समाये हुए समझते हैं, सदा और स्नेह के सागर में समाया हुआ। डुबकी लगाने वाले नहीं, समाये हुए। समझते हैं, स्नेह के सागर में समाये हुए, जो अपने को ऐसे समझते हैं वह हाथ उठाओ। सदा? सदा शब्द को अण्डरलाइन करो। हाथ उठाओ, सदा, सदा? हाथ तो अच्छा उठाया है। बापदादा हाथ को देख के खुश होते हैं क्योंकि हिम्मत रखते हैं। अगर कुछ कम भी होगा तो याद तो आयेगा कि हाथ उठाया है क्योंकि बापदादा का एक एक बच्चे से अति स्नेह है। (२४-०३-२००९)

## कारण शब्द को परिवर्तन कर निवारण शब्द सदा धारण करो

बापदादा सभी बच्चों को देख खुश भी हुए लेकिन एक आश बाप की है, बतायें वह क्या है! बाप की आश को पूर्ण करेंगे ना! एक ही आश थी बतायें! हाथ उठाओ जो आश पूर्ण करेंगे। बहुत अच्छा। छोटी सी आश है, वह है आज से एक शब्द बदली करो, कौन सा शब्द?

जो बार-बार नीचे ले आता है वह शब्द है - “कारण। इस कारण शब्द को परिवर्तन कर निवारण शब्द सदा धारण करो क्योंकि आपकी सेवा भी अभी कौन सी है? विश्व के आत्माओं की सबकी समस्या का कारण, निवारण कर, निवारण करते ही निर्वाणधाम में ले जाना है क्योंकि आप सभी मुक्तिदाता हो। तो जब औरों को भी मुक्ति दिलाने वाले हो तो स्वयं भी कारण को निवारण करेंगे तब औरों को मुक्ति दिला सकेंगे। निर्वाण में भेज सकेंगे। तो यह एक शब्द का अन्तर करना मुश्किल है कि सहज है? सोचो। आज बापदादा जो भी आये हैं वा अपने अपने स्थान पर देख रहे हैं, सुन रहे हैं, उन सभी से एक शब्द का परिवर्तन चाहते हैं क्योंकि कारण नीचे ले आता है। कारण में तो आधाकल्प रहे, अभी निवारण करने का समय है। निवारण आरै निर्वाण, मुक्ति। तो हिम्मत है आज बाप को देने का। लास्ट टर्न है ना, सभी उमंग-उत्साह से आये हैं और बापदादा एक एक को मुबारक दे रहे हैं। सोने की, खाना खाने की मुश्किल भी है लेकिन सब स्नेह से, स्नेह के प्लेन ने आप सबको मधुबन में पहुंचा दिया है। बापदादा हर एक का स्नेह देख, हर एक को पदमगुणा दिल का स्नेह दे रहे हैं। लेकिन स्नेह में आप क्या करते हो? जिससे स्नेह होता है ना, उसको स्नेह में सौगात भी दी जाती है। तो आज बापदादा सौगात में यह कारण शब्द लेना चाहते हैं। यह आश बापदादा की पूर्ण करनी है ना! फिर हाथ उठाओ, यहाँ ही छोड़कर जाना है। यहाँ गेट से निकलो तो कारण शब्द समाप्त हो। गलती से आ भी जाए तो बाप को दी हुई चीज़ अमानत है। तो अमानत में क्या किया जाता है? वापस लिया जाता है? तो सभी ने दृढ़ संकल्प किया? किया? किया? **हाथ उठाओ फिर से।** फिर वाले हाथ हिलाओ। अच्छा। बहुत अच्छा। क्योंकि *अभी समय अनुसार आपके पास क्या लगेगी किसलिए क्या लगेगी? हे मुक्तिदाता मुक्ति दो।* तो देने वाले मुक्तिदाता पहले आप इस एक शब्द से मुक्त बनेंगे तब तो मुक्ति दे सकेंगे। (०७-०४-२००९)

## समय पर नहीं छोड़ो

तो बापदादा आज यही बार-बार इशारा दे रहे हैं कि स्वयं को चेक करो, बार-बार चेक करो और परिवर्तन करो। बहुतकाल का परिवर्तन बहुतकाल के प्रालब्ध का अधिकारी बनाता है। तो बापदादा चाहे अब तक ढीला-ढाला पुरुषार्थी हो लेकिन लास्ट नम्बर वाले बच्चे से भी बाप का स्नेह है। स्नेह है तब तो बाप का बना है, बाप को पहचाना है, मेरा बाबा तो कहता है इसलिए समय पर नहीं छोड़ो। समय आयेगा नहीं, समय सम्पूर्णता का हमको लाना है। बापदादा के विश्व परिवर्तन के कार्य के आप सभी साथी हो। अकेला बाप कार्य नहीं कर सकता, बच्चों का साथ है। बाप तो कहते हैं पहले बच्चे, आगे बच्चे। तो अभी अगर दूसरे वर्ष में आना ही है तो यह होम वर्क करके रखेंगे! करेंगे? **हाँ, हाथ उठाओ।** अच्छा। **पीछे वाले भी हाथ उठा रहे हैं।** (०७-०४-२००९)

## बापदादा भी ऐसे सर्विसएबुल बच्चों को विशेष किरणें देते हैं

बापदादा तो हमेशा कहते पहला वी.आई.पी विदेश में निमित्त अंकल आंटी बनें और प्यार भी याद भी अच्छी है। बापदादा भी ऐसे सर्विसएबुल बच्चों को विशेष किरणें देते हैं। ब्रह्मा बाबा साकार में भी ऐसे सिकीलधे बच्चों को रात को जाग जागकर करेन्ट देते थे। तो अब भी बापदादा वतन से बच्चों को, स्नेही बच्चों को, सर्विसएबुल बच्चों को करेन्ट देते हैं, सकाश देते हैं और सकाश पहुंचती है। तो डबल विदेशी डबल तीव्र पुरुषार्थी हैं। ऐसे हैं ना। डबल तीव्र पुरुषार्थी, हैं ऐसे? **हाथ उठाओ।** अच्छा। बापदादा हर एक बच्चे को तीव्र पुरुषार्थी देखने चाहते हैं। पुरुषार्थी नहीं, तीव्र पुरुषार्थी। (०७-०४-२००९)

## चेहरा दिखाई दे, चलन दिखाई दे

अभी लक्ष्य रखो, वर्ष को छोड़ो, कम से कम जितने थोड़े समय में अपने को जो बाप की आश है कि चेहरा दिखाई दे, चलन दिखाई दे, वह जल्दी से जल्दी प्रैक्टिकल में करके दिखाओ। हिम्मत है, तो हाथ उठाओ। हिम्मत है? हिम्मत है? अच्छा मुबारक हो।

(२५-१०-२००९)

## सदा अपना चार्ट आपे ही चेक करो

बापदादा कहते सदा अपना चार्ट आपे ही चेक करो। जितना अपना चार्ट चेक करेंगे उतना ही चेक करके चेंज करेंगे। तो हर एक अपने चार्ट को चेक करते हो? करते हो? जो रोज़ करता है वह हाथ उठाओ। जो रोज़ करता है, कभी कभी नहीं? (१५-११-२००९)

## संकल्प भी वेस्ट नहीं, युद्ध नहीं, विजयी

बापदादा का एक संकल्प है, बतायें? करना पड़ेगा। जो करने के लिए तैयार हैं, वह हाथ उठाओ। करना पड़ेगा। करना पड़ेगा। बापदादा के पास हर एक सच्ची दिल, साफ दिल स्वप्न में भी संकल्प, वाणी और कर्म में पास होके दिखायें। हो सकता है? हो सकता है? टीचर्स बताओ हो सकता है? १५ दिन तो कुछ भी नहीं हैं लेकिन बापदादा ट्रायल के लिए संकल्प भी वेस्ट नहीं, युद्ध नहीं, विजयी। १५ दिन के फुल विजयी। मुश्किल है या इज़ी है? इज़ी है, हाथ उठाओ। इज़ी है? तो बापदादा यह १५ दिन की रिजल्ट देखेंगे। फिर आगे बढ़ायेंगे। १५ दिन तो कोई भी कर सकता है ना! कर सकते हैं ना! मधुबन वाले, मधुबन वाले हाथ उठाओ। यह आगे आगे मधुबन बैठा है। बहुत अच्छे हैं। फॉरेनर्स या इण्डिया वाले सभी को करना है। गांव वाले या बड़े शहर वाले सबको १५ दिन का रिकार्ड रखना है।

(३०-११-२००९)

## वेस्ट थॉट्स सम्बन्ध के कनेक्शन में चलते हैं

माया और प्रकृति दोनों रेडी हैं। अब बताओ आर्डर करें? बच्चे अगर एवररेडी नहीं हैं तो माया और प्रकृति को आर्डर करें? करें? हाथ उठाओ। तैयार हो? ऐसे नहीं हाथ उठाओ। पेपर आयेगा, आयेगा पेपर। एवररेडी? अगर आप तैयार हो, हाथ उठाया, तो उन्हीं का काम क्या है? एक दो को आप समान बनाना। जिन्होंने हाथ उठाया, वह आप समान बना सकते हो? परिवार को तैयार कर सकते हो? इसमें हाथ उठाओ। कर सकते हैं? खिटखिट जो होती है, माया जो आती है वह परिवार की बात में आती है, सम्बन्ध में आती है, वेस्ट थॉट्स सम्बन्ध के कनेक्शन में चलते हैं। तो हाथ उठाने वाले बतायेंगे? (१५-१२-२००९)

जो समझता है बापदादा से हमारे दिल का प्यार १०० परसेन्ट है। १०० परसेन्ट है? लम्बा हाथ उठाओ। (१५-१२-२००९)

कम से कम सारे दिन में १२ बारी फरिश्ता बनो, १२ बारी निराकार स्थिति में स्थित रहो, यह कर सकते हो? हाथ उठाओ।

(१५-१२-२००९)

## इस बेहद के नाटक में भी नम्बरवन आना ही है

आप कितने बारी कर्नाटक, कर्नाटक कहते हो, जब नाटक शब्द कहते हो तो बेहद का नाटक भी याद आता है ना। तो इस बेहद के नाटक में भी नम्बरवन आना ही है। यह पक्का है ना! आना ही है, बनना ही है, चाहे कुछ भी करना पड़े, एवररेडी। है एवररेडी? कुछ भी करना पड़े तो एवररेडी हाथ उठाओ। देखो पौना क्लास तो करने वाले हैं। कोई भी करे, जो ओटे सो अर्जुन। (१५-१२-२००९)

## आप साक्षी दृष्टा बनके उनको शक्ति दो

आप सर्विस करने वालों को अभी जल्दी-जल्दी छांटों और उन्हीं को आगे बढ़ाओ। अच्छा-अच्छा तो कहते हैं अभी उन्हीं को अच्छा बनाने की सेवा दो। आप साक्षी दृष्टा बनके उनको शक्ति दो। अच्छा। तो सभी जो भी आये हो, उन्हींने आगे का प्लैन समझा। हाथ उठाओ। समझा क्या करना है? अभी जल्दी-जल्दी करो। (१५-१२-२००९)



## कोई-कोई बच्चे आह्वान करते हैं मेरा तो मैं क्या करूँ

बापदादा ने सुनाया था कि माया भी बापदादा के पास आती है और क्या कहती है ? मैं तो समझती हूँ, मेरे जाने का समय है लेकिन कोई-कोई बच्चे आह्वान करते हैं मेरा तो मैं क्या करूँ। तो आज विदाई के साथ माया के भिन्न-भिन्न रूप को भी विदाई देनी है। है हिम्मत ? हिम्मत है ? हाथ उठाओ। विदाई देने की हिम्मत है ? पीछे वालों को हिम्मत है ? जिसमें हिम्मत हो, वह हाथ उठाओ। (३१-१२-२००९)

## लक्की और लवली

जो भी नये आये हैं बापदादा उन्हीं को लक्की और लवली कहते हैं, जो आ तो गये अभी मेरा बाबा कहा है ना। हाथ उठाओ जो कहते हैं मेरा बाबा। (३१-१२-२००९)

## अभी वारिस में नम्बरवन जाओ

प्रोग्राम अच्छे किये हैं अभी वारिस में नम्बरवन जाओ। ठीक है! करेंगे ? टीचर्स हाथ उठाओ। तो इस वर्ष में, वर्ष के अन्दर जितनी टीचर हैं उतने वारिस मधुबन में लायेंगे। लायेंगे ? बापदादा सभी जोन को कह रहा है। नम्बरवन कौन जाता है उसको प्राइज देंगे। जो वन नम्बर जायेगा उसको अच्छी प्राइज देंगे। सभी जोन वाली जो बैठी हैं ना वह हाथ उठाओ। और कौन है ? भाई भी उठाओ। ठीक है। उठाया। अच्छा है। (३१-१२-२००९)

## बाप का नियम है कि एकजैम्मुल वह बनें जो पहले खुद में सन्तुष्ट हो

बापदादा भी यूथ ग्रुप में परिवर्तन देख खुश होते हैं। लेकिन ऐसे यूथ जायें जो स्वयं अपने से सन्तुष्ट हों। प्रैक्टिकल लाइफ में हो। भले कोई सुनाये नहीं सुनाये लेकिन बाप का नियम है कि एकजैम्मुल वह बनें जो पहले खुद में सन्तुष्ट हो। और यूथ, प्रॉब्लम अपनी हल करने के लिए जो भी निमित्त हैं उनकी मदद लें। कुछ भी हो अपनी कमजोरी मिटाना ही है। ऐसे यूथ वायब्रेशन फैला सकते हैं। आवाज फैला सकते हैं। जैसे जैसे आवाज फैलेगा वैसे वैसे इस कार्य का दुनिया में प्रभाव पड़ेगा। तो ग्रुप वाले जो ग्रुप निमित्त बने हैं उनको बहुत अपनी सम्भाल करनी है, पूरा एकजैम्मुल बनना है। ठीक है ना। सब यूथ ठीक हैं। हाथ उठाओ। (३१-१२-२००९)

बापदादा को अच्छा लगता है जो सेवा में भिन्न-भिन्न प्रोग्राम करते रहते हैं, सन्देश देते रहते हैं वह हाथ उठाओ। (३१-१२-२००९)

आप कहते हो ना कि बाबा आपको हम याद करते हैं तो आप हाजिर हो जाते हैं। है अनुभव ? हाथ उठाओ। (१८-०१-२०१०)

## डबल डाक्टर्स की आवश्यकता है

आजकल के समय में चिंता और भय फैला हुआ है। तो डाक्टर्स यह तो डबल डाक्टर्स होंगे ही। डाक्टर्स जो डबल डाक्टर हैं वह हाथ उठाओ। मन के भी तन के भी। क्योंकि आजकल मन का रोग और बढ़ता जायेगा इसलिए डबल डाक्टर्स की सेवा और बढ़ती जायेगी। प्रकृति की हलचल के कारण नये-नये रोग निकलते हैं तो ऐसे समय पर डबल डाक्टर्स की आवश्यकता है। तो आप सभी एवररेडी हो, कहाँ भी बुलावा हो तो सेवा दे सकते हो ? जो सेवा दे सकते हैं वह हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। नाम नोट करके देना क्योंकि निमन्त्रण तो आते हैं तो समय निकालेंगे ? निकालेंगे ? जो समय के लिए भी तैयार हैं वह हाथ उठाओ। अच्छा। बहिर्न कम उठा रही हैं। सेवाकेन्द्र चलाना है। (१८-०१-२०१०)

**डबल विदेशी:-** बापदादा को खुशी है कि मधुबन में सेरीमनी मनाने के निमित्त सभी को उमंग-उत्साह आता है। हाथ उठाओ जो सेरीमनी मनाने आये हैं ? अच्छा। जिनकी सेरीमनी है वह हाथ उठाओ। दो हाथ उठाओ। (१८-०१-२०१०)

## जो कमी हो उसको सम्पन्न करेंगे

चार ही सबजेक्ट में जो अपने को अनुभवी स्वरूप बन अनुभव के अथॉरिटी को कार्य में लगायेंगे, जो कमी हो उसको सम्पन्न करेंगे, इतना अटेन्शन देंगे अपने पर वह हाथ उठाओ। मन का हाथ उठा रहे हो ना! शरीर का हाथ नहीं, मन का हाथ उठाओ। मन का हाथ उठाना। (३०-०१-२०१०)

पहले इन्दौर वाले हाथ उठाओ। अभी राजस्थान वाले हाथ उठाओ। अच्छा। दोनों ने अपनी सेवा का पार्ट अच्छा बजाया है। बापदादा ने देखा है कि यह सेवा का चांस सभी उमंग - उत्साह से करते भी हैं और कराते भी हैं। (३०-०१-२०१०)

## जन्म दिन पर यह सन्देश देने की मिठाई बांटें

बच्चों का, बापदादा का जन्म दिन है, जो पुराने हैं वह अपना जन्मदिन कौन सा मनाते हैं? शिवरात्रि मनाते हैं ना! तो इतनों के जन्म दिन पर यह सन्देश देने की मिठाई बांटें। ठीक है! बाटेंगे! हाथ उठाओ। कोई भी वंचित नहीं रहे, किसी भी विधि से, फंक्शन करो या पोस्ट द्वारा भेजो, लेकिन कोई रहे नहीं। किसी भी साधन से उनको सन्देश जरूर पहुंचाओ। (३०-०१-२०१०)

सिंधी गुप वाले हाथ उठाओ। यह उमंग सेवा का तरीका बहुत अच्छा बना लिया है। बापदादा विशेष निमित्त बनने वाले उन्हीं को मुबारक देते हैं क्योंकि इसी कारण सभी को सन्देश तो मिल गया। (३०-०१-२०१०)

## पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं लेकिन.....

आपने सारे विश्व को अंधकार से रोशनी में लाया है, यह बेहद का व्रत अच्छा लगता है? मेहनत तो नहीं लगती? सहज है वा मुश्किल है? सहज लगता है! जिसको सहज लगता है वह हाथ उठाओ। कभी-कभी मुश्किल नहीं लगता? कभी लगता है? नहीं। क्योंकि आप जानते हो कि पवित्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है इसलिए पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं लेकिन मन-वाणी-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी पवित्रता। (११-०२-२०१०)

## गिफ्ट में दो और गिफ्ट लो

बाप का बर्थ डे मनाने आये हो तो आज बापदादा चाहे भारत वा फॉरेन वाले सभी बच्चों से क्रोध की गिफ्ट लेने चाहते हैं। हो सकता है? हो सकता है? जो समझते हैं कि आज के दिन बाप को गिफ्ट में दे सकते हैं, मन में भी नहीं, स्वप्न में भी नहीं, ऐसा अपने को संकल्प रख हिम्मत से आगे बढ़ने की शक्ति है! है? जो बाप को हिम्मत से संकल्प कर सकते हैं, करेंगे और बाप से गिफ्ट लेंगे। गिफ्ट में दो और गिफ्ट लो। तो कौन समझता है कि हम यह गिफ्ट देकर और बाप से गिफ्ट लेंगे? वह हाथ उठाओ। अच्छा, झण्डा हिला रहे हैं। कुमारियां भी, देखना। बापदादा को बच्चों की हिम्मत देख बहुत अच्छा लग रहा है। आप सीन देख रहे हो ना! फोटो निकालो फिर हाथ उठाओ। हाँ फोटो निकालो सभी का। (११-०२-२०१०)

जो समझते हैं हिम्मत बच्चे मददे बाप साथ है ही, तो विजय भी साथ है, जो यह सोचते हैं कि मुझे विजयी बनना ही है, वह हाथ उठाओ। (२६-०२-२०१०)

## जो करना है वह तीव्र पुरुषार्थी बन कर लो

जैसे अभी पहले बारी आये हो ऐसे ही पहला नम्बर फर्स्ट डिवीजन, पहला नम्बर में तो फिक्स है लेकिन फर्स्ट डिवीजन में आयेंगे, यह हिम्मत है, हाथ उठाओ जिसमें हिम्मत है? देखो सोच के उठाओ। अच्छा। तो लक्ष्य रखो कि हम लास्ट आये हैं लेकिन फास्ट जायेंगे क्योंकि समय का कोई भरोसा नहीं। अभी जो करना है वह तीव्र पुरुषार्थी बन कर लो क्योंकि बहुत समय का पुरुषार्थ आप सबको थोड़े समय में पूरा करना पड़ेगा। तो हिम्मत है? है हिम्मत? हाथ उठाओ। देखो फोटो निकल रहा है आपका। बापदादा ऐसे हिम्मत वालों को मुबारक देते हैं कि हिम्मत आपकी मदद बाप की। लेकिन हिम्मत नहीं हारना। (२६-०२-२०१०)

## व्यर्थ को समाप्त करना ही है

जो समझते हैं कि अभी समाप्ति के समय को समीप लाना है, उसके लिए व्यर्थ को समाप्त करना ही है, करना है नहीं, करना ही है, स्वप्न में भी नहीं आवे, संकल्प तो छोड़ो लेकिन स्वप्न में भी नहीं आवे, ऐसे हिम्मत वाले बच्चे जो अपने को समझते हैं वह हाथ उठाओ। मन का हाथ उठा रहे हो ना! बांहों का हाथ तो बहुत इजी है लेकिन मन का हाथ उठा रहे हो? जो मन का हाथ उठा रहे हैं वह हाथ उठाओ, मन का हाथ। (१५-०३-२०१०)

## रोज़ आश्रम में आ नहीं सकते हो तो फोन करो

जो आज विशेष वी.आई.पी आये हैं वह उठो। आप सिर्फ एक बात करो। रोज़ आश्रम में आ नहीं सकते हो तो फोन करो। यह कान का फोन है ना, वह करो। आपके कनेक्शन वाली टीचर जो भी है उससे अपना टाइम फिक्स करो, तो इस समय हम फोन करेंगे और उसमें रोज़ का जो महावाक्य जिसको मुरली कहते हैं, वह वरदान और शुरू का जो होता है आरम्भ, वह सुनो। क्यों ? बापदादा क्यों कहते हैं ? अगर करना है, तो हाथ उठाओ। अच्छा। (१५-०३-२०१०)

## जो अपने आपको बापदादा का पक्का वारिस समझते हैं

अभी आप सभी जो वारिस भी हैं और वारिस बनने वाले भी हैं। जो अपने आपको बापदादा का पक्का वारिस समझते हैं, वह हाथ उठाओ। वारिस हैं ? वी.आई.पी भी सभी हाथ उठा रहे हैं। ताली तो बजाओ। अच्छा। (१५-०३-२०१०)

अच्छा। यहाँ जो बैठे हैं इन्हों में से किसी को तकलीफ है सोने की या खाने की वह हाथ उठाओ। जिसको खाने की सोने की तकलीफ हो तो हाथ उठाओ। हाँ बड़ा हाथ उठाओ। (१५-०३-२०१०)

## आवश्यकता के समय सहयोग देना यह महापुण्य है

यह एक दो में ज़ोन वालों का सहयोग यह बात भी अच्छी है। क्योंकि जोन इकट्ठा इसीलिए किया जाता है कि एक दो के नजदीक होने के कारण एक दो को सहयोग देना सहज हो जाता है। तो यह भी सहयोगी बनना, मेरी एरिया नहीं, सब मेरे हैं। आवश्यकता जहाँ है वह मेरा है। चाहे ज़ोन नाम अलग अलग है लेकिन जहाँ आवश्यकता है, आवश्यकता के समय सहयोग देना यह महापुण्य है। अगर अपना पुण्य का खाता जमा करना है, तो सहयोगी बनो और सेवा को और चार चांद लगाओ। यह बापदादा को अच्छा लगा। तो इस संगठन को बढ़ाते रहना। बढ़ाते रहेंगे ना, हाथ उठाओ। सभी ने हाथ उठाया। अच्छा। हम सब एक हैं, यह तो सेवा के कारण, कोई देखरेख हो सके इसके कारण जोन बनाया है, बाकी एक ही हैं, एक ही रहेंगे, एक के हैं, एक के रहेंगे। अच्छा। (१५-०३-२०१०)

## अपने को निर्विघ्न समझते हो

सभी जो भी आये हो अभी अपने को निर्विघ्न समझते हो ? निर्विघ्न समझते हो वह हाथ उठाओ, निर्विघ्न। अच्छा। मैजारिटी है। (१५-०३-२०१०)

## बापदादा आप सभी बच्चों को श्रेष्ठ स्वमानधारी आत्मा के रूप से देखते हैं

बापदादा बच्चों से पूछते हैं कि जैसे बापदादा आप सभी बच्चों को श्रेष्ठ स्वमानधारी आत्मा के रूप से देखते हैं वैसे आप अपने को भी ऐसे स्वमानधारी समझते हो ? तो बापदादा ने देखा जवाब में क्या कहते ? रहते तो हैं, लक्ष्य तो यही है, हाथ भी उठाते हैं, फिर धीरे से कहते कभी - कभी हो जाता है। (३१-०३-२०१०)

## हम एक ही समय में तीन सेवा करते हैं

चेक करते हो कि जिस समय वाणी की सर्विस करते उस समय मन्सा द्वारा और कर्मणा अर्थात् सम्पर्क - सम्बन्ध द्वारा भी सेवा हो रही है! होती है साथ-साथ ? जो समझते हैं कि हम एक ही समय में तीन सेवा करते हैं, वह हाथ उठाओ। करते हैं, तीनों सेवा ? अच्छा, पहली लाइन कम उठा रही है क्यों ? क्यों ? पहली लाइन सोच रही है ? (३१-०३-२०१०)

## तीन पर को काट दो, एक पर रखो

परदर्शन, परचितन और परमत इन तीन पर को काट दो, एक पर रखो वह एक पर है पर उपकार। पर उपकार करना है, पर उपकारी हैं, ब्राह्मण का स्वभाव है पर उपकारी। परदर्शन नहीं, यह पर काट दो। यह तीनों बहुत नुकसान देते हैं। इसीलिए अपना स्वमान सदा यही याद रखो कि मुझ ब्राह्मण आत्मा का स्वमान ही है पर उपकारी। तो दूसरी सीजन में बापदादा हर एक बच्चे में यह परिवर्तन देखने चाहते हैं। हो सकता है ? हो सकता है ? हाथ उठाओ। (३१-०३-२०१०)

## अगर कभी कभी करते हैं तो उसको रेग्युलर करो

मन्सा सेवा करना जानते हो ना! जानते हो? हाथ उठाओ जानते हो। अच्छा, जो करते रहते हैं बीच-बीच में, वह हाथ उठाओ। करते रहते हैं, अच्छा। अच्छा नियम पूर्वक करते हैं या कभी कभी? अगर कभी कभी करते हैं तो उसको रेग्युलर करो और अगर थोड़ी करते हैं उसको और बढ़ाओ। (३१-०३-२०१०)

## लक्ष्य और लक्षण एक करना है

अभी महाराष्ट्र की एक एक आत्मा अमृतवेले बापदादा से मिलन मनाने के बाद यह अटेन्शन देना कि आज के दिन लक्ष्य और लक्षण एक करना है। यह कर सकते हो ना! और रात को बापदादा को समाचार देना कि आज के दिन लक्ष्य और लक्षण समान रहा या फर्क रहा! और दूसरे दिन खास अटेन्शन रखके जो कमी हुई ना उसको भरना। तीसरे दिन उस कमी को सदा के लिए समाप्त करना। ऐसे आगे आगे बढ़ते रहना। तो महाराष्ट्र नम्बरवन हो जायेगा ना! सबमें। चार ही सबजेक्ट में। ज्ञान, योग, धारणा.. धारणा को पहला नम्बर रखना। धारणा में नम्बरवन हो सकता है! हो सकता है? टीचर्स हो सकता है? हाथ उठाओ। करना पड़ेगा, ऐसे नहीं। जो करेंगे वह हाथ उठाओ। अच्छा है। जितनी सख्या है और टीचर्स ने हाथ उठाया है तो बापदादा वरदान देता है कि बाप भी एकस्ट्रा मदद देंगे क्योंकि महाराष्ट्र है। (३१-०३-२०१०)

## क्रोध छोड़ा है

जो होमवर्क दिया वह किया है? जिसने किया है वह हाथ उठाओ। क्रोध छोड़ा है? हाथ उठाओ। क्रोध नहीं किया? मन में। हाथ उठाओ। थोड़े हैं। अभी यह होम वर्क भी करते पास मार्क्स लेना। अटेन्शन है बच्चों का, बापदादा ने टोटल रिजल्ट देखी कि जब भी क्रोध करते हैं ना उस समय आधे में याद आ जाता है, हाँ। और अपने को चेक करते हैं नहीं नहीं, क्रोध नहीं करना है। लेकिन थोड़ा मन में आ जाता है। मुख को कन्ट्रोल कर लेते हैं लेकिन मन में आ जाता है। लेकिन करना है पक्का। (३१-०३-२०१०)

## बाप को बहुत प्यार आता है, जब मेहनत करते हैं ना

हर एक के पुरुषार्थ को भी देखते हैं क्या-क्या कर रहे हैं, बाप को बहुत प्यार आता है, जब मेहनत करते हैं ना तो बहुत प्यार आता है कि मेहनत से छूट जाएं। प्यार में खो जायें। जितना प्यार में खो जायेंगे उतनी मेहनत कम और बापदादा हाथ उठवाता कि बाप से प्यार है तो सभी बड़ा-बड़ा हाथ उठाते हैं। (३१-०३-२०१०)

## मन्सा सेवा द्वारा भिन्न-भिन्न किरणें आत्माओं को देना

बापदादा भिन्न-भिन्न प्रकार की सेवा के प्लैन जो बनाते हो वह सब पसन्द करते हैं। प्रोग्रामस भी जहाँ तहाँ अच्छे चल रहे हैं लेकिन अभी जितना वाचा द्वारा या भिन्न-भिन्न विधियों द्वारा कर रहे हो, सफलता भी है, बापदादा खुश भी है, सिर्फ अभी मन्सा द्वारा अनेक आत्माओं को सुख की किरण, शान्ति की किरण, खुशी की किरण, प्रेम की किरण पहुंचाना, यह सेवा भी साथ-साथ करो। अपने ही संस्कार परिवर्तन या दूसरों के संस्कार को सहयोग देना, इसमें टाइम कईयों का ज्यादा जाता है। तो मन्सा सेवा द्वारा भिन्न-भिन्न किरणें आत्माओं को देना, इसका अटेन्शन, आगे चलके बहुत आवश्यकता पड़ेगी, उसके ऊपर भी ध्यान देते रहो। जो बच्चे समझते हैं कि यह सेवा मैं करता रहता हूँ, वह हाथ उठाओ। अच्छा। कर रहे हैं, उन्हों को मुबारक है और जो नहीं कर रहे हैं, उनको करना चाहिए क्योंकि आगे चलके सरकमस्टांश ऐसे बनेंगे जो सुनने और सुनाने वाले, दोनों का मेल मुश्किल हो जायेगा इसलिए दोनों सेवा अभी से जितना हो सके उतनी आदत डालो। मन बिजी भी रहेगा तो मनमनाभव होना सहज हो जायेगा। (२४-१०-२०१०)

## सदा खुश हैं ?

सभी सदा खुश तो हो ना! सदा खुश हैं? जो सदा खुश रहता है वह हाथ उठाओ, सदा खुश। कोई बात हो जाए तो भी खुश? बातें आती हैं ना, तो भी खुश रहते हो? रहते हो? बड़ा हाथ उठाओ। वेलकम करते हो ना! घबराते नहीं हो, वेलकम करते हो। अनुभवी बनाते हैं। यह विघ्न अनुभव की अथॉरिटी को बढ़ाते हैं। (२४-१०-२०१०)

## जो कुछ पुरुषार्थ में खुद समझो कि यह नहीं होना चाहिए, वह परिवर्तन करके आयेगे!

अभी जो भी आज यहाँ हाल में बैठे हैं, कहाँ के भी हो लेकिन दुबारा जब मधुबन में आयेगे, बाप से मिलेंगे तो बापदादा क्या देखने चाहता है? कहे? कोई न कोई जो कुछ पुरुषार्थ में खुद समझो कि यह नहीं होना चाहिए, समझते तो सभी हैं कि यह नहीं होना चाहिए, वह परिवर्तन करके आयेगे! करेंगे? यह अपने आपको देखना क्योंकि दूसरा कोई देख नहीं सकता। तो यह करने के लिए कौन तैयार हैं? दो दो हाथ उठाओ। बिन्दी लगा दिया ना। फिर बापदादा उन्हों को चाहे छोटी चाहे मोटी गिफ्ट देंगे। परिवर्तन सेरीमनी मनायेंगे। पसन्द है ना! पसन्द है? अपने-अपने क्लासेज वालों को भी कहना, जितने भी परिवर्तन करें उतना अच्छा है। समय को समीप लायेंगे। अच्छा। (२४-१०-२०१०)

## संस्कार परिवर्तन में जितना फास्ट पुरुषार्थ चाहिए, उसकी गति और फास्ट चाहिए

अभी नया वर्ष शुरू हुआ है तो स्व परिवर्तन की गति फास्ट चाहिए। करते भी हो, अटेन्शन भी है लेकिन गति अभी फास्ट चाहिए। बापदादा को याद है पहले भी बाप से वायदा किया कि नये वर्ष में स्व परिवर्तन, संस्कार परिवर्तन करना ही है लेकिन बापदादा ने देखा कि संस्कार परिवर्तन में जितना फास्ट पुरुषार्थ चाहिए, उसकी गति और फास्ट चाहिए। आप सभी क्या समझते हो कि समय प्रमाण जितनी फास्ट गति चाहिए उस अनुसार हर एक का तीव्र पुरुषार्थ है या और होना चाहिए? क्योंकि समय अनुसार, समय में परिवर्तन फास्ट हो रहा है तो आपका भी तीव्र परिवर्तन तब होगा जो संकल्प किया और हुआ, अयथार्थ संकल्प ऐसा समाप्त होना चाहिए जैसे कोई कागज पर बिन्दी लगाओ। कितने में लगेगी? अयथार्थ अर्थात् फालतू संकल्प, इतना फास्ट परिवर्तन होना चाहिए। क्या ऐसी गति जो बापदादा चाहते हैं यह कर सकते हो? है हिम्मत? जो समझते हैं कि अब से इतनी रफ्तार से बिन्दी लगा सकते हैं, हिम्मत बच्चे मददे बाप, वह हाथ उठाओ। बापदादा बच्चों का दृढ़ संकल्प देख मुबारक देते हैं। बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि दृढ़ संकल्प के संकल्प हैं - करना ही है। तो आज की सभा में सभी ने यह दृढ़ संकल्प किया है ना! आपने देखा, दादियों ने देखा, सभी ने हाथ मैजारिटी ने उठाया। देखा! तो कल से स्वभाव संस्कार समाप्ति की सेरीमनी मनानी चाहिए। मनायें? जिन्होंने हाथ उठाया वह हाथ उठाओ, सेरीमनी मनायें? इसकी सेरीमनी तो बहुत धूमधाम से मनाना। जैसे लक्ष्य हिम्मत का रखा है वैसे लक्षण भी हिम्मत का रखेंगे तो कोई बड़ी बात नहीं है। जब लक्ष्य ही है बाप समान बनने का तो अभी लक्ष्य और लक्षण एक करना है। फालो ब्रह्मा बाप। जो भी संकल्प, बोल, कर्म करो पहले ब्रह्मा बाप से मिलाओ। (१५-११-२०१०)

## ब्रह्मा बाप जानते थे कि यह शरीर मेरा नहीं, सेवार्थ है। तो आपका शरीर बाप के सेवार्थ निमित्त है

वास्तव में देखो आप जो सरेन्डर हुए, सरेन्डर होने वाले हाथ उठाओ, जो सरेन्डर हैं वह हाथ उठाओ। जब सरेन्डर किया तो क्या संकल्प किया? तन, मन, धन सब बाप आपका। ऐसे किया ना! किया? किया था? इसमें हाथ उठाओ। तो अभी सरेन्डर किया मेरा नहीं, तन भी मेरा नहीं, धन भी मेरा नहीं, जैसे ब्रह्मा बाप ने बाप को सेवार्थ शरीर दे दिया, तो ब्रह्मा बाप जानते थे कि यह शरीर मेरा नहीं, सेवार्थ है। तो जब आपने तन मन धन तीनों अर्पण किया तो आपका शरीर बाप के सेवार्थ निमित्त है। जैसे ब्रह्मा बाप का शरीर सेवा अर्थ रहा। तो आपका शरीर आपका नहीं है, सेवार्थ है। तो यह जो संस्कार हैं देह अभिमान वा देहभान का, यह होना चाहिए?

(१५-११-२०१०)

## भगवान बाप आ गया, यह बाप की प्रत्यक्षता गुप्त है

सभी को उमंग यह है, बापदादा सुनते रहते हैं, कहते भी रहते हो कि बाप को प्रत्यक्ष करना है, अभी तक ब्रह्माकुमारियाँ, ब्रह्माकुमार प्रत्यक्ष हुए हैं, भगवान बाप आ गया, यह बाप की प्रत्यक्षता गुप्त है। पुरुषार्थ कर रहे हैं लेकिन यह प्रत्यक्ष आवाज फैले, हमारा बाप आ गया, भगवानुवाच है, न कि ब्रह्माकुमारियों के वाच हैं। अभी यह प्रत्यक्षता होनी ही है, यह स्वभाव संस्कार परिवर्तन होना, आप एक-एक के चेहरे और चलन से प्रत्यक्ष होगा। बाप को प्रत्यक्ष करना है, कर रहे हैं लेकिन सबके कानों में यह आवाज गूंजे भगवान आ गया, बाप आ गया, होना है ना! हाथ उठाओ होना है, होना है? हाथ तो बहुत अच्छा उठाया। बापदादा खुश है कि सभी के मन में लगन है और होना ही है। इसके लिए जैसे कल से संस्कार स्वभाव को परिवर्तन करेंगे वैसे ही उसका साधन है कि हर एक जो भी ब्राह्मण हैं, हर ब्राह्मण को अपने चार्ट में शुभभावना, शुभकामना का विशेष अटेंशन रखना होगा। जैसे दुनिया वालों को काम दिया कि कितना समय शुभ भावना, कामना रख सकते हैं, उनको कहा रख सकते हैं और आप तो रख ही सकते हैं। किसी भी समय किसका भी स्वभाव संस्कार तब सामना करता है जब शुभ भावना, शुभ कामना, उस आत्मा प्रति उस समय नहीं है। तो आप भी अगर अमृतवेले से यह संकल्प करो कि मुझे हर आत्मा प्रति शुभ भावना शुभ कामना रखनी ही है तो जो संकल्प किया, परिवर्तन करना ही है, वह पूरा कर सकेंगे। बातें आयेंगी, बातों का काम है आना, माया है ना! और आपका काम है विजय प्राप्त करना। तो कल आपस में ग्रुप बनाके जो निमित्त हैं उन्हीं को आपस में रूहरिहान कर जो संकल्प किया है, उसको आगे प्रैक्टिकल में कैसे लायें, उस पर रूहरिहान करना। फिनिश, बिन्दी लगा देना। हाथ तो उठाया है ना! आगे वालों ने हाथ उठाया। तो आपको निमित्त बनना पड़ेगा।

(१५-११-२०१०)

## संस्कार समाप्ति का नम्बर ले लो

कर्नाटक की वृद्धि अच्छी है, अभी जैसे वृद्धि हुई है वैसे तीव्र पुरुषार्थ की विधि उसकी भी चारों ओर लहर फैलाओ। नम्बर ले लो। संस्कार समाप्ति का नम्बर ले लो। ले सकते हो? जो समझते हैं हम पहला नम्बर ले सकते हैं, वह हाथ उठाओ। अच्छा है। ऐसा आपस में संगठन करके प्रोग्राम बनाओ, सब एक हैं। भिन्न-भिन्न स्थान हैं लेकिन हैं एक। यह कमाल करके दिखाओ। है ना हिम्मत? हिम्मत है? तो बापदादा के पास समाचार तो आता रहता है। तो मधुबन में हर मास अपने परिवर्तन का समाचार लिखना। लिखेंगे ना! हर मास का। बीती सो बीती, अब नम्बरवन होके दिखाओ। अच्छा है। बापदादा ने देखा सेवा अच्छी है, अभी संगठन देखना चाहते हैं। एग्जैम्पुल बनो। रेडी। रेडी हैं? हाथ उठाओ। आप देखना, एक मास में रिजल्ट आयेगी। अच्छा, बहुत-बहुत विशेष यादप्यार।

(१५-११-२०१०)

## डबल खुशी है

पुरुषार्थ में भी आगे बढ़ रहे हो, यह बाबा को बहुत खुशी है। आप भी डबल खुशी में रहते हो? डबल खुशी है? हाथ उठाओ। अच्छा लगता है बेहद का बाप, बेहद का संगठन हो जाता है। तो बाप को भी खुशी है कि जगह जगह से सभी अपने बेहद के घर में पहुंच जाते हैं। अच्छी रिजल्ट है और आगे भी अच्छी रिजल्ट होनी ही है। निश्चित है। इसलिए आने की मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा।

(१५-११-२०१०)

## आज बापदादा मन को एकरस बनाने की एक्सरसाइज़ सिखा रहा है

आज बापदादा सभी बच्चों के स्वरूपों को विशेष ५ रूपों को देख रहे हैं इसलिए ५ मुखी ब्रह्मा का भी गायन है। तो अपने ५ रूपों को जानते हो ना! पहला सभी का ज्योति बिन्दु रूप, आ गया आपके सामने! कितना चमकता हुआ प्यारा रूप है। दूसरा देवता रूप, वह रूप भी कितना प्यारा और न्यारा है। तीसरा रूप मध्य में पूजनीय रूप, चौथा रूप ब्राह्मण रूप संगमवासी, वह भी कितना महान है और

पांचवा रूप फरिश्ता रूप। यह ५ ही रूप कितने प्यारे हैं। बापदादा आज बच्चों को मन की एक्सरसाइज़ सिखाते हैं क्योंकि मन बच्चों को कभी-कभी अपने तरफ खींच लेता है। तो आज बापदादा मन को एकरस बनाने की एक्सरसाइज़ सिखा रहा है। सारे दिन में इन ५ रूपों की एक्सरसाइज़ करो और अनुभव करो जो रूप सोचो उसका मन में अनुभव करो। जैसे ज्योति बिन्दू कहने से ही वह चमकता रूप सामने आ गया! ऐसे ५ ही रूप सामने लाओ और उस रूप का अनुभव करो। हर घण्टे में ५ सेकण्ड इस ड्रिल में लगाओ। अगर सेकण्ड नहीं तो ५ मिनट लगाओ। हर एक रूप सामने लाओ, अनुभव करो। मन को इस रूहानी एक्सरसाइज़ में बिजी करो तो मन एक्सरसाइज़ से सदा ठीक रहेगा। जैसे शरीर की एक्सरसाइज़ शरीर को तन्दरुस्त रखती है ऐसे यह एक्सरसाइज़ मन को शक्तिशाली रखेगा। एक सेकण्ड भी मन में उस रूप को लाओ, समझते हो सहज है ना यह, कि मुश्किल लगता है? मुश्किल नहीं लगेगी क्योंकि यह एक्सरसाइज़ आपने अनेक बार की हुई है। हर कल्प की है। अपना ही रूप सामने लाना यह मुश्किल नहीं होता। एक-एक रूप के सामने आते ही हर रूप की विशेषता का अनुभव होगा। कभी-कभी कई बच्चे कहते हैं कि हम इन्हीं रूप में अनुभव करने चाहते लेकिन मन दूसरे तरफ चला जाता। जितना समय जहाँ मन लगाने चाहते हैं उतना समय के बजाए व्यर्थ अयथार्थ संकल्प भी आ जाते हैं। कभी मन में अलबेलापन भी आ जाता, तो बापदादा हर घण्टे ५ सेकण्ड या ५ मिनट इस एक्सरसाइज़ में अनुभव कराने चाहते हैं। ५ मिनट करके मन को इस तरफ चलाओ। चलना तो अच्छा होता है ना! फिर अपने काम में लग जाओ क्योंकि कार्य तो करना ही है। कार्य के बिना तो चलना नहीं है। यज्ञ सेवा, विश्व सेवा तो सभी कर रहे हो और करनी ही है। यह ५ मिनट की ड्रिल करने के बाद जो अपना कार्य है उसमें लग जाओ। ऐसा कोई है जिसको चाहे ५ सेकण्ड लगाओ चाहे ५ मिनट लगाओ लेकिन कोई ऐसा है जिसको इतना टाइम भी नहीं मिलता है! **है कोई हाथ उठाओ। जिसको ५ मिनट भी नहीं हैं। कोई नहीं है।** है कोई? सब निकाल सकते हैं। तो बार-बार यह एक्सरसाइज़ करो तो कार्य करते भी यह नशा रहेगा क्योंकि बाप का मन्त्र भी है मनमनाभव। इसी मन्त्र को मन के अनुभव से मन यन्त्र बन जायेगा मायाजीत बनने में क्योंकि बापदादा ने बता दिया है कि जितना समय आगे बढ़ेगा, उस अनुसार एक सेकण्ड में स्टॉप लगाना होगा। तो यह एक्सरसाइज़ करने से मनमनाभव होने में मदद मिलेगी।

(३०-११-२०१०)

## बच्चों का कार्य है जो बाप ने कहा वह करना ही है

बापदादा बच्चों की एक बात देखकर दिल में बच्चों के ऊपर मुस्कराता है। जानते हो कौन सी बात? सभी कहते हैं कि बाबा ही मेरा संसार है, कहते हैं ना बाप ही हमारा संसार है! कहते हो, जो कहता है बाप ही मेरा संसार है वह **हाथ उठाओ**। अच्छा, बाप ही संसार है। दूसरा तो कोई संसार नहीं है ना! संसार दूसरा नहीं है लेकिन दूसरा क्या है! संस्कार। जब बाप ही मेरा संसार है, दूसरा कोई संसार है ही नहीं। संसार नहीं है लेकिन संस्कार कैसे पैदा हो जाता? आजकल बापदादा समय प्रमाण संस्कार शब्द को मिटाने चाहते हैं। मिट सकता है? मिट सकता है? जो समझते हैं कि संस्कार विघ्न रूप नहीं बन सकता, यह दृढ़ संकल्प कर सकते हैं, दृढ़ पुरुषार्थ द्वारा आज भी दृढ़ पुरुषार्थ कर सकते हैं कि खत्म करना ही है। करेंगे, सोचेंगे, देखेंगे.. यह नहीं। करना ही है। संस्कार का काम है आना और बच्चों का काम है समाप्त करना ही है। है हिम्मत? है हिम्मत? **पहले भी हाथ उठाया था लेकिन चेक करो जो संकल्प किया वह हो रहा है?** जो समझते हैं कि बाप ने कहा, बाप का कार्य है लक्ष्य देना और **बच्चों का कार्य है जो बाप ने कहा वह करना ही है। इसकी भी एक डेट फिक्स करो**, जैसे भक्त लोगों ने डेट फिक्स की है, शिवरात्रि, तो मनानी है। तो इसकी डेट भी फिक्स करो। अच्छा सबकी इकट्टी नहीं हो तो पहले एक-एक अपने लिए तो डेट फिक्स कर सकते हैं ना! कर सकते हैं! कर सकते हैं तो **हाथ उठाओ**। तो किया! कर सकते हैं तो किया? डबल विदेशी डेट फिक्स किया! अच्छा सामने वाले, किया फिक्स! **जो डेट फिक्स की ना, वह बापदादा को लिख के देना**। बापदादा भी बच्चों को पेपर पास करने की बहादुरी तो देंगे ना। फिर गीत गायेंगे वाह बच्चे वाह!

(३०-११-२०१०)

## लास्ट आते भी फास्ट जाकर फर्स्ट आ जाओ

जो आज पहली बारी आये हैं वह उठो। देखो, कितने आये हैं। बापदादा मुबारक देते हैं। मधुबन में आने की मुबारक है, मुबारक है, मुबारक है। बापदादा फिर भी ऐसे समझते हैं कि टूलेट का बोर्ड लगने के पहले आ गये हो इसलिए सारे परिवार की, बापदादा की तो है सारे परिवार की भी आप सभी में यही शुभ आशा है कि सदा डबल पुरुषार्थ कर लास्ट आते हुए भी फास्ट जा सकते हो। है हिम्मत! जो आज आये हैं उन्हीं में यह हिम्मत है! कि लास्ट आते भी फास्ट जाकर फर्स्ट आ जाओ। फर्स्ट नम्बर में। एक फर्स्ट नहीं, फर्स्ट क्लास में फर्स्ट आओ, हो सकता है! जो समझते हैं हम फास्ट जाके फर्स्ट हो सकते हैं वह **हाथ उठाओ**। अपने में निश्चय है? अच्छा। **पीछे वाले हाथ ऊंचा करो**, हो सकता है तो! अच्छा। थोड़े हैं। फिर भी सारा परिवार और बापदादा आपको सहयोग देके आगे बढ़ाने चाहते हैं इसलिए जिस भी सेन्टर के तरफ से आये हो उस सेन्टर पर यह अपना वायदा बार-बार याद करना। हो सकता है असम्भव नहीं है, है सम्भव लेकिन डबल अटेन्शन। **अगर लास्ट और फास्ट जाके दिखायेंगे तो सेन्टर पर आपका तीव्र पुरुषार्थ का दिन मनायेंगे**। फंक्शन करेंगे। (३०-११-२०१०)

## देहली वालों को ऐसी कोई इन्वेन्शन निकालनी चाहिए

अभी कोई नई बात निकालो जो सेवा में करने वालों को नया उमंग, नया उत्साह आये। करेंगे ना! अच्छा है। सभी उत्साह में लाकर सभी को उसमें बिजी करो। यह जो बड़े प्रोग्राम होते हैं उसमें भाषण करने वाले तो बिजी होते हैं लेकिन दूसरे सिर्फ साथ देते हैं। वह भी है जरूरी लेकिन ऐसा कोई कार्य निकालो जिसमें हर एक क्वालिटी वाले खुद करके बिजी रहें *क्योंकि देहली को ही राजधानी बनना है। तो देहली वालों को ऐसी कोई इन्वेन्शन निकालनी चाहिए। ठीक है! ठीक है सभी करेंगे? हाथ उठाओ।* अच्छा है। कोई भी निकाल सकते हैं। नये भी निकाल सकते हैं। अगर दूसरे कोई को भी कोई संकल्प आवे तो वह भी यहाँ हेड आफिस में, मधुबन आफिस में लिख सकते हैं। सबको चांस है। अच्छा। देहली वाले पुरुषार्थ में भी नम्बरवन लें। बापदादा ने बहुत समय से यह कहा है कि कोई भी सेन्टर चाहे देश, चाहे विदेश सेन्टर, उसके कनेक्शन में सेन्टर निर्विघ्न ६ मास रह कोई भी विघ्न नहीं आये। निर्विघ्न। अगर नम्बरवन बनेगा तो उसकी भी निर्विघ्न भव की डे मनायेंगे। अभी ६ मास कह रहे हैं, ६ मास का अभ्यास होगा तो आगे भी आदत हो जायेगी। लेकिन इनाम लेने के लिए ६ मास का टाइम देते हैं। तो देहली क्या नम्बर लेगी? पहला नम्बर। बापदादा को खुशी है। सारे परिवार को भी खुशी है। सन्तान्तरता का बोलबाला हो। चाहे सेवा में, चाहे जो नियम बने हुए हैं उस नियम में, तो देखेंगे बापदादा ने कहा है लेकिन अभी तक नाम नहीं आया है। ज़ोन नहीं तो जो भी बड़े सेन्टर हैं उसके कनेक्शन वाले सेन्टर इतना भी करेंगे तो बापदादा देखेंगे। अभी जल्दी जल्दी कदम को आगे करना, क्यों? अचानक क्या भी हो सकता है। तारीख नहीं बतायेंगे। अच्छा देहली वाले बैठ जाओ। (३०-११-२०१०)

## अमृतवेले बैठना और सोचना तो कोई न कोई टचिंग आ जायेगी

आगरा को ऐसा कोई कार्य या सेवा करनी है जो जैसे गवर्नमेंट की लिस्ट में आगरा मशहूर है, ऐसे आगरा वालों कोई न कोई ऐसी सेवा ढूंढो जो आलमाइटी गवर्नमेंट में भी मशहूर हो। तो जैसे आगरा में ताज हैं, वैसे कुछ करो। है, उम्मीद है! उम्मीद है उसकी मुबारक हो। क्या करेंगे? लेकिन कितने समय में करेंगे। (मेला करेंगे, मेगा प्रोग्राम करेंगे) मेगा प्रोग्राम तो सभी कर रहे हैं लेकिन कोई नई इन्वेन्शन निकालो जो किसी ज़ोन ने नहीं किया हो। क्योंकि आगरा सभी का देखने लायक है। तो जैसे आजकल की गवर्नमेंट का ताज है ना। अगर प्रोपोगण्डा होती है तो आगरा उसमें मशहूर है ना। ऐसा कोई कार्य करो। सोचना, *अमृतवेले बैठना और सोचना तो कोई न कोई टचिंग आ जायेगी।* ठीक है, **टीचर्स हाथ उठाओ।** बहुत हैं। तो कमाल करना। बाकी बापदादा सभी बच्चों को यही कहते हैं कोई नवीनता करो अभी। जो चल रहा है, समय अनुसार वह नवीनता है लेकिन अभी और नवीनता इन्वेन्शन करो, कोई भी ज़ोन करे, लेकिन नया निकालो।

(३०-११-२०१०)

## अभी यह कहते हैं कि हम भी पहले भारत के थे

डबल विदेशी हमेशा अनुभव करते हैं कि हम ब्राह्मण परिवार और बापदादा के विशेष सिकीलधे हैं। क्यों! जितना ही देश के हिसाब से दूर हैं उतना ही बापदादा के दिल के नजदीक हैं। यह विशेषता है, बाबा जब कहते हैं तो बाबा कहने में ही सबकी शकल ऐसी प्यार में लवलीन हो जाती है जो बाप भी देख-देख हर्षित होते हैं और एक बात की विशेषता है कि जो भी भारत के नियम हैं उसको पालन करने में हिम्मत रखते हैं। शुरू में भारत का कल्चर है, यह फील करते थे लेकिन अभी बापदादा ने देखा कि अभी यह कहते हैं कि हम भी पहले भारत के थे। भारत का नशा, राजधानी है ना भारत, वह अच्छा दिल में बैठ गया है। पूछते रहते हैं हम यह तो नहीं थे, जो गये हैं उनके लिए पूछते हैं हम भी ऐसे थे क्या! भारत के बाप, भारत के परिवार से प्यार है। सेवा भी अब तक अच्छी की है और आजकल देखा है कि अपने आसपास जहाँ सेवा नहीं है, वहाँ भी करने का लक्ष्य रखा है और रिजल्ट में कई जगह सक्सेस भी हुए हैं। ऐसे है ना! कर रहे हैं ना सेवा? **हाथ उठाओ जो सेवा आसपास की कर रहे हैं, अच्छा है।** बापदादा खुश है। (३०-११-२०१०)

## मेरे से तेरा किया तो बेफिकर बादशाह बन गये

मेरे से तेरा किया तो बेफिकर बादशाह बन गये। एक ही शब्द का अन्तर है, तेरा मेरा। ते और मे, इस शब्द के अन्तर में बेफिकर बादशाह बन जाते। सहज है ना! बने हो ना बेफिकर बादशाह? कि अभी फिकर रहता है? अगर कभी भी फखुर के बजाए फिकर आता है तो अन्तर सिर्फ तेरे के बजाए मेरा मानने से फिकर आता है। तो सभी का लक्ष्य क्या प्रैक्टिकल है कि फिकर दे दिया या बीच-बीच में फखुर छोड़ के फिकर में आ जाते! फिकर आता है कि बेफिकर ही रहते हो? जो सदा बेफिकर बादशाह रहता है वह **हाथ उठाओ।** बेफिकर



बादशाह, पक्का कि कभी-कभी! बेफिकर बादशाह, हाथ ऊंचा उठाओ। कभी-कभी वाले भी हैं। सेवा का फिकर वह अलग बात है। लेकिन वह फिकर औरों को भी बेफिकर बनाने का साधन है। (१५-१२-२०१०)

## हे बापदादा के लाडले, दिल में बसने वाले बच्चे अब व्यर्थ खाते को समाप्त करो

तो बापदादा बार-बार कहते हैं हे बापदादा के लाडले, दिल में बसने वाले बच्चे अब व्यर्थ खाते को समाप्त करो। सफल करो। सफल करना ही सफलता है। एक सेकण्ड गया, यह नहीं सोचो। हर सेकण्ड, हर संकल्प सफल हुआ, इतना अटेन्शन अपने ऊपर रखना ही है। इतना फुलस्टॉप लगाने की चेकिंग करो। अलबेले नहीं बनना। बापदादा ने कहा था लेकिन हमने समझा नहीं, समय को सोचा नहीं, इतना समय फास्ट जा रहा है, जायेगा। अभी अलबेलापन बापदादा हर एक से लेने चाहते हैं। यह नहीं सुनने चाहते कि मैंने समझा नहीं, सोचा नहीं। अभी वर्ष भी नया आने वाला है, तो इस नये वर्ष में शुरू होने के पहले ब्राह्मण संसार से अलबेलापन साथ में आलस्य, आलस्य भी भिन्न-भिन्न प्रकार का है, इसका अभी जो समय पड़ा है वर्ष में, इसमें अभ्यास शुरू करो और जब नया वर्ष शुरू होगा तो बापदादा को हिम्मत रख संकल्प करना और इसको विदाई देना। वर्ष के साथ इसको भी विदाई दे देना। दे सकते हो! दे सकते हो? जो दे सकता है वह हाथ उठाओ। (सभी ने हाथ उठाया) वाह! बच्चे वाह! हाथ उठाने में तो बापदादा को खुश बहुत करते हो। बापदादा ने देखा है कि बहुत बच्चों को हाथ उठाने का रिटर्न करना याद रहता है। और कोई याद रखने में भी अलबेले हो जाते हैं। (१५-१२-२०१०)

## राजा, प्रजा सब एक होंगे, निर्विघ्न होंगे

अभी गुजरात के रेग्युलर आने वाले और टीचर्स उठो। अच्छा। गुजरात सर्विस में तो आगे बढ़ रहे हैं। अभी किसमें नम्बर लेना है? संख्या में तो नम्बर ले लिया, अभी निर्विघ्न, जो बापदादा कहते हैं अभी किसी जोन का रिजल्ट में नाम नहीं आया है। सबका लक्ष्य है लेकिन अभी तक इस बात में नम्बर नहीं लिया है। बापदादा ने देखा कि यह नम्बर लेना लक्ष्य रखते हैं लेकिन प्रैक्टिकल में अभी प्लैन ही बना रहे हैं। और अभी हर एक समझे कि हमें नम्बर लेना है। लेना है? लेना है तो मुख्य इतने लोग जो उठे हैं वह अपने-अपने सेन्टर को, एक-एक अपने एरिया को अटेन्शन देकर नई दुनिया में जाने की तैयारी कर सकते हो ना! वहाँ तो राजा, प्रजा सब एक होंगे, निर्विघ्न होंगे। लेकिन संस्कार वहाँ तो नहीं भरेंगे, यहाँ ही भरना है। तो बापदादा सभी को छोटा जोन है या बड़ा जोन है, यह रिजल्ट देखने चाहते हैं। बोलो, निमित्त बनी हुई दादियां या दादे यह पहला इनाम कौन लेगा? गुजरात लेगा? कब तक? ६ मास चाहिए? ६ मास... जल्दी करेंगे, मुबारक हो। दादियां बोलो, पहला नम्बर कब दिखाई देगा? दिखाई देगा ना! मधुबन वाले उठो, मधुबन वाले अच्छा। हाथ हिलाओ। मधुबन वाले हाथ उठाओ। शान्तिवन या ऊपर पाण्डव भवन है, जो तीन स्थान हैं ऊपर के और एक है नीचे शान्तिवन और पांचवा हॉस्पिटल भी है, तो ५ पाण्डव हो गये। तो पहले मधुबन वाले करेंगे? हाथ उठाओ, जो करेंगे। मिलाना जानते हो ना! मधुबन वाले तो लकी हैं, थोड़ा बहुत संगठन को पक्का करके साथी बनाओ। और कोई में साथी नहीं बनाना, इसमें एक दो को साथी बनाके पहला नम्बर मधुबन लेना चाहिए। लेंगे! अभी ऐसे हाथ करो। बीती सो बीती, जो भी हुआ, सबने देखा, सुना और मधुबन वालों को तो बहुत गोल्डन चांस है। मधुबन में सब आ गये। तो मधुबन वाले अगर मिलके यह नहीं पाण्डव भवन अलग है, या कोई और स्थान अलग है नहीं, मधुबन माना सब एक है। तो मधुबन वाले समझते हैं करेंगे! हाथ उठाओ जो करेंगे। सभी ने उठाया, जो समझते हैं करना क्या बड़ी बात है, बापदादा है, दादियां हैं, तो बड़ी बात तो है नहीं। दादियां क्या समझती हैं! मधुबन वाले तो नम्बरवन। अच्छा है, बाबा ने सबको यह करके दिखाने का सबको कहा हुआ है लेकिन मधुबन, मधुबन तो मधुबन है। गुजरात ने कहा है करके दिखायेंगे। अच्छा है। सब वायब्रेशन देना, हो जायेगा, कोई बड़ी बात नहीं है। विघ्न का नाम निशान नहीं। चलो बात हुई कोई, लेनदेन किया, खत्म। (१५-१२-२०१०)

## समर्पित होना अर्थात् जो बापदादा ने कहा वह किया

गुजरात की ५० कन्यायें समर्पित हुई हैं:- अच्छा, शक्ति मिली! समर्पित होना अर्थात् जो बापदादा ने कहा वह किया। तो संकल्प किया बापदादा का कहना और हमारा करना, यह संकल्प किया? हाँ हाथ उठाओ। आगे चलकर समर्पण समारोह तो किया लेकिन अभी आगे कौन सी ट्रेनिंग करेंगी या समर्पण करेंगी। कोई भी विघ्न को निर्विघ्न बनाने के निमित्त बनेंगी! यह ताकत आई ना? समर्पण में यह भी तो हुआ ना। तो समर्पण किया, इसमें भी नम्बर लेना। निर्विघ्न रहेंगे और निर्विघ्न स्थान को बनायेंगे। नम्बर लेंगे। अच्छा है। एक कदम तो उठाया है, अभी आगे कदम बढ़ाते ही रहना। अच्छा है। आगे-आगे बढ़ते रहेंगे और बढ़ाते रहेंगे। अच्छा। अभी आप मुख खोलो और गुलाबजामुन खाओ, बापदादा भी समर्पण की टोली खिलते हैं। (१५-१२-२०१०)

## बापदादा को यह पुराने संस्कार पुरुषार्थ में विघ्न रूप दिखाई देते हैं

आज के दिन वर्ष नया आ भी रहा है और पुराना वर्ष जाने वाला भी है। तो जाने वाले वर्ष में आपने क्या प्लैन बनाया है? वर्ष तो जायेगा लेकिन आप सबने अपने लिए वर्ष के साथ क्या विदाई देंगे? जैसे वर्ष विदाई लेगा वैसे आप अपनी जीवन में क्या विदाई देंगे? और नया क्या भरेंगे? सदा के लिए विदाई देंगे वा थोड़े समय के लिए? क्योंकि बापदादा ने इशारा दिया है कि अब तक जो पुराने संस्कार रहे हुए हैं उन संस्कारों को मन में देखकर, जानकर समाप्त करना ही है। *बापदादा को यह पुराने संस्कार पुरुषार्थ में विघ्न रूप दिखाई देते हैं।* बच्चे एक तरफ कहते हैं बाबा ही मेरा संसार है फिर पुराने संस्कार कहाँ से आये? संसार ही बाप है तो यह पुराने संस्कार जो पुरुषार्थ में विघ्न डालते हैं, यह खत्म होना चाहिए ना! अमृतवेले जब सब रुहरिहान करते हैं तो बाप ने देखा सब अपना पोतामेल देते हैं तो अब तक पुराने संस्कार ही पुरुषार्थ को ढीला करते हैं। तो आज के दिन वर्ष को विदाई देते हुए इन संस्कारों को भी विदाई दे सकते हो? दे सकते हो? **हाथ उठाओ।** देना पड़ेगा। हाथ उठाना तो बहुत सहज है लेकिन मन का हाथ उठाना है। **उठा रहे हैं। पुराने संस्कार को सदा के लिए.. हाथ उठा रहे हो। फिर से उठाओ।** अच्छा। बापदादा को मैजारिटी बच्चों ने हाथ उठाकर खुश कर दिया। बापदादा को यही खुशी है कि हिम्मत वाले बच्चे हैं। *जहाँ हिम्मत है वहाँ बापदादा का सदा सहयोग है।* तो अभी जब हाथ उठाया है तो हर छोटा बड़ा बाप के स्थान सदा के लिए निर्विघ्न हो गये ना! क्योंकि बापदादा के पास जो रिजल्ट आती है उसका कारण पुराने संस्कार होते हैं। तो *आज संस्कार संकल्प से समाप्त किया अर्थात् निर्विघ्न भव का वरदान लिया।* लिया? वरदान लिया? हिम्मत का फल तो मिलता है ना! और बापदादा का वरदान मिला हुआ है कि एक कदम बच्चों के हिम्मत का और अनेक कदम बाप की मदद के हैं ही है। तो यह संकल्प आज से याद रखना हमने पुराने संस्कार दे दिये। अगर मानो आपके पास वापस आये तो क्या करेंगे? क्या करेंगे? वापस दी हुई चीज़ अपने पास नहीं रखी जाती है क्योंकि दे दी अर्थात् मेरी नहीं। तो जब मेरी नहीं तो अपने पास कैसे रख सकते? बाप को दिया, तो बाप को ही देंगे ना। पक्का है ना, दे दिया ना! पक्का? **अभी दो-दो हाथ उठाओ। पक्का। पीछे वाले भी उठा रहे हैं।** (३१-१२-२०१०)

## बापदादा को बच्चों का पुकारना, चिल्लाना सहन नहीं होता

बापदादा को यह भी खुशी है कि सभी बच्चों ने जो संकल्प किया है वह सम्पन्न करेंगे और जो दुनिया वाले दुःखी हैं, अशान्त हैं उसकी मन्सा सेवा कर उन्हें को भी कुछ न कुछ सहारा देते रहेंगे क्योंकि बापदादा को बच्चों का पुकारना, चिल्लाना सहन नहीं होता। है तो आपका भी परिवार ना! तो बहुत बढ़ रहा है दुःख अशान्ति, तो अब रहमदिल बनो। *यह संकल्प भी साथ में करो कि चलते फिरते अमृतवेले आत्माओं की मन्सा सेवा भी अवश्य करेंगे,* यह संकल्प ले सकते हो? जैसे यह संकल्प लिया तो संस्कार को समाप्त करेंगे सदा के लिए, सदा के लिए लिया है ना! थोड़े समय के लिए तो नहीं। तो जैसे संस्कार को समाप्त कर बाप समान बनेंगे ऐसे दाता के बच्चे बन मास्टर दाता स्वरूप से मन्सा सेवा भी करनी है। इसके लिए तैयार हो? मन्सा सेवा करने के लिए तैयार हो? **हाथ उठाओ मन्सा सेवा भी करेंगे?** सारे दिन में जो भी टाइम मिले, उसमें मन्सा सेवा जरूर करना क्योंकि आप बच्चों को ही सुखमय संसार लाना है। बाप ने आप बच्चों को इसी सेवा के लिए राइटहैण्ड बनाया है। हाथ से दिया जाता है ना। तो आप बाप के राइट हैण्ड हैं। तो बापदादा आप राइट हैण्ड अर्थात् हाथों द्वारा सभी को यह सेवा दिलाने चाहता कि कुछ न कुछ देते रहो। वह चिल्ला रहे हैं दो-दो और आप दुःखियों को सुख दे, परेशान को कुछ शक्ति दे करके पुण्य का काम करो। (३१-१२-२०१०)

## निर्विघ्न भव, सेवाधारी भव

अभी आप बच्चे जो अपने आपको जाना, बाप को जाना, वर्से के अधिकारी बने तो दूसरों को भी बनाओ क्योंकि अभी सभी मुक्ति चाहते हैं। सभी को मुक्ति में भेज आप बाप के वरदान से राज्य अधिकारी बनेंगे इसलिए बाप यही हर बच्चे को संकल्प दे रहे हैं **निर्विघ्न भव, सेवाधारी भव।** जो बच्चे बाप के बन गये हैं उन बच्चों को संगमयुगी ब्राह्मण जीवन का मज़ा अनुभव हो रहा है और होता ही रहेगा। जो अपने को चाहे नये आये हैं, चाहे पुराने भी हैं लेकिन अपने को समझते हैं बाप के वर्से के अधिकारी हैं, अतीन्द्रिय सुख में झूलते रहते हैं और आगे भी जो संकल्प किया है, संस्कार पर विजयी बनने का संकल्प लिया है, वह सभी आत्मार्थ कोटों में कोई बने हैं, या कोई में भी कोई बने हैं? बच्ची ने कहा है ना, जनक ने १०८ की माला, १६ हजार की माला का खास मिलन करो। तो *आप जो समझते हैं कि हम १६ हजार या १०८ इस माला में आने ही वाले हैं,* वह **हाथ उठाओ। नये नये भी उठा रहे हैं।** मुबारक हो। *निश्चयबुद्धि विजयी होते हैं।* बापदादा भी जानते हैं कि जो निश्चयबुद्धि हैं वह आगे जा सकते हैं, जायेंगे। (३१-१२-२०१०)

## पता पड़ेगा कि आप १०८ या १६ हजार की माला, उसके अधिकारी हैं, सेकण्ड में रोज़ की दिनचर्या में कितना सफल हुए उससे पता पड़ेगा कि आप किस योग्य हैं

अभी बापदादा चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं, सभी को एक सेकण्ड का कार्य देते हैं। सभी अभी-अभी एक सेकण्ड में अपने आपको और सभी संकल्पों से दूर कर एक सेकण्ड में अपने को बिन्दू रूप में स्थित कर सकते हैं। करेंगे? एक सेकण्ड में मैं बिन्दू हूँ, कोई संकल्प नहीं बिन्दू हूँ। जिसने सेकण्ड में अपने को बिन्दू स्थिति में स्थित किया वह हाथ उठाओ। सेकण्ड में लगाया। अच्छा। अभी यह प्रैक्टिस १५ दिन, सारे दिन में हर घण्टे में एक सेकण्ड में बिन्दू लगाओ, यह प्रैक्टिस हर एक करना और वहाँ वातावरण में रहकर, अपने कार्य में रहते चेक करना कि एक सेकण्ड में बिन्दू रूप में सफलता मिली? क्योंकि यहाँ तो वायुमण्डल भी है लेकिन अपने-अपने स्थान में रहते सेकण्ड में बिन्दू स्वरूप में स्थित हो सकते हैं, यह अभ्यास करना क्योंकि बापदादा ने बता दिया है, जितना आगे चलते जायेंगे उतना यह एक सेकण्ड में बिन्दू स्थिति में स्थित होने की आवश्यकता पड़ेगी। इसलिए अपने आपको ही चेक करना और अपने-अपने स्थान में रिपोर्ट टीचर को लिखकर देना। फिर टीचर्स द्वारा चाहे यहाँ हैं या नहीं भी हैं, सभी के क्लासेज में यह होमवर्क है, इसकी रिजल्ट बापदादा के पास आयेगी तो देख लेंगे, इससे पता पड़ेगा कि आप १०८ या १६ हजार की माला, उसके अधिकारी हैं, सेकण्ड में रोज़ की दिनचर्या में कितना सफल हुए उससे पता पड़ेगा कि आप किस योग्य हैं। क्योंकि अभी हाथ उठवायेंगे, कौन अपने को समझते हैं प्रैक्टिकल धारणा में कि मैं १०८ या १६ हजार की माला में आयेगा। आप सिर्फ रिजल्ट लिखना उससे समझ जायेंगे क्योंकि दादियां मानो नाम देती हैं तो कोई समझेंगे हम भी आ सकते हैं ना इसलिए इस रिपोर्ट से पता पड़ जायेगा। (३१-१२-२०१०)

## या संबंध याद करो या प्राप्तियां याद करो

चाहे साकार में देखा, चाहे नहीं देखा लेकिन बुद्धिबल द्वारा तो सभी ने देखा है ना! देखा है या नहीं देखा है? जो कहते हैं मैंने बाबा का प्यार देखा, मैंने ब्रह्मा बाप की पालना देखी तो क्या, उसी से चल रहा हूँ, वह हाथ उठाओ। अच्छा। हाथ उठा के तो खुश कर दिया। बापदादा को खुशी है, हिम्मत तो रखी है ना। लेकिन जब भी कोई ताकत कम हो जाए ना तो सदा बाप के सम्बन्ध, कितने सम्बन्ध हैं कभी बाप, कभी बच्चा भी बन जाता है। कभी बाप तो कभी सखा भी बन जाते हैं इसलिए या संबंध याद करो या प्राप्तियां याद करो। प्राप्तियां और संबंध जैसे आज दिल से याद कर रहे हो ना! ऐसे याद करने से प्यार पैदा हो जायेगा। (१८-०१-२०११)

## मनजीत जगतजीत जो गायन है वह स्वरूप धारण करना है

तो समझा आज क्या करना है? मनजीत जगतजीत जो गायन है वह स्वरूप धारण करना है। आर्डर से चलाओ। अभी थोड़ा फ्री छोड़ दिया है ना तो वह अपना काम करता है। अभी अटेन्शन दो। मन मेरे आर्डर में चले न कि आप मन के आर्डर में चलो। चाहते हो ज्ञान की बातों का रमण करें और आ जाती फालतू बात। तो क्या हुआ? मन मालिक बना या आप मालिक बनें? तो सभी ने यह होमवर्क समझा! मन जीत बनना है। जो आर्डर करें, वह मानेगा जरूर मानेगा, अटेन्शन देना पड़ेगा बस। मातायें या टीचर्स, हो सकता है? हो सकता है? टीचर्स हाथ उठाओ। टीचर्स हाथ उठा रहे हैं। अगर समझते हैं हो सकता है तो हाथ हिलाओ। पहली लाइन तो हिलाओ। भाई हाथ हिलाओ। वाह! फिर तो ब्रह्मा बाप को स्नेह की सौगात दी, इसकी मुबारक हो, मुबारक हो। (१८-०१-२०११)

## बाप को भी निश्चय है कि यह मेरे बच्चे हैं ही निश्चयबुद्धि

बापदादा अभी बच्चों को कम से कम एक एक ज़ोन को तो यह कार्य दे सकते हैं कि यह ज़ोन इस सप्ताह या १५ दिन रिजल्ट दे कि व्यर्थ संकल्प नहीं लेकिन जो विषय मन को दिया वह किया या नहीं किया? यह मंजूर है टीचर्स? मंजूर है? ज़ोन को कार्य दें? हाथ उठाओ। टीचर्स। महाराष्ट्र है ना। तो महाराष्ट्र को तो महान काम देंगे ना। बापदादा को हर एक ज़ोन के लिए प्यार है और सदा यह निश्चय रखते हैं कि यह बच्चे बाप ने कहा और बच्चों ने किया। ऐसा है? महाराष्ट्र, जो बाप ने कहा वह किया, ऐसा है? महाराष्ट्र वाले हाथ उठाओ। बहुत हैं। पौना क्लास है। तो हर एक ज़ोन बाप के आज्ञाकारी हैं, कांध हिला रहे हैं सभी। बाप को भी निश्चय है कि यह मेरे बच्चे हैं ही निश्चयबुद्धि। (१८-०१-२०११)

## पहला प्यार बाप के साथ बाप की मुरली से होना चाहिए

बापदादा यही चाहते हैं कि जो रोज़ के महावाक्य सुनते हो वह होम वर्क है। अगर रोज़ की मुरली जो बाप ने कहा और बच्चों ने किया तो उसको कहा जाता है बाप के सिक्कीलधे बच्चे, आज्ञाकारी बच्चे। क्या करना है, वह रोज़ की मुरली पढ़ लो। क्योंकि बापदादा ने

देखा है मैजस्ट्रीट बच्चे मुरली से प्यार रखते हैं। अगर कोई नहीं भी रखता हो, तो बापदादा को कोई बच्चा कहे बाबा आपसे मेरा बहुत प्यार है, लेकिन बाप का प्यार किससे है? मुरली से। मुरली के लिए कितना दूर से आते हैं। कोई टीचर ऐसा होगा जो इतना दूर से पढ़ाई पढ़ाने आये। तो जब बाप का प्यार मुरली से है तो जो मेरा बाबा कहता है उसका पहला प्यार बाप के साथ बाप की मुरली से होना चाहिए। देखो ब्रह्मा बाप ने एक दिन भी मुरली मिस नहीं की। चाहे बाम्बे भी जाते रहे, कारणे अकारणे, तो मुरली लिखते थे और मातेश्वरी वह मुरली सुनाती थी। लास्ट डे तबियत थोड़ी ढीली थी, सवेरे का क्लास नहीं कराया लेकिन शाम को क्लास कराने के बाद अव्यक्त हुए। तो ब्रह्मा बाप का प्यार किससे हुआ? मुरली से। जो कोई समझते हैं कि मेरा बाबा से प्यार है तो बाप का जिससे प्यार रहा, बच्चे का रहना चाहिए ना! इसलिए आप समझते हो कि मुरली पढ़ना या क्लास में पढ़ो अगर मजबूरी है, बहाना नहीं है, सही कारण है तो किससे सुनो। जो समझते हैं कि मुरली का इतना महत्व रखूंगा वह हाथ उठाओ। अच्छा, यहाँ तो सब दिखाई दे रहा है, बाप आप पीछे वालों को भी देख रहा है। अच्छा, बहुत अच्छा। **बाप बीच-बीच में पेपर लेगा।** आज किसने मुरली नहीं सुनी, वह टीचर लिखके भेजे। पसन्द तो है ना। अच्छा। (१८-०१-२०११)

## जो संकल्प करने चाहो वही चले

बापदादा इस स्नेह के दिन यही होमवर्क देने चाहते हैं कि जो संकल्प करने चाहो वही चले। अगर आप शुद्ध संकल्प करने चाहते हो तो व्यर्थ संकल्प, शुद्ध संकल्प व्यर्थ को खत्म कर दे। चाहो योग लगाना और संस्कार के कारण व्यर्थ संकल्प चलें या योग की सिद्धि नहीं मिले, यह कन्ट्रोल होना चाहिए। अगर एक घण्टा योग लगाने चाहते हो तो मन डिस्टर्ब नहीं करे। आत्मा मालिक है, मन मालिक नहीं है, मन तो आत्मा का साथी है। तो साथी को तो प्यार से आर्डर करो, मनजीत बनो क्योंकि बापदादा के पास बहुत बच्चों का समाचार आता है - व्यर्थ संकल्प समय प्रति समय आते हैं। नहीं चाहते हैं तो भी आते हैं। तो क्या यह मालिक कहेंगे! तो ब्रह्मा बाप से स्नेह है ना तो बाप आज स्नेह में अपने दिल की चाहना सुना रहे हैं कि अभी मनजीत जगतजीत बनना ही है। तो ब्रह्मा बाप को यह स्नेह की सौगात देंगे? स्नेह में क्या दिया जाता है? गिफ्ट दी जाती है ना! तो आज ब्रह्मा बाप बच्चों से यह सौगात देने के लिये कह रहे हैं। तैयार हैं? तैयार हैं? **हाथ उठाओ।** तो अभी जब भी आर्डर करें तो आज के दिन से व्यर्थ संकल्प आने नहीं देना, कर सकते हो? आज दो घण्टा, चार घण्टा योग की स्टेज में कर्म भी करो, योग भी लगाओ, कर सकते हो? कर सकते हो, करेंगे? चलो अभी बीती सो बीती लेकिन अब आर्डर करें कि आज के दिन व्यर्थ संकल्प को फुलस्टॉप, तो करना पड़ेगा ना।

(१८-०१-२०११)

## संगमयुग का सुख सब युगों से श्रेष्ठ है

बापदादा हर बच्चे का भाग्य देख हर बच्चे को मुबारक दे रहे हैं - वाह बच्चे वाह! और यह भाग्य इस संगम पर ही मिलता है और चलता है। संगमयुग का सुख सब युगों से श्रेष्ठ है। सतयुग का भाग्य भी संगम के पुरुषार्थ की प्रालब्ध है इसलिए संगमयुग की प्राप्ति सतयुग की प्रालब्ध से भी ज्यादा है। अपने भाग्य में खो जाओ। कुछ भी होता रहे, अपना भाग्य स्मृति में लाओ तो क्या निकलता है? वाह मेरा भाग्य! क्योंकि स्वयं भाग्य दाता आपका बाप है। तो भाग्य दाता द्वारा हर एक को अपना भाग्य मिला है। जानते हो कि हम इतने भाग्यवान हैं कि कभी-कभी जानते हो, सदा नशा रहता है? दुनिया वाले तो देखकर पूछते हैं आपको क्या मिला है? और आप लोग उत्तर क्या देते हो? **जो पाना था वह पा लिया। पा लिया है, हाथ उठाओ।** पा लिया है, अच्छा। पा लिया है? फलक से कहते हो, कोई अप्राप्त वस्तु ही नहीं, है ना फखुर? और मिला कैसे? सिर्फ बाप को जाना, माना, अपना बनाया तो भाग्य मिल गया। इस भाग्य को जितना स्मृति में लाते रहेंगे उतना हर्षित होते रहेंगे। भाग्यवान आत्मा का चेहरा सदा हर्षित रहेगा। रहेगा नहीं रहता है। उनकी दृष्टि, उनकी वृत्ति और उनकी प्रवृत्ति सदा सन्तुष्ट आत्मा बन स्वयं भी सन्तुष्ट रहेगी और दूसरों को भी सन्तुष्ट बनायेगी। तो आप सबको सन्तुष्टता का नशा रहता है? क्योंकि सन्तुष्टता का आधार है सर्व प्राप्ति। अप्राप्ति असन्तुष्टता का आधार है। तो आप क्या अनुभव करते हो? अप्राप्त कोई वस्तु है कि सर्व प्राप्ति है? प्राप्ति का नशा है? है, सदा है या कभी-कभी है? वैसे तो यही कहते हो पा लिया जो पाना था। तो जहाँ सर्व प्राप्ति है वहाँ असन्तुष्टता का नाम नहीं है।

(०२-०२-२०११)

## ४ बजे बापदादा सभी बच्चों को सहज ही वरदान देते हैं। जो भी वरदान चाहिए वह बापदादा दे देते हैं

वैसे तो अमृतवेले बापदादा सभी तरफ चक्र लगाते हैं, उनके लिए चक्र लगाना क्या बड़ी बात है। और बापदादा ने यह भी कह दिया है कि चार बजे के मिलन की विशेषता यह भी है कि ४ बजे बापदादा सभी बच्चों को सहज ही वरदान देते हैं। वरदान दाता का पार्ट

अमृतवेले होता है, विशेष। जो भी वरदान चाहिए वह बापदादा दे देते हैं। ट्रायल करके देखना। लेकिन आप सभी भी वरदान लेने के लिए अलर्ट रहना। अगर अलर्ट नहीं रहे तो बापदादा चक्र लगा के चला जायेगा और आप सोचते रहेंगे। इसलिए अमृतवेले का महत्व देते तो हैं लेकिन और अटेन्शन देना। बापदादा ने देखा है कि समय अनुसार सेवा भी बढ़ रही है और सेवा के कारण बाप से वरदान लेना उससे दूर रह नहीं सकते। बाकी डबल फारेनर्स मैजारिटी पुरुषार्थ करते भी हैं **फिर भी अटेन्शन को अन्डरलाइन करना।** (०२-०२-२०११)

## निमित्त वालों को बापदादा की विशेष मदद भी मिलती है

बाकी सब डबल विदेशी पुरुषार्थ में सफलता का अनुभव करते रहते हैं ना! करते हैं? हाथ उठाओ जो सफलता अनुभव करते हैं। वाह! हाथ तो अच्छे उठा रहे हैं। तो लक्ष्य रखेंगे अभी इसके पीछे अटेन्शन देना ही है। इसमें भी नम्बर लेना ही है। तो आपको देख औरों को भी उमंग आयेगा क्योंकि आप निमित्त हो ना। और निमित्त वालों को बापदादा की विशेष मदद भी मिलती है। (०२-०२-२०११)

## किसी भी कारण से मुरली मिस नहीं करनी है

अच्छा, मुरली मिस करने वाले हैं? डबल फारेनर्स में हैं, कोई है जो मुरली मिस करता हो? कारण से? नहीं है। नहीं मिस करते। एक ने उठाया है। अभी मिस नहीं करना, मुरली मिस नहीं करना। चाहे फोन द्वारा सुनो। पढ़ नहीं सकते हैं तो कैसे भी सुनो जरूर। हाजिरी जरूर लगाओ। अच्छा। बाकी जो भी सभा में आये हैं, नये भी हैं पुराने भी हैं तो यह पक्का पक्का पक्का नोट करो मुरली नहीं मिस करनी है। क्योंकि बाप रोज परमधाम से आते हैं, कितना दूर से आते हैं, बच्चों के लिए आता है ना! जैसे बाप मुरली मिस नहीं करते ऐसे बच्चों को भी मुरली मिस नहीं करना है। अच्छा। अभी जो मधुबन में आता है ना, तो जैसे फार्म भरते हैं, उसमें यह भी लिखो कि मुरली रोज सुनी या कितने दिन मिस किया? मंजूर है? जिसको मंजूर है वह हाथ उठाओ। मधुबन वाले भी हाथ उठाओ। किसी भी कारण से मुरली मिस नहीं करनी है। जैसे खाना नहीं मिस करते हो तो यह भी भोजन है ना। वह शरीर का भोजन यह आत्मा का भोजन। अच्छा लगा। जो नये भी आये हैं, आने को तो मिला है ना। उन्हीं को भी यह नियम पालन करना है। जैसे और नियम हैं वैसे यह भी नियम है। ब्राह्मण माना मुरली सुनने वाला, सेवा करने वाला। अच्छा। (०२-०२-२०११)

## विशेष माला जो गायन और पूज्यनीय योग्य बनती है, वह पहली माला है

बापदादा भी रोज अमृतवेले अपने माला के मणकों को देखते और विशेष मिलन मनाते हैं। तो आप सभी अपने को माला के मणकों में समझते हो। है तो दूसरी माला भी १६ हजार की, लेकिन फिर भी सेकण्ड माला हो गई। विशेष माला जो गायन और पूज्यनीय योग्य बनती है, वह पहली माला है। तो आज बापदादा उन मणकों को देख रहे थे क्योंकि ब्रह्मा बाप के साथ विशेष राज्य अधिकारी साथी वही बनते हैं। तो आज ब्रह्मा बाप अपने अब के तीव्र पुरुषार्थी और भविष्य के राज्य अधिकारी तख्त पर तो दो ही बैठते हैं लेकिन राज्य के साथी उन्हीं की पहली माला है। तो अपने को चेक किया है। बापदादा के साथ तो चलेंगे क्योंकि अभी आप सबकी रिटर्न जरनी है। जब जाना ही है, बाप के साथ जाना है, अकेला नहीं जाना है। तो साथ जाने वाले नजदीक के मणके कौन होंगे? जो बहुतकाल के तीव्र पुरुषार्थी होंगे। पुरुषार्थी नहीं, कब-कब वाले नहीं। बहुतकाल के बाप समान ही राज्य अधिकारी बनेंगे। तो क्या समझते हो? तीव्र पुरुषार्थ है? जो समझते हैं मैं पुरुषार्थी की लाइन में हूँ, वह हाथ उठायेंगे। तीव्र पुरुषार्थी, बड़ा हाथ उठाओ, छोटा हाथ उठाते हैं। अच्छा, बहुत उठा रहे हैं। फिर लम्बा हाथ उठाओ, ऐसे नहीं। अच्छा। (१७-०२-२०११)

## अटेन्शन प्लीज़, सूक्ष्म संकल्प में भी हलचल नहीं हो

बापदादा तो रोज बच्चों का चार्ट देखते हैं। मैजारिटी तीव्र पुरुषार्थी भी हैं लेकिन कभी-कभी का शब्द भी साथ में लगा देते हैं। लेकिन बाप क्यों कह रहे हैं? अटेन्शन प्लीज़, सूक्ष्म संकल्प में भी हलचल नहीं हो। अचल, अडोल, शुद्ध संकल्पधारी बहुत समय से बनना ही है। कई बच्चे बहुत मीठी-मीठी रूहरिहान करते हैं, कहते हैं बाबा हम तैयार हो ही जायेंगे। क्योंकि समय जितना नजदीक आयेगा, हालतें हलचल में आयेगी तो वैराग्य तो आटोमेटिकली आ जायेगा। लेकिन आपका टीचर कौन हुआ? समय या बाप? समय तो आपकी रचना है। तो बाप अभी इशारा दे रहा है कि बहुत समय का तीव्र पुरुषार्थ अन्त में पास विद ऑनर बनायेगा। पास तो सभी होंगे लेकिन पास विद ऑनर बनने वाला बहुत समय का लगातार तीव्र पुरुषार्थ करने वाला आवश्यक है। इसलिए आज की तारीख नोट कर दो, अगर अब भी कभी-कभी, समथिंग हो जायेंगे, कर ही लेंगे, यह शब्द आगे भी चलते रहे... बाप का प्यार तो सदा ही है। लास्ट दाने पर भी बाप का प्यार है। क्यों? दिल से मेरा बाबा तो कहा, आज की बड़ी बड़ी आत्मायें मेरा बाबा नहीं कहती, लेकिन वह मेरा बाबा तो मानता है इसलिए बाप का

प्यार तो उससे भी है। बच्चों से प्यार तो बाप का सदा ही है, लास्ट तक भी है, लास्ट वाले तक भी है। स्नेह ने ही आपको बाप का बनाया है। बापदादा ने यह भी कहा है कि स्नेह मैजारिटी बच्चों का है और रहेगा लेकिन सिर्फ स्नेह नहीं, शक्ति भी चाहिए। तीव्र पुरुषार्थ भी चाहिए। इसलिए अब तो शिवरात्रि भी आई कि आई, बाप के अवतरण के साथ बच्चों का भी अवतरण है ही। तो बापदादा चाहते हैं कि इस शिवरात्रि पर हर बच्चा अपने को साधारण पुरुषार्थ के बजाए तीव्र पुरुषार्थी बनाने का, बनने का संकल्प करे। हो सकता है? शिवरात्रि पर दृढ़ संकल्प अपने आपसे करे। लिखे नहीं, क्लास में बताने की भी जरूरत नहीं लेकिन बाप से दिल में संकल्प करे कि शिवरात्रि पर हम कभी-कभी शब्द अपने पुरुषार्थ के डिक्शनरी से निकाल देंगे। हो सकता है? जो समझते हैं क्या बड़ी बात है। सोचा और हुआ, हिम्मत रखते हैं वह हाथ उठाओ। अच्छा। खुश कर दिया। (१७-०२-२०११)

## ओ मेरे लाडले बच्चे, सिकीलधे बच्चे अब रहमदिल धारण करो

बापदादा तो सुनते हैं, तो बच्चों को याद करते हैं ओ मेरे लाडले बच्चे, सिकीलधे बच्चे अब रहमदिल धारण करो। अपने ब्राह्मणों में भी एक दो के सहयोगी बनो। चाहे कैसा भी संस्कार है, लेकिन आपका काम क्या है? संस्कार से टक्कर खाना या उनको भी संस्कार के टक्कर से छुड़ाना। आपका भी टाइल है ना, दुःख हर्ता सुख कर्ता। बाप के साथी हो ना। बाप के साथी क्या संकल्प किया है? इस विश्व को दुःख अशान्ति से बदल सुख शान्ति स्थापन करनी ही है। करनी है ना! हाथ उठाओ। (१७-०२-२०११)

## डायरेक्ट माँ और बाप के शिक्षा की बूंदे यू.पी. में पड़ी हैं

डायरेक्ट माँ और बाप के शिक्षा की बूंदे यू.पी. में पड़ी हैं। अभी यू.पी. को आगे क्या करना है? वाणी द्वारा मेलों में सेवा तो करते हो लेकिन अभी के समय अनुसार जो बापदादा कहता आया है पहले भी कि वारिस और नामीग्रामी माइक, नामीग्रामी का अर्थ यह है कि उनके कहने का प्रभाव सुनने वालों का पड़ने वाला हो, ऐसे माइक तैयार करो। ऐसे वारिसों का ग्रुप हर सेन्टर, कितने सेन्टर हैं यू.पी. में, बहुत हैं ना। तो इतने वारिस निकालने चाहिए। हिसाब करना कितने सेन्टर हैं और कितने वारिस बने हैं। और जितने बनने चाहिए उतने बने हैं या बनाने हैं। अगर बनाने हैं तो समय पर कोई भरोसा नहीं है, जल्दी से जल्दी वारिस और माइक, जिनकी आवाज से अनेक आत्माओं के भाग्य की रेखा खुल जाए क्योंकि आपने तो बहुत सेवा की, जो पुराने हैं उन्होंने तो बहुत सेवा की। अभी सेवा कराओ। करने वाले तैयार करो। कर सकते हैं ना! हाथ उठाओ टीचर्स। (१७-०२-२०११)

## सब तरफ के जो निमित्त आत्मायें निकली हैं उनका संगठन करो

अभी एक बात कि जो भी वर्ग हैं वह विशेष आत्मायें जो निमित्त बनी हैं, जिसको विशेष निमित्त आत्मायें कहते हैं उसकी सेवा करके हर ज़ोन में एक दिन स्थान फिक्स करके सब तरफ के जो निमित्त आत्मायें निकली हैं उनका संगठन करो। पहला ज़ोन में संगठन करो फिर मधुबन में देखेंगे। लेकिन पहले जिस ज़ोन के ज्यादा सेवाधारी करने वाले हैं, उस ज़ोन में सब ज़ोन के दिन मुकरर करके विशेष आत्माओं का मिलन करो। एक दो को देख करके भी उत्साह आता है, यह भी करते हैं हम भी करते हैं और सेवा को बढ़ायें। तो उमंग उत्साह दिलाने के लिए पहले जिस ज़ोन में विशेष वर्ग की सेवा हो वहाँ हर कोई जहाँ भी राय करके फिक्स करो वहाँ पहले इकट्ठे करो फिर मधुबन में बुलायेंगे। यह नहीं किया है। तो पता पड़े कितने माइक तैयार हुए हैं। कितने सहयोगी तैयार हुए हैं। और कितने आपस में एक दो को मदद कर सकते हैं। एक ज़ोन, वर्ग दूसरे वर्ग में भी सहयोगी बन सकता है। तो उमंग आयेगा एक दो को देख करके समाचार सुनते उमंग आयेगा। मधुबन के पहले वहाँ ही इकट्ठे करो फिर देखेंगे। ठीक है। यह ठीक लगता है, हाथ उठाओ। (१७-०२-२०११)

## मुरली, मुरली, मुरली

अभी शिव रात्रि पर चाहे यहाँ आने वाले चाहे घरों में बैठकर, सेन्टर पर बैठ सुनने वाले, या मुरली द्वारा सुनने वाले सभी मुरली तो सुनते होंगे ना। इस बारी जो आये हैं उसमें मुरली रेग्युलर जो सुनते हैं, कोई हैं जो मुरली नहीं सुनते, वह हाथ उठाओ। कोई नहीं। अच्छा। वह उठो जो नहीं पढ़ते या सुनते हैं। थोड़े हैं। कोई बात नहीं लेकिन अभी बाकी जो भी समय मिला है उसमें बाप का महावाक्य परमधाम से बापदादा आता है, सूक्ष्मवतन से ब्रह्मा बाबा आता है, और आके महावाक्य उच्चारण करते हैं इसलिए मुरली कभी भी एक दिन भी मिस नहीं करना। अपना बापदादा का दिलतख्त छूट जायेगा। इसलिए जो भी मुरली मिस करते हैं वह समझें हम तीन तख्त के मालिक नहीं, दो तख्त के मालिक भी यथाशक्ति बनेंगे। इसलिए मुरली, मुरली, मुरली। क्योंकि मुरली में रोज़ के डायरेक्शन होते हैं, चार ही सबजेक्ट के डायरेक्शन होते हैं, तो रोज़ के डायरेक्शन लेने हैं ना। तो जो भी मिस करता हो, कारणे-अकारणे वह अपना प्रोग्राम बनावे कि कैसे मुरली

सुनें। कोई न कोई सैलवेशन बनायें। आजकल साइंस के साधन आपके लिए निकले हैं। ब्रह्मा बाप में प्रवेशता के १०० साल पहले यह साइंस निकली है, आपके काम में भी आनी है इसलिए उसको यूज करो, फायदा उठाओ। (१७-०२-२०११)

## इस जयन्ती को कहा ही जाता है हीरे तुल्य जयन्ती

सारे कल्प में यह एक ही जयन्ती है जो बाप और बच्चों का साथ में जन्म होता है इसलिए इस जयन्ती को कहा ही जाता है हीरे तुल्य जयन्ती। बाप भी विशेष आदि रत्न बच्चों को विशेष मुबारक दे रहे हैं। तो आप सभी आज मुबारक देने आये हो वा लेने भी आये हो! बाप का कहना ही है साथ रहेंगे, साथ उड़ेंगे, साथ आयेंगे और ब्रह्मा बाप के साथ राज्य करेंगे। साथ रहने का वायदा है। आप भी क्या कहते हो? हम भी जहाँ बाप वहाँ साथ-साथ होंगे। यह है बच्चों का बाप से, बाप का बच्चों से वायदा। कहाँ भी शरीर द्वारा रहते हैं लेकिन दिल में सदा बाप साथ है इसीलिए बाप को दिलाराम कहते हैं। यहाँ यादगार भी दिलवाला मन्दिर है। तो सभी के दिल में साथ में दिलाराम है ना! और बाप सदा बच्चों को कहते हैं कभी भी अकेले नहीं बनना। सदा साथ हैं, साथ रहना ही है। अकेले होंगे तो माया अपना चांस लेती है और साथ है तो स्वयं लाइट हाउस साथ है, उसके आगे माया दूर से ही भाग जाती, नजदीक भी नहीं आ सकती है इसलिए बच्चों का बाप से, बाप का बच्चों से सदा साथ का वायदा है। आप सभी का भी वायदा है ना! साथ हैं, साथ रहेंगे। अच्छा लगता है ना साथ में। **हाँ भले हाथ उठाओ।** (०२-०३-२०११)

## शिव परमात्मा की यादगार में अक के फूल चढ़ाते हैं, गुलाब के नहीं

तो आज बर्थ डे मनाने आये हो। अपना भी बर्थ डे मनाने आये हो ना। बाप बच्चों के बिना कुछ नहीं करता। इसीलिए आज बाप बच्चों के जन्म उत्सव की मुबारक देने आये हैं, वाह मेरे बच्चे वाह! **अभी एक बात कहूँ, तैयार हैं! कहे? करना पड़ेगा। हाथ उठाओ, करेंगे? डबल फारेनर्स करेंगे? टीचर्स करेंगे?** अच्छा। तो आज बापदादा जैसे यादगार में शिव परमात्मा की यादगार में अक के फूल चढ़ाते हैं, गुलाब के नहीं, और कोई फूल नहीं चढ़ाते, अक के फूल चढ़ाते हैं। तो आज बापदादा आपको कौन सी बात अर्पण करो, वह होमवर्क देने चाहते हैं। तैयार हो ना! अच्छा। यह तो बच्चों का बाप को बहुत अच्छा लगता है, हाँ जी सब करते हैं। तो आज बर्थ डे पर बाप का यह संकल्प है कि सभी एक दो को उमंग उत्साह दिलाते हुए, एक दो के सहयोगी बनते हुए व्यर्थ संकल्प का अक का फूल अर्पण करो। व्यर्थ संकल्प न करना है, न सुनना है और न संग में आकर व्यर्थ संकल्पों के संग का रंग लगाना है क्योंकि व्यर्थ संकल्प जहाँ होगा वहाँ याद का संकल्प, ज्ञान के मधुर बोल, जिसको मुरली कहते हो, वह शुद्ध संकल्प स्मृति में नहीं रहेंगे। चाहे मुरली सुनते भी हो, पढ़ते भी हो वह तो आवश्यक है। ब्राह्मणों का नियम है लेकिन सुनने तक रहेगी। मन में मनन नहीं चलेगा। *सोचेंगे, कहेंगे आज की मुरली बहुत अच्छी थी। सोच रही हूँ क्या थी। वरदान भी बहुत अच्छा था, लेकिन याद आ जायेगा...* व्यर्थ संकल्प मन बुद्धि को अपने तरफ आकर्षित करने वाले हैं। पता है आपको क्या कहते हैं बाप के आगे? बाबा इन्ट्रेस्टेड समाचार तो सुनना चाहिए ना। नॉलेजफुल बनना होता है लेकिन व्यर्थ बातें पद की प्राप्ति में नुकसान कर देंगी। तो क्या आप सभी व्यर्थ संकल्प का बाप से वायदा करते हो? आप कहेंगे हम तो नहीं चाहते लेकिन वह आ जाते हैं। चाहते नहीं हैं लेकिन आ जाते हैं। तो बाप को दृढ़ संकल्प से देने से, पहले देना आता है? बाप को दे दिया। दी हुई चीज़ अगर आपके पास वापस भी आ जाए तो दी हुई चीज़ आप रखेंगे, कि वापस करेंगे? अगर दी हुई चीज़ आप अपने पास रखते हो तो आपका टाइटिल क्या होगा? तो बाप को एक बार अपनी रूचि से दृढ़ता से दे दो। और चेक करो बार-बार दी हुई चीज़ हमारे पास वापस तो नहीं आई! दूसरे की चीज़ अपनी बनाना, इसको अच्छा नहीं मानते हैं। तो रोज़ आराम के पहले, आराम बाद में करना पहले चेक करना - आज सारे दिन में कोई भी व्यर्थ संकल्प आया तो नहीं? किया तो नहीं? दी हुई चीज़ वापस तो नहीं ले ली? तो आज बर्थ डे की सौगात देने की हिम्मत है ना! है हिम्मत? **हाथ उठाओ**, हिम्मत है। तो जहाँ हिम्मत है वहाँ बापदादा भी आपको सौगात देगा। आप दिल से मेरा बाबा, दयालु कृपालु बाबा, आप यह चीज़ ले लो। अगर दिल से कहेंगे तो बाप एकस्ट्रा गिफ्ट देगा। क्योंकि हिम्मत आपकी, एकस्ट्रा मदद बाप देगा। (०२-०३-२०११)

## कोई न कोई कमाल तो करते हैं ना

यह क्या कमाल दिखा रहे हैं? कोई न कोई कमाल तो करते हैं ना! बापदादा ने सुना है कि सर्विस में भिन्न-भिन्न प्रोग्राम, भिन्न-भिन्न विधियां निकालते हैं और उसको प्रैक्टिकल में ला रहे हैं। यह रिजल्ट तो सुनी। पास हो ना इसमें, पास हो? **हाथ उठाओ**। नया-नया प्लैन बनाते हैं और उसको प्रैक्टिकल में लाते हैं। अच्छा है। ऐसे प्रैक्टिस करके अपने में फिर सभी को उस तरीके का अनुभव कराने के लिए कोई साधन बनाओ। अच्छा। बापदादा मुबारक दे रहे हैं। मुबारक हो, मुबारक हो। (०२-०३-२०११)

## यह झण्डा लहराना भी विश्व की सेवा है

आप सबके तो दिल में बापदादा समाया हुआ है। लेकिन औरों को पता देने के लिए आपका बाप आ गया, जो वर्सा लेना हो मुक्ति का या जीवनमुक्ति का, आके ले लो, यह खबर देने के लिए यह झण्डा लहराया जाता है। यह झण्डा लहराना भी विश्व की सेवा है। आकर्षण तो हो, सब गीत गावें। आप सिर्फ नहीं गाओ। सब यह गीत गायें हमारा बाबा आ गया। *अभी सेवा जल्दी जल्दी करो। समय कम है, सेवा अभी रही हुई है।* आपके पड़ोसी को भी पता नहीं, भाग्य नहीं बनाया तो अडोसी-पड़ोसी सबको यह सन्देश दे दो आपका बाप आ गया। अभी जहाँ रहते हो ना वहाँ देखना हमारे आस पास कितने हैं, जिनको बाप का पता नहीं, *किसी भी तरीके से, नहीं आते, हाथ में पर्चा नहीं लेते तो पोस्ट बाक्स में डाल दो, सन्देश दे दो, उलहना नहीं रहे हमको पता क्यों नहीं दिया।* कैसे भी किसी द्वारा भी यह सन्देश जरूर पहुंचाओ। *सेवा सभी की रही हुई है।* आपके मोहल्ले में सबको सन्देश मिला। नहीं मिला है तो कर लो। *अचानक सब हो जायेगा फिर याद आयेगा, हमने नहीं किया, हमने नहीं किया। कर लो। समझा। जरूर करना। अच्छा।* (०२-०३-२०११)

## आपकी होली दुनिया से न्यारी परमात्मा की प्यारी है

लोग तो स्थूल रंग से होली मनाते हैं लेकिन आप बाप के संग के रंग से होली बन जाते हो। वह भी डबल होली। तो आपकी होली दुनिया से न्यारी परमात्मा की प्यारी है। तो नशा रहता है ना कि हमारी होली प्रभु संग के रंग के कारण आधाकल्प ऐसा पवित्र बनाती है जो अब तक भी आपके चित्र कायदे प्रमाण पूजे जाते हैं और कोई के भी चित्र ऐसे प्रेम पूर्वक पूजे नहीं जाते हैं। आप स्वयं अपने चित्रों को देख रहे हो। और भी पूजे जाते हैं लेकिन इतना समय और ऐसे विधिपूर्वक पूजा नहीं होती। आप सदा उमंग और उत्साह में रहते हो। रहते हो ना! उमंग- उत्साह में रहते हो? **हाथ उठाओ।** रहते हो, कभी कभी या सदा? जो कहते हैं हम सदा उमंग-उत्साह में रहते भी हैं और दूसरे को भी उमंग-उत्साह दिलाते हैं, वह **हाथ उठाओ।** कभी कभी नहीं, सदा। सदा शब्द को अण्डरलाइन करते हो ना! (१६-०३-२०११)

## बाप द्वारा प्राप्त हुई किरणों द्वारा सहारा बनो

बापदादा ने तो बहुत समय से अचानक का पाठ पढ़ाया है। लेकिन अभी प्रत्यक्ष रूप में देख करके अभी अपना काम शुरू करो। घबराओ नहीं। कहानी सुनाते हैं ना - चारों ओर आग लगी लेकिन परमात्मा के बच्चे सेफ रहे। तो अभी भी बच्चे तो सेफ हैं ना! पेपर तो आने ही हैं लेकिन आपका डबल काम है। एक तो निर्भय होके सामना करो दूसरा अपने भक्त और अपने दुःखी भाई-बहिनों की सेवा भी कौन करेगा? आप प्रभु के संग में रंग लगे हुए हो, तो जो परमात्मा के संग के रंग में प्राप्त किया है वह अपने भाई बहिनों को, भक्तों को खूब प्यार से दिल से बांटो। दुःख के समय कौन याद आता है? फिर भी परमात्मा चाहे समझें चाहे नहीं समझें, लेकिन मजबूरी से भी हे बाप, हे परमात्मा कहेंगे जरूर। तो आप परमात्म बच्चों को अभी दुःखियों का सहारा बनना है। उन्हों को शुभ भावना शुभ कामना द्वारा, बाप द्वारा प्राप्त हुई किरणों द्वारा सहारा बनो। फिर भी आपका परिवार है ना! तो परिवार में एक दो को सहयोग देते हैं ना! तो नाम ही है सह योग, श्रेष्ठ योग। वही साधन है सहारा देने का। सन्देश भी भेजा था कि समय फिक्स करो। ऐसे नहीं हो जायेगा, जैसे ट्राफिक कन्ट्रोल, अमृतवेला निश्चित है तो करते हो ना। ऐसे अपने कार्य प्रमाण यह मन्सा सेवा भी अभी के समय प्रमाण अति आवश्यक है। तो समय निकालो, रहमदिल बनो। कल्याणकारी बनो। आपका स्वमान क्या है? विश्व कल्याणकारी। तो रहम आता है? कि हो जायेगा? इसमें अलबेले नहीं बनना क्योंकि जिन्हों को आप सकाश देंगे वही आपके भक्त बनेंगे इसलिए क्या करना है? है अटेन्शन है? जो समझते हैं हमारा अटेन्शन है और बढ़ेगा वह **हाथ उठाओ। नीचे-ऊपर कर रहे हैं। यहाँ देखने आ रहे हैं।** (टी.वी. में) *अगर इतने सभी ने अपने स्वमान को प्रैक्टिकल में लाया तो आत्मार्थे अभी भी संगम पर आपके दिल से गीत गायेंगे वाह परमात्म बच्चे वाह! हमें सहारा दिया। आपके लिए अभी का सहारा आधाकल्प आपके गीत गाते रहेंगे।* आप उसके पूर्वज हो जायेंगे। (१६-०३-२०११)

## मुझे ब्राह्मण परिवार के बीच संस्कार मिलन की रास करनी है

बापदादा ने पहले भी कहा था तो अपना सदा यह चेक करो कि मुझे ब्राह्मण परिवार के बीच संस्कार मिलन की रास करनी है। बापदादा ने कहा था वह रास कब करेंगे उसकी डेट भी फिक्स करो। फिक्स हो सकती है? हो सकती है? **पहली लाइन बताओ। हाथ उठाओ। हो सकती है? पाण्डव भी उठाओ।** पाण्डवों के बिना गति नहीं है। अच्छा। तो अभी लास्ट टर्न है, एक टर्न रहा हुआ है। उसमें हर एक अपने लिए क्या दृढ़ संकल्प है, वह फिक्स करके लिखना। कितना समय लगेगा जो ब्राह्मण परिवार में कहाँ भी कभी भी संस्कार अपना कार्य नहीं करे। चाहे मेरा संस्कार, चाहे दूसरे का संस्कार भी, मेरे को प्रभाव नहीं डाले। यह डेट फिक्स हो सकती है? हो सकती है? **हाथ**



**उठाओ।** अच्छा, सभी का फोटो निकाला! क्योंकि जैसे यह अचानक सीन देखी ना। ऐसे सब अचानक ही होना है इसलिए बापदादा तैयारी तो देखेंगे ना!

(१६-०३-२०११)

## आखिर भी ब्राह्मण परिवार है ना

भिन्न-भिन्न संस्कार हैं लेकिन हमको संस्कार देखने के बजाए शुभ भावना शुभ कामना रखनी है। आखिर भी ब्राह्मण परिवार है ना। कैसा भी है, परिवार तो मेरा है ना! जैसे मेरा बाबा कहते हो, वैसे मेरा परिवार भी है। तो अच्छा है **मैजारिटी ने हाथ उठाया है।** तो सभी का उमंग-उत्साह है तब तो हाथ उठाया है ना! तो एक दो को सहयोगी बन शुभ भावना शुभ कामना की दृष्टि वृत्ति स्मृति रखने से यह रास होना कोई बड़ी बात नहीं। *इस पर जो बहुत अच्छा नम्बर लेगा, डेट पर प्रैक्टिकल करके दिखायेगा उनको न्यारा और प्यारा इनाम मिलेगा।* इनाम अभी नहीं बतायेंगे। लेकिन बापदादा इनाम देंगे। क्यों? सेवा करने का टाइम निकालना है ना। तो यह संस्कार की खिटखिट समय अपने तरफ खींच लेती है इसलिए समय की अभी आवश्यकता है। ठीक है ना! यह सभी मधुबन वाले हैं ना! पसन्द है ना! क्योंकि मधुबन वासी विशेष हैं। बापदादा का भी मधुबन निवासियों प्रति दिल का प्यार है। और मधुबन वालों का भी है। यह भी बाबा कहते, बाप से प्यार है और रहेगा। मिट नहीं सकता है। अमर है इसमें। तब तो मधुबन वासी बने हैं ना! कहाँ भी मधुबन वासी जाते हैं तो किस रिगार्ड से देखते हैं? मधुबन का है, मधुबन का है। इसलिए *यह अटेन्शन रखना लास्ट टर्न के पहले सभी मधुबन में कोई स्थान मुकरर करना जहाँ अपनी चिटकी डालें। लेकिन लास्ट टर्न के पहले।*

(१६-०३-२०११)

## संगमयुग सृष्टिचक्र का अमृतवेला चल रहा है

आजकल देखते हो कि प्रकृति कहाँ न कहाँ अपना कार्य करती रहती है लेकिन आप प्रकृतिजीत बन प्रकृति को भी सतोप्रधान बना रहे हो। लोग तो प्रकृति की हलचल देख डरते हैं कि कल क्या होगा! लेकिन आप जानते हो कि अच्छे ते अच्छा होगा क्योंकि अभी यह संगमयुग सृष्टिचक्र का अमृतवेला चल रहा है। तो अमृतवेले के बाद क्या होता है? सवेरा। अंधकार खत्म हो रोशनी आ जाती, तो आपको खुशी है कि अभी हमारा राज्य सुखमय संसार जहाँ प्रकृति भी सुखमई है, वह राज्य आया कि आया। खुशी है ना! जिस राज्य में दुःख अशान्ति का नामनिशान नहीं होगा क्योंकि अभी संगम पर आप प्रकृतिजीत बन रहे हो। तो सभी को खुशी है ना किसकी? बोलो, हमारा राज्य आने वाला है। यह खुशी है? जो इस खुशी में रहते हैं वह **हाथ उठाओ।** बहुत अच्छा। आप तो खुश रहते हो इसकी मुबारक हो लेकिन ऐसी खुशी अपनी खुशी आपके भाई बहिन जो दुःखी अशान्त हैं उसको अपने बाप द्वारा ली हुई किरणों द्वारा खुशी की किरणें पहुंचाते हो? *बापदादा ने कहा था कि ऐसी मन्सा सेवा करने का टाइम हर एक को अपने दिनचर्या में फिक्स करना है।* जैसे और कार्य के लिए टाइम फिक्स किया हुआ है ऐसे अपनी खुशी की खुराक द्वारा दुःखी आत्माओं को मन्सा शक्ति द्वारा थोड़ा बहुत वरदान देकरके उन्हों को भी खुश करो, तो जिन्होंने अपना टाइम मन्सा सेवा के लिए फिक्स किया है, वह **हाथ उठाओ।** अच्छा, जिन्होंने भी नहीं किया है। हैं थोड़े लेकिन इसका टाइम फिक्स करना है क्योंकि अपने ही भाई बहन हैं ना। तो तरस पड़ता है ना! कि तरस नहीं पड़ता है? पड़ता है ना!

(३१-०३-२०११)

## आज से अटेन्शन, नो टेन्शन, बाप के वरदान की मदद का अनुभव करके देखना

बापदादा हर बच्चे को आज विशेष एक वरदान दे रहे हैं, हर एक बच्चा आज से अपने को टेन्शन फ्री बना सकते हो? दृढ़ संकल्प करो कि आज से अटेन्शन, नो टेन्शन। बापदादा बच्चों को जब टेन्शन में देखते हैं ना तो सोचते हैं अभी अभी इस बच्चे का फोटो निकालके भेजें। तो खुद ही समझ जायेगा कि मैं क्या बन गया! बापदादा मनजीत, जगतजीत बनाने चाहते हैं। टेन्शन किसमें, मन में ही तो आता है ना! तो आप तो राजा हो ना, स्वराज्य अधिकारी हो ना! क्या मन आपका है या मन मालिक है? आप क्या कहते हो? सारा दिन मेरा मन कहते हो ना! मालिक तो नहीं है ना! कौन हिम्मत रखता है, बाप का वरदान सहज मिलेगा लेकिन सिर्फ थोड़ा अटेन्शन रखना पड़ेगा। बाप के वरदान की मदद का अनुभव करके देखना। सभी का चेहरा जब भी देखो तो कैसा दिखाई देगा? टेन्शन फ्री, कमल पुष्प समान वा खिला हुआ गुलाब पुष्प मिसल। बापदादा ने देखा कि जो पहले काम दिया था, परसेन्टेज लिखने का। सभी स्थानों से कुछ कुछ समाचार आया है। यहाँ भी रिजल्ट निकाली है। अटेन्शन दिया उसकी मुबारक बापदादा दे रहे हैं लेकिन अभी बापदादा यही चाहते हैं कि समय प्रमाण अभी वाणी द्वारा सुनने का समय भी कम मिलेगा इसलिए मन्सा द्वारा और अपने चेहरे और चलन द्वारा सर्विस करो। अभी का अभ्यास आगे आने वाले समय में कार्य में आयेगा। तो आज से टेन्शन फ्री का संकल्प कर सकते हो? कर सकते हो? कर सकते हो? **हाथ उठाओ।** टेन्शन फ्री। अच्छा, सभी का फोटो निकालो। बहुत अच्छा। तो जो आत्मार्थे सरकमस्टांश के प्रमाण बहुत टेन्शन में रहते हैं, आजकल दुनिया में टेन्शन बहुत बढ़ रहा है, तो आपका टेन्शन फ्री का अनुभव और टेन्शन फ्री की चलन और चेहरा उन्हों के आगे एक आधारमूर्त बनेगा।

अगर आज दुनिया में चक्र लगाओ या समाचार सुनो तो क्या दिखाई देता है? टैम्पेरी अपने को खुश करने के साधन बनाते रहते हैं। तो टेन्शन वालों को टेन्शन फ्री का एकजैम्पुल दिखाओ तो उनको भी सहारा दिखाई दे। तो संकल्प किया, अपने मन में संकल्प किया कि टेन्शन फ्री रहेंगे? किया? दृढ़ किया या साधारण किया? जहाँ दृढ़ता होती है वहाँ सफलता हुई पड़ी है। करेंगे नहीं, करना ही है। पसन्द है? **इसमें हाथ उठाओ**। बापदादा ने एक बात देखी है कि हाथ उठाके बहुत खुश कर देते हैं। हाथ उठा के खुश तो किया लेकिन अभी क्या करेंगे? दृढ़ संकल्प, साधारण संकल्प उसमें रात दिन का फर्क है। करेंगे और करना ही है। तो इस सीजन का, इस वर्ष की इस सीजन का आज लास्ट डे है लेकिन अगली सीजन में बापदादा हर एक छोटा बड़ा सेन्टर, काफी टाइम है बीच में, अगले वर्ष की सीजन में कारण नहीं लेकिन निवारण स्वरूप देखने चाहते हैं। तो कितना हिम्मत और उमंग है कि ब्राह्मण परिवार में टेन्शन का नामनिशान नहीं हो। हो सकता है? हर एक अपने से पूछे, हो सकता है? यह खुशखबरी बापदादा सुनने चाहते हैं।

(३१-०३-२०११)

## सम्पूर्ण पवित्रता के हिसाब से व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता का बीज है

अभी बाप बच्चों से क्या चाहते हैं? बाप को सदा हर बच्चे में यही आशा है कि हर बच्चा बाप समान बन जाए। जैसे ब्रह्मा बाप विजयी बने, ऐसे हर बच्चा सदा विजयी बने। इसके लिए जैसे ब्रह्मा बाप ने क्या किया? फालो फादर। तो आप सभी भी हर कदम उठाते पहले चेक करो कि यह कदम ब्रह्मा बाप ने किया? ब्रह्मा बाप ने हर बच्चे प्रति चाहे जानते थे कि यह बच्चा कमजोर है, पुरुषार्थ में भी, सेवा में भी लेकिन कमजोर के ऊपर और ही रहम और कल्याण की भावना रही। ऐसे ही बापदादा सभी बच्चों को भी यही कहते अपने परिवार के हरेक भाई या बहन प्रति शुभ भावना, शुभ कामना, रहम और कल्याण की दृष्टि से उनके भी सहयोगी बने। बापदादा ने पहले भी सुनाया कि प्यार की सबजेक्ट में हर एक बच्चा यथा शक्ति पास है। प्यार के कारण ही आगे बढ़ रहे हैं। अभी बापदादा बच्चों के प्यार को देख खुश है। प्यार की सबजेक्ट के कारण हर एक बच्चा नम्बरवार चल रहा है। अभी बापदादा चाहते हैं कि प्यार में कुछ कुर्बानी भी की जाती है। बाप से प्यार है इसलिए कौन सी कुर्बानी करनी है? जो बापदादा चाहता है वह समझ तो गये हो, समझते हो ना बाप क्या चाहता है? समझते हो? **कांध हिलाओ**। समझते हो? तो करना है इसकी भी हिम्मत है ना! है हिम्मत **हाथ उठाओ**। हिम्मत है? अच्छा। तो हिम्मते बच्चे मददे बाप है ही। अभी बापदादा चाहते हैं, रिजल्ट में देखा तो अभी तक सम्पूर्ण पवित्रता के हिसाब से व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता का बीज है। तो बापदादा ने देखा यह व्यर्थ संकल्प चलना, यह मैजारिटी बच्चों में अब भी संस्कार रहा हुआ है। एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा व्यर्थ समय यह मैजारिटी बच्चों में अब भी दिखाई देता है। और व्यर्थ संकल्प का आधार है मन, जो मनमनाभव होने नहीं देता क्योंकि बापदादा ने काफी समय से इशारा दे दिया है कि जो कुछ होना है वह अचानक होना है। तो अचानक के हिसाब से बापदादा ने चेक किया मैजारिटी बच्चों में यह व्यर्थ संकल्प का संस्कार है। तो जब ब्रह्मा बाप व्यर्थ समय, व्यर्थ संकल्प के विजयी बन कर्मातीत हुए तो फालो फादर।

(१९-१०-२०११)

## मन को घोड़ा भी कहा जाता है लेकिन आपके पास श्रीमत की लगाम है

बापदादा ने देखा कि मन है तो आपकी रचना, आप मन के रचता हो तो मन को चलाने वाले हो। मन की कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर के मालिक हो लेकिन फिर भी मन कहाँ धोखा दे देता है। है आपकी रचना, मेरा है ना! लेकिन कन्ट्रोलिंग पावर कम होने के कारण धोखा दे देता है। मन को घोड़ा भी कहा जाता है लेकिन आपके पास श्रीमत की लगाम है। है ना लगाम! तो कभी भी अगर मन वेस्ट संकल्प की तरफ ले जाता, लगाम को टाइट करने से अपने को व्यर्थ संकल्प की थोड़ी भी अपवित्रता को खत्म कर सकते हो। मन के मालिक बन, जैसे ब्रह्मा बाप ने रोज़ मन की चेकिंग की, ऐसे रोज़ चेक करो और व्यर्थ संकल्प को समाप्त करो। तो आज बापदादा यही चाहता है कि इस व्यर्थ संकल्पों को समाप्त करो। बुरे संकल्प कम हैं, व्यर्थ ज्यादा हैं लेकिन इसमें टाइम बहुत जाता है। मन के मालिक बन मन को ऐसे बिजी करो जो और तरफ आकर्षित हो आपकी लगाम को ढीला नहीं करे। हो सकता है यह? आज बापदादा व्यर्थ संकल्प के समाप्ति का सबको संकल्प दे रहे हैं। हो सकता है? **हाथ उठाओ** जो समझते हैं व्यर्थ संकल्प भी समाप्त, सेरीमनी मनायेंगे। व्यर्थ समय भी बचाना है। समय और संकल्प दोनों को बचाना है क्योंकि बापदादा सबका चार्ट देखते हैं। तो चार्ट में यह कमी मैजारिटी में देखने आई। मन के मालिक ही विश्व के मालिक बनने हैं। जैसे बाप ब्रह्मा मनजीत बन विश्व का मालिक बन गया, अभी तो आपके लिए, बच्चों के लिए आवाहन कर रहे हैं, आपकी एडवांस पार्टी भी आवाहन कर रही है। सुनाया था चार बजे एडवांस पार्टी वाले भी वतन में आते हैं, तो पूछते हैं कब मुक्ति का गेट खोलेंगे? किसको खोलना है? आप सभी मुक्ति का गेट खोलने वाले हो ना! आपका सम्पूर्ण बनना अर्थात् मुक्ति का गेट खुलना। तो बापदादा से एडवांस पार्टी रूहरिहान करती है कब तक? तो बाप आपसे पूछते हैं कब तक? तो क्या जवाब देंगे? पहली लाइन वाले बोलो, कब तक? हर कार्य के लिए डेट फिक्स करते हो ना! तो इस कार्य की डेट कब तक? ब्रह्मा बाप तो फरिश्ते रूप में आवाहन कर रहे हैं। बता सकते हो डेट? बोलो, डेट फिक्स कर सकते हैं? अभी डेट फिक्स है? **पाण्डव हाथ उठाओ**, डेट फिक्स है? नहीं है। क्यों? दीदी कहती है बाबा हम लोगों को लगन थी घर जाना है, घर जाना है, घर जाना है। दादी कहती है हमको लगन थी कर्मातीत होना है, कर्मातीत होना है..। तो आप सभी का तो दीदी दादी से प्यार है ना। है तो सभी से क्योंकि जो भी एडवांस पार्टी में गये हैं उन सभी से आपका प्यार तो है। अभी उसके प्रश्न का उत्तर दो। तो आपस में रूहरिहान कर अब कुछ जवाब तैयार करना। करेंगे? आज तो डबल फारेनर्स के मिलन का दिन है ना! तो डबल फारेनर्स भी आपस में राय करके डेट बताना और भारत वाले भी इस पर चर्चा करके बताना। है जवाब। हाँ बोलो, बोलो...। **जो बोले वह हाथ उठाओ**। (मोहनी बहन न्युयार्क - बाबा डेट आप फिक्स करिये, हम लोग एवररेडी हैं) नहीं आप फिक्स करो ना। तैयार आपको होना है ना। बाप तो कहेगा कि इस दीवाली पर दीवाली करो। एवररेडी। एवररेडी? कहेंगे जल्दी है। इसलिए कहते हैं आप बताओ। (डा.निर्मला बहन ने कहा - बाबा एक साल दो) अच्छा, इसमें शामिल हो, यह कह रही है एक साल। **जो समझते हैं एक साल वह**

**हाथ उठाओ। बड़ा हाथ उठाओ।** अच्छा। एक साल वालों का नाम नोट करो। अच्छा है। दूसरे सब मुस्कराते हैं। बोलो। (निर्वैर भाई ने कहा - नाउ और नेवर, आज अभी होना है) तो ताली बजाओ। अच्छा, बहुत अच्छा। तो अभी अभी सभी अपने मन में यह प्रामिस करो कि कभी भी व्यर्थ संकल्प नहीं आने देंगे। यह हो सकता है? अभी से कहते हैं नाउ आर नेवर, तो कम से कम यह सब प्रामिस करते हैं कि अभी से न व्यर्थ संकल्प, न व्यर्थ समय गंवायेंगे? इसमें जो तैयार हैं वह **हाथ उठाओ**। मैजारिटी ने उठाया है। जो समझते हैं कि टाइम लगेगा वह **हाथ उठाओ**। कोई नहीं। वह थोड़े हैं जो कहते हैं, *हाथ उठा रहे हैं थोड़े थोड़े*। अच्छा तो इस दीवाली पर यह एक दृढ़ संकल्प करना, जिन्होंने मैजारिटी ने हाथ उठाया है वह स्वाहा करना इसीलिए आप सबकी तरफ से दृढ़ संकल्प के लिए आज केक काटेंगे।

(१९-१०-२०११)

## आपस में संस्कार मिलन की रास करो

तो बापदादा डबल विदेशियों को देख खुश है, वृद्धि भी कर रहे हैं और डबल सेवा की तरफ से अटेन्शन अच्छा है। सिर्फ बापदादा यह इशारा फिर भी दे रहा है कि आपस में संस्कार मिलन की रास करो। यह नहीं सोचो, सेन्टर तो अच्छा चल रहा है, सर्विस तो अच्छी हो रही है लेकिन जब एक परिवार है, प्रभु परिवार है, लौकिक परिवार नहीं प्रभु परिवार है। प्रभु परिवार का अर्थ ही है एक दो में शुभ भावना, कल्याण की भावना। एक दो में यही संकल्प रहे कि हम सभी साथ-साथ एक दो को आगे बढ़ाते मुक्ति का गेट खोलके साथ जाना ही है। इसलिए हर सेन्टर में ऐसा वायुमण्डल हो जो समझ में आवे यह ८ नहीं, १० नहीं लेकिन १० ही एक हैं। अभी संस्कार मिलन की रास हर एक अपने मन में दीवाली में संकल्प करो। एक भी आत्मा एक दो से दूर नहीं हो, सब एक हो। तो इस दीवाली पर संस्कार मिलन की रास करना। मन में दृढ़ संकल्प करना कि एक भी मेरे से भारी नहीं हो, सब हल्के। संस्कार नहीं मिलते हैं तो भारी होते हैं। तो बाप समझते हैं कि इस संकल्प से गेट का दरवाजा खोलने के लिए जल्दी तैयार हो जायेंगे। चेक करो कोई भी हमारे से नाराज़ नहीं, लेकिन भारी भी नहीं होना चाहिए। हो सकता है यह? हो सकता है? **कांध हिलाओ** हो सकता है। हो सकता है **हाथ उठाओ**।

(१९-१०-२०११)

## सेकण्ड में फुलस्टाप लगाने वाले बच्चे चाहिए

बापदादा जानते हैं कि अभी भी रेडी हैं एवररेडी बनना पड़े। जो बापदादा ने दो बातें कही थी कि सेकण्ड में फुलस्टाप लगाने वाले बच्चे चाहिए। व्यर्थ संकल्पों का नाम निशान न रहे। जिसको भी सन्देश देते हो वह सन्देश सुन परिवर्तन करने के उमंग उत्साह में आ जाएं। अब बापदादा यह रिजल्ट चाहते हैं। इसके लिए *बापदादा बच्चों को राय देते हैं, आज्ञा भी करते हैं*, कि सेवा करते हो लेकिन जिनकी भी सेवा करते हो, एक ही समय पर तीन रूपों और तीन रीति से सेवा करो। तीन रूप नॉलेजफुल, पावरफुल और लवफुल, इन तीनों रूपों से सेवा करो और तीनों रीति से सेवा करो, वह तीन रीति है मन्सा-वाचा-कर्मणा एक ही समय, सिर्फ वाणी से सेवा नहीं लेकिन वाणी के साथ मन्सा सेवा भी साथ-साथ हो। पावरफुल माइन्ड हो। तो अभी आवश्यकता एक ही समय मन्सा पावरफुल हो, जिससे आत्माओं की भी मन्सा परिवर्तन हो जाए। वाणी द्वारा सारी नॉलेज स्पष्ट हो जाए और कर्मणा द्वारा, कर्म द्वारा सेवा से वह आत्मार्थ अनुभव करें कि सचमुच हम अपने परिवार में पहुंच गये हैं। परिवार की फीलिंग आने से नजदीक के साथी बन जायें। तो बापदादा अभी एक ही समय तीन रूप की सेवा इकट्ठी चाहते हैं। हो सकता है? हो सकता है? **हाथ उठाओ**, हो सकता है?

(१५-११-२०११)

## अभी अटेन्शन देना है, सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने में

तो सभी मिलने के लिए उमंग-उत्साह से पहुंच गये हैं तो बापदादा बच्चों का उमंग देख खुश है। अभी अटेन्शन देना है, सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने में क्योंकि कम से कम १०८ की माला तैयार कर सको, कर सकते हो? १०८ की माला तैयार है? तैयार है? क्योंकि राजधानी में राज्य अधिकारी तो वही बनेंगे ना। लिस्ट अभी निकाल सकते हो १०८ रत्नों की? निकाल सकते हो? निकाल सकते हैं? हाँ जी नहीं कहते हैं? १०८ राज्य अधिकारी, फिर १६ हजार १०८ राज्य अधिकारी के साथी। फिर उसके बाद है नम्बरवार। तो बापदादा अभी समय प्रमाण, समय को समीप लाने वाले बच्चों से यही चाहते हैं कि १०८ की माला एवररेडी हो, बाप समान हो। हैं ना इतना, पहली लाइन निकाल सकती है १०८, हाँ या ना करो ना! साकार में जब ब्रह्मा बाप थे तो कई बार ट्रायल की लेकिन फाइनल नहीं हो सकी, लेकिन अब तो ७५ वर्ष पूरे हो रहे हैं, तो इस ७५ वर्ष की जुबिली में कोई तो नवीनता करेंगे ना! तो नवीनता यही करो जो हर एक अपने को १०८ की माला के मणके बनाये, जो गिनती में आये हाँ १०८ की माला तो बन गई क्योंकि जब पहले राज्य अधिकारी बनें तब तो पीछे राज्य के सम्पर्क वाले बनें। उनको भी तो जगह चाहिए ना! तो बापदादा का कहने का यही सार है कि अभी हर एक को अपना तीव्र पुरुषार्थ कर और दृढ़ संकल्प करना है कि मुझे बाप समान बनना ही है क्योंकि बापदादा ने सुना दिया है कि अचानक परिवर्तन होना है। उसके पहले कम से कम जो सेवा के निमित्त बने हुए हैं, ज़ोन हेडस साथ में सेन्टर इन्चार्ज, साथ में उनके नजदीक के साथी पाण्डव, सेन्टर हेड नहीं बनते

लेकिन कोई न कोई विशेष कार्य के निमित्त बने हुए जिनको विशेष आत्मा की नज़र से देखते हैं, उन पाण्डवों को भी अभी तीव्र पुरुषार्थ कर स्व परिवर्तन की झलक बाहर स्टेज पर लानी पड़ेगी। इसके लिए एवररेडी हैं? जो समझते हैं कि यह कार्य तो करना ही है, अपने को बाप समान, ब्रह्मा बाप समान फालो फादर करना ही है, करना है? हाथ उठाओ। हाथ तो इतने उठाते हैं खुश कर देते हैं। अच्छा करते हैं। लेकिन हाथ के साथ दृढ़ संकल्प भी करो। दृढ़ता की शक्ति बहुत सहयोग देती है। (१५-११-२०११)

## माया कितनी भी चतुर हो आप तो सर्वशक्तिवान के साथी हो, माया क्या करेगी

अभी बापदादा एक कार्य देते हैं, करने के लिए तैयार हो ना! कांध हिलाओ। हाथ उठाओ। बापदादा का संकल्प है कि एक मास के लिए अपने को दृढ़ संकल्प के आधार से बाप समान स्थिति में स्थित कर सकते हो? एक मास, कर सकते हैं? कि ज्यादा है? जो समझते हैं एक मास दृढ़ता से, दृढ़ता को साथी बनाना बाप को सदा सामने रखना, ब्रह्मा बाप को नयनों में समाये रखना और ब्रह्मा बाप ने क्या किया, मन्सा वाचा कर्मणा वही करना है। चाहे कोई ने प्रैक्टिकल में देखा या नहीं देखा लेकिन नॉलेज तो है ना! कोई भी कर्म करने के पहले यह चेक करना पहले, ब्रह्मा बाप का यह संकल्प रहा, यह बोल रहा, यह कर्म रहा, यह संबंध रहा, यह सम्पर्क रहा? पहले सोचो पीछे करो। हो सकता है? हाथ उठाओ इसमें। हो सकता है? लम्बा हाथ उठाओ। मातायें लम्बा हाथ उठाओ, यहाँ एक्सरसाइज़ करती हो ना तो हाथ लम्बा उठाओ। आगे वाले भी उठायेंगे ना? सब मधुबन वाले इसमें नम्बरवन आना। आगे आगे मधुबन वाले बैठे हैं ना। मधुबन में सिर्फ शान्तिवन नहीं, जो भी हैं एक मास निर्विघ्न, हर सेन्टर भी निर्विघ्न, गुजरात की टीचर्स हाथ उठाओ। गुजरात की टीचर्स समझती हैं हो सकता है, इसमें लम्बा हाथ उठाओ। ऐसे ऐसे नहीं करो लम्बा उठाओ। हो सकता है? अच्छा। शान्तिवन निवासी हाथ उठाओ। थोड़े हैं। जो भी बैठे हैं, पीछे भी बैठे हैं। तो मधुबन के ४-५ स्थान जो भी हैं वह करेंगे? करेंगे हाथ उठाओ? मधुबन वाले दो हाथ उठाओ। गुजरात वाले जिज्ञासु भी, निमित्त टीचर्स भी, निमित्त भाई भी सभी हाथ उठाओ, करेंगे। बड़ा हाथ उठाओ। पीछे वालों का हाथ दिखाई नहीं देता है, अच्छा, गुजरात वाले खड़े हो जाओ। गुजरात तो बहुत आया है। आधा हाल तो गुजरात है। (गुजरात १५ हजार है, बाकी ३ हजार हैं) गुजरात वालों को बापदादा और परिवार की तरफ से बहुत-बहुत मुबारक है, मुबारक है। जैसे अभी तालियां बजाई ना, वैसे ही एक मास के बाद रिजल्ट में गुजरात नम्बरवन आयेगा! अच्छा है। संख्या तो बहुत अच्छी है। बापदादा खुश होते हैं कि बच्चों को बाप से और मधुबन से दिल का प्यार है। बहुत अच्छा है, अभी गुजरात कमाल करके दिखाना। इस एक मास की रिजल्ट में नम्बरवन आके दिखाना। वैसे नम्बरवन सबको आना है। मधुबन वाले नम्बरवन आयेंगे ना, हाथ उठाओ। कुछ भी हो जाए, क्या भी परिस्थिति हो जाए, परिस्थिति आयेगी, माया सुन रही है ना, तो माया अपना रूप तो दिखायेगी लेकिन माया का काम है आना और आपका काम है विजय पाना। यह नहीं कहना, यह हो गया, वह हो गया, यह नहीं करना। आयेगा, होगा, यह तो बापदादा पहले ही सुना देता है क्योंकि माया सुन रही है, वह बहुत चतुर है लेकिन आप, माया कितनी भी चतुर हो आप तो सर्वशक्तिवान के साथी हो, माया क्या करेगी। बापदादा देख रहे हैं, टी.वी. में देख रहे हैं तो सभी नम्बरवन लाना। कोई टू नम्बर नहीं बनना, वन नम्बर। अच्छा। (१५-११-२०११)

## अनुभवी आत्मायें अनुभव सुनायें तो प्रभाव पड़ता है

तो बापदादा हर एक का नाम नहीं लेता लेकिन चारों ही वर्ग को कह रहे हैं, कि सेवा हो रही है, अच्छी कर रहे हो और जिम्मेवारी भी अपनी समझते हो लेकिन बापदादा ने पहले भी कहा है तो हर वर्ग अपने जो विशेष आत्मायें निकली हैं क्योंकि हर वर्ग की निकली हैं, यह बापदादा जानते हैं लेकिन उन्हीं का एक बारी संगठन करो। जैसे हर ज़ोन में कोई विशेष आत्मायें निकली हो, उनमें से चुनके एक बारी सभी वर्गों के विशेष १०-१५-२० हर एक वर्ग के ऐसे चुनो और उन्हीं का प्रोग्राम करो, यहाँ आबू में, तो नजर में आवे सर्विस की रिजल्ट क्या है और वह भी संगठन देख करके उमंग उत्साह में आयें। इस वर्ग से यह आ रहे हैं, यह आ रहे हैं, एक दो को देख करके भी उमंग में आवे, तो यह अभी प्रोग्राम बनाना। सबके १५-२० हो उनके लिए ऐसे कार्यक्रम रखो और उन्हीं को इकट्ठा करो। ठीक लगता है यह क्योंकि बापदादा उन्हीं को अभी अनुभव के आधार से स्पीकर बनाने चाहता है। आप जो भाषण करो, उसके साथ ऐसे अनुभवी आत्मायें अनुभव सुनायें तो प्रभाव पड़ता है। तो अभी यह सेवा करना, उन हर एक जो भी वर्ग है, उन्हींने अच्छे अच्छे निमित्त निकली आत्माओं के फायदे का लाभ का किताब छपाया है, जिसने छपाया है वह हाथ उठाओ। अपने अपने वर्ग के अच्छे अच्छे अनुभवी, उनके अनुभवों का किताब छपाया है तो वह हाथ उठाओ। कोई ने नहीं छपाया है? (यूथ और एज्यूकेशन का छपा है) सभी का छपना चाहिए क्योंकि कोई भी आते हैं तो लाइब्रेरी में ऐसे ऐसे किताब होने चाहिए जो कोई भी फ्री होके पढ़े और हर वर्ग का पढ़ने से प्रभाव पड़ता है, कई समझते हैं कि कर्म करते हुए, ड्युटी सम्भालते हुए कुछ हो नहीं सकता है, तो उन्हीं को उमंग उत्साह आवे तो जब यह बने हैं तो हम भी बन सकते हैं। तो ऐसा किताब निकालो और अपने अपने जो भी सेन्टर्स हैं वहाँ सब जगह में जहाँ लाइब्रेरी हो वहाँ रखो। तो यह काम करना (१५-११-२०११)

## एक जन्म में २१ जन्मों की प्रालब्ध बनानी है

तो अपने को चेक करो कि सदा श्रीमत पर चलते हैं वा कभी मनमत परमत की तरफ तो नहीं बुद्धि जाती? चेक किया? जो समझते हैं सतगुरु द्वारा सदा ही श्रीमत श्रेष्ठ मत पर चलने वाले हैं, मनमत परमत पर कभी भी स्वप्न में भी नहीं जाते, वह **हाथ उठाओ**, जो सदा श्रीमत पर ही चलते हैं, परमत मनमत नहीं? **हाथ उठाओ**। देखो, माताओं ने उठाया। थोड़े थोड़े उठा रहे हैं। कभी कभी चली जाती हैं और परमत मनमत धोखा दे देती है। और विशेष श्रीमत क्या है? अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। तो सहज है या मुश्किल है? कभी कभी मुश्किल हो जाती है! लेकिन बाप यही चाहते हैं कि सदा इन तीन सम्बन्धों से हर बच्चा आगे आगे उड़ता चले। तो बापदादा पूछते हैं कि *जिन्होंने हाथ नहीं उठाया* वह अब से मनमत, परमत का त्याग कर सकते हैं? कर सकते हैं? वह **हाथ उठाओ**। अच्छा! क्योंकि बापदादा ने समय का इशारा दे दिया है। अभी संगम का समय अति वैल्युबुल है और बापदादा ने यह भी इशारा दे दिया है कि वर्तमान समय के प्रमाण सब अचानक होना है इसलिए सदा एवररेडी बनना है ना! साथ चलेंगे ना सब कि पीछे पीछे आयेंगे? बापदादा के साथ अपने घर चलना है ना! रेडी हो ना! साथ चलने के लिए रेडी हो? एवररेडी। रेडी भी नहीं, एवररेडी। तो बापदादा समय का इशारा दे रहे हैं। इस एक जन्म में २१ जन्मों की प्रालब्ध बनानी है। तो सोचो कितना अटेन्शन देना है। (३०-११-२०११)

## अलबेलापन पुरुषार्थ को ढीला कर देता है

बापदादा अभी यही चाहते हैं कि एक एक बच्चा फॉलो फादर करते हुए बाप समान सम्पन्न जरूर बनें। बापदादा ने देखा कि पुरुषार्थ भी सब बच्चे करते हैं। पुरुषार्थ की लगन भी है, अपने से ही प्रॉमिस भी बहुत करते हैं, अब नहीं करेंगे, अब नहीं करेंगे... लेकिन कारण क्या होता है? कारण है पुरुषार्थ में दृढ़ता कम है। बीच बीच में अलबेलापन आ जाता है। हो जायेंगे, बन जायेंगे... यह अलबेलापन पुरुषार्थ को ढीला कर देता है। तो अब क्या करेंगे? अभी यही विशेष अटेन्शन दो, अपने आप अपना प्रोग्राम बनाओ, जिसमें सारा दिन मन को बिजी रखो। अपना प्रोग्राम आप बनाओ। टाइमटेबुल अपना आप बनाओ, मन को बिजी रखने का। चाहे मनन करो, चाहे सेवा करो, चाहे एक दो को अटेन्शन खिचवाओ लेकिन बिजी रखो। मन से बिजी, शरीर से बिजी तो होते हो लेकिन मन से बिजी रहो। मन के बिजी रहने में बिजनेसमैन नम्बरवन बनो। यह कर सकते हो? करेंगे? करेंगे? क्योंकि आप जानते हो ब्रह्मा बाप भी आपका इन्तजार कर रहे हैं और आपकी एडवांस पार्टी भी आपका इन्तजार कर रही है, कब समय को समीप लाते हैं क्योंकि समय को समीप लाने के जिम्मेवार आप हो। अपने को सम्पन्न बनाना अर्थात् समय को समीप लाना। तो बापदादा विशेष एक मास दे चुका है। इस एक मास में हर एक को तीव्र पुरुषार्थी बन, पुरुषार्थी नहीं तीव्र पुरुषार्थी बनना ही है। मंजूर है? है मंजूर? **हाथ उठाओ**। अच्छा, मुबारक हो। अभी हर एक को दृढ़ संकल्प कर रोज़ बापदादा को अपनी रिजल्ट सारे दिन की कैसी देनी है? तीव्र पुरुषार्थ की। पुरुषार्थ नहीं तीव्र पुरुषार्थ। इसके लिए तैयार हैं? हैं तैयार? **दो हाथ उठाओ**। बहुत अच्छा। अभी बापदादा अचानक ही बीच में रिजल्ट मंगायेगा। डेट नहीं बताते हैं। अचानक ही एक मास के अन्दर कोई भी डेट पर रिजल्ट मंगायेंगे। करना ही है। यह प्रॉमिस अपने आप करो। बापदादा करायेगा वह तो कराते ही हैं लेकिन अपने आप से यह संकल्प करो और प्रैक्टिकल करके दिखाओ। करना ही है। करेंगे, गे-गे नहीं.. *अभी गे-गे अच्छी नहीं है*। समय आगे बढ़ रहा है, अति में जा रहा है, तो समय का परिवर्तन करने वाले क्या आप पूर्वजों को अपने दुःखी परिवार पर रहम नहीं आता? रहमदिल बनो। दुःखियों को सुख का रास्ता बताओ, चाहे मन्सा से, चाहे वाचा से, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से। अपना परिवार है ना! तो परिवार का दुःख मिटाना है। रहमदिल बनो। अच्छा। (३०-११-२०११)

## देश विदेश के हर बच्चे को बापदादा देख रहे हैं

अच्छा। अभी कर्नाटक वाले क्या विशेषता करेंगे? तीव्र पुरुषार्थ करने का, पुरुषार्थ करेंगे और करायेंगे। करायेंगे भी और करेंगे भी, इसमें **हाथ उठाओ**। बापदादा सिर्फ यहाँ नहीं देख रहे हैं लेकिन जहाँ भी सब बच्चे बैठे हैं, चाहे पार्क में बैठे हैं, चाहे भिन्न भिन्न हाल में बैठे हैं सभी को बहुत-बहुत याद प्यार दे रहे हैं। दूर बैठे हैं लेकिन दिल से नजदीक हैं। चारों ओर देखने वालों को भी बापदादा दिल का यादप्यार दे रहे हैं। देश विदेश के हर बच्चे को बापदादा देख रहे हैं। (३०-११-२०११)

## बच्चों के मस्तक बीच चमकती हुई लाइट ही देख रहे हैं

तो बापदादा आज चारों ओर के बच्चों के चाहे सम्मुख हैं, चाहे जहाँ भी बैठे हैं, बच्चों के मस्तक बीच चमकती हुई लाइट ही देख रहे हैं। तो सदा बेफिक्र रहते हैं या कभी कोई फिक्र भी आता है? है कोई फिक्र? जब बाप ने प्रकृतिजीत, विकारों जीत बना दिया तो फिक्र कैसे आ सकता है? तो **हाथ उठाओ** बेफिक्र बने हो? बने हो सदा? सदा बने हो या कभी-कभी? कभी-कभी वाले भी हैं? हाथ

तो नहीं उठाते, बापदादा भी नहीं देखने चाहते हैं। बापदादा हर बच्चे को बेफिक्र बादशाह देखने चाहते हैं। अगर कभी-कभी वाले भी हैं तो बहुत सहज विधि है जो भी थोड़ा बहुत फिकर आता है तो मेरे को तेरे में बदल लो। (१५-१२-२०११)

## बाप तो सेकण्ड में अशरीरी बन जायेंगे लेकिन.....

बापदादा ने सभी बच्चों को साथ ले चलने का वायदा किया है। इसके लिए साथ चलने की तैयारी क्या करनी है? बाप तो सेकण्ड में अशरीरी बन जायेंगे लेकिन आपने जो वायदा किया है, बाप ने भी वायदा किया है साथ चलेंगे, तो चेक करो उसकी तैयारी है? सेकण्ड में बिन्दी लगाई, सम्पन्न और सम्पूर्ण बन चला। तो ऐसी तैयारी है? साथ तो चलना है ना! चलना है? **कांध हिलाओ**। चलना है, अच्छा। पक्का? हाथ में हाथ देना, इसका अर्थ है समान बनना। तो चेक करो समय तो अचानक आना है, तो इतनी तैयारी है जो साथ में चलें? बाप का बच्चों से प्यार है ना! तो बाप एक को भी साथ चलने में पीछे छोड़ने नहीं चाहते। साथ है, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे और साथ राजधानी में राज घराने में आयेंगे। मंजूर है ना! मंजूर है? तैयारी है? मंजूर है में तो हाथ उठा लेंगे, यह हाथ नहीं उठाओ। तैयारी है, इसमें **हाथ उठाओ। बड़ा हाथ उठाओ।** अच्छा। (१५-१२-२०११)

## डबल विदेशियों का यह संस्कार है कि जो करेंगे वह उमंग उत्साह से करके पूरा करेंगे

डबल विदेशी भी बापदादा ने देखा सेवा में भारत की आत्माओं से कम नहीं हैं। बापदादा खुश होते हैं कि हर एक अपने-अपने स्थान में सेवा की वृद्धि भी कर रहे हैं और स्वयं को भी अच्छे उमंग उत्साह में चला रहे हैं। डबल विदेशियों का यह संस्कार है कि जो करेंगे वह उमंग उत्साह से करके पूरा करेंगे और पुरुषार्थ के तरफ भी अटेन्शन है। तो सभी **हाथ उठाओ** कि सभी तीव्र पुरुषार्थी हैं? तीव्र पुरुषार्थी हैं? अच्छा। (१५-१२-२०११)

## अब तो समय भी साथ दे रहा है

आज तो सभी इस श्रेष्ठ दिन पर बाप से मिलने आये हैं। आज का दिन है संगम का दिन। विदाई भी है और बधाई भी है। वैसे भी संगम का महत्व है। जहाँ भी सागर और नदी का संगम होता है उसका बहुत महत्व होता है। तो आज के दिन का भी महत्व बहुत गायन योग्य है। पुराना वर्ष समाप्त और नया वर्ष आरम्भ होना है। आज के दिन सभी के दिल में आगे आने वाले वर्ष के लिए कितना उमंग है! हर एक ने अपने-अपने दिल में प्लैन बनाया है क्या छोड़ना है और क्या बनना है, दोनों ही प्लैन बनाया है? बनाया है? जिसने आने वाले वर्ष के लिए अपने आगे बढ़ने का, तीव्र पुरुषार्थ का प्लैन बनाया है **वह हाथ उठाना**। बनाया है! मुबारक हो। क्योंकि सब जानते हैं कि बापदादा हर बच्चे के लिए क्या चाहता है। बापदादा हर बच्चे के लिए यही शुभ भावना रखते हैं कि हर बच्चा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बन जाये। *अब तो समय भी साथ दे रहा है।* तो हर एक ने अपने मन में अपने प्रति नया प्लैन बनाया है ना! कुछ छोड़ना है और कुछ आगे बढ़ना है। तो छोड़ना क्या है? बापदादा ने देखा कि पुराने संसार और सम्बन्ध में छोड़ने में सबका पुरुषार्थ पर अटेन्शन भी है। एक बात जो छोड़ने भी चाहते हैं लेकिन अब तक बापदादा ने देखा कि पुराने संस्कार उसको छोड़ने में थोड़ी मेहनत लगती है। तो बापदादा यही चाहते हैं कि इस नये वर्ष में हर एक बच्चा अपना निजी संस्कार का संस्कार कर ले। आप सब भी इसी संकल्प को पूरा करने चाहते हैं ना! क्योंकि पुराना संस्कार जिसको आप लोग कहते हो मेरी नेचर है, भाव नहीं है लेकिन नेचर है। तो नेचर इस जन्म के ब्राह्मण की नहीं है लेकिन पुरानी है। तो उस पुराने संस्कार का आज के दिन, हर एक अपने को तो जानते हैं तो आज वर्ष की विदाई के साथ-साथ उस पुराने संस्कार को छोड़ने का दृढ़ संकल्प कर सकते हो? कर सकते हो? चाहते भी हैं, ऐसा नहीं है कि चाहते नहीं हैं लेकिन फिर भी बार-बार पुरुषार्थ में तीव्रता लाने में वही संस्कार भिन्न-भिन्न रूप से विघ्न डालते हैं तो बापदादा यही चाहते हैं कि वर्ष को विदाई देने के साथ आज के दिन उसको भी विदाई दे दो। इसके लिए तैयार हैं, जो तैयार हैं वह **हाथ उठाओ**। इसके लिए क्या करेंगे? अपने लिए कोई प्लैन भी सोचा है? *इसके लिए सबसे अच्छी बात है दृढ़ संकल्प।* संकल्प है, होना चाहिए लेकिन संकल्प में तीव्रता चाहिए। जैसे ब्राह्मण बनने के साथ-साथ यह प्रतिज्ञा की कि कोई भी अशुद्ध भोजन स्वीकार नहीं करना है। तो बापदादा ने देखा इसमें दृढ़ संकल्प द्वारा मैजारिटी पास हैं। जैसे तन के लिए अशुद्ध भोजन का संकल्प किया और प्रैक्टिकल कर रहे हो, ऐसे ही मन के लिए यह दृढ़ संकल्प करना है कि कभी भी किसी के प्रति भी किसी भी सरकमस्टांश प्रमाण कोई भी व्यर्थ संकल्प न कर सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखनी ही है। मन का भोजन है संकल्प, तो जैसे तन के लिए दृढ़ संकल्प मैजारिटी ने किया है, ऐसे ही क्या मन के लिए व्यर्थ संकल्प, अशुद्ध भावना मिटा नहीं सकते? हर आत्मा के प्रति दिल का स्नेह और सहयोग अपने मन में नहीं रख सकते हैं? तो आज बापदादा इस पुराने वर्ष के साथ इस वृत्ति वा दृष्टि को हर बच्चे से विदाई चाहते हैं। यह दृढ़ संकल्प कर सकते हो? कर सकते हैं? बोलो, मातायें, टीचर्स, सब भाई भी चाहते हैं। **हाँ हाथ उठाओ**। कल से किसी भी आत्मा के प्रति अगर कोई भी व्यर्थ है, व्यर्थ भावना वा व्यर्थ भाव उसकी आज समाप्ति समारोह मनाते

चाहते हैं। बोलो, टीचर्स सब तैयार हैं? **टीचर दो दो हाथ उठाओ। उठाओ।** अच्छा। **जिन्होंने नहीं उठाया वह उठाओ।** जिन्होंने नहीं उठाया वह **थोड़ा सा उठके खड़े हो जाओ।** अच्छा हैं! जो पुरुषार्थ करेंगे लेकिन दृढ़ संकल्प नहीं करेंगे, ऐसे हैं? **जो उठे हैं वह लक्ष्य और पुरुषार्थ करेंगे तो हाथ उठाओ।** क्योंकि समय का अटेन्शन रखें, यह सोचो कि सभी को इस संगम समय में भविष्य बहुत समय की सफलता प्राप्त करनी है। २१ जन्म का वर्सा लेना है। (३१-१२-२०११)

## एक दो के सहयोगी बन अब वायुमण्डल में तीव्र पुरुषार्थ की लहर फैलाओ

अभी बापदादा ने देखा कि अभी समय अनुसार जितना सेवा का उमंग-उत्साह प्रैक्टिकल में है इतना ही अभी तीव्र पुरुषार्थी बनना और बनाना, सम्पन्न बनना और बनाना, इस प्वाइंट के ऊपर भी अभी स्वयं भी उमंग-उत्साह में रहना और वायुमण्डल में भी उमंग-उत्साह दिलाना। एक दो के सहयोगी बन अब वायुमण्डल में तीव्र पुरुषार्थ की लहर फैलाओ। जैसे एक दो में सेवा का उमंग वायुमण्डल में फैलाया है ऐसे अभी बापदादा बच्चों में यही शुभ आशा रखते हैं कि यह लहर वायुमण्डल में फैले। बापदादा खुश है लेकिन अभी भी पुरुषार्थ है, तीव्र पुरुषार्थ करना है। अभी हर बच्चे में बापदादा की यही आशा है तो हर बच्चा बाप के आशाओं का सितारा हो ना! हैं? जो समझते हैं हम बाप के आशाओं के सितारे बन यह उमंग-उत्साह वायुमण्डल में फैलायेंगे वह **हाथ उठाओ।** अच्छा। हाथ तो बहुत अच्छा उठाते हैं। बापदादा हाथों को देखके खुश हो जाते हैं। **मैजारिटी ने हाथ उठाया है,** पीछे वालों का दिखाई नहीं देता लेकिन आगे वालों का दिखाई दिया। अभी उठा रहे हैं पीछे वाले भी, मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा। (१६-०१-२०१२)

## हर एक बच्चा मन के व्यर्थ संकल्प और व्यर्थ समय की बचत का अपने प्रति विधि बनावे

बापदादा ने देखा कि विशेष मन में कोई भी बात का उमंग-उत्साह आता है तो वह कार्य साकार रूप में अच्छा हो जाता है इसलिए बापदादा इस बारी स्नेह के दिन में यह होमवर्क दे रहा है कि हर एक बच्चा मन के कारण जो संकल्प और समय व्यर्थ जाता है, अगर कभी भी कोई व्यर्थ संकल्प आ जाता है तो सभी को अनुभव होगा कि उसमें टाइम कितना वेस्ट जाता है। इनर्जी कितनी वेस्ट जाती है। तो बापदादा यह होमवर्क देने चाहता कि यह दो मास हर एक बच्चा मन के व्यर्थ संकल्प और व्यर्थ समय की बचत का अपने प्रति विधि बनावे। इन दो मास में हर एक अपना चार्ट रखे कि व्यर्थ समय, व्यर्थ संकल्प के ऊपर कितना कन्ट्रोल किया? क्योंकि अभी समय के प्रमाण आप सभी को मन्सा शक्ति द्वारा आत्माओं की मन्सा सेवा करने का समय होगा। इसके लिए सदा मन के ऊपर अटेन्शन रखना जरूरी है। कहा हुआ भी है मनजीत जगतजीत। तो मनमनाभव के वायुमण्डल में मन के व्यर्थ को सम्पन्न करना है। कर सकते हैं? करेंगे? वह **हाथ उठाओ।** बापदादा इनाम देगा। अपनी रिजल्ट आप देखना। मन खुश तो मन की खुशी बांटेंगे। यह पुरुषार्थ में नम्बर सभी आगे से आगे लेने का अटेन्शन रखो। व्यर्थ समाप्त, संकल्प समय दोनों समाप्त और समर्थ संकल्प, समर्थ समय आने वाले समय में वायुमण्डल में फैलेगा। (१६-०१-२०१२)

## तीव्र पुरुषार्थी रहना, साधारण पुरुषार्थ से पहुंचना मुश्किल है

सभी खुश तो हैं ना! खुश हैं? देखो नये-नये भी कितने आते हैं। जो नये पहली बार आये हैं वह **हाथ उठाओ।** देखो कितने हैं? आधा क्लास नये आये हैं। बापदादा आये हुए नये बच्चों को देख खुश है क्योंकि लास्ट समाप्ति के समय से तो पहले आ गये हैं। लेकिन जितना लेट आये हो इतना ही तीव्र पुरुषार्थ करना पड़ेगा क्योंकि इस थोड़े टाइम में आपको पूरे २१ जन्मों का भविष्य बनाना है। इतना अटेन्शन रखना पड़ेगा। समय को बचाना, सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं गंवाना। तीव्र पुरुषार्थी रहना, साधारण पुरुषार्थ से पहुंचना मुश्किल है। फिर भी बापदादा आये हुए बच्चों को दिल से मुबारक दे रहे हैं। मुबारक दे रहे हैं। अच्छा। (१६-०१-२०१२)

## आप सिर्फ योग लगाने वाले नहीं हो, योगी जीवन वाले हो

बापदादा देखते हैं लक्ष्य बहुत अच्छा रखते हैं, हिम्मत भी रखते हैं लेकिन सारा दिन उसी अटेन्शन में रहें, जैसे अमृतवेले रहता है, वह कम हो जाता है। कारण क्या होता है? यह जो कर्म में लगते हो, कर्मयोगी बन कर्म करना, इसमें अन्तर पड़ जाता है। आप सिर्फ योग लगाने वाले नहीं हो, योगी जीवन वाले हो। तो जीवन सदा रहती है, कभी-कभी नहीं। तो बापदादा अभी क्या चाहते हैं? प्यार में तो बहुत करके पास हैं, प्यार की सबजेक्ट में बाप ने देखा मैजारिटी बाप के साथ मेरा बाबा, मेरा बाबा कह प्यार का अनुभव करते हैं। प्यार में तो मैजारिटी पास हैं, अब किसमें पास होना है? बाप समान बनने में। सभी क्या चाहते हैं? बाप समान बनना है कि बाप बाप रहेगा आप बच्चे हैं, तो बाप समान तो बनना पड़ेगा। प्यार माना क्या? प्यार वाला जो कहे वह करना ही है। तो सभी बाप के प्यारे हो, बाप का प्यार आपसे



है, इसमें हाथ उठाओ। प्यार है अच्छा, प्यार है? तो अभी बापदादा यही चाहते हैं कि जैसे प्यार है, ऐसे यह लक्ष्य रखो कि हमें बाप समान बनना ही है, इसमें हाथ उठाओ। तो निश्चय रखते हैं, हाथ तो बहुत अच्छा उठाते हैं। बापदादा देख रहे हैं। (०२-०२-२०१२)

## ज्वालामुखी योग के ऊपर और अटेन्शन दो

तो आज बापदादा बच्चों का रिकार्ड देख रहे थे। तो एक तो ज्वालामुखी योग के ऊपर और अटेन्शन दो जिससे स्वभाव संस्कार परिवर्तन में सहयोग मिलेगा। संस्कार अभी भी जिसको आप नेचर कहते हो वह अभी भी अपना कार्य बीच-बीच में कर लेती है। बाकी बापदादा खुश है, किस बात पर? जानते हो, किस बात पर बापदादा खुश है? जानते हो? आजकल की मुरलियां सुनते हुए बापदादा ने देखा अपने दिनचर्या में अटेन्शन ज्यादा गया है। अटेन्शन बढ़ा है तो टेन्शन संस्कारों का कम होता जायेगा। बापदादा ने पहले भी कहा जब भी टेन्शन आवे ना, ए लगा दो, एड कर दो ए अटेन्शन। चलना तो सबको है ही। यह तो वायदा है ही पक्का। साथ चलेंगे, साथ राज्य करेंगे। तो सभी खुश है? कि कभी-कभी खुश है? जो समझते हैं हम सदा खुश हैं, कभी-कभी नहीं, सदा खुश हैं, देखो सोच के हाथ उठाओ। अच्छा। हाथ भी सोच के उठा रहे हैं। खुशी अपनी चीज़ है। अपनी चीज़ क्यों जाये? तो अभी क्या करेंगे? आगे चलना तो है ही। तो अभी आगे क्या करेंगे? (०२-०२-२०१२)

## महीन मैं इसको खत्म करना है, दृढ़ता कम है, दृढ़ता को यूज़ करो

तो सभी कहते तो हैं मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा। जब दिल से कहते हैं मेरा तो यह देह अभिमान जो “मैं” के रूप में आता है, बाप सदा कहते हैं कि यह “मैं” का भान जो आ जाता है, मैं जो करता हूँ, मैं जो कहता हूँ, वही ठीक है। एक मैं है कामन, मैं आत्मा हूँ और यह मेरा शरीर है। दूसरा महीन मैं, जो सुनाया मैंने यह किया, मैं यह कर सकता हूँ, मैं ही ठीक हूँ, यह महीन मैं इसको खत्म करना है। यह देह अभिमान इस रूप में आता है। तो आज बापदादा ने यह महीन मैं जो कभी बाप की विशेषता को भी मेरा मानकर “मैं” का भान रखते हैं, इसको समाप्त करना। देखो, यादगार जो बनाते हैं उसमें भी जब बलि चढ़ाते हैं तो खुद नहीं बलि चढ़ते हैं लेकिन किसको बलि चढ़ाते हैं? बकरे को। बकरे को क्यों दूढ़ा? क्योंकि बकरा मे मे ही करता है। भक्तों ने कॉपी तो बहुत अच्छी की है। तो आज के दिन यह देह अभिमान का मैं क्या पुरुषार्थ करके समाप्त कर सकते हो? बर्थ डे पर आये हो बाप के, तो कोई सौगात तो देंगे ना! तो बाप को और सौगात नहीं चाहिए, यह महीन मैंपन, यही बाप कहते हैं आज के जन्मदिन पर बाप को सौगात दे दो। दे सकते हो? देना है? है हिम्मत? हिम्मत है? हाथ उठाओ। हाथ उठा के तो खुश कर दिया। तो हाथ उठाया, तो सौगात दे दी ना! दी हुई सौगात कोई वापस लेता है क्या? कई बच्चे कहते हैं बाबा हम चाहते नहीं हैं लेकिन आ जाती है। कारण क्या? कारण अगर पूछे तो जवाब बहुत अच्छा देते हैं। कहते हैं जानते भी हैं, मानते भी हैं लेकिन क्या करें वापस आ जाता है। सोचो! दी हुई चीज़ अगर आपके पास आ जाए तो क्या दी हुई चीज़ अपने पास रखेंगे? तो अगर आपने दिल से दी, अगर वापस आ भी जाती, तो रखेंगे अपने पास? कारण क्या है? बाप से प्यार है ना तो प्यार के कारण जो बाप कहते हैं वह करने चाहते हैं, यह बाप के पास भी रिजल्ट आती है लेकिन क्या है, दृढ़ता कम है, दृढ़ता को यूज़ करो। संकल्प करते हो लेकिन एक है संकल्प करना, दूसरा है दृढ़ संकल्प करना। तो बार-बार किये हुए संकल्प में दृढ़ता लाना, यह अटेन्शन कम है। दृढ़ता सफलता की चाबी है। तो आज क्या करेंगे? संकल्प करेंगे या दृढ़ संकल्प करेंगे? अगर आपका दृढ़ संकल्प है तो उसकी निशानी है दृढ़ता सफलता की चाबी है। तो चाबी लगाने में कोई कमी रह जाती है इसीलिए सम्पूर्ण सफलता नहीं मिलती है। (१९-०२-२०१२)

## संगम का हर दिन बाप के स्नेह का दिन है

तो आज बापदादा बच्चों का भी बर्थ डे है, बाप का भी बर्थ डे है। तो यह तो विशेष दिन है ना! सारे कल्प में बाप बच्चों का एक समय जन्म यह इसी बर्थ डे की विशेषता है। तो आज के दिन बाप यही चाहते हैं कि हर बच्चा आज अपने दिल में दृढ़ता को लाके यह दृढ़ संकल्प करे कि हमें व्यर्थ संकल्प और व्यर्थ समय, क्योंकि अगर सारे दिन को अटेन्शन से चेक करो तो बीच-बीच में समय और संकल्प व्यर्थ जाता है। बापदादा तो सबका रजिस्टर देखते हैं ना! उसको बचाना अर्थात् समाप्ति का समय समीप लाना। तैयार हो? कि अभी भी कहेंगे आ जाते हैं क्या करें? व्यर्थ का काम है आना, आपका काम क्या है, बिठाना? तो बिठा देते हो तभी तो उसने भी घर बना दिया है। वह भी समझ गये हैं कि दृढ़ता नहीं है इसलिए आज के स्नेह के दिन सबके दिल में अभी क्या है? अमृतवले से लेके आज दिल में बार-बार क्या आ रहा है? मेरा बाबा, मेरा बाबा, मेरा बाबा। बाप के दिल में भी है मेरे बच्चे, मेरे बच्चे, मेरे बच्चे..। तो जैसे मैजारिटी बाप की याद में रहे हैं। दिन का प्रभाव है, बापदादा ने नोट किया। स्नेह के दिन होने के कारण बार-बार सभी को मेरा बाबा, मेरा बाबा काफी समय याद रहा है। ऐसे है? इसमें हाथ उठाओ। आज के दिन की बात है। मेरा बाबा याद रहा? और कुछ याद रहा? नहीं। ऐसे ऐसे हाथ कर रहे हैं, बहुत अच्छा। तो अगर रोज़ बार-बार चेक करो संगम का हर दिन बाप के स्नेह का दिन है। जैसे आज विशेष दिन होने के कारण ज्यादा याद रहा

ना! ऐसे सदा अमृतवेले यह स्मृति में रखो कि यह संगम का एक-एक दिन कितना महान है। एक छोटे से जन्म में २१ जन्म की प्राप्ति गैरन्टी है। तो एक-एक दिन का कितना महत्व हुआ! कहाँ २१ जन्म और कहाँ यह छोटा सा एक जन्म। तो बापदादा आज आप बच्चों से बर्थ डे की यही सौगात चाहते हैं। देंगे सौगात? देंगे? **हाथ उठाओ।** दृढ़ निश्चय का हाथ। देखेंगे, करेंगे नहीं। करना ही है। कुछ भी हो जाए त्याग तो त्याग। यह त्याग नहीं लेकिन भाग्य है। *तो आज का दिन अगर सही हाथ उठाया तो महत्व का दिन है ना! अभी से आपके चेहरे पर व्यर्थ की समाप्ति और सदा स्मृति स्वरूप की झलक चेहरे और चलन में आनी चाहिए।* यह माया के जो शब्द हैं ना! क्या, क्यों, कब, कैसे... यह समाप्त हो जाएं तब चेहरा और चलन सेवा करेंगे। अभी ज्यादा प्रभाव भाषणों का है। बापदादा खुश है भाषण बहुत अच्छे कर रहे हैं लेकिन दिन प्रतिदिन अभी जैसे यह भाषणों द्वारा, वाणी द्वारा सेवा का उमंग अच्छा रखा और सफलता भी पाई। ऐसे ही अभी समय प्रमाण आपकी ज्यादा सेवा चेहरे और चलन से होगी। उसका अभ्यास, जैसे भाषणों का अभ्यास करते-करते होशियार हो गये हो ना! ऐसे अभी चेहरे और चलन से किसी को खुशी का वरदान दो, यह अभ्यास करो क्योंकि समय कम मिलेगा इसलिए समय और संकल्प का महत्व रखते हुए आगे बढ़ते जाओ। होना सब अचानक है इसलिए बर्थ डे तो याद रहता है ना! बर्थ डे आना है, आना है कितना समय याद आया? बापदादा आना है, आना है, मिलना है यह कितने समय से याद रखा? अब यह संकल्प करो, दृढ़ता से व्यर्थ समय और संकल्प को समाप्त करना है। मेरा बाबा, मेरा बाबा दिल में समाते, कहना अलग चीज़ है लेकिन दिल में समाना, दिल की बात कभी भूलती नहीं है। मुख की बात भूल सकती है लेकिन दिल की बात अच्छी या व्यर्थ दोनों नहीं भूलती है। तो आज बापदादा को सौगात तो दी ना बाप को। **दो-दो हाथ उठाओ।** अरे वाह! यह फोटो निकालो। बापदादा सिर्फ हाथ को नहीं देखते, बापदादा आपके दिल को देख रहे हैं। तो आज के दिन की सौगात अपने को भी दी और बाप को भी दी। अगर आपका व्यर्थ समय और संकल्प बच गया तो आपका दिन कैसे बीतेगा? सदा खुशनसीब और खुशनुमा बन जायेंगे। तो अभी संकल्प को अमृतवेले बापदादा से मिलन मनाने के बाद यह रोज़ स्मृति में लाना और सारे दिन में बीच-बीच में चेक करना। बापदादा टाइम फिक्स नहीं करते लेकिन आप अपना टाइम फिक्स करो। बीच-बीच में चेक करना तो जो बापदादा के आगे बर्थ डे पर वायदा किया वह वायदा निभा रहे हैं? यह अपने आपसे चेक करना। चाहते तो सभी हैं। बापदादा आज शकलें देख रहे हैं कि चाहते हैं हॉ करेंगे, करेंगे, करेंगे लेकिन **यह वेस्ट आ जाता है ना तो बाप से किया हुआ वायदा भी भुला देता है।** तो वेस्ट खत्म। एक मिनट अभी भी एक मिनट पावरफुल आत्मा बन संकल्प करो वेस्ट को खत्म करना ही है। अच्छा। (१९-०२-२०१२)

## अविनाशी बाप द्वारा यह कार्य मिला है। हर घड़ी अविनाशी बनने की है क्योंकि अविनाशी बाप ने यह वरदान दिया है

बापदादा ने व्यर्थ समय और व्यर्थ संकल्प का होमवर्क सभी को दिया था। तो सभी ने होमवर्क किया? जो समझते हैं हमारा अटेन्शन रहा और बहुत करके सफलता भी प्राप्त हुई, लक्ष्य का लक्षण तक परिणाम है, **वह हाथ उठाना।** अच्छा। पाण्डव उठा रहे हैं? **बड़ा हाथ उठाओ।** अभी सभी ने काम नहीं किया है। संगमयुग के महत्व को अगर सदा बुद्धि में याद रखो कि अविनाशी बाप द्वारा यह कार्य मिला है। हर घड़ी अविनाशी बनने की है क्योंकि अविनाशी बाप ने यह वरदान दिया है। तो सहज ही हो जायेगा। (०५-०३-२०१२)

## जो अनेक जन्मों के उल्टे संस्कार हैं उसको योग अग्नि से जलाया है ना

योग अग्नि से अपने कमजोरियों को, संस्कारों को जो अनेक जन्मों के उल्टे संस्कार हैं उसको योग अग्नि से जलाया है ना! जलाया है कि अभी भी जला रहे हैं? जलाया है? जो समझते हैं हमने योग अग्नि से अपने पहले के संस्कार जलाया है, जल गये वह **हाथ उठाओ।** जल गये कि अभी भी आते हैं? थोड़ा-थोड़ा तो आते हैं? (०५-०३-२०१२)

## हर बच्चा दृढ़ संकल्पधारी विशेष आत्मा बनो

बापदादा का जो कार्य मिला है, उस कार्य को अगर कोई ने अभी तक नहीं भी किया है तो बापदादा विशेष एक सप्ताह देते हैं एकस्ट्रा। जो डेट है वह तो है लेकिन एक सप्ताह एकस्ट्रा देते हैं कि इस होमवर्क को पूरा करना ही है। हो सकता है? हो सकता है? **हाथ उठाओ।** *करना पड़ेगा हाथ उठाया।* हाथ ऐसा अच्छा उठाते हो जो बापदादा खुश हो जाता है लेकिन करना ही है क्योंकि अभी समय की गति को देख रहे हो। और *बापदादा तो बहुत समय से अचानक की वारनिंग दे रहे हैं इसलिए अभी बापदादा हर बच्चे को एक स्वमान देते हैं - हर बच्चा दृढ़ संकल्पधारी विशेष आत्मा बनो।* संकल्प किया और हुआ, इसको कहा जाता है दृढ़ संकल्प। कहते हैं दृढ़ संकल्प किया

लेकिन दृढ़ता माना ही सफलता। अगर सफलता नहीं है तो दृढ़ता नहीं कहेंगे। *तो अभी दृढ़ता भव!* यह अपना विशेष स्वमान रोज़ अमृतवेले स्मृति में लाना और उस विधि पूर्वक आगे बढ़ना। अभी दो टर्न हैं, इन दो टर्न में क्या करेंगे? क्या करेंगे? बोलो। पहली लाइन बोलो क्या करेंगे? करना ही है। करेंगे नहीं, करना ही है। बहुतकाल का बाप समान बनना, बहुत समय की प्राप्ति है। संगमयुग का समय बहुत प्यारा है, एक सेकण्ड नहीं है एक सेकण्ड एक वर्ष की प्राप्ति समान है इसलिए बापदादा कहते ही रहते हैं एक सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं जाये। एक संकल्प भी व्यर्थ नहीं जाये। समर्थ बनो और समर्थ बनाओ। ठीक है ना! ठीक है टीचर्स। टीचर्स कांध हिला रही हैं। बापदादा का टीचर्स के ऊपर बहुत प्यार है। है तो सभी बच्चों के ऊपर फिर भी टीचर्स जिम्मेवार हैं ना! बापदादा की दिल को पूर्ण करने वाली कौन? कौन? कहो हम टीचर्स। **हाथ उठाओ।** हाँ देखो कितनी टीचर्स हैं? अरे वाह! अच्छा। (०५-०३-२०१२)

## ८ कदम पढ़ते हो ना, क्या-क्या किया! बस उसको फॉलो करना है

ब्रह्मा बाप के चरित्र तो सब जानते ही हैं। तो फॉलो फादर। आपको पक्का करने के लिए ब्रह्मा बाप के हर कदम रिवाइज भी किये हैं। ८ कदम पढ़ते हो ना, क्या-क्या किया! बस उसको फॉलो करना है। फॉलो करना अर्थात् ब्रह्मा बाप समान बनना। तो सोचो बाप से प्यार है, दोनों बाप से प्यार है। प्यार माना पहले भी सुनाया तो प्यार का प्रैक्टिकल रूप है ब्रह्मा बाप का करना और कहना और बच्चों को बाप समान करना, यह है सच्चा दिल का प्यार। कई बच्चे क्या करते हैं? ब्रह्मा बाप समान करना है, यह सोचते हैं लेकिन पहले करके पीछे सोचते हैं, ब्रह्मा बाप समान तो किया नहीं। लेकिन कर तो लिया। लेकिन फॉलो करना है तो पहले सोचो, संकल्प करने के पहले सोचो क्या यह संकल्प ब्रह्मा बाप का है! अगर है तो प्रैक्टिकल करो। करके पीछे नहीं सोचो। लेकिन पहले सोचके फिर फॉलो करो। ब्रह्मा बाप को फॉलो करना अर्थात् ब्रह्मा बाप समान बनना। हिम्मत है? फॉलो करने की हिम्मत है? जो समझते हैं करना ही है, वह **हाथ उठाओ।** पहले सोचना फिर करना। करके नहीं सोचना। (२०-०३-२०१२)

## बेफिक्र बादशाह की जीवन कितनी प्यारी है

अभी बापदादा यही हर बच्चे से चाहता है कि फिकर वाली जीवन का आधार है व्यर्थ संकल्प, तो हर बच्चे के अन्दर व्यर्थ संकल्प का निशान भी नहीं रहे क्योंकि जब मेरे को तेरे में बदल दिया तो आप क्या हो गये? आप हो गये बेफिक्र बादशाह और यह बेफिक्र बादशाह की जीवन कितनी प्यारी है। हर कर्म करते बेफिक्र बादशाह। कोई फिक्र नहीं क्यों, क्या, कैसे, कब तक... यह सब समाप्त हो गये। बापदादा आज इस सीजन के लास्ट दिन यही चाहते हैं कि हर एक बच्चा व्यर्थ को मेरे के बदले तेरा कर दे। बाप आपही भस्म कर देंगे। आप सिर्फ एक मात्रा का अन्तर करो, मंजूर है! हो सकता है? अगर हो सकता है तो **हाथ उठाओ।** बहुत अच्छा क्योंकि यह ५-६ मास आप सभी को विश्व के आगे दुःखी आत्माओं को पावरफुल वृत्ति द्वारा सुख शान्ति की किरणें देनी हैं। इसी में ही अपना मन बिजी रखना है। व्यर्थ संकल्प भी किसमें आते हैं? मन में आते हैं ना! तो बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक बेफिक्र बादशाह बच्चा अपने मन को अर्थात् वृत्ति को इतना बिजी रखे जो व्यर्थ को आने की मार्जिन ही नहीं रहे। मेहनत नहीं करनी पड़े लेकिन बाप के मोहब्बत में इतना बिजी रहो, वृत्ति की सेवा में इतना मन को बिजी रखो जो युद्ध भी नहीं करनी पड़े। कई बच्चे कहते हैं चाहते नहीं हैं लेकिन आ जाते हैं। इसको क्या कहेंगे? कि मन को बाप के प्यार और सेवा में बिजी नहीं रखा। सभी से पूछते हैं कि आपका प्यार बाप से कितना है? तो क्या कहते? बेहद है। तो जिससे प्यार होता है उसका कहना मानना कोई मुश्किल नहीं होता। तो आप सभी का बाप से अटूट प्यार है ना! कि कभी-कभी है? सदा है या कभी-कभी है? जो कहते हैं सदा प्यार है वह **हाथ उठाओ।** सदा प्यार है, देखो सोचो, सदा प्यार है तो बाप का कहना और बच्चे का करना। यह तो जानते हो ना! तो अभी इस सीजन में बापदादा बच्चों को यही दृढ़ संकल्प कराने चाहते हैं, तैयार हो ना! **कांध हिलाओ।** तैयार हो दृढ़ संकल्प करने के लिए? पीछे वाले तैयार हैं? मातायें भी तैयार हैं? पाण्डव भी तैयार हैं? अच्छा **हाथ उठाओ।** इसमें **दो-दो हाथ उठाओ।** हाथ उठाते हो तो बापदादा को खुश तो कर देते हो। अभी जैसे यह हाथ उठाया ऐसे **मन का हाथ उठाओ।** कभी भी व्यर्थ संकल्प को आने नहीं देंगे। उनका काम है आना, आपका काम क्या है? समाप्त कर देना। (०३-०४-२०१२)

## मधुबन वालों को अपना भविष्य सहज बनाने की एक लिफ्ट है

बापदादा से प्यार है, परिवार से प्यार है तो प्यार वाले से अलग नहीं रहा जाता है। तो ब्रह्मा बाबा से कितना प्यार है? जो समझते हैं कि ब्रह्मा बाप से शिव बाप से हमारा अटूट प्यार है वह **हाथ उठाओ।** **अटूट, अटूट?** बहुत अच्छा। तो दूसरी सीजन में बापदादा क्या देखने चाहता है? जानते तो हो। ५ मास ६ मास मिलना है आपको, व्यर्थ से समर्थ संकल्प करने में। तो बोलो, मधुबन वाले उठो, चाहे नीचे

चाहे ऊपर। बहुत हैं। तो मधुबन वाले बापदादा को प्यारे हैं। ऐसे नहीं दूसरे प्यारे नहीं हैं। वह प्यारे हैं लेकिन मधुबन वालों से एक बात का विशेष प्यार है, वह क्या? मन्सा में याद तो सब करते हैं। योगी तू आत्मायें तो सभी हैं, ज्ञानी आत्मायें भी सभी हैं लेकिन मधुबन वालों को अपना भविष्य सहज बनाने की एक लिफ्ट है। वह लिफ्ट क्या है? जो भी मधुबन में आते हैं, उनकी सेवा के निमित्त हैं। जैसे खाना बनाने वाले जो भी कोई ड्युटी करने वाले हैं। बापदादा तो कहते हैं कोई झाड़ू लगाने वाला भी है ना, वह भी भाग्यवान है क्यों? जो भी आते हैं वह यह वायुमण्डल देख आपके दिल के प्यार की शक्ति देख खुश हो जाते हैं। चाहे खाना बनाने वाला, चाहे कोई भी ड्युटी वाला है लेकिन मधुबन वालों को चांस है। मधुबन का प्यार और शक्तिशाली वायुमण्डल बनाने का, इसलिए बापदादा मधुबन वालों को बहुत-बहुत मुबारक दे रहे हैं कि यह सीजन समाप्त की और आगे के लिए भी अपने मन में आत्माओं को सन्तुष्ट करने में और शक्तिशाली अनुभव कराने में निमित्त बनते रहेंगे इसलिए सब ताली बजाओ मधुबन वालों के लिए। अच्छा। आज बापदादा को अमृतवेले मधुबन के सेवाधारी सामने आये। हर एक से बापदादा वतन में भी मिले और खास आपको पहले भी बताया है कि चार बजे के समय आपकी एडवांस में गई हुई विशेष दादियां जरूर आती हैं। तो आज भी विशेष दादियाँ और विशेष भाई पहुंचे थे। उन्होंने खास मधुबन वालों को इमर्ज करने के लिए कहा। विशेष दादी और दादी दोनों ने और विशेष भाईयों ने भी मधुबन वालों को याद किया। और दादी ने विशेष याद दी और साथ में वतन का आम, जानते हो ना वतन का फल कितना बढ़िया होता है, लाठी नहीं लगानी होती है, जो फल चाहिए वह आप हाथ से ही ले सकते हो। तो दादी ने कहा आज मधुबन वालों से आम की पिकनिक करते हैं। दूसरी दादियां तो साथ में थी और विशेष भाई भी थे। तो बापदादा ने कहा उन्हीं से पूछो तो मधुबन के लिए आपको मन में क्या आता है? तो दादी क्या बोली? पता है, जानते तो हो, दादी को तो जानते हैं ना! दादी कहती थी मेरी यह अभी तक भी दिल है कि हर एक मधुबन वाला चाहे पुरुषार्थ में कोई भी कमी अभी रह गई है उसका तो पुरुषार्थ करना है लेकिन मैं एक बात चाहती हूँ, मधुबन वालों से। वह क्या चाहती हूँ? *एक-एक मधुबनवासी बाप समान बन जाये*। वैसे तो सभी को बनना है लेकिन मधुबन विशेष है, मधुबन वालों को दादी से प्यार था, यह दादी कहती थी मुझे पता है। तो प्यार के रिटर्न में मैं यही चाहती हूँ कि जैसे मम्मा ने लक्ष्य रखा बाबा ने कहा मम्मा ने किया, यह तो मधुबन वाले जानते ही हैं। ऐसे ही अमृतवेले से लेके रात तक हर एक मधुबन वाले अगर बाबा के साथ मेरे से भी प्यार है, दादियों से भी प्यार है, तो जैसे मम्मा ने बाप की हर राय जीवन में लाई, ऐसे हमने भी लाई। तो अगर दादियों से प्यार है, तो यही करके दिखायें, सवरे से रात तक ऐसा कोई संकल्प बोल कर्म नहीं लावें जो दादियों को या बाप को या किसी को भी पसन्द नहीं हो। यह हमारा सन्देश खास मधुबन वालों को देना। तो हमने (गुल्जार दादी ने) दादी को कहा, दादी आप मधुबन में कभी चक्र लगाती हो? अभी मैं (गुल्जार बहन) वतन का समाचार मधुबन वालों को सुना रही हूँ। तो मैंने गुल्जार बहन ने, उनको कहा दादी मधुबन वालों को तो आप जो कहेंगे वह करेंगे। तो मैंने ठीक कहा, करेंगे? **हाथ उठाओ। दो-दो हाथ उठाओ।** करेंगे? बहुत अच्छा। (०३-०४-२०१२)

## ऐसा तीव्र पुरुषार्थ करना जो बापदादा के आगे हाथ उठा सको

बापदादा चाहते हैं कि जैसे आपको टाइटिल मिला है डबल विदेशी, ऐसे आपका टाइटिल हो डबल पुरुषार्थी। तीव्र पुरुषार्थी। तीव्र पुरुषार्थी डबल विदेशी आये हैं। हो सकता है? जैसे डबल विदेशी हो वैसे तीव्र पुरुषार्थी। कोई भी साधारण पुरुषार्थी नहीं। बापदादा खुश होते हैं, हिम्मत रख करके पहुंच जाते हैं। कोई भी टर्न इस सीजन में नहीं देखा है जिसमें विदेशी नहीं आये हों। तो जैसे यह हिम्मत रख करके कर रहे हो। ऐसे ही अभी यह एकजैम्पुल दिखाओ कि डबल विदेशी अर्थात् तीव्र पुरुषार्थी। हो सकता है? **हाथ उठाओ।** तो अगले ग्रुप में जो भी आयेंगे वह तीव्र पुरुषार्थी ग्रुप। जो आगे बढ़े, ऐसे अगले सीजन में बापदादा सभी को उठवायेंगे, जो भी तीव्र पुरुषार्थी बने हैं, बीच में रूकावट नहीं हुई है, उसको उठायेंगे। तो डबल विदेशी तो उठेंगे ही। और भी तीव्र पुरुषार्थ करना और *ऐसा तीव्र पुरुषार्थ करना जो बापदादा के आगे हाथ उठा सको*। ठीक है मंजूर है? पहली लाइन मंजूर है! मधुबन वालों को पसन्द है ना! यह सब मधुबन वाले बैठे हैं। पसन्द है? मधुबन वाले फिर उठो। अच्छा। यह टी.वी में आ रहे हैं। अगर बापदादा कहे कि यह कौन-कौन थे, वह टी. वी. से निकाल सकते हैं। अच्छा। तो जो भी आये हैं, वैसे तो सुन सभी रहे हैं लेकिन मधुबन वाले तीव्र पुरुषार्थियों में हाथ उठायेंगे। उठायेंगे? अभी **हाथ उठाओ।** अच्छा। आपको तो पदमगुणा मुबारक है। बहुत अच्छा। *बापदादा नोट करेंगे, हर एक ज़ोन से कितने तीव्र पुरुषार्थी हैं।* आप लिस्ट देना। हर एक ज़ोन वाले, जो नहीं भी आवे तो लिस्ट जरूर ले आवे जो तीव्र पुरुषार्थ करते हैं उन्हीं का नाम लिस्ट लावें। ठीक है। पीछे वाले, ठीक लगता है? आपको ठीक लगता है? बहुत अच्छा। बापदादा को तीव्र पुरुषार्थी बहुत पसन्द हैं। कब तक साधारण पुरुषार्थ करेंगे। चलना है ना अभी तो घर जाना है ना! तो तीव्र पुरुषार्थी बनके जाना है ना! बापदादा को, सुनाया भी हर एक बच्चा विजयी हो, यह अच्छा लगता है। यह हुआ, यह हुआ... यह समाचार सुनना अच्छा नहीं लगता है। तो कम से कम जो भी ज़ोन हैं, वह इन ६ मास में, सभी ने तीव्र पुरुषार्थ किया, यह रिजल्ट तो दे सकते हो। अगर ६ मास तीव्र पुरुषार्थ करेंगे तब तो आदत पड़ जायेगी। पड़ जायेगी ना आदत! तो रिजल्ट लेंगे तीव्र पुरुषार्थी ६ मास में कितने बनें? और बापदादा इनाम भी देंगे। जिस ज़ोन में ज्यादा से ज्यादा तीव्र पुरुषार्थी होंगे उनको इनाम भी देंगे। मंजूर है! मंजूर है मधुबन वाले? अच्छा। (०३-०४-२०१२)

## अभी यह प्रत्यक्ष करो कि स्वयं परमात्मा ब्रह्मा तन में प्रत्यक्ष हो ब्रह्माकुमारियों को ऐसे योग्य बना रहे हैं

देखो अभी तक की रिजल्ट में क्या सभी कहते हैं। ब्रह्माकुमारियां बहुत अच्छा काम कर रही हैं, बाप प्रत्यक्ष नहीं है। वह अभी भी गुप्त है। तो अभी समय समीप आ रहा है तो आप द्वारा चाहे निमित्त टीचर्स हैं या कोई भी बच्चा है, अभी बाप को प्रत्यक्ष करो। ब्रह्माकुमारियां अच्छा कार्य कर रही हैं, यह तो हो गया। यहाँ तक पहुंच गये हो। लेकिन अभी यह प्रत्यक्ष करो कि स्वयं परमात्मा ब्रह्मा तन में प्रत्यक्ष हो ब्रह्माकुमारियों को ऐसे योग्य बना रहे हैं। अभी यह प्वाइंट रही हुई है। गीत तो गाते हैं मेरा बाबा आ गया, लेकिन अभी अन्य आत्माओं के अन्दर यह प्रत्यक्ष हो कि भगवान स्वयं प्रत्यक्ष हो यह कार्य बहिनों द्वारा या भाईयों द्वारा करा रहे हैं। यह प्रत्यक्षता करनी है ना! कब करेंगे? अब। क्या कहेंगे? अब ना! (अभी शुरू करेंगे, अगली सीजन तक हो जायेगा) आप सभी साथ में हो, अगली सीजन तक हो जायेगा? **हाथ उठाओ** जो समझते हैं! थोड़े हाथ उठा रहे हैं। जो हाथ नहीं उठा रहे हैं वह देखेंगे, और आप करेंगे। टीचर्स ने तो संकल्प किया है ना! क्योंकि देख रहे हो बापदादा तो कहते ही हैं कि सब अचानक होना है। कोई बच्चे समझते हैं अचानक, अचानक भी बहुत समय हो गया है। अभी होना चाहिए। लेकिन अचानक तब हो जब बच्चे भी बाप समान बन जायें। आपकी सूरत मूरत एक-एक बोल बाप को प्रत्यक्ष करे। हो जाना तो है ही। *होना ही है अभी सिर्फ निमित्त बनना है।* अभी अगली सीजन में क्या करेंगे? एक तो अपने को बाप समान बनायेंगे। जो भी कमी रह गई है, उसको सम्पन्न करेंगे। और बापदादा को खुशी है किस बात की? तो बच्चों ने जैसे अभी छोटे मोटे सेन्टर ने वाणी द्वारा प्रसिद्ध किया कि हम क्या कार्य कर रहे हैं। वायुमण्डल को चेंज किया है। इसकी बापदादा मुबारक दे रहे हैं। जिन्होंने जहाँ भी प्रोग्राम्स किये हैं, अच्छे किये हैं, और सभी के अटेन्शन में भी आया है कि ब्रह्माकुमारियां सचमुच गुप्त रूप में अपने कार्य का समय ७५ वर्ष पूरा किया है। *अभी यह कहें कि ब्रह्माकुमारियों का भगवान बाबा आ गया है।* लक्ष्य है ना! तो अगले सीजन तक यह कार्य आरम्भ हो जाना चाहिए। इसका प्रत्यक्ष प्रोग्राम बनाना। प्रोग्राम बनाते हैं ना, मीटिंग करते हैं ना! तो मीटिंग में यह प्रोग्राम बनाओ कि अभी सब बच्चों को पता तो पड़े कि वर्सा देने वाला बाप आ गया। वंचित नहीं रह जाएं। बाप को तो बच्चों के दुःख को देख बहुत तरस पड़ता है। जब दुःख में चिल्लाते हैं, बाप को तरस पड़ता है। आप देव और देवियों को भी बहुत पुकारते हैं। तो अगली सीजन में एक तो व्यर्थ का नाम निशान नहीं, मंजूर है? मंजूर है! **दिल का हाथ उठाओ।** दिल का हाथ उठाना। व्यर्थ होता क्या है, यह मालूम ही गुम हो जाए। जैसे स्वर्ग की शहजादियां आती हैं ना तो उनको दुःख और अशान्ति का पता ही नहीं है, कहते हैं क्या कहते हैं, यह क्या होता है। ऐसे ही ब्राह्मण परिवार में व्यर्थ का पता ही न हो, व्यर्थ होता क्या है। स्वर्चितन, स्वर्चितक। अच्छा।

(०३-०४-२०१२)

---ओम शान्ति---